

# तौरत

असल इब्रानी मतन से  
नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिन्क्स रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

The Pentateuch in Modern Urdu  
Translated from the Original Hebrew  
Urdu Geo Version (UGV)  
© 2010 Geolink Resource Consultants, LLC

*Published by*  
Geolink Resource Consultants, LLC  
10307 W. Broadstreet, #169, Glen Allen, Virginia  
23060, United States of America

[www.urdugeoversion.com](http://www.urdugeoversion.com)

# फ़हरिस्त-ए-कुतुब

## तौरैत

पैदाइश	7	गिनती	168
खुर्रूज	73	इस्तिस्ना	216
अहबार	129		



---

## हर्फ-ए-आगाज़

---

अज़ीज़ क़ारी! आप के हाथ में किताब-ए-मुकद्दस का नया उर्दू तर्जुमा है। यह इलाही किताब इन्सान के लिए अल्लाह तआला का कलाम है। इस में इन्सान के साथ अल्लाह की मुहब्बत और उस के लिए उस की मर्ज़ी और मन्शा का इज़हार है।

किताब-ए-मुकद्दस पुराने और नए अहदनामे का मज्मूआ है। पुराना अहदनामा तौरत, तारीखी सहाइफ़, हिक्मत और ज़बूर के सहाइफ़, और अन्बिया के सहाइफ़ पर मुश्तमिल है। नया अहदनामा इंजील-ए-मुकद्दस का पाक कलाम है।

पुराने अहदनामे की असल ज़बान इब्रानी और अरामी और नए अहदनामे की यूनानी है। ज़ेर-ए-नज़र मतन इन ज़बानों का बराह-ए-रास्त तर्जुमा है। मुतर्जिम ने हर मुमकिन कोशिश की है कि असल ज़बानों का सहीह सहीह मफ़हम अदा करे।

पाक कलाम के तमाम मुतर्जिमीन को दो सवालों का सामना है: पहला यह कि असल मतन का सहीह सहीह तर्जुमा किया जाए। दूसरा यह कि जिस ज़बान में तर्जुमा करना मक्सूद हो उस की ख़ूबसूरती और चाश्री भी बरकरार रहे और पाक मतन के साथ वफ़ादारी भी मुतअस्सिर न हो। चुनाँचे हर मुतर्जिम को फ़ैसला करना होता है कि कहां तक वुह लफ़ज़-ब-लफ़ज़ तर्जुमा करे और कहां तक उर्दू ज़बान की सिहहत, ख़ूबसूरती और चाश्री को मद्द-ए-नज़र रखते हुए क्रदरे आज़ादाना तर्जुमा करे। मुख्तलिफ़ तर्जुमों में जो बाज़ औक्रात थोड़ा बहत फ़रक़ नज़र आता है उस का यही सबब है कि एक मुतर्जिम असल अल्फ़ाज़ का ज़ियादा पाबन्द रहा है जबकि दूसरे ने मफ़हम को अदा करने में उर्दू ज़बान की रिआयत करके क्रदरे आज़ाद तरीक़े से मतलब को अदा करने की कोशिश की है। इस तर्जुमे में जहां तक हो सका असल ज़बान के क़रीब रहने की कोशिश की गई है। याद रहे कि सुख़ियाँ और उन्वानात मतन का हिस्सा नहीं हैं। उन को महज़ क़ारी की सहूलत की खातिर दिया गया है।

चूँकि असल ज़बानों में अन्बिया के लिए इज़ज़त के वुह अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं किए गए जिन का आज कल रिवाज है, इस लिए इल्हामी मतन के एह्तिराम को मल्हूज़-ए-खातिर रखते हुए तर्जुमे में अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा करने से गुरेज़ किया गया है।

किताब-ए-मुकद्दस में मज़कूर जवाहिरात का तर्जुमा जदीद साएंसी तहक़ीक़ात के मुताबिक़ किया गया है।

चूँकि वक़्त के साथ साथ नाप-तोल की मिक्दारें क्रदरे बदल गईं इस लिए तर्जुमे में उन की अदाएगी में ख़ास मुशक़िल पेश आई।

जहां रूह का लफ़ज़ सीगा-ए-मुज़क्कर में अदा किया गया है वहां उस से मुराद रूह-उल-कुद्स यानी खुदा का रूह है। जब वुह और मानों में मुस्तामल है तब मामूल के मुताबिक़ सीगा-ए-मुअन्नस इस्तेमाल हुआ है।

इंजील-ए-मुकद्दस में बपतिस्मा देने का लुगवी मतलब गोता देना है। जिस शख्स को बपतिस्मा दिया जाता है उसे पानी में गोता दिया जाता है।

बारी तआला के फ़ज़ल से इंजील-ए-मुकद्दस के कई उर्दू तर्जुमे दस्तयाब हैं। इन सब का मक्सद यही है कि असल ज़बान का मफ़हूम अदा किया जाए। इन का आपस में मुकाबला नहीं है बल्कि मुख्तलिफ़ तर्जुमों का एक दूसरे के साथ मुवाज़ना करने से असली ज़बान के मफ़हूम की गहराई और वुसअत सामने आती है और यूँ मुख्तलिफ़ तर्जुमे मिल कर कलाम-ए-मुकद्दस की पूरी तफ़हीम में मुअविन साबित होते हैं।

अल्लाह करे कि यह तर्जुमा भी उस के ज़िन्दा कलाम का मतलब और मक्सद और उस की वुसअत और गहराई को ज़ियादा सफ़ाई से समझने में मदद का बाइस बने।

नाशिरीन

---

# पैदाइश

---

## दुनिया की तख़लीक़ का पहला दिन : रौशनी

**1** इब्तिदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया। <sup>2</sup>अभी तक ज़मीन वीरान और खाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिस के ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मंडला रहा था।

<sup>3</sup>फिर अल्लाह ने कहा, “रौशनी हो जाए” तो रौशनी पैदा हो गई। <sup>4</sup>अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उस ने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया। <sup>5</sup>अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर सुबह। यूँ पहला दिन गुज़र गया।

## दूसरा दिन : आसमान

<sup>6</sup>अल्लाह ने कहा, “पानी के दरमियान एक ऐसा गुम्बद पैदा हो जाए जिस से निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।” <sup>7</sup>ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुम्बद बनाया जिस से निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया। <sup>8</sup>अल्लाह ने गुम्बद को आसमान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुबह। यूँ दूसरा दिन गुज़र गया।

## तीसरा दिन : खुशक ज़मीन और पौदे

<sup>9</sup>अल्लाह ने कहा, “जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ खुशक जगह नज़र आए।” ऐसा ही हुआ। <sup>10</sup>अल्लाह ने खुशक जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुन्दर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। <sup>11</sup>फिर उस ने कहा, “ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिन के फल अपनी अपनी क्रिस्म के बीज रखते हों।” ऐसा ही हुआ। <sup>12</sup>ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो अपनी अपनी क्रिस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिन के फल अपनी अपनी क्रिस्म के बीज रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। <sup>13</sup>शाम हुई, फिर सुबह। यूँ तीसरा दिन गुज़र गया।

## चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

<sup>14</sup>अल्लाह ने कहा, “आसमान पर रौश-नियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। <sup>15</sup>आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।” ऐसा ही हुआ। <sup>16</sup>अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाई, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर।

इन के इलावा उस ने सितारों को भी बनाया।<sup>17</sup> उस ने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, <sup>18</sup>दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इन्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। <sup>19</sup>शाम हुई, फिर सुबह। यूँ चौथा दिन गुज़र गया।

### पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

<sup>20</sup>अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़िज़ा में परिन्दे उड़ते फिरें।” <sup>21</sup>अल्लाह ने बड़े बड़े समुन्दरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मख्लूक़ात और हर क्रिस्म के पर रखने वाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। <sup>22</sup>उस ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुन्दर तुम से भर जाए। इसी तरह परिन्दे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।” <sup>23</sup>शाम हुई, फिर सुबह। यूँ पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

### छटा दिन : ज़मीन पर चलने वाले जानवर और इन्सान

<sup>24</sup>अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क्रिस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। <sup>25</sup>अल्लाह ने हर क्रिस्म के मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर बनाए। उस ने देखा कि यह अच्छा है।

<sup>26</sup>अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इन्सान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हम से मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुन्दर की मछलियों पर, हवा के परिन्दों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले जानदारों पर।” <sup>27</sup>यूँ अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उस ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। <sup>28</sup>अल्लाह ने उन्हें बरकत दी और कहा, “फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ।

दुनिया तुम से भर जाए और तुम उस पर इख्तियार रखो। समुन्दर की मछलियों, हवा के परिन्दों और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

<sup>29</sup>अल्लाह ने उन से मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुम को खाने के लिए देता हूँ। <sup>30</sup>इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिस में भी जान है वह यह खा सकता है, ख़्वाह वह ज़मीन पर चलने फिरने वाला जानवर, हवा का परिन्दा या ज़मीन पर रेंगने वाला क्यूँ न हो।” ऐसा ही हुआ। <sup>31</sup>अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

### सातवाँ दिन : आराम

**2** यूँ आसमान-ओ-ज़मीन और उन की तमाम चीज़ों की तख़लीक़ मुकम्मल हुई। <sup>2</sup>सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तक्मील को पहुँचा। इस से फ़ारिग हो कर उस ने आराम किया। <sup>3</sup>अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख़सूस-ओ-मुक़द्दस किया। क्यूँकि उस दिन उस ने अपने तमाम तख़लीक़ी काम से फ़ारिग हो कर आराम किया।

### आदम और हव्वा

<sup>4</sup>यह आसमान-ओ-ज़मीन की तख़लीक़ का बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया <sup>5</sup>तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इन्तिज़ाम नहीं किया था। और अभी इन्सान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। <sup>6</sup>इस की बजाए ज़मीन में से धुन्द उठ कर उस की पूरी सतह को तर करती थी। <sup>7</sup>फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी ले कर इन्सान को तश्कील दिया और उस के



नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

८रब खुदा ने मशरिक्क में मुल्क-ए-अदन में एक बाग़ लगाया। उस में उस ने उस आदमी को रखा जिसे उस ने बनाया था। ९रब खुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख्त फूट निकले, ऐसे दरख्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख्त थे। एक का फल ज़िन्दगी बरख़शा था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। १०अदन में से एक दरया निकल कर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बह कर वह चार शाखों में तन्नसीम हुआ। ११-१२पहली शाख का नाम फ़ीसून है। वह मुल्क-ए-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ खालिस सोना, गुगल का गूँद और अक्रीक-ए-अह्नर<sup>a</sup> पाए जाते हैं। १३दूसरी का नाम जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। १४तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक्क को जाती है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

१५रब खुदा ने पहले आदमी को बाग़-ए-अदन में रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे। १६लेकिन रब खुदा ने उसे आगाह किया, “तुझे हर दरख्त का फल खाने की इजाज़त है। १७लेकिन जिस दरख्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उस का फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।”

१८रब खुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उस के लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।”

१९रब खुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने फिरने वाले जानवर और हवा के परिन्दे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उन के क्या क्या नाम रखेगा। यूँ हर जानवर को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। २०आदमी ने तमाम मवेशियों, परिन्दों और ज़मीन पर फिरने वाले

जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला।

२१तब रब खुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उस ने उस की पसलियों में से एक निकाल कर उस की जगह गोशत भर दिया। २२पसली से उस ने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया। २३उसे देख कर वह पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोशत में से गोशत है। इस का नाम नारी रखा जाए क्योंकि वह नर से निकाली गई है।” २४इस लिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। २५दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उन के लिए शर्म का बाइस नहीं था।

### गुनाह का आगाज़

**3** साँप ज़मीन पर चलने फिरने वाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिन को रब खुदा ने बनाया था। उस ने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाकई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख्त का फल न खाना?” २औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, ३सिर्फ़ उस दरख्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उस का फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” ४साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, ५बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उस का फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिन्द हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

६औरत ने दरख्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सब से दिलफ़रेब बात यह कि उस से समझ हासिल हो सकती है! यह सोच कर उस ने

<sup>a</sup>carnelian

उस का फल ले कर उसे खाया। फिर उस ने अपने शीहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उस के साथ था। उस ने भी खा लिया। 7 लेकिन खाते ही उन की आँखें खुल गईं और उन को मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनौचे उन्होंने ने अन्जीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

8 शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने ने रब खुदा को बाग़ में चलते फिरते सुना। वह डर के मारे दरख्तों के पीछे छुप गए। 9 रब खुदा ने पुकार कर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10 आदम ने जवाब दिया, “मैं ने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इस लिए मैं छुप गया।” 11 उस ने पूछा, “किस ने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तू ने उस दरख्त का फल खाया है जिसे खाने से मैं ने मना किया था?” 12 आदम ने कहा, “जो औरत तू ने मेरे साथ रहने के लिए दी है उस ने मुझे फल दिया। इस लिए मैं ने खा लिया।” 13 अब रब खुदा औरत से मुखातिब हुआ, “तू ने यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैं ने खाया।”

14 रब खुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तू ने यह किया, इस लिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र भर पेट के बल रेंगेगा और खाक चाटेगा। 15 मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उस की एड़ी पर काटेगा।”

16 फिर रब खुदा औरत से मुखातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तक्लीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शीहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।” 17 आदम से उस ने कहा, “तू ने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख्त का फल खाया जिसे खाने से मैं ने मना किया था। इस लिए तेरे सबब से ज़मीन पर

लानत है। उस से खुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-मशक्कत करनी पड़ेगी। 18 तेरे लिए वह खारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उस से अपनी खुराक भी हासिल करेगा। 19 पसीना बहा बहा कर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू खाक है और दुबारा खाक में मिल जाएगा।”

20 आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िन्दगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िन्दों की माँ बन गई। 21 रब खुदा ने आदम और उस की बीवी के लिए खालों से लिबास बना कर उन्हें पहनाया। 22 उस ने कहा, “इन्सान हमारी मानिन्द हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ा कर ज़िन्दगी बरख़शने वाले दरख्त के फल से ले और उस से खा कर हमेशा तक ज़िन्दा रहे।” 23 इस लिए रब खुदा ने उसे बाग़-ए-अदन से निकाल कर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मादारी दी जिस में से उसे लिया गया था। 24 इन्सान को खारिज करने के बाद उस ने बाग़-ए-अदन के मशरिफ़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िन्दगी बरख़शने वाले दरख्त तक पहुँचाता था।

### क्राबील और हाबील

**4** आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उन का पहला बेटा क्राबील पैदा हुआ। हव्वा ने कहा, “रब की मदद से मैं ने एक मर्द हासिल किया है।” 2 बाद में क्राबील का भाई हाबील पैदा हुआ। हाबील भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया जबकि क्राबील खेतीबाड़ी करने लगा।

### पहला क्रल्ल

कुछ देर के बाद क्राबील ने रब को अपनी फ़सलों में से कुछ पेश किया। 4हाबील ने भी नज़राना पेश किया, लेकिन उस ने अपनी भेड़-बकरियों के कुछ पहलौठे उन की चर्बी समेत चढ़ाए। हाबील का नज़राना रब को पसन्द आया, 5मगर क्राबील का नज़राना मन्ज़ूर न हुआ। यह देख कर क्राबील बड़े गुस्से में आ गया, और उस का मुँह बिगड़ गया। 6रब ने पूछा, "तू गुस्से में क्यों आ गया है? तेरा मुँह क्यों लटका हुआ है? 7क्या अगर तू अच्छी नीयत रखता है तो अपनी नज़र उठा कर मेरी तरफ़ नहीं देख सकेगा? लेकिन अगर अच्छी नीयत नहीं रखता तो ख़बरदार! गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और तुझे चाहता है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब आए।"

8एक दिन क्राबील ने अपने भाई से कहा, "आओ, हम बाहर खुले मैदान में चलें।" और जब वह खुले मैदान में थे तो क्राबील ने अपने भाई हाबील पर हमला करके उसे मार डाला।

9तब रब ने क्राबील से पूछा, "तेरा भाई हाबील कहाँ है?" क्राबील ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता! क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी ज़िम्मादारी है?" 10रब ने कहा, "तू ने क्या किया है? तेरे भाई का खून ज़मीन में से पुकार कर मुझ से फ़र्याद कर रहा है। 11इस लिए तुझ पर लानत है और ज़मीन ने तुझे रद्द किया है, क्योंकि ज़मीन को मुँह खोल कर तेरे हाथ से क्रल्ल किए हुए भाई का खून पीना पड़ा। 12अब से जब तू खेतीबाड़ी करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इन्कार करेगी। तू मफ़रूर हो कर मारा मारा फिरेगा।" 13क्राबील ने कहा, "मेरी सज़ा निहायत सख्त है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा। 14आज तू मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे तेरे हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की

हैसियत से मारा मारा फिरता रहूँगा, इस लिए जिस को भी पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह मुझे क्रल्ल कर डालेगा।" 15लेकिन रब ने उस से कहा, "हरगिज़ नहीं। जो क्राबील को क्रल्ल करे उस से सात गुना बदला लिया जाएगा।" फिर रब ने उस पर एक निशान लगाया ताकि जो भी क्राबील को देखे वह उसे क्रल्ल न कर दे। 16इस के बाद क्राबील रब के हुज़ूर से चला गया और अदन के मशरिक़ी की तरफ़ नोद के इलाक़े में जा बसा।

### क्राबील का ख़ानदान

17क्राबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा हुआ जिस का नाम हनूक रखा गया। क्राबील ने एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की खुशी में उस का नाम हनूक रखा। 18हनूक का बेटा ईराद था, ईराद का बेटा महूयाएल, महूयाएल का बेटा मतूसाएल और मतूसाएल का बेटा लमक था। 19लमक की दो बीवियाँ थीं, अदा और ज़िल्ला। 20अदा का बेटा याबल था। उस की नस्ल के लोग ख़ैमों में रहते और मवेशी पालते थे। 21याबल का भाई यूबल था। उस की नस्ल के लोग सरोद<sup>3</sup> और बाँसरी बजाते थे। 22ज़िल्ला के भी बेटा पैदा हुआ जिस का नाम तूबल-क्राबील था। वह लोहार था। उस की नस्ल के लोग पीतल और लोहे की चीज़ें बनाते थे। तूबल-क्राबील की बहन का नाम नामा था। 23एक दिन लमक ने अपनी बीवियों से कहा, "अदा और ज़िल्ला, मेरी बात सुनो! लमक की बीवियों, मेरे अल्फ़ाज़ पर गौर करो! 24एक आदमी ने मुझे ज़ख़मी किया तो मैं ने उसे मार डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैं ने उसे क्रल्ल कर दिया। जो क्राबील को क्रल्ल करे उस से सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो लमक को क्रल्ल करे उस से सतत्तर गुना बदला लिया जाएगा।"

<sup>3</sup>लफ़ज़ी तर्जुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्-ए-सगीर में कम ही इस्तेमाल होता है, इस लिए मुतर्जमीन ने इस की जगह लफ़ज़ 'सरोद' इस्तेमाल किया है।

### सेत और अनूस

25आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा हुआ। हव्वा ने उस का नाम सेत रख कर कहा, “अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे क्राबील ने क्रल्ल किया एक और बेटा बरूश्शा है।” 26सेत के हॉ भी बेटा पैदा हुआ। उस ने उस का नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम ले कर इबादत करने लगे।

### आदम से नूह तक का नसबनामा

**5** ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है। जब अल्लाह ने इन्सान को खलक़ किया तो उस ने उसे अपनी सूरत पर बनाया। 2उस ने उन्हें मर्द और औरत पैदा किया। और जिस दिन उस ने उन्हें खलक़ किया उस ने उन्हें बरकत दे कर उन का नाम आदम यानी इन्सान रखा।

3आदम की उम्र 130 साल थी जब उस का बेटा सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़ से अपने बाप की मानिन्द था, वह उस से मुशाबहत रखता था। 4सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 5वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

6सेत 105 साल का था जब उस का बेटा अनूस पैदा हुआ। 7इस के बाद वह मज़ीद 807 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 8वह 912 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

9अनूस 90 बरस का था जब उस का बेटा क्रीनान पैदा हुआ। 10इस के बाद वह मज़ीद 815 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 11वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

12क्रीनान 70 साल का था जब उस का बेटा महलल-एल पैदा हुआ। 13इस के बाद वह मज़ीद 840 साल ज़िन्दा रहा। उस के और

बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 14वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

15महलल-एल 65 साल का था जब उस का बेटा यारिद पैदा हुआ। 16इस के बाद वह मज़ीद 830 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 17वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

18यारिद 162 साल का था जब उस का बेटा हनूक पैदा हुआ। 19इस के बाद वह मज़ीद 800 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 20वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

21हनूक 65 साल का था जब उस का बेटा मतूसिलह पैदा हुआ। 22इस के बाद वह मज़ीद 300 साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 23वह कुल 365 साल दुनिया में रहा। 24हनूक अल्लाह के साथ साथ चलता था। 365 साल की उम्र में वह गाइब हुआ, क्योंकि अल्लाह ने उसे उठा लिया।

25मतूसिलह 187 साल का था जब उस का बेटा लमक पैदा हुआ। 26वह मज़ीद 782 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे और बेटियाँ भी पैदा हुए। 27वह 969 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

28लमक 182 साल का था जब उस का बेटा पैदा हुआ। 29उस ने उस का नाम नूह यानी तसल्ली रखा, क्योंकि उस ने उस के बारे में कहा, “हमारा खेतीबाड़ी का काम निहायत तक्लीफ़दिह है, इस लिए कि अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम बेटे की मारिफ़त तसल्ली पाएँगे।” 30इस के बाद वह मज़ीद 595 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 31वह 777 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

32नूह 500 साल का था जब उस के बेटे सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए।

### लोगों की ज़ियादतियाँ

**6** दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उन के हाँ बेटियाँ पैदा हुईं।<sup>2</sup> तब आसमानी हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इन्सान की बेटियाँ खूबसूरत हैं, और उन्होंने ने उन में से कुछ चुन कर उन से शादी की।<sup>3</sup> फिर रब ने कहा, “मेरी रूह हमेशा के लिए इन्सान में न रहे क्योंकि वह फ़ानी मख्लूक है। अब से वह 120 साल से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं रहेगा।”<sup>4</sup> उन दिनों में और बाद में भी दुनिया में देओक्रामत अफ़राद थे जो इन्सानी औरतों और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से पैदा हुए थे। यह देओक्रामत अफ़राद क़दीम ज़माने के मशहूर सूरमा थे।

<sup>5</sup> रब ने देखा कि इन्सान निहायत बिगड़ गया है, कि उस के तमाम खयालात लगातार बुराई की तरफ़ माइल रहते हैं।<sup>6</sup> वह पछताया कि मैं ने इन्सान को बना कर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख्त दुख हुआ।<sup>7</sup> उस ने कहा, “गो मैं ही ने इन्सान को खलक किया मैं उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने फिरने और रेंगने वाले जानवरों और हवा के परिन्दों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैं ने उन को बनाया।”

### बड़े सैलाब के लिए नूह की तय्यारियाँ

<sup>8</sup> सिर्फ़ नूह पर रब की नज़र-ए-करम थी।<sup>9</sup> यह उस की ज़िन्दगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेकुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था।<sup>10</sup> नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त।<sup>11</sup> लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और जुल्म-ओ-तशद्दुद से भरी हुई थी।<sup>12</sup> जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया खराब थी, क्योंकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

<sup>3</sup> इब्रानी लफ़्ज़ मतरूक है। शायद इस का मतलब सर्व या देवदार की लकड़ी हो।

<sup>13</sup> तब अल्लाह ने नूह से कहा, “मैं ने तमाम जानदारों को खत्म करने का फ़ैसला किया है, क्योंकि उन के सबब से पूरी दुनिया जुल्म-ओ-तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उन को ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा।<sup>14</sup> अब अपने लिए सर्व<sup>3</sup> की लकड़ी की कश्ती बना ले। उस में कमरे हों और उसे अन्दर और बाहर तारकोल लगा।<sup>15</sup> उस की लम्बाई 450 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट हो।<sup>16</sup> कश्ती की छत को यूँ बनाना कि उस के नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस की तीन मन्ज़िलें हों।<sup>17</sup> मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा।<sup>18</sup> लेकिन तेरे साथ मैं अह्द बांधूँगा जिस के तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में जाएगा।<sup>19</sup> हर क्रिस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें।<sup>20</sup> हर क्रिस्म के पर रखने वाले जानवर और हर क्रिस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले जानवर दो दो हो कर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच जाएँ।<sup>21</sup> जो भी खुराक दरकार है उसे अपने और उन के लिए जमा करके कश्ती में महफूज़ कर लेना।”

<sup>22</sup> नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया।

### सैलाब का अगाज़

**7** फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत कश्ती में दाखिल हो जा, क्योंकि इस दौर के लोगों में से मैं ने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है।<sup>2</sup> हर क्रिस्म के पाक जानवरों में से सात सात नर-ओ-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नर-ओ-मादा का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले जाना।<sup>3</sup> इसी तरह हर क्रिस्म के पर रखने वालों में

से सात सात नर-ओ-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उन की नस्लें बची रहें। <sup>4</sup>एक हफ्ते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊंगा। इस से मैं तमाम जानदारों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।”

<sup>5</sup>नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था। <sup>6</sup>वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आया।

<sup>7</sup>तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में सवार हुआ। <sup>8</sup>ज़मीन पर फिरने वाले पाक और नापाक जानवर, पर रखने वाले और तमाम रेंगने वाले जानवर भी आए। <sup>9</sup>नर-ओ-मादा की सूरत में दो दो हो कर वह नूह के पास आ कर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था।

<sup>10</sup>एक हफ्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ गया।

<sup>11</sup>यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600 साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। <sup>12</sup>चालीस दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश होती रही। <sup>13</sup>जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उस के बेटे सिम, हाम और याफ़्त, उस की बीवी और बहूएँ कश्ती में सवार हो चुके थे। <sup>14</sup>उन के साथ हर क्रिस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रेंगने और पर रखने वाले जानवर थे। <sup>15</sup>हर क्रिस्म के जानदार दो दो हो कर नूह के पास आ कर कश्ती में सवार हो चुके थे। <sup>16</sup>नर-ओ-मादा आए थे। सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। फिर रब ने दरवाज़े को बन्द कर दिया।

<sup>17</sup>चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा। पानी चढ़ा तो उस ने कश्ती को ज़मीन पर से उठा लिया। <sup>18</sup>पानी ज़ोर पकड़ कर बहुत बढ़ गया, और कश्ती उस पर तैरने लगी।

<sup>19</sup>आखिरकार पानी इतना ज़्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उस में छुप गए, <sup>20</sup>बल्कि सब से ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फुट थी। <sup>21</sup>ज़मीन पर रहने वाली हर मख़्लूक हलाक हुई। परिन्दे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिन से ज़मीन भरी हुई थी और इन्सान, सब कुछ मर गया। <sup>22</sup>ज़मीन पर हर जानदार मख़्लूक हलाक हुई। <sup>23</sup>यूँ हर मख़्लूक को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दिया गया। इन्सान, ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले जानवर और परिन्दे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उस के साथी बच गए।

<sup>24</sup>सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर गालिब रहा।

### सैलाब का इख़तिताम

**8** लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उस ने हवा चला दी जिस से पानी कम होने लगा। <sup>2</sup>ज़मीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बन्द हो गए, और बारिश रुक गई। <sup>3</sup>पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था। <sup>4</sup>सातवें महीने के 17वें दिन कश्ती अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। <sup>5</sup>दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

<sup>6-7</sup>चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की खिड़की खोल कर एक कच्चा छोड़ दिया, और वह उड़ कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता जाता रहा। <sup>8</sup>फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। <sup>9</sup>लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ

बढ़ाया और कबूतर को पकड़ कर अपने पास कशती में रख लिया।

<sup>10</sup>उस ने एक हफ़ता और इन्तिज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। <sup>11</sup>शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है।

<sup>12</sup>उस ने मज़ीद एक हफ़ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

<sup>13</sup>जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी खत्म हो गया। तब नूह ने कशती की छत खोल दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। <sup>14</sup>दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल खुशक हो गई।

<sup>15</sup>फिर अल्लाह ने नूह से कहा, <sup>16</sup>“अपनी बीवी, बेटों और बहूओं के साथ कशती से निकल आ। <sup>17</sup>जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़्वाह परिन्दे हों, ख़्वाह ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नस्ल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।” <sup>18</sup>चुनाँचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं समेत निकल आया। <sup>19</sup>तमाम जानवर और परिन्दे भी अपनी अपनी किस्म के गुरोहों में कशती से निकले।

<sup>20</sup>उस वक़्त नूह ने रब के लिए कुर्बानगाह बनाई। उस ने तमाम फिरने और उड़ने वाले पाक जानवरों में से कुछ चुन कर उन्हें ज़बह किया और कुर्बानगाह पर पूरी तरह जला दिया। <sup>21</sup>यह कुर्बानियाँ देख कर रब खुश हुआ और अपने दिल में कहा, “अब से मैं कभी ज़मीन पर इन्सान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उस का दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ माइल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखने वाली मख़्लूकात को रू-ए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। <sup>22</sup>दुनिया के मुकर्ररा औकात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गर्मियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात,

यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ाइम रहेगा।”

### अल्लाह का नूह के साथ अह्द

**9** फिर अल्लाह ने नूह और उस के बेटों को बरकत दे कर कहा, “फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुम से भर जाए। <sup>2</sup>ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले जानवर, परिन्दे और मछलियाँ सब तुम से डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़तियार में कर दिया गया है। <sup>3</sup>जिस तरह मैं ने तुम्हारे खाने के लिए पौदों की पैदावार मुकर्रर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर किस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। <sup>4</sup>लेकिन खबरदार! ऐसा गोशत न खाना जिस में खून है, क्योंकि खून में उस की जान है।

<sup>5</sup>किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़्वाह वह इन्सान हो या हैवान। मैं खुद इस का मुतालबा करूँगा। <sup>6</sup>जो भी किसी का खून बहाए उस का खून भी बहाया जाएगा। क्योंकि अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया है।

<sup>7</sup>अब फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया में फैल जाओ।”

<sup>8</sup>तब अल्लाह ने नूह और उस के बेटों से कहा, <sup>9</sup>“अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अह्द क़ाइम करता हूँ। <sup>10</sup>यह अह्द उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो कशती में से निकले हैं यानी परिन्दों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। <sup>11</sup>मैं तुम्हारे साथ अह्द बांध कर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िन्दगी सैलाब से खत्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। <sup>12</sup>इस अबदी अह्द का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ाइम कर रहा हूँ यह है कि <sup>13</sup>मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अह्द का निशान

होगा। <sup>14</sup>जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएंगे और क्रौस-ए-कुज़ह उन में से नज़र आएगी <sup>15</sup>तो मैं यह अह्द याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िन्दगी को हलाक कर दे। <sup>16</sup>क्रौस-ए-कुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देख कर उस दाइमी अह्द को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख्लूक़ात के दरमियान है। <sup>17</sup>यह उस अह्द का निशान है जो मैं ने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।”

### नूह के बेटे

<sup>18</sup>नूह के जो बेटे उस के साथ कश्ती से निकले सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनआन का बाप था। <sup>19</sup>दुनिया भर के तमाम लोग इन तीनों की औलाद हैं।

<sup>20</sup>नूह किसान था। शुरू में उस ने अंगूर का बाग़ लगाया। <sup>21</sup>अंगूर से मैं बना कर उस ने इतनी पी ली कि वह नशे में धुत अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा। <sup>22</sup>कनआन के बाप हाम ने उसे घूँ पड़ा हुआ देखा तो बाहर जा कर अपने दोनों भाइयों को उस के बारे में बताया। <sup>23</sup>यह सुन कर सिम और याफ़त ने अपने कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उलटे चलते हुए डेरे में दाखिल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल दिया। उन के मुँह दूसरी तरफ़ मुड़े रहे ताकि बाप की बरहनगी नज़र न आए।

<sup>24</sup>जब नूह होश में आया तो उस को पता चला कि सब से छोटे बेटे ने क्या किया है। <sup>25</sup>उस ने कहा, “कनआन पर लानत! वह अपने भाइयों का ज़लीलतरीन गुलाम होगा।

<sup>26</sup>मुबारक हो रब जो सिम का खुदा है। कनआन सिम का गुलाम हो। <sup>27</sup>अल्लाह करे कि याफ़त की हुदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और कनआन उस का गुलाम हो।”

<sup>28</sup>सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िन्दा रहा। <sup>29</sup>वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

### नूह की औलाद

**10** यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त का नसबनामा है। उन के बेटे सैलाब के बाद पैदा हुए।

### याफ़त की नस्ल

<sup>2</sup>याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान, तूबल, मसक और तीरास थे। <sup>3</sup>जुमर के बेटे अश्कनाज़, रीफ़त और तुजर्मा थे। <sup>4</sup>यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। किस्ती और दोदानी भी उस की औलाद हैं। <sup>5</sup>वह उन क्रौमों के आबा-ओ-अजदाद हैं जो साहिली इलाकों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफ़त की औलाद हैं जो अपने अपने क़बीले और मुल्क में रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते हैं।

### हाम की नस्ल

<sup>6</sup>हाम के बेटे कूश, मिस्र, फ़ूत और कनआन थे। <sup>7</sup>कूश के बेटे सिबा, हवीला, सब्ता, रामा और सब्त्का थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।

<sup>8</sup>कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था। वह दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। <sup>9</sup>रब के नज़दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इस लिए आज भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा जाता है, “वह नमरूद की मानिन्द है जो रब के नज़दीक ज़बरदस्त शिकारी था।” <sup>10</sup>उस की सलतनत के पहले मर्कज़ मुल्क-ए-सिनआर में बाबल, अरक, अक्काद और कल्ना के शहर थे। <sup>11</sup>उस मुल्क से निकल कर वह असूर चला गया जहाँ उस ने नीनवा, रहोबोत-ईर, कलह <sup>12</sup>और रसन के शहर तामीर किए। बड़ा शहर रसन नीनवा और कलह के दरमियान वाक़े है।



<sup>13</sup>मिस्र इन क्रौमों का बाप था : लूदी, अनामी, लिहाबी, नफ़्तूही, <sup>14</sup>फ़नूसी, कस्लूही (जिन से फ़िलिस्ती निकले) और कफ़तूरी।

<sup>15</sup>कनआन का पहलौठा सैदा था। कनआन ज़ैल की क्रौमों का बाप भी था : हित्ती <sup>16</sup>यबूसी, अमोरी, जिर्जासी, <sup>17</sup>हिच्वी, अक्की, सीनी, <sup>18</sup>अर्वादी, समारी और हमती। बाद में कनआनी क़बीले इतने फैल गए <sup>19</sup>कि उन की हुदूद शिमाल में सैदा से जुनुब की तरफ़ जिरार से हो कर ग़ज़ज़ा तक और वहाँ से मशरिक् की तरफ़ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से हो कर लसा तक थीं।

<sup>20</sup>यह सब हाम की औलाद हैं, जो उन के अपने अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी क्रौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

### सिम की नस्ल

<sup>21</sup>सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उस के भी बेटे पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप है।

<sup>22</sup>सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अर्फ़क्सद, लूद और अराम थे।

<sup>23</sup>अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मस थे।

<sup>24</sup>अर्फ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इबर था।

<sup>25</sup>इबर के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज यानी तक्सीम था, क्योंकि उन अय्याम में दुनिया तक्सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक्तान था।

<sup>26</sup>युक्तान के बेटे अल्मूदाद, सलफ़, हसर-मावत, इराख, <sup>27</sup>हदूराम, ऊज़ाल, दिक्ला, <sup>28</sup>ऊबाल, अबीमाएल, सबा, <sup>29</sup>ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे। यह सब युक्तान के बेटे थे। <sup>30</sup>वह मेसा से ले कर सफ़ार और मशरिक्की पहाड़ी इलाके तक आबाद थे।

<sup>31</sup>यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने

अपने मुल्क और अपनी अपनी क्रौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

<sup>32</sup>यह सब नूह के बेटों के क़बीले हैं, जो अपनी नस्लों और क्रौमों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं। सैलाब के बाद तमाम क्रौमों इन ही से निकल कर रू-ए-ज़मीन पर फैल गईं।

### बाबल का बुर्ज

**11** उस वक़्त तक पूरी दुनिया के लोग एक ही ज़बान बोलते थे। <sup>2</sup>मशरिक् की तरफ़ बढ़ते बढ़ते वह सिनआर के एक मैदान में पहुँच कर वहाँ आबाद हुए। <sup>3</sup>तब वह एक दूसरे से कहने लगे, “आओ, हम मिट्टी से ईंटें बना कर उन्हें आग में ख़ूब पकाएँ।” उन्होंने ने तामीरी काम के लिए पत्थर की जगह ईंटें और मसाले की जगह तारकोल इस्तेमाल किया। <sup>4</sup>फिर वह कहने लगे, “आओ, हम अपने लिए शहर बना लें जिस में ऐसा बुर्ज हो जो आसमान तक पहुँच जाए फिर हमारा नाम क्राइम रहेगा और हम रू-ए-ज़मीन पर बिखर जाने से बच जाएंगे।”

<sup>5</sup>लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने के लिए उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। <sup>6</sup>रब ने कहा, “यह लोग एक ही क्रौम हैं और एक ही ज़बान बोलते हैं। और यह सिर्फ़ उस का आगाज़ है जो वह करना चाहते हैं। अब से जो भी वह मिल कर करना चाहेंगे उस से उन्हें रोका नहीं जा सकेगा। <sup>7</sup>इस लिए आओ, हम दुनिया में उतर कर उन की ज़बान को दर्हम-बर्हम कर दें ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।”

<sup>8</sup>इस तरीक़े से रब ने उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर मुन्तशिर कर दिया, और शहर की तामीर रुक गई। <sup>9</sup>इस लिए शहर का नाम बाबल यानी अब्तीर ठहरा, क्योंकि रब ने वहाँ तमाम लोगों की ज़बान को दर्हम-बर्हम करके उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर मुन्तशिर कर दिया।

### सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10 यह सिम का नसबनामा है :

सिम 100 साल का था जब उस का बेटा अर्फ़क्सद पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद हुआ। 11 इस के बाद वह मज़ीद 500 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

12 अर्फ़क्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा हुआ। 13 इस के बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

14 सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ। 15 इस के बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

16 इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा हुआ। 17 इस के बाद वह मज़ीद 430 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

18 फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ। 19 इस के बाद वह मज़ीद 209 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

20 रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ। 21 इस के बाद वह मज़ीद 207 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

22 सरूज 30 साल का था जब नहूर पैदा हुआ। 23 इस के बाद वह मज़ीद 200 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

24 नहूर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ। 25 इस के बाद वह मज़ीद 119 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

26 तारह 70 साल का था जब उस के बेटे अब्राम, नहूर और हारान पैदा हुए।

27 यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहूर और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान

का बेटा था। 28 अपने बाप तारह की ज़िन्दगी में ही हारान कस्दियों के ऊर में इन्तिक़ाल कर गया जहाँ वह पैदा भी हुआ था।

29 बाकी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की बीवी का नाम सारय था और नहूर की बीवी का नाम मिल्काह। मिल्काह हारान की बेटी थी, और उस की एक बहन बनाम इस्का थी। 30 सारय बाँझ थी, इस लिए उस के बच्चे नहीं थे।

31 तारह कस्दियों के ऊर से रवाना हो कर मुल्क-ए-कनआन की तरफ़ सफ़र करने लगा। उस के साथ उस का बेटा अब्राम, उस का पोता लूत यानी हारान का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32 तारह 205 साल का था जब उस ने हारान में वफ़ात पाई।

### अब्राम की बुलाहट

**12** रब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़ कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2 मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। 3 जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमों में तुझ से बरकत पाएँगी।”

4 अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उस के साथ था। उस वक़्त अब्राम 75 साल का था। 5 उस के साथ उस की बीवी सारय और उस का भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उस ने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनआन पहुँचे। 6 अब्राम उस मुल्क में से गुज़र कर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में मुल्क में कनआनी क़ौमों आबाद थीं।

7वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उस से कहा, "मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।" इस लिए उस ने वहाँ रब की ताज़ीम में कुर्बानिगाह बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8वहाँ से वह उस पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ गया जो बैत-एल के मशरिक्क में है। वहाँ उस ने अपना ख़ैमा लगाया। मगरिब में बैत-एल था और मशरिक्क में अई। इस जगह पर भी उस ने रब की ताज़ीम में कुर्बानिगाह बनाई और रब का नाम ले कर इबादत की।

9फिर अब्राम दुबारा रवाना हो कर जुनूब के दशत-ए-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

### अब्राम मिस्र में

10उन दिनों में मुल्क-ए-कनआन में काल पड़ा। काल इतना सख्त था कि अब्राम उस से बचने की खातिर कुछ देर के लिए मिस्र में जा बसा, लेकिन परदेसी की हैसियत से। 11जब वह मिस्र की सरहद के करीब आए तो उस ने अपनी बीवी सारय से कहा, "मैं जानता हूँ कि तू कितनी खूबसूरत है। 12मिस्री तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, 'यह इस का शौहर है।' नतीजे में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे ज़िन्दा छोड़ेंगे। 13इस लिए लोगों से यह कहते रहना कि मैं अब्राम की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा सुलूक किया जाएगा और मेरी जान तेरे सबब से बच जाएगी।"

14जब अब्राम मिस्र पहुँचा तो वाक़ई मिस्रियों ने देखा कि सारय निहायत ही खूबसूरत है। 15और जब फ़िरऔन के अप्रसरान ने उसे देखा तो उन्होंने फ़िरऔन के सामने सारय की तारीफ़ की। आखिरकार उसे महल में पहुँचाया गया। 16फ़िरऔन ने सारय की खातिर अब्राम पर एहसान करके उसे भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर और ऊँट दिए।

17लेकिन रब ने सारय के सबब से फ़िरऔन और उस के घराने में सख्त क्रिस्म के अमराज़ फैलाए। 18आखिरकार फ़िरऔन ने अब्राम को

बुला कर कहा, "तू ने मेरे साथ क्या किया? तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19तू ने क्यों कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना पर मैं ने उसे घर में रख लिया ताकि उस से शादी करूँ। देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे ले कर यहाँ से निकल जा!" 20फिर फ़िरऔन ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, और उन्होंने अब्राम, उस की बीवी और पूरी मिलकियत को रुख़सत करके मुल्क से रवाना कर दिया।

### अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

**13** अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम जायदाद को साथ ले कर मिस्र से निकला और कनआन के जुनूबी इलाक़े दशत-ए-नजब में वापस आया।

2अब्राम निहायत दौलतमन्द हो गया था। उस के पास बहुत से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3वहाँ से जगह-ब-जगह चलते हुए वह आखिरकार बैत-एल से हो कर उस मक़ाम तक पहुँच गया जहाँ उस ने शुरू में अपना डेरा लगाया था और जो बैत-एल और अई के दरमियान था। 4वहाँ जहाँ उस ने कुर्बानिगाह बनाई थी उस ने रब का नाम ले कर उस की इबादत की।

5लूत के पास भी बहुत सी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और ख़ैमे थे। 6नतीजा यह निकला कि आखिरकार वह मिल कर न रह सके, क्योंकि इतनी जगह नहीं थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें। 7अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे। (उस ज़माने में कनआनी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क में आबाद थे।) 8तब अब्राम ने लूत से बात की, "ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं। 9क्या ज़रूरत है कि हम मिल कर रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझ से अलग

हो कर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।”

<sup>10</sup>लूत ने अपनी नज़र उठा कर देखा कि दरया-ए-यर्दन के पूरे इलाके में जुगर तक पानी की कसत है। वह रब के बाग़ या मुल्क-ए-मिस्र की मानिन्द था, क्योंकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह नहीं किया था। <sup>11</sup>चुनाँचे लूत ने दरया-ए-यर्दन के पूरे इलाके को चुन लिया और मशरिक़ की तरफ़ जा बसा। यूँ दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए। <sup>12</sup>अब्राम मुल्क-ए-कनआन में रहा जबकि लूत यर्दन के इलाके के शहरों के दरमियान आबाद हो गया। वहाँ उस ने अपने ख़ैमे सदूम के करीब लगा दिए। <sup>13</sup>लेकिन सदूम के बाशिन्दे निहायत शरीर थे, और उन के रब के खिलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

### रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

<sup>14</sup>लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम से कहा, “अपनी नज़र उठा कर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनुब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख। <sup>15</sup>जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। <sup>16</sup>मैं तेरी औलाद को खाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह खाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। <sup>17</sup>चुनाँचे उठ कर इस मुल्क की हर जगह चल फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

<sup>18</sup>अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उस ने अपने डेरे हब्रून के करीब मग्ने के दरख्तों के पास लगाए। वहाँ उस ने रब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई।

### अब्राम लूत को छुड़ाता है

**14** कनआन में जंग हुई। बैरून-ए-मुल्क के चार बादशाहों ने कनआन के पाँच बादशाहों से जंग की। बैरून-

ए-मुल्क के बादशाह यह थे : सिनआर से अम्राफ़िल, इल्लासर से अर्यूक, ऐलाम से किदर्लाउमर और जोइम से तिदआल।

<sup>2</sup>कनआन के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिर्शा, अदमा से सिन्याब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला यानी जुगर का बादशाह।

<sup>3</sup>कनआन के इन पाँच बादशाहों का इत्तिहाद हुआ था और वह वादी-ए-सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब सिद्दीम नहीं है, क्योंकि उस की जगह बहीरा-ए-मुर्दार आ गया है)। <sup>4</sup>किदर्लाउमर ने बारह साल तक उन पर हुकूमत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बागी हो गए थे।

<sup>5</sup>अब एक साल के बाद किदर्लाउमर और उस के इत्तिहादी अपनी फ़ौजों के साथ आए। पहले उन्होंने ने अस्तारात-क़र्नैम में रफ़ाइयों को, हाम में जूज़ियों को, सवी-किर्यताइम में ऐमियों को <sup>6</sup>और होरियों को उन के पहाड़ी इलाके सईर में शिकस्त दी। यूँ वह एल-फ़ारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर है। <sup>7</sup>फिर वह वापस आए और ऐन-मिसफ़ात यानी क़ादिस पहुँचे। उन्होंने ने अमालीक्रियों के पूरे इलाके को तबाह कर दिया और हससून-तमर में आबाद अमोरियों को भी शिकस्त दी।

<sup>8</sup>उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और बाला यानी जुगर के बादशाह उन से लड़ने के लिए सिद्दीम की वादी में जमा हुए। <sup>9</sup>इन पाँच बादशाहों ने ऐलाम के बादशाह किदर्लाउमर, जोइम के बादशाह तिदआल, सिनआर के बादशाह अम्राफ़िल और इल्लासर के बादशाह अर्यूक का मुकाबला किया। <sup>10</sup>इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब बागी बादशाह शिकस्त खा कर भागने लगे तो सदूम और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि बाकी तीन बादशाह बच कर पहाड़ी इलाके में फ़रार हुए। <sup>11</sup>फ़त्हमन्द बादशाह सदूम और अमूरा का तमाम माल तमाम खाने वाली चीज़ों समेत लूट कर वापस चल दिए। <sup>12</sup>अब्राम का

भतीजा लूत सदूम में रहता था, इस लिए वह उसे भी उस की मिलकियत समेत छीन कर साथ ले गए।

<sup>13</sup>लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इब्रानी मर्द अब्राम के पास आ कर उसे सब कुछ बता दिया। उस वक़्त वह मग्ने के दरख्तों के पास आबाद था। मग्ने अमोरी था। वह और उस के भाई इस्काल और आनेर अब्राम के इत्तिहादी थे। <sup>14</sup>जब अब्राम को पता चला कि भतीजे को गिरिफ़्तार कर लिया गया है तो उस ने अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआज़मूदा गुलामों को जमा करके दान तक दुश्मन का ताक़ुक़ब किया। उस के साथ 318 अफ़राद थे। <sup>15</sup>वहाँ उस ने अपने बन्दों को गुरोहों में तक्सीम करके रात के वक़्त दुश्मन पर हम्ला किया। दुश्मन शिकस्त खा कर भाग गया और अब्राम ने दमिश्क के शिमाल में वाक़े ख़ूबा तक उस का ताक़ुक़ब किया। <sup>16</sup>वह उन से लूटा हुआ तमाम माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें और बाक़ी क़ैदी भी दुश्मन के क़ब्ज़े से बच निकले।

### मलिक-ए-सिदक़, सालिम का बादशाह

<sup>17</sup>जब अब्राम किदर्लाउमर और उस के इत्तिहादियों पर फ़तह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का बादशाह उस से मिलने के लिए वादी-ए-सवी में आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा जाता है।) <sup>18</sup>सालिम का बादशाह मलिक-ए-सिदक़ भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले आया। मलिक-ए-सिदक़ अल्लाह तआला का इमाम था। <sup>19</sup>उस ने अब्राम को बरकत दे कर कहा, "अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है।" <sup>20</sup>अल्लाह तआला मुबारक हो जिस ने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।" अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

<sup>21</sup>सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, "मुझे मेरे लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख लें।" <sup>22</sup>लेकिन अब्राम ने उस से कहा, "मैं ने रब से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमान-ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है <sup>23</sup>कि मैं उस में से कुछ नहीं लूँगा जो आप का है, चाहे वह धागा या जूती का तस्मा ही क्यों न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, 'मैं ने अब्राम को दौलतमन्द बना दिया है।' <sup>24</sup>सिवाए उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया है मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इत्तिहादी आनेर, इस्काल और मग्ने ज़रूर अपना अपना हिस्सा लें।"

### अब्राम के साथ रब का अहद

**15** इस के बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, "अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज़्र हूँ।"

<sup>2</sup>लेकिन अब्राम ने एतिराज़ किया, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलीअज़र दमिश्की मेरी मीरास पाएगा। <sup>3</sup>तू ने मुझे औलाद नहीं बख़शी, इस लिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।" <sup>4</sup>तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। "यह आदमी इलीअज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।" <sup>5</sup>रब ने उसे बाहर ले जा कर कहा, "आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।"

<sup>6</sup>अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।

<sup>7</sup>फिर रब ने उस से कहा, "मैं रब हूँ जो तुझे कस्दियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह मुल्क मीरास में दे दूँ।" <sup>8</sup>अब्राम ने पूछा, "ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँ कि इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करूँगा?" <sup>9</sup>जवाब

में रब ने कहा, “मेरे हुजूर एक तीनसाला गाय, एक तीनसाला बकरी और एक तीनसाला मेंढा ले आ। एक कुम्भी और एक कबूतर का बच्चा भी ले आना।”<sup>10</sup> अब्राहम ने ऐसा ही किया और फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों में काट कर उन को एक दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिन्दों को उस ने सालिम रहने दिया।<sup>11</sup> शिकारी परिन्दे उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राहम उन्हें भगाता रहा।

<sup>12</sup> जब सूरज डूबने लगा तो अब्राहम पर गहरी नींद तारी हुई। उस पर दहशत और अंधेरा ही अंधेरा छा गया।<sup>13</sup> फिर रब ने उस से कहा, “जान ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उस का नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और गुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत जुल्म किया जाएगा।<sup>14</sup> लेकिन मैं उस क्रौम की अदालत करूँगा जिस ने उसे गुलाम बनाया होगा। इस के बाद वह बड़ी दौलत पा कर उस मुल्क से निकलेंगे।<sup>15</sup> तू खुद उम्रसीदा हो कर सलामती के साथ इत्तिकाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और दफ़नाया जाएगा।<sup>16</sup> तेरी औलाद की चौथी पुश्त गैरवतन से वापस आएगी, क्योंकि उस वक़्त तक मैं अमोरियों को बर्दाश्त करूँगा। लेकिन आखिरकार उन के गुनाह इतने संगीन हो जाएंगे कि मैं उन्हें मुल्क-ए-कनआन से निकाल दूँगा।”

<sup>17</sup> सूरज गुरूब हुआ। अंधेरा छा गया। अचानक एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशअल नज़र आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच में से गुज़रे।

<sup>18</sup> उस वक़्त रब ने अब्राहम के साथ अहद किया। उस ने कहा, “मैं यह मुल्क मिस्र की सरहद से फ़ुरात तक तेरी औलाद को दूँगा,<sup>19</sup> अगरचे अभी तक इस में क़ीनी, क़निज़्ज़ी, कदमूनी,<sup>20</sup> हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, रफ़ाई,<sup>21</sup> अमोरी, कनआनी, जिर्जासी और यबूसी आबाद हैं।”

## हाजिरा और इस्माईल

**16** अब तक अब्राहम की बीवी सारय के कोई बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन उन्होंने ने एक मिस्री लौंडी रखी थी जिस का नाम हाजिरा था,<sup>2</sup> और एक दिन सारय ने अब्राहम से कहा, “रब ने मुझे बच्चे पैदा करने से महरूम रखा है, इस लिए मेरी लौंडी के साथ हमबिसतर हों। शायद मुझे उस की मारिफ़त बच्चा मिल जाए।”

अब्राहम ने सारय की बात मान ली।<sup>3</sup> चुनाँचे सारय ने अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को अपने शौहर अब्राहम को दे दिया ताकि वह उस की बीवी बन जाए उस वक़्त अब्राहम को कनआन में बसते हुए दस साल हो गए थे।<sup>4</sup> अब्राहम हाजिरा से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से हो गई। जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो वह अपनी मालिकन को हक़ीर जानने लगी।<sup>5</sup> तब सारय ने अब्राहम से कहा, “जो जुल्म मुझ पर किया जा रहा है वह आप ही पर आए। मैं ने खुद इसे आप के बाजूओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ है कि उम्मीद से है तो मुझे हक़ीर जानने लगी है। रब मेरे और आप के दरमियान फ़ैसला करे।”<sup>6</sup> अब्राहम ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और तुम्हारे इख्तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उस के साथ करो।”

इस पर सारय उस से इतना बुरा सुलूक करने लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई।<sup>7</sup> रब के फ़रिश्ते को हाजिरा रेगिस्तान के उस चश्मे के क़रीब मिली जो शूर के रास्ते पर है।<sup>8</sup> उस ने कहा, “सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?” हाजिरा ने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारय से फ़रार हो रही हूँ।”<sup>9</sup> रब के फ़रिश्ते ने उस से कहा, “अपनी मालिकन के पास वापस चली जा और उस के ताबे रह।<sup>10</sup> मैं तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा सकेगा।”<sup>11</sup> रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उस का

नाम इस्माईल यानी 'अल्लाह सुनता है' रख, क्योंकि रब ने मुसीबत में तेरी आवाज़ सुनी।<sup>12</sup> वह जंगली गधे की मानिन्द होगा। उस का हाथ हर एक के खिलाफ़ और हर एक का हाथ उस के खिलाफ़ होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने आबाद रहेगा।"

<sup>13</sup>रब के उस के साथ बात करने के बाद हाजिरा ने उस का नाम अत्ता-एल-रोई यानी 'तू एक माबूद है जो मुझे देखता है' रखा। उस ने कहा, "क्या मैं ने वाकई उस के पीछे देखा है जिस ने मुझे देखा है?"<sup>14</sup> इस लिए उस जगह के कुएँ का नाम 'बैर-लही-रोई' यानी 'उस ज़िन्दा हस्ती का कुआँ जो मुझे देखता है' पड़ गया। वह क्रादिस और बरद के दरमियान वाक़े है।

<sup>15</sup>हाजिरा वापस गई, और उस के बेटा पैदा हुआ। अब्राम ने उस का नाम इस्माईल रखा।

<sup>16</sup>उस वक़्त अब्राम 86 साल का था।

### अह्द का निशान : खतना

**17** जब अब्राम 99 साल का था तो रब उस पर ज़ाहिर हुआ। उस ने कहा, "मैं अल्लाह क्रादिर-ए-मुतलक हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह और बेइज़ाम हो।<sup>2</sup> मैं तेरे साथ अपना अह्द बांधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा।"

<sup>3</sup>अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उस से कहा, <sup>4</sup>"मेरा तेरे साथ अह्द है कि तू बहुत क़ौमों का बाप होगा।<sup>5</sup> अब से तू अब्राम यानी 'अज़ीम बाप' नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी 'बहुत क़ौमों का बाप' होगा। क्योंकि मैं ने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है।<sup>6</sup> मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बख़्श दूँगा, इतनी कि क़ौमों बनेंगी। तुझ से बादशाह भी निकलेंगे।<sup>7</sup> मैं अपना अह्द तेरे और तेरी औलाद के साथ नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम करूँगा, एक अबदी अह्द जिस के मुताबिक़ मैं तेरा और तेरी औलाद का खुदा हूँगा।<sup>8</sup> तू इस वक़्त मुल्क-ए-कनआन में

परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक उन का ही रहेगा, और मैं उन का खुदा हूँगा।"

<sup>9</sup>अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "तुझे और तेरी औलाद को नस्ल-दर-नस्ल मेरे अह्द की शराइत पूरी करनी हैं।<sup>10</sup> इस की एक शर्त यह है कि हर एक मर्द का खतना किया जाए।<sup>11</sup> अपना खतना कराओ। यह हमारे आपस के अह्द का ज़ाहिरी निशान होगा।<sup>12</sup> लाज़िम है कि तू और तेरी औलाद नस्ल-दर-नस्ल अपने हर एक बेटे का आठवें दिन खतना करवाएँ। यह उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता है लेकिन तुझ से रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से खरीदा गया हो।<sup>13</sup> घर के हर एक मर्द का खतना करना लाज़िम है, ख्वाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से खरीदा गया हो। यह इस बात का निशान होगा कि मेरा तेरे साथ अह्द हमेशा तक क़ाइम रहेगा।<sup>14</sup> जिस मर्द का खतना न किया गया उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाएगा, क्योंकि उस ने मेरे अह्द की शराइत पूरी न की।"

<sup>15</sup>अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उस का नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा।<sup>16</sup> मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उस की मारिफ़त बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उस से क़ौमों बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।"

<sup>17</sup>इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल ही दिल में वह हंस पड़ा और सोचा, "यह किस तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हों बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उस की उम्र तो 90 साल है।"<sup>18</sup> उस ने अल्लाह से कहा, "हाँ, इस्माईल ही तेरे सामने जीता रहे।"

<sup>19</sup>अल्लाह ने कहा, “नहीं, तेरी बीवी सारा के हों बेटा पैदा होगा। तू उस का नाम इस्हाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखना। मैं उस के और उस की औलाद के साथ अबदी अह्द बांधूँगा। <sup>20</sup>मैं इस्माईल के सिलसिले में भी तेरी दरख्वास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत दे कर फलने फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा, और मैं उस की मारिफ़त एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा। <sup>21</sup>लेकिन मेरा अह्द इस्हाक़ के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा के हों पैदा होगा।”

<sup>22</sup>अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात खत्म हुई, और वह उस के पास से आसमान पर चला गया।

<sup>23</sup>उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया। उस ने घर के हर एक मर्द का खतना करवाया, अपने बेटे इस्माईल का भी और उन का भी जो उस के घर में रहते लेकिन उस से रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह उस के घर में पैदा हुए थे या ख़रीदे गए थे। <sup>24</sup>इब्राहीम 99 साल का था जब उस का खतना हुआ, <sup>25</sup>जबकि उस का बेटा इस्माईल 13 साल का था। <sup>26</sup>दोनों का खतना उसी दिन हुआ। <sup>27</sup>साथ साथ घराने के तमाम बाक़ी मर्दों का खतना भी हुआ, बशमूल उन के जिन का इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में पैदा हुए या किसी अजनबी से ख़रीदे गए थे।

### मग़्रे में इब्राहीम के तीन मेहमान

**18** एक दिन रब मग़्रे के दरख्तों के पास इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। इब्राहीम अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा था। दिन की गर्मी उरूज़ पर थी। <sup>2</sup>अचानक उस ने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह ख़ैमे से उन से मिलने के लिए दौड़ा और मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया। <sup>3</sup>उस ने कहा, “मेरे आक्रा, अगर मुझ पर आप के करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें

बल्कि कुछ देर अपने बन्दे के घर ठहरें। <sup>4</sup>अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँओ धो कर दरख्त के साय में आराम कर सकें। <sup>5</sup>साथ साथ मैं आप के लिए थोड़ा बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप तक़वियत पा कर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने दें, क्योंकि आप अपने खादिम के घर आ गए हैं।” उन्होंने ने कहा, “ठीक है। जो कुछ तू ने कहा है वह कर।”

<sup>6</sup>इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़ कर सारा के पास आया और कहा, “जल्दी करो! 16 किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँध कर रोटियाँ बना।” <sup>7</sup>फिर वह भाग कर बैलों के पास पहुँचा। उन में से उस ने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिस का गोशत नर्म था और उसे अपने नौकर को दिया जिस ने जल्दी से उसे तय्यार किया। <sup>8</sup>जब खाना तय्यार था तो इब्राहीम ने उसे ले कर लस्सी और दूध के साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने लगे और इब्राहीम उन के सामने दरख्त के साय में खड़ा रहा।

<sup>9</sup>उन्होंने ने पूछा, “तेरी बीवी सारा कहाँ है?” उस ने जवाब दिया, “ख़ैमे में।” <sup>10</sup>रब ने कहा, “ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”

सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उस के पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। <sup>11</sup>दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिस में औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। <sup>12</sup>इस लिए सारा अन्दर ही अन्दर हंस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे फटे लिबास की मानिन्द हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”

<sup>13</sup>रब ने इब्राहीम से पूछा, “सारा क्यूँ हंस रही है? वह क्यूँ कह रही है, ‘क्या वाक़ई मेरे हों बच्चा पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?’ <sup>14</sup>क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल के बाद मुक़र्रर वक़्त पर



में वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।”  
 15सारा डर गई। उस ने झूट बोल कर इन्कार किया, “मैं नहीं हंस रही थी।”

रब ने कहा, “नहीं, तू ज़रूर हंस रही थी।”

### इब्राहीम सदूम के लिए मित्रत करता है

16फिर मेहमान उठ कर रवाना हुए और नीचे वादी में सदूम की तरफ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें रुखसत करने के लिए साथ साथ चल रहा था। 17रब ने दिल में कहा, “मैं इब्राहीम से वह काम क्यों छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा हूँ? 18इसी से तो एक बड़ी और ताक़तवर क्रौम निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क्रौमों को बरकत दूँगा। 19उसी को मैं ने चुन लिया है ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने को हुक्म दे कि वह रब की राह पर चल कर रास्त और मुन्सिफ़ाना काम करें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा करेगा।”

20फिर रब ने कहा, “सदूम और अमूरा की बदी के बाइस लोगों की आहें बुलन्द हो रही हैं, क्योंकि उन से बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21मैं उतर कर उन के पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह इल्ज़ाम वाक़ई सच हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।”

22दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ आगे निकले जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और इब्राहीम उस के सामने खड़ा रहा। 23फिर उस ने क़रीब आ कर उस से बात की, “क्या तू रास्तबाज़ों को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24हो सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी शहर को बर्बाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब से मुआफ़ नहीं करेगा? 25यह कैसे हो सकता है कि तू बेकुसूरों को शरीरों के साथ हलाक कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे।

क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुन्सिफ़ इन्साफ़ करे?”

26रब ने जवाब दिया, “अगर मुझे शहर में 50 रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उन के सबब से तमाम को मुआफ़ कर दूँगा।”

27इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैं ने रब से बात करने की ज़ुरअत की है अगरचे मैं खाक और राख ही हूँ। 28लेकिन हो सकता है कि सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उस में हों। क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?” उस ने कहा, “अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे बर्बाद नहीं करूँगा।”

29इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, “और अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?” रब ने कहा, “मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।”

30इब्राहीम ने कहा, “रब गुस्सा न करे कि मैं एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30 हों।” उस ने जवाब दिया, “फिर भी उन्हें छोड़ दूँगा।”

31इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैं ने रब से बात करने की ज़ुरअत की है। अगर सिर्फ़ 20 पाए जाएँ?” रब ने कहा, “मैं 20 के सबब से शहर को बर्बाद करने से बाज़ रहूँगा।”

32इब्राहीम ने एक आखिरी दफ़ा बात की, “रब गुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ। शायद उस में सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।” रब ने कहा, “मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बर्बाद नहीं करूँगा।”

33इन बातों के बाद रब चला गया और इब्राहीम अपने घर को लौट आया।

### सदूम और अमूरा की तबाही

**19** शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते सदूम पहुँचे। लूत शहर के दरवाज़े पर बैठा था। जब उस ने उन्हें देखा तो खड़े हो कर उन से मिलने गया और मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया। 2उस ने कहा, “साहिबो, अपने

बन्दे के घर तश्रीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँओ धो कर रात को ठहरें और फिर कल सुबह-सवेरे उठ कर अपना सफ़र जारी रखें।" उन्होंने ने कहा, "कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।" 3लेकिन लूत ने उन्हें बहुत मजबूर किया, और आखिरकार वह उस के साथ उस के घर आए। उस ने उन के लिए खाना पकाया और बेखमीरी रोटी बनाई। फिर उन्होंने ने खाना खाया।

4वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर के जवानों से ले कर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत के घर को घेर लिया। 5उन्होंने ने आवाज़ दे कर लूत से कहा, "वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त तेरे पास आए? उन को बाहर ले आ ताकि हम उन के साथ हरामकारी करें।"

6लूत उन से मिलने बाहर गया। उस ने अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर लिया 7और कहा, "मेरे भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो। 8देखो, मेरी दो कुंवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उन के साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो, क्योंकि वह मेरे मेहमान हैं।"

9उन्होंने ने कहा, "रास्ते से हट जा! देखो, यह शख्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है। अब तेरे साथ उन से ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।" वह उसे मजबूर करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए आगे बढ़े। 10लेकिन ऐन वक़्त पर अन्दर के आदमी लूत को पकड़ कर अन्दर ले आए, फिर दरवाज़ा दुबारा बन्द कर दिया। 11उन्होंने ने छोटों से ले कर बड़ों तक बाहर के तमाम आदमियों को अंधा कर दिया, और वह दरवाज़े को ढूँडते ढूँडते थक गए।

12दोनों आदमियों ने लूत से कहा, "क्या तेरा कोई और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन कोई दामाद या बेटा-बेटी? सब को साथ ले कर यहाँ से चला जा, 13क्योंकि हम यह मक़ाम तबाह करने को हैं। इस के बाशिन्दों की बंदी के बाइस लोगों की आहें बुलन्द हो कर

रब के हुज़ूर पहुँच गई हैं, इस लिए उस ने हमें इस को तबाह करने के लिए भेजा है।"

14लूत घर से निकला और अपने दामादों से बात की जिन का उस की बेटियों के साथ रिश्ता हो चुका था। उस ने कहा, "जल्दी करो, इस जगह से निकलो, क्योंकि रब इस शहर को तबाह करने को है।" लेकिन उस के दामादों ने इसे मज़ाक़ ही समझा।

15जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने लूत को बहुत समझाया और कहा, "जल्दी कर! अपनी बीवी और दोनों बेटियों को साथ ले कर चला जा, वर्ना जब शहर को सज़ा दी जाएगी तो तू भी हलाक हो जाएगा।" 16तो भी वह झिजकता रहा। आखिरकार दोनों ने लूत, उस की बीवी और बेटियों के हाथ पकड़ कर उन्हें शहर के बाहर तक पहुँचा दिया, क्योंकि रब को लूत पर तरस आता था।

17जुँ ही वह उन्हें बाहर ले आए उन में से एक ने कहा, "अपनी जान बचा कर चला जा। पीछे मुड़ कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वर्ना तू हलाक हो जाएगा।"

18लेकिन लूत ने उन से कहा, "नहीं मेरे आक्रा, ऐसा न हो। 19तेरे बन्दे को तेरी नज़र-ए-करम हासिल हुई है और तू ने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी कर दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20देख, क़रीब ही एक छोटा क़स्बा है। वह इतना नज़दीक है कि मैं उस तरफ़ हिज़्रत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे। वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी जान बचेगी।"

21उस ने कहा, "चलो, ठीक है। तेरी यह दरख्वास्त भी मन्ज़ूर है। मैं यह क़स्बा तबाह नहीं करूँगा। 22लेकिन भाग कर वहाँ पनाह ले, क्योंकि जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।" इस लिए क़स्बे का नाम जुगार यानी छोटा है।

<sup>23</sup>जब लूत जुगार पहुँचा तो सूरज निकला हुआ था। <sup>24</sup>तब रब ने आसमान से सदूम और अमूरा पर गंधक और आग बरसाई। <sup>25</sup>यूँ उस ने उस पूरे मैदान को उस के शहरों, बाशिन्दों और तमाम हरियाली समेत तबाह कर दिया। <sup>26</sup>लेकिन फ़रार होते वक़्त लूत की बीवी ने पीछे मुड़ कर देखा तो वह फ़ौरन नमक का सतून बन गई।

<sup>27</sup>इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठ कर उस जगह वापस आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा हुआ था। <sup>28</sup>जब उस ने नीचे सदूम, अमूरा और पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का सा धुआँ उठ रहा था।

<sup>29</sup>यूँ अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब उस ने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्योंकि वह उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उन में आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

### लूत और उस की बेटियाँ

<sup>30</sup>लूत और उस की बेटियाँ ज़्यादा देर तक जुगार में न ठहरे। वह रवाना हो कर पहाड़ों में आबाद हुए, क्योंकि लूत जुगार में रहने से डरता था। वहाँ उन्होंने ने एक ग़ार को अपना घर बना लिया।

<sup>31</sup>एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “अबू बूढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिस के ज़रीए हमारे बच्चे पैदा हो सकें। <sup>32</sup>आओ, हम अबू को मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो हम उस के साथ हमबिसतर हो कर अपने लिए औलाद पैदा करें ताकि हमारी नस्ल क़ाइम रहे।”

<sup>33</sup>उस रात उन्होंने ने अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अन्दर जा कर उस के साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था इस लिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। <sup>34</sup>अगले दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, “पिछली रात मैं अबू से हमबिसतर हुई। आओ, आज रात को हम उसे दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो तुम उस के

साथ हमबिसतर हो कर अपने लिए औलाद पैदा करना ताकि हमारी नस्ल क़ाइम रहे।” <sup>35</sup>चुनाँचे उन्होंने ने उस रात भी अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी बेटी उठ कर उस के साथ हमबिसतर हुई। इस बार भी वह होश में नहीं था, इस लिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ।

<sup>36</sup>यूँ लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद से हुई। <sup>37</sup>बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उस ने उस का नाम मोआब रखा। उस से मोआबी निकले हैं। <sup>38</sup>छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उस ने उस का नाम बिन-अम्मी रखा। उस से अम्मोनी निकले हैं।

### इब्राहीम और अबीमलिक

**20** इब्राहीम वहाँ से जुनूब की तरफ़ दशत-ए-नजब में चला गया और क़ादिस और शूर के दरमियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह जिरार में ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से। <sup>2</sup>वहाँ उस ने लोगों को बताया, “सारा मेरी बहन है।” इस लिए जिरार के बादशाह अबीमलिक ने किसी को भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।

<sup>3</sup>लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़्वाब में अबीमलिक पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “मौत तेरे सर पर खड़ी है, क्योंकि जो औरत तू अपने घर ले आया है वह शादीशुदा है।”

<sup>4</sup>असल में अबीमलिक अभी तक सारा के क़रीब नहीं गया था। उस ने कहा, “मेरे आक्रा, क्या तू एक बेकुसूर क्रौम को भी हलाक करेगा? <sup>5</sup>क्या इब्राहीम ने मुझ से नहीं कहा था कि सारा मेरी बहन है? और सारा ने उस की हाँ में हाँ मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैं ने ग़लत काम नहीं किया।” <sup>6</sup>अल्लाह ने कहा, “हाँ, मैं जानता हूँ कि इस में तेरी नीयत अच्छी थी। इस लिए मैं ने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने से रोक दिया। <sup>7</sup>अब उस औरत को उस के शौहर को वापस कर दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए दुआ करेगा। फिर तू नहीं

मरेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और तेरे लोगों की मौत यक़ीनी है।”

<sup>8</sup>अबीमलिक ने सुबह-सवेरे उठ कर अपने तमाम कारिन्दों को यह सब कुछ बताया। यह सुन कर उन पर दृष्टत छा गई। <sup>9</sup>फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को बुला कर कहा, “आप ने हमारे साथ क्या किया है? मैं ने आप के साथ क्या ग़लत काम किया कि आप ने मुझे और मेरी सल्लनत को इतने संगीन जुर्म में फंसा दिया है? जो सुलूक आप ने हमारे साथ कर दिखाया है वह किसी भी शख्स के साथ नहीं करना चाहिए। <sup>10</sup>आप ने यह क्यों किया?”

<sup>11</sup>इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैं ने अपने दिल में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं रखते होंगे, इस लिए वह मेरी बीवी को हासिल करने के लिए मुझे क्रल कर देंगे। <sup>12</sup>हक़ीक़त में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे बाप की बेटी है अगरचे उस की और मेरी माँ फ़र्क़ हैं। यूँ मैं उस से शादी कर सका। <sup>13</sup>फिर जब अल्लाह ने होने दिया कि मैं अपने बाप के घराने से निकल कर इधर उधर फिरूँतो मैं ने अपनी बीवी से कहा, ‘मुझ पर यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे में कह देना कि वह मेरा भाई है।’”

<sup>14</sup>फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गुलाम और लौंडियाँ दे कर उस की बीवी सारा को उसे वापस कर दिया। <sup>15</sup>उस ने कहा, “मेरा मुल्क आप के लिए खुला है। जहाँ जी चाहे उस में जा बसों।” <sup>16</sup>सारा से उस ने कहा, “मैं आप के भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के देता हूँ। इस से आप और आप के लोगों के सामने आप के साथ किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला हो और आप को बेकुसूर करार दिया जाए।”

<sup>17-18</sup>तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी और उस की लौंडियों को शिफ़ा दी, क्योंकि रब

ने अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को सारा के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन अब उन के हाँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

### इस्हाक़ की पैदाइश

**21** तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उस ने फ़रमाया था। जो वादा उस ने सारा के बारे में किया था उसे उस ने पूरा किया। <sup>2</sup>वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था।

<sup>3</sup>इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इस्हाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखा। <sup>4</sup>जब इस्हाक़ आठ दिन का था तो इब्राहीम ने उस का ख़तना कराया, जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। <sup>5</sup>जब इस्हाक़ पैदा हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल का था। <sup>6</sup>सारा ने कहा, “अल्लाह ने मुझे हंसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हंसेगा। <sup>7</sup>इस से पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुरअत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।”

<sup>8</sup>इस्हाक़ बड़ा होता गया। जब उस का दूध छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उस के लिए बड़ी ज़ियाफ़त की।

### इब्राहीम हाजिरा और इस्माईल को निकाल देता है

<sup>9</sup>एक दिन सारा ने देखा कि मिस्री लौंडी हाजिरा का बेटा इस्माईल इस्हाक़ का मज़ाक़ उड़ा रहा है। <sup>10</sup>उस ने इब्राहीम से कहा, “इस लौंडी और उस के बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि वह मेरे बेटे इस्हाक़ के साथ मीरास नहीं पाएगा।”

<sup>11</sup>इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी। आखिर इस्माईल भी उस का बेटा था। <sup>12</sup>लेकिन अल्लाह ने उस से कहा, “जो बात

सारा ने अपनी लौंडी और उस के बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्योंकि तेरी नस्ल इस्हाक़ ही से क्राइम रहेगी।<sup>13</sup> लेकिन मैं इस्माइल से भी एक क्रौम बनाऊँगा, क्योंकि वह तेरा बेटा है।”

<sup>14</sup>इब्राहीम सुबह-सवेरे उठा। उस ने रोटी और पानी की मशक हाजिरा के कंधों पर रख कर उसे लड़के के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर उधर फिरने लगी।<sup>15</sup> फिर पानी खत्म हो गया। हाजिरा लड़के को किसी झाड़ी के नीचे छोड़ कर<sup>16</sup> कोई 300 फुट दूर बैठ गई। क्योंकि उस ने दिल में कहा, “मैं उसे मरते नहीं देख सकती।” वह वहाँ बैठ कर रोने लगी।

<sup>17</sup>लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आसमान पर से पुकार कर हाजिरा से बात की, “हाजिरा, क्या बात है? मत डर, क्योंकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है।<sup>18</sup> उठ, लड़के को उठा कर उस का हाथ थाम ले, क्योंकि मैं उस से एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा।”

<sup>19</sup>फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं, और उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ गई और मशक को पानी से भर कर लड़के को पिलाया।

<sup>20</sup>अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ और तीरअन्दाज़ बन कर बयाबान में रहने लगा।<sup>21</sup> जब वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ ने उसे एक मिस्री औरत से ब्याह दिया।

### अबीमलिक के साथ अहद

<sup>22</sup>उन दिनों में अबीमलिक और उस के सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, “जो कुछ भी आप करते हैं अल्लाह आप के साथ है।<sup>23</sup> अब मुझ से अल्लाह की क्रसम खाएँ कि आप मुझे और मेरी आल-ओ-औलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और

इस मुल्क पर जिस में आप परदेसी हैं वही मेहरबानी करें जो मैं ने आप पर की है।”

<sup>24</sup>इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैं क्रसम खाता हूँ।”<sup>25</sup> फिर उस ने अबीमलिक से शिकायत करते हुए कहा, “आप के बन्दों ने हमारे एक कुएँ पर क़ब्ज़ा कर लिया है।”<sup>26</sup> अबीमलिक ने कहा, “मुझे नहीं मालूम कि किस ने ऐसा किया है। आप ने भी मुझे नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा हूँ।”

<sup>27</sup>तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ अहद बांधा।<sup>28</sup> फिर इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को अलग कर लिया।<sup>29</sup> अबीमलिक ने पूछा, “आप ने यह क्यों किया?”<sup>30</sup> इब्राहीम ने जवाब दिया, “भेड़ के इन सात बच्चों को मुझ से ले लें। यह इस के गवाह हों कि मैं ने इस कुएँ को खोदा है।”<sup>31</sup> इस लिए उस जगह का नाम बैर-सबा यानी ‘क्रसम का कुआँ’ रखा गया, क्योंकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने क्रसम खाई।

<sup>32</sup>यूँ उन्होंने ने बैर-सबा में एक दूसरे से अहद बांधा। फिर अबीमलिक और फ़ीकुल फ़िलिस्तियों के मुल्क वापस चले गए।<sup>33</sup> इस के बाद इब्राहीम ने बैर-सबा में झाओ का दरखत लगाया। वहाँ उस ने रब का नाम ले कर उस की इबादत की जो अबदी खुदा है।<sup>34</sup> इब्राहीम बहुत असें तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

### इब्राहीम की आजमाइश

**22** कुछ असें के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आजमाया। उस ने उस से कहा, “इब्राहीम!” उस ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।”<sup>2</sup> अल्लाह ने कहा, “अपने इक्लौते बेटे इस्हाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ ले कर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर

अपने बेटे को कुर्बान कर दे। उसे ज़बह करके कुर्बानगाह पर जला देना।”

<sup>3</sup>सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उस ने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इस्हाक़ को लिया। फिर वह कुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ी काट कर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। <sup>4</sup>सफ़र करते करते तीसरे दिन कुर्बानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। <sup>5</sup>उस ने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जा कर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएंगे।”

<sup>6</sup>इब्राहीम ने कुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इस्हाक़ के कंधों पर रख दीं और खुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बर्तन उठाया। दोनों चल दिए। <sup>7</sup>इस्हाक़ बोला, “अबू!” इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।” “अबू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन कुर्बानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?” <sup>8</sup>इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह खुद कुर्बानी के लिए जानवर मुहय्या करेगा, बेटा।” वह आगे बढ़ गए।

<sup>9</sup>चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ कुर्बानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उस ने इस्हाक़ को बांध कर लकड़ियों पर रख दिया <sup>10</sup>और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। <sup>11</sup>ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” <sup>12</sup>फ़रिश्ते ने कहा, “अपने बेटे पर हाथ न चला, न उस के साथ कुछ कर। अब मैं ने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इक्लौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तय्यार है।”

<sup>13</sup>अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिस के सींग गुंजान झाड़ियों में फंसे

हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह कुर्बानी के तौर पर जला दिया।

<sup>14</sup>उस ने उस मक़ाम का नाम “रब मुहय्या करता है” रखा। इस लिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़ पर मुहय्या किया जाता है।”

<sup>15</sup>रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकार कर उस से बात की। <sup>16</sup>“रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क्रसम, चूँकि तू ने यह किया और अपने इक्लौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तय्यार था <sup>17</sup>इस लिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। <sup>18</sup>चूँकि तू ने मेरी सुनी इस लिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क्रौमैं बरकत पाएँगी।”

<sup>19</sup>इस के बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास वापस आया, और वह मिल कर बैर-सबा लौटे। वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।

<sup>20</sup>इन वाक़िआत के बाद इब्राहीम को इत्तिला मिली, “आप के भाई नहूर की बीवी मिल्काह के हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं।” <sup>21</sup>उस के पहलौठे ऊज़ के बाद बूज़, क्रमूएल (अराम का बाप), <sup>22</sup>कसद, हज़ू, फ़िल्दास, इद्लाफ़ और बतूएल पैदा हुए हैं।” <sup>23</sup>मिल्काह और नहूर के हाँ यह आठ बेटे पैदा हुए। (बतूएल रिबका का बाप था)। <sup>24</sup>नहूर की हरम का नाम रूमा था। उस के हाँ भी बेटे पैदा हुए जिन के नाम तिबख, जाहम, तख़स और माका हैं।

### सारा की वफ़ात

**23** सारा 127 साल की उम्र में हब्रून में इन्तिक़ाल कर गई। <sup>2</sup>उस ज़माने में हब्रून का नाम क्रियत-अर्बा था, और वह मुल्क-ए-कनआन में था। इब्राहीम ने उस के पास आ कर मातम किया। <sup>3</sup>फिर वह जनाज़े के पास से उठा और हित्तियों से बात की। उस ने कहा, <sup>4</sup>“मैं आप के दरमियान परदेसी और

ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे क्रब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न कर सकूँ।” 5-6 हित्तियों ने जवाब दिया, “हमारे आक्रा, हमारी बात सुनें! आप हमारे दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को हमारी बेहतरीन क्रब्र में दफ़न करें। हम में से कोई नहीं जो आप से अपनी क्रब्र का इन्कार करेगा।”

7 इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिन्दों यानी हित्तियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8 उस ने कहा, “अगर आप इस के लिए तय्यार हैं कि मैं अपनी बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न करूँ तो सुहर के बेटे इफ़्रोन से मेरी सिफ़ारिश करें 9 कि वह मुझे मक्फ़ीला का ग़ार बेच दे। वह उस का है और उस के खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी क़ीमत देने के लिए तय्यार हूँ ताकि आप के दरमियान रहते हुए मेरे पास क्रब्र भी हो।”

10 इफ़्रोन हित्तियों की जमाअत में मौजूद था। इब्राहीम की दरख्वास्त पर उस ने उन तमाम हित्तियों के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थे जवाब दिया, 11 “नहीं, मेरे आक्रा! मेरी बात सुनें। मैं आप को यह खेत और उस में मौजूद ग़ार दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आप को देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर दें।”

12 इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिन्दों के सामने अदबन झुक गया। 13 उस ने सब के सामने इफ़्रोन से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें। मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क्रबूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।” 14-15 इफ़्रोन ने जवाब दिया, “मेरे आक्रा, सुनें। इस ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के है।<sup>a</sup> आप के और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफ़न कर दें।”

16 इब्राहीम ने इफ़्रोन की मतलूबा क़ीमत मान ली और सब के सामने चाँदी के 400

सिक्के तोल कर इफ़्रोन को दे दिए। इस के लिए उस ने उस वक़्त के राइज बाट इस्तेमाल किए। 17 चुनाँचे मक्फ़ीला में इफ़्रोन की ज़मीन इब्राहीम की मिलकियत हो गई। यह ज़मीन मग्ने के मशरिक् में थी। उस में खेत, खेत का ग़ार और खेत की हुदूद में मौजूद तमाम दरख़्त शामिल थे। 18 हित्तियों की पूरी जमाअत ने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थी ज़मीन के इन्तिक़ाल की तस्दीक़ की। 19 फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्क-ए-कनआन के उस ग़ार में दफ़न किया जो मग्ने यानी हब्रून के मशरिक् में वाक़े मक्फ़ीला के खेत में था। 20 इस तरीक़े से यह खेत और उस का ग़ार हित्तियों से इब्राहीम के नाम पर मुन्तक़िल कर दिया गया ताकि उस के पास क्रब्र हो।

### इस्हाक़ और रिबका

**24** इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी थी। 2 एक दिन उस ने अपने घर के सब से बुजुर्ग़ नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इन्तिज़ाम चलाता था बात की। “क्रसम के लिए अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखो। 3 रब की क्रसम खाओ जो आसमान-ओ-ज़मीन का खुदा है कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 4 बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन ही में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” 5 उस के नौकर ने कहा, “शायद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आप के बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिस से आप निकले हैं?” 6 इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार! उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। 7 रब जो आसमान का खुदा है अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इस लिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर कामयाब होगे। क्यूँकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे वतन

<sup>a</sup>तक़रीबन साढ़े चार किलोग्राम चाँदी।

से यहाँ ले आया है, और उसी ने क्रसम खा कर मुझे से वादा किया है कि मैं कनआन का यह मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8 अगर वहाँ की औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क्रसम से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे को वहाँ वापस न ले जाना।”

9 इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की रान के नीचे रख कर क्रसम खाई कि मैं सब कुछ ऐसा ही करूँगा। 10 फिर वह अपने आक्रा के दस ऊँटों पर क्रीमती तोहफ़े लाद कर मसोपुतामिया की तरफ़ रवाना हुआ। चलते चलते वह नहूर के शहर पहुँच गया।

11 उस ने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें कुएँ के पास आ कर पानी भर्ती थीं। 12 फिर उस ने दुआ की, “ऐ रब मेरे आक्रा इब्राहीम के खुदा, मुझे आज कामयाबी बरख़्श और मेरे आक्रा इब्राहीम पर मेहरबानी कर। 13 अब मैं इस चश्मे पर खड़ा हूँ, और शहर की बेटियाँ पानी भरने के लिए आ रही हैं। 14 मैं उन में से किसी से कहूँगा, ‘ज़रा अपना घड़ा नीचे करके मुझे पानी पिलाएँ।’ अगर वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी जिसे तू ने अपने खादिम इस्हाक़ के लिए चुन रखा है। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तू ने मेरे आक्रा पर मेहरबानी की है।”

15 वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिबका शहर से निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह बतूल की बेटि थी (बतूल इब्राहीम के भाई नहूर की बीवी मिल्काह का बेटा था)। 16 रिबका निहायत खूबसूरत जवान लड़की थी, और वह कुंवारी भी थी। वह चश्मे तक उतरी, अपना घड़ा भरा और फिर वापस ऊपर आई।

17 इब्राहीम का नौकर दौड़ कर उस से मिला। उस ने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा सा पानी पिलाएँ।” 18 रिबका ने कहा, “जनाब, पी लें।” जल्दी से उस ने अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर हाथ में पकड़ा

ताकि वह पी सके। 19 जब वह पीने से फ़ारिग़ हुआ तो रिबका ने कहा, “मैं आप के ऊँटों के लिए भी पानी ले आती हूँ। वह भी पूरे तौर पर अपनी प्यास बुझाएँ।” 20 जल्दी से उस ने अपने घड़े का पानी हौज़ में उंडेल दिया और फिर भाग कर कुएँ से इतना पानी लाती रही कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।

21 इतने में इब्राहीम का आदमी खामोशी से उसे देखता रहा, क्योंकि वह जानना चाहता था कि क्या रब मुझे सफ़र की कामयाबी बरख़्शेगा या नहीं। 22 ऊँट पानी पीने से फ़ारिग़ हुए तो उस ने रिबका को सोने की एक नथ और दो कंगन दिए। नथ का वज़न तकरीबन 6 ग्राम था और कंगनों का 120 ग्राम।

23 उस ने पूछा, “आप किस की बेटि हैं? क्या उस के हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुज़ार सकें?”

24 रिबका ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतूल है। वह नहूर और मिल्काह का बेटा है। 25 हमारे पास भूसा और चारा है। रात गुज़ारने के लिए भी काफ़ी जगह है।” 26 यह सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिज्दा किया। 27 उस ने कहा, “मेरे आक्रा इब्राहीम के खुदा की तम्ज़ीद हो जिस के करम और वफ़ादारी ने मेरे आक्रा को नहीं छोड़ा। रब ने मुझे सीधा मेरे मालिक के रिश्तेदारों तक पहुँचाया है।”

28 लड़की भाग कर अपनी माँ के घर चली गई। वहाँ उस ने सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 29-30 जब रिबका के भाई लाबन ने नथ और बहन की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिबका को बताया था तो वह फ़ौरन कुएँ की तरफ़ दौड़ा।

इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ खड़ा था। 31 लाबन ने कहा, “रब के मुबारक बन्दे, मेरे साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यों खड़े हैं? मैं ने अपने घर में आप के लिए सब कुछ तय्यार किया है। आप के ऊँटों के लिए भी काफ़ी जगह है।” 32 वह



नौकर को ले कर घर पहुँचा। ऊँटों से सामान उतारा गया, और उन को भूसा और चारा दिया गया। पानी भी लाया गया ताकि इब्राहीम का नौकर और उस के आदमी अपने पाँओ धोएँ।

33लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के नौकर ने कहा, “इस से पहले कि मैं खाना खाऊँ लाज़िम है कि अपना मुआमला पेश करूँ।” लाबन ने कहा, “बताएँ अपनी बात।” 34उस ने कहा, “मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35रब ने मेरे आक्रा को बहुत बरकत दी है। वह बहुत अमीर बन गया है। रब ने उसे कस्रत से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, सोना-चाँदी, गुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे दिए हैं। 36जब मेरे मालिक की बीवी बूढ़ी हो गई थी तो उस के बेटा पैदा हुआ था। इब्राहीम ने उसे अपनी पूरी मिलकियत दे दी है। 37लेकिन मेरे आक्रा ने मुझ से कहा, ‘क्रसम खाओ कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38बल्कि मेरे बाप के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर उस के लिए बीवी लाओगे।’ 39मैं ने अपने मालिक से कहा, ‘शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।’ 40उस ने कहा, ‘रब जिस के सामने मैं चलता रहा हूँ अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें कामयाबी बख्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी। 41लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ और वह इन्कार करें तो फिर तुम अपनी क्रसम से आज़ाद होगे।’ 42आज जब मैं कुएँ के पास आया तो मैं ने दुआ की, ‘ऐ रब, मेरे आक्रा के खुदा, अगर तेरी मर्ज़ी हो तो मुझे इस मिशन में कामयाबी बख्श जिस के लिए मैं यहाँ आया हूँ। 43अब मैं इस कुएँ के पास खड़ा हूँ। जब कोई जवान औरत शहर से निकल कर यहाँ आए तो मैं उस से कहूँगा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा सा पानी पिलाएँ।” 44अगर वह कहे, “पी लें, मैं आप के ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी” तो इस का मतलब यह हो

कि तू ने उसे मेरे आक्रा के बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन जाए।’

45मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि रिबका शहर से निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर लिया। मैं ने उस से कहा, ‘ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।’ 46जवाब में उस ने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर कहा, ‘पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिलाती हूँ।’ मैं ने पानी पिया, और उस ने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47फिर मैं ने उस से पूछा, ‘आप किस की बेटा हैं?’ उस ने जवाब दिया, ‘मेरा बाप बतूल है। वह नहर और मिल्काह का बेटा है।’ फिर मैं ने उस की नाक में नथ और उस की कलाइयों में कंगन पहना दिए। 48तब मैं ने रब को सिज्दा करके अपने आक्रा इब्राहीम के खुदा की तम्जीद की जिस ने मुझे सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि वह इस्हाक़ की बीवी बन जाए।

49अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आक्रा पर अपनी मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़हार करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो रिबका की इस्हाक़ के साथ शादी क़बूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़ नहीं हैं तो मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और क़दम उठा सकूँ।”

50लाबन और बतूल ने जवाब दिया, “यह बात रब की तरफ़ से है, इस लिए हम किसी तरह भी इन्कार नहीं कर सकते। 51रिबका आप के सामने है। उसे ले जाएँ। वह आप के मालिक के बेटे की बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फ़रमाया है।” 52यह सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिज्दा किया। 53फिर उस ने सोने और चाँदी के ज़ेवरात और महंगे मल्बूसात अपने सामान में से निकाल कर रिबका को दिए। रिबका के भाई और माँ को भी क़ीमती तोहफ़े मिले।

54इस के बाद उस ने अपने हमसफ़रों के साथ शाम का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे। अगले दिन जब उठे तो नौकर ने कहा,

“अब हमें इजाज़त दें ताकि अपने आक्रा के पास लौट जाएँ।” 55 रिब्का के भाई और माँ ने कहा, “रिब्का कुछ दिन और हमारे हाँ ठहरे। फिर आप जाएँ।” 56 लेकिन उस ने उन से कहा, “अब देर न करें, क्योंकि रब ने मुझे मेरे मिशन में कामयाबी बख्शी है। मुझे इजाज़त दें ताकि अपने मालिक के पास वापस जाऊँ।” 57 उन्होंने ने कहा, “चलो, हम लड़की को बुला कर उसी से पूछ लेते हैं।”

58 उन्होंने ने रिब्का को बुला कर उस से पूछा, “क्या तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती है?” उस ने कहा, “जी, मैं जाना चाहती हूँ।” 59 चुनाँचे उन्होंने ने अपनी बहन रिब्का, उस की दाया, इब्राहीम के नौकर और उस के हमसफ़रों को रूखसत कर दिया। 60 पहले उन्होंने ने रिब्का को बरकत दे कर कहा, “हमारी बहन, अल्लाह करे कि तू करोड़ों की माँ बने। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करे।” 61 फिर रिब्का और उस की नौकरानियाँ उठ कर ऊँटों पर सवार हुई और इब्राहीम के नौकर के पीछे हो लीं। चुनाँचे नौकर उन्हें साथ ले कर रवाना हो गया।

62 उस वक़्त इस्हाक़ मुल्क के जुनूबी हिस्से, दशत-ए-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से आया था। 63 एक शाम वह निकल कर खुले मैदान में अपनी सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक ऊँट उस की तरफ़ आते हुए नज़र आए। 64 जब रिब्का ने अपनी नज़र उठा कर इस्हाक़ को देखा तो उस ने ऊँट से उतर कर 65 नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन है जो मैदान में हम से मिलने आ रहा है?” नौकर ने कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुन कर रिब्का ने चादर ले कर अपने चेहरे को ढाँप लिया।

66 नौकर ने इस्हाक़ को सब कुछ बता दिया जो उस ने किया था। 67 फिर इस्हाक़ रिब्का को अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। उस ने उस से शादी की, और वह उस की बीवी बन गई। इस्हाक़ के दिल में उस के लिए बहुत मुहब्बत

पैदा हुई। यूँ उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

### इब्राहीम की मज़ीद औलाद

**25** इब्राहीम ने एक और शादी की। नई बीवी का नाम क़तूरा था। 2 क़तूरा के छः बेटे पैदा हुए, ज़िम्नान, युक्सान, मिदान, मिदियान, इस्बाक़ और सूख। 3 युक्सान के दो बेटे थे, सबा और ददान। असूरी, लतूसी और लूमी ददान की औलाद हैं। 4 मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। यह सब क़तूरा की औलाद थे।

5 इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत इस्हाक़ को दे दी। 6 अपनी मौत से पहले उस ने अपनी दूसरी बीवियों के बेटों को तोहफ़े दे कर अपने बेटे से दूर मशरिफ़ की तरफ़ भेज दिया।

### इब्राहीम की वफ़ात

7-8 इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ। ग़रज़ वह बहुत उम्रसीदा और ज़िन्दगी से आसूदा हो कर इन्तिकाल करके अपने बापदादा से जा मिला। 9-10 उस के बेटों इस्हाक़ और इस्माईल ने उसे मक्फ़ीला के ग़ार में दफ़न किया जो मग्ने के मशरिफ़ में है। यह वही ग़ार था जिसे खेत समेत हिती आदमी इफ़्रोन बिन सुहर से ख़रीदा गया था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को उस में दफ़न किया गया।

11 इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने इस्हाक़ को बरकत दी। उस वक़्त इस्हाक़ बैर-लही-रोई के क़रीब आबाद था।

### इस्माईल की औलाद

12 इब्राहीम का बेटा इस्माईल जो सारा की मिस्री लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उस का नसबनामा यह है। 13 इस्माईल के बेटे बड़े से ले कर छोटे तक यह हैं : नबायोत, क़ीदार,

अदबिएल, मिब्सां, <sup>14</sup>मिशमा, दूमा, मस्सा, <sup>15</sup>हदद, तैमा, यतूर, नफ्रीस और क्रिदमा।

<sup>16</sup>यह बेटे बारह क़बीलों के बानी बन गए, और जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही नाम पड़ गया। <sup>17</sup>इस्माईल 137 साल का था जब वह कूच करके अपने बापदादा से जा मिला। <sup>18</sup>उस की औलाद उस इलाक़े में आबाद थी जो हवीला और शूर के दरमियान है और जो मिस्र के मशरिफ़ में असूर की तरफ़ है। यूँ इस्माईल अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

### एसौ और याकूब की पैदाइश

<sup>19</sup>यह इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ का बयान है। <sup>20</sup>इस्हाक़ 40 साल का था जब उस की रिबका से शादी हुई। रिबका लाबन की बहन और अरामी मर्द बतूएल की बेटी थी (बतूएल मसोपुतामिया का था)। <sup>21</sup>रिबका के बच्चे पैदा न हुए। लेकिन इस्हाक़ ने अपनी बीवी के लिए दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिबका उम्मीद से हुई। <sup>22</sup>उस के पेट में बच्चे एक दूसरे से ज़ोरआज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने गई, “अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं यहाँ तक क्यों पहुँच गई हूँ?” <sup>23</sup>रब ने उस से कहा, “तेरे अन्दर दो क़ौमें हैं। वह तुझ से निकल कर एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उन में से एक ज़्यादा ताक़तवर होगी, और बड़ा छोटे की खिदमत करेगा।”

<sup>24</sup>पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे पैदा हुए। <sup>25</sup>पहला बच्चा निकला तो सुर्ख़ सा था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों का कोट ही पहने हुए है। इस लिए उस का नाम एसौ यानी ‘बालों वाला’ रखा गया। <sup>26</sup>इस के बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एड़ी पकड़े हुए निकला, इस लिए उस का नाम याकूब यानी ‘एड़ी पकड़ने वाला’ रखा गया। उस वक़्त इस्हाक़ 60 साल का था।

<sup>27</sup>लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था।

उस के मुकाबले में याकूब शाइस्ता था और डेरे में रहना पसन्द करता था। <sup>28</sup>इस्हाक़ एसौ को प्यार करता था, क्योंकि वह शिकार का गोशत पसन्द करता था। लेकिन रिबका याकूब को प्यार करती थी।

<sup>29</sup>एक दिन याकूब सालन पका रहा था कि एसौ थकाहारा जंगल से आया। <sup>30</sup>उस ने कहा, “मुझे जल्दी से लाल सालन, हॉ इसी लाल सालन से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी लिए बाद में उस का नाम अदोम यानी सुर्ख़ पड़ गया।) <sup>31</sup>याकूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौठे का हक़ बेच दो।” <sup>32</sup>एसौ ने कहा, “मैं तो भूक से मर रहा हूँ, पहलौठे का हक़ मेरे किस काम का?” <sup>33</sup>याकूब ने कहा, “पहले क़सम खा कर मुझे यह हक़ बेच दो।” एसौ ने क़सम खा कर उसे पहलौठे का हक़ मुन्तक़िल कर दिया।

<sup>34</sup>तब याकूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी, और एसौ ने ख़ाया और पिया। फिर वह उठ कर चला गया। यूँ उस ने पहलौठे के हक़ को हक़ीर जाना।

### इस्हाक़ और रिबका जिरार में

**26** उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा, जिस तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़ गया था। इस्हाक़ जिरार शहर गया जिस पर फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक की हुकूमत थी। <sup>2</sup>रब ने इस्हाक़ पर ज़ाहिर हो कर कहा, “मिस्र न जा बल्कि उस मुल्क में बस जो मैं तुझे दिखाता हूँ। <sup>3</sup>उस मुल्क में अजनबी रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बरकत दूँगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह तमाम इलाक़ा दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने क़सम खा कर तेरे बाप इब्राहीम से किया था। <sup>4</sup>मैं तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने आसमान पर सितारे हैं। और मैं यह तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी। <sup>5</sup>मैं तुझे इस लिए बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और

मेरी हिदायात और अहकाम पर चलता रहा।”  
 6चुनाँचे इस्हाक़ जिरार में आबाद हो गया।

7जब वहाँ के मर्दों ने रिबका के बारे में पूछा तो इस्हाक़ ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्योंकि उस ने सोचा, “रिबका निहायत खूबसूरत है। अगर उन्हें मालूम हो जाए कि रिबका मेरी बीवी है तो वह उसे हासिल करने की खातिर मुझे क्रल्ल कर देंगे।”

8काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन फ़िलिस्तियों के बादशाह ने अपनी खिड़की में से झाँक कर देखा कि इस्हाक़ अपनी बीवी को प्यार कर रहा है। 9उस ने इस्हाक़ को बुला कर कहा, “वह तो आप की बीवी है! आप ने क्यों कहा कि मेरी बहन है?” इस्हाक़ ने जवाब दिया, “मैं ने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह मेरी बीवी है तो लोग मुझे क्रल्ल कर देंगे।”

10अबीमलिक ने कहा, “आप ने हमारे साथ कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी से मेरे आदमियों में से कोई आप की बीवी से हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आप के सबब से एक बड़े जुर्म के कूसूरवार ठहरते।”  
 11फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुकम दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को छेड़े उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

### इस्हाक़ का फ़िलिस्तियों के साथ झगड़ा

12इस्हाक़ ने उस इलाक़े में काश्तकारी की, और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यूँ रब ने उसे बरकत दी, 13और वह अमीर हो गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमन्द हो गया। 14उस के पास इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गुलाम थे कि फ़िलिस्ती उस से हसद करने लगे। 15अब ऐसा हुआ कि उन्होंने ने उन तमाम कुओं को मिट्टी से भर कर बन्द कर दिया जो उस के बाप के नौकरों ने खोदे थे।

16आख़िरकार अबीमलिक ने इस्हाक़ से कहा, “कहीं और जा कर रहें, क्योंकि आप हम से ज़्यादा ज़ोर-आवर हो गए हैं।”

17चुनाँचे इस्हाक़ ने वहाँ से जा कर जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18वहाँ फ़िलिस्तियों ने इब्राहीम की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इस्हाक़ ने उन को दुबारा खुदवाया। उस ने उन के वही नाम रखे जो उस के बाप ने रखे थे।

19इस्हाक़ के नौकरों को वादी में खोदते खोदते ताज़ा पानी मिल गया। 20लेकिन जिरार के चरवाहे आ कर इस्हाक़ के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्होंने ने कहा, “यह हमारा कुआँ है!” इस लिए उस ने उस कुएँ का नाम इसक यानी झगड़ा रखा। 21इस्हाक़ के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ, इस लिए उस ने उस का नाम सितना यानी मुखालफ़त रखा। 22वहाँ से जा कर उस ने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफ़ा कोई झगड़ा न हुआ, इस लिए उस ने उस का नाम रहोबोत यानी ‘खुली जगह’ रखा। क्योंकि उस ने कहा, “रब ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें फूलेंगे।”

23वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24उसी रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “मैं तेरे बाप इब्राहीम का खुदा हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बरकत दूँगा और तुझे अपने खादिम इब्राहीम की खातिर बहुत औलाद दूँगा।”

25वहाँ इस्हाक़ ने कुर्बानगह बनाई और रब का नाम ले कर इबादत की। वहाँ उस ने अपने खैमे लगाए और उस के नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

### अबीमलिक के साथ अहद

26एक दिन अबीमलिक, उस का साथी अखूज़त और उस का सिपहसालार फ़ीकुल जिरार से उस के पास आए। 27इस्हाक़ ने पूछा, “आप क्यों मेरे पास आए हैं? आप तो मुझ

से नफ़रत रखते हैं। क्या आप ने मुझे अपने दरमियान से खारिज नहीं किया था?" 28उन्होंने जवाब दिया, "हम ने जान लिया है कि रब आप के साथ है। इस लिए हम ने कहा कि हमारा आप के साथ अहद होना चाहिए। आइए हम क्रसम खा कर एक दूसरे से अहद बांधें 29कि आप हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे, क्योंकि हम ने भी आप को नहीं छोड़ा बल्कि आप से सिर्फ अच्छा सुलूक किया और आप को सलामती के साथ रुखसत किया है। और अब ज़ाहिर है कि रब ने आप को बरकत दी है।"

30इस्हाक़ ने उन की ज़ियाफ़त की, और उन्होंने ने खाया और पिया। 31फिर सुबह-सवेरे उठ कर उन्होंने ने एक दूसरे के सामने क्रसम खाई। इस के बाद इस्हाक़ ने उन्हें रुखसत किया और वह सलामती से रवाना हुए।

32उसी दिन इस्हाक़ के नौकर आए और उसे उस कुएँ के बारे में इत्तिला दी जो उन्होंने ने खोदा था। उन्होंने ने कहा, "हमें पानी मिल गया है।" 33उस ने कुएँ का नाम सबा यानी 'क्रसम' रखा। आज तक साथ वाले शहर का नाम बैर-सबा है।

### एसौ की अजनबी बीवियाँ

34जब एसौ 40 साल का था तो उस ने दो हिन्ती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहूदित से और ऐलोन की बेटी बासमत से। 35यह औरतें इस्हाक़ और रिबका के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

### इस्हाक़ याक़ूब को बरकत देता है

**27** इस्हाक़ बूढ़ा हो गया तो उस की नज़र धुन्दला गई। उस ने अपने बड़े बेटे को बुला कर कहा, "बेटा।" एसौ ने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 2इस्हाक़ ने कहा, "मैं बूढ़ा हो गया हूँ और खुदा जाने कब मर जाऊँ। 3इस लिए अपना तीर कमान ले कर जंगल में निकल जा और मेरे लिए किसी

जानवर का शिकार कर। 4उसे तय्यार करके ऐसा लज़ीज़ खाना पका जो मुझे पसन्द है। फिर उसे मेरे पास ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खा कर तुझे बरकत देना चाहता हूँ।"

5रिबका ने इस्हाक़ की एसौ के साथ बातचीत सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला गया तो उस ने याक़ूब से कहा, 6"अभी अभी मैं ने तुम्हारे अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना कि 7'मेरे लिए किसी जानवर का शिकार करके ले आ। उसे तय्यार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना पका। मरने से पहले मैं यह खाना खा कर तुझे रब के सामने बरकत देना चाहता हूँ। 8अब सुनो, मेरे बेटे! जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9जा कर रेवड़ में से बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो। फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे अब्बू को पसन्द है। 10तुम यह खाना उस के पास ले जाओगे तो वह उसे खा कर मरने से पहले तुम्हें बरकत देगा।"

11लेकिन याक़ूब ने एतिराज़ किया, "आप जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं जबकि मेरे बाल कम हैं। 12कहीं मुझे छूने से मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फ़रेब दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत नहीं बल्कि लानत आएगी।" 13उस की माँ ने कहा, "तुम पर आने वाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह बच्चे ले आओ।"

14चुनाँचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास ले आया। रिबका ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया जो याक़ूब के बाप को पसन्द था। 15एसौ के खास मौक़ों के लिए अच्छे लिबास रिबका के पास घर में थे। उस ने उन में से बेहतरीन लिबास चुन कर अपने छोटे बेटे को पहना दिया। 16साथ साथ उस ने बकरियों की खालें उस के हाथों और गर्दन पर जहाँ बाल न थे लपेट दीं। 17फिर उस ने अपने बेटे याक़ूब

को रोटी और वह लज़ीज़ खाना दिया जो उस ने पकाया था।

18याकूब ने अपने बाप के पास जा कर कहा, “अब्बू जी।” इस्हाक़ ने कहा, “जी, बेटा। तू कौन है?” 19उस ने कहा, “मैं आप का पहलौठा एसौ हूँ। मैं ने वह किया है जो आप ने मुझे कहा था। अब ज़रा उठें और बैठ कर मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बरकत दें।” 20इस्हाक़ ने पूछा, “बेटा, तुझे यह शिकार इतनी जल्दी किस तरह मिल गया?” उस ने जवाब दिया, “रब आप के खुदा ने उसे मेरे सामने से गुज़रने दिया।”

21इस्हाक़ ने कहा, “बेटा, मेरे करीब आ ताकि मैं तुझे छू लूँ कि तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है कि नहीं।” 22याकूब अपने बाप के नज़दीक आया। इस्हाक़ ने उसे छू कर कहा, “तेरी आवाज़ तो याकूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।” 23यूँ उस ने फ़रेब खाया। चूँकि याकूब के हाथ एसौ के हाथ की मानिन्द थे इस लिए उस ने उसे बरकत दी। 24तो भी उस ने दुबारा पूछा, “क्या तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है?” याकूब ने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 25आख़िरकार इस्हाक़ ने कहा, “शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे खाने के बाद मैं तुझे बरकत दूँगा।” याकूब खाना और मै ले आया। इस्हाक़ ने खाया और पिया, 26फिर कहा, “बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा दे।” 27याकूब ने पास आ कर उसे बोसा दिया। इस्हाक़ ने उस के लिबास को सूँघ कर उसे बरकत दी। उस ने कहा,

“मेरे बेटे की खुशबू उस खुले मैदान की खुशबू की मानिन्द है जिसे रब ने बरकत दी है। 28अल्लाह तुझे आसमान की ओस और ज़मीन की ज़रखेज़ी दे। वह तुझे कसत का अनाज और अंगूर का रस दे। 29क़ौमों तेरी खिदमत करें, और उम्मतें तेरे सामने झुक जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन, और तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो

तुझ पर लानत करे वह खुद लानती हो और जो तुझे बरकत दे वह खुद बरकत पाए।”

### एसौ भी बरकत माँगता है

30इस्हाक़ की बरकत के बाद याकूब अभी रुख़सत ही हुआ था कि उस का भाई एसौ शिकार करके वापस आया। 31वह भी लज़ीज़ खाना पका कर उसे अपने बाप के पास ले आया। उस ने कहा, “अब्बू जी, उठें और मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप मुझे बरकत दें।” 32इस्हाक़ ने पूछा, “तू कौन है?” उस ने जवाब दिया, “मैं आप का बड़ा बेटा एसौ हूँ।”

33इस्हाक़ घबरा कर शिद्दत से काँपने लगा। उस ने पूछा, “फिर वह कौन था जो किसी जानवर का शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने से ज़रा पहले मैं ने उस शिकार का खाना खा कर उस शख़्स को बरकत दी। अब वह बरकत उसी पर रहेगी।”

34यह सुन कर एसौ ज़ोरदार और तल्ख़ चीखें मारने लगा। “अब्बू, मुझे भी बरकत दें,” उस ने कहा। 35लेकिन इस्हाक़ ने जवाब दिया, “तेरे भाई ने आ कर मुझे फ़रेब दिया। उस ने तेरी बरकत तुझ से छीन ली है।” 36एसौ ने कहा, “उस का नाम याकूब ठीक ही रखा गया है, क्योंकि अब उस ने मुझे दूसरी बार धोका दिया है। पहले उस ने पहलौठे का हक़ मुझ से छीन लिया और अब मेरी बरकत भी ज़बरदस्ती ले ली। क्या आप ने मेरे लिए कोई बरकत मफ़्फूज़ नहीं रखी?” 37लेकिन इस्हाक़ ने कहा, “मैं ने उसे तेरा हुक्मरान और उस के तमाम भाइयों को उस के खादिम बना दिया है। मैं ने उसे अनाज और अंगूर का रस मुहय्या किया है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ रह गया है जो मैं तुझे दूँ?” 38लेकिन एसौ खामोश न हुआ बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आप के पास वाक़ई सिर्फ़ यही बरकत थी? अब्बू, मुझे भी बरकत दें।” वह ज़ार-ओ-क्रतार रोने लगा।

<sup>39</sup>फिर इस्हाक़ ने कहा, "तू ज़मीन की ज़रखेज़ी और आसमान की ओस से महरूम रहेगा। <sup>40</sup>तू सिर्फ़ अपनी तलवार के सहारे ज़िन्दा रहेगा और अपने भाई की खिदमत करेगा। लेकिन एक दिन तू बेचैन हो कर उस का जूआ अपनी गर्दन पर से उतार फेंकेगा।"

### याक़ूब की हिज़्रत

<sup>41</sup>बाप की बरकत के सबब से एसौ याक़ूब का दुश्मन बन गया। उस ने दिल में कहा, "वह दिन क़रीब आ गए हैं कि अब्बू इन्तिक़ाल कर जाएंगे और हम उन का मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई को मार डालूँगा।"

<sup>42</sup>रिबका को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा मालूम हुआ। उस ने याक़ूब को बुला कर कहा, "तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें क्रल्ल करने का इरादा रखता है। <sup>43</sup>बेटा, अब मेरी सुनो, यहाँ से हिज़्रत कर जाओ। हारान शहर में मेरे भाई लाबन के पास चले जाओ। <sup>44</sup>वहाँ कुछ दिन ठहरे रहना जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा ठंडा न हो जाए। <sup>45</sup>जब उस का गुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह तुम्हारे उस के साथ किए गए सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं इत्तिला दूँगी कि तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं क्या एक ही दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?"

<sup>46</sup>फिर रिबका ने इस्हाक़ से बात की, "मैं एसौ की बीवियों के सबब से अपनी ज़िन्दगी से तंग हूँ। अगर याक़ूब भी इस मुल्क की औरतों में से किसी से शादी करे तो बेहतर है कि मैं पहले ही मर जाऊँ।"

**28** इस्हाक़ ने याक़ूब को बुला कर उसे बरकत दी और कहा, "लाज़िम है कि तू किसी कनआनी औरत से शादी न करे। <sup>2</sup>अब सीधे मसोपुतामिया में अपने नाना बतूएल के घर जा और वहाँ अपने मामू लाबन की लड़कियों में से किसी एक से शादी कर। <sup>3</sup>अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे बरकत दे कर फलने फूलने दे और तुझे इतनी औलाद

दे कि तू बहुत सारी क़ौमों का बाप बने। <sup>4</sup>वह तुझे और तेरी औलाद को इब्राहीम की बरकत दे जिसे उस ने यह मुल्क दिया जिस में तू मेहमान के तौर पर रहता है। यह मुल्क तुम्हारे क़ब्ज़े में आए।" <sup>5</sup>यूँ इस्हाक़ ने याक़ूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा। लाबन अरामी मर्द बतूएल का बेटा और रिबका का भाई था।

### एसौ एक और शादी करता है

<sup>6</sup>एसौ को पता चला कि इस्हाक़ ने याक़ूब को बरकत दे कर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि वहाँ शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि इस्हाक़ ने उसे कनआनी औरत से शादी करने से मना किया है <sup>7</sup>और कि याक़ूब अपने माँ-बाप की सुन कर मसोपुतामिया चला गया है। <sup>8</sup>एसौ समझ गया कि कनआनी औरतें मेरे बाप को मन्ज़ूर नहीं हैं। <sup>9</sup>इस लिए वह इब्राहीम के बेटे इस्माइल के पास गया और उस की बेटी महलत से शादी की। वह नबायोत की बहन थी। यूँ उस की बीवियों में इज़ाफ़ा हुआ।

### बैत-एल में याक़ूब का ख़्वाब

<sup>10</sup>याक़ूब बैर-सबा से हारान की तरफ़ रवाना हुआ। <sup>11</sup>जब सूरज गुरूब हुआ तो वह रात गुज़ारने के लिए रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक को ले कर उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।

<sup>12</sup>जब वह सो रहा था तो ख़्वाब में एक सीढ़ी देखी जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी। फ़रिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे। <sup>13</sup>रब उस के ऊपर खड़ा था। उस ने कहा, "मैं रब इब्राहीम और इस्हाक़ का ख़ुदा हूँ। मैं तुझे और तेरी औलाद को यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू लेटा है। <sup>14</sup>तेरी औलाद ज़मीन पर खाक की तरह बेशुमार होगी, और तू चारों तरफ़ फैल जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमों तेरे और तेरी औलाद के वसीले से बरकत पाएँगी। <sup>15</sup>मैं तेरे साथ हूँगा,

तुझे महफूज़ रखूँगा और आखिरकार तुझे इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़ दूँ।”

<sup>16</sup>तब याकूब जाग उठा। उस ने कहा, “यक़ीन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।” <sup>17</sup>वह डर गया और कहा, “यह कितना खौफ़नाक मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर और आसमान का दरवाज़ा है।”

<sup>18</sup>याकूब सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने वह पत्थर लिया जो उस ने अपने सिरहाने रखा था और उसे सतून की तरह खड़ा किया। फिर उस ने उस पर ज़ैतून का तेल उंडेल दिया। <sup>19</sup>उस ने मक़ाम का नाम बैत-एल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा (पहले साथ वाले शहर का नाम लूज़ था)। <sup>20</sup>उस ने क्रसम खा कर कहा, “अगर रब मेरे साथ हो, सफ़र पर मेरी हिफ़ाज़त करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहय्या करे <sup>21</sup>और मैं सलामती से अपने बाप के घर वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा खुदा होगा। <sup>22</sup>जहाँ यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है वहाँ अल्लाह का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा उस का दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।”

### याकूब लाबन के घर पहुँचता है

**29** याकूब ने अपना सफ़र जारी रखा और चलते चलते मशरिकी क्रौमों के मुल्क में पहुँच गया। <sup>2</sup>वहाँ उस ने खेत में कुआँ देखा जिस के इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा थे। रेवड़ों को कुएँ का पानी पिलाया जाना था, लेकिन उस के मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। <sup>3</sup>वहाँ पानी पिलाने का यह तरीक़ा था कि पहले चरवाहे तमाम रेवड़ों का इन्तिज़ार करते और फिर पत्थर को लुढ़का कर मुँह से हटा देते थे। पानी पिलाने के बाद वह पत्थर को दुबारा मुँह पर रख देते थे।

<sup>4</sup>याकूब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे भाइयो, आप कहाँ के हैं?” उन्होंने ने जवाब दिया, “हारान के।” <sup>5</sup>उस ने पूछा, “क्या आप नहर

के पोते लाबन को जानते हैं?” उन्होंने ने कहा, “जी हाँ।” <sup>6</sup>उस ने पूछा, “क्या वह खैरियत से है?” उन्होंने ने कहा, “जी, वह खैरियत से है। देखो, उधर उस की बेटी राखिल रेवड़ ले कर आ रही है।” <sup>7</sup>याकूब ने कहा, “अभी तो शाम तक बहुत वक़्त बाकी है। रेवड़ों को जमा करने का वक़्त तो नहीं है। आप क्यों उन्हें पानी पिला कर दुबारा चरने नहीं देते?” <sup>8</sup>उन्होंने ने जवाब दिया, “पहले ज़रूरी है कि तमाम रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही पत्थर को लुढ़का कर एक तरफ़ हटाया जाएगा और हम रेवड़ों को पानी पिलाएँगे।”

<sup>9</sup>याकूब अभी उन से बात कर ही रहा था कि राखिल अपने बाप का रेवड़ ले कर आ पहुँची, क्योंकि भेड़-बकरियों को चराना उस का काम था। <sup>10</sup>जब याकूब ने राखिल को मामूँ लाबन के रेवड़ के साथ आते देखा तो उस ने कुएँ के पास जा कर पत्थर को लुढ़का कर मुँह से हटा दिया और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। <sup>11</sup>फिर उस ने उसे बोसा दिया और खूब रोने लगा। <sup>12</sup>उस ने कहा, “मैं आप के अब्बू की बहन रिबका का बेटा हूँ।” यह सुन कर राखिल ने भाग कर अपने अब्बू को इत्तिला दी।

<sup>13</sup>जब लाबन ने सुना कि मेरा भान्जा याकूब आया है तो वह दौड़ कर उस से मिलने गया और उसे गले लगा कर अपने घर ले आया। याकूब ने उसे सब कुछ बता दिया जो हुआ था। <sup>14</sup>लाबन ने कहा, “आप वाक़ई मेरे रिश्तेदार हैं।” याकूब ने वहाँ एक पूरा महीना गुज़ारा।

### अपनी बीवियों के लिए याकूब की मेहनत-मशक्कत

<sup>15</sup>फिर लाबन याकूब से कहने लगा, “बेशक आप मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आप को मेरे लिए काम करने के बदले में कुछ मिलना चाहिए। मैं आप को कितने पैसे दूँ?” <sup>16</sup>लाबन की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लियाह था और छोटी का राखिल। <sup>17</sup>लियाह



की आँखें चुनधी थीं जबकि राखिल हर तरह से खूबसूरत थी।<sup>18</sup> याकूब को राखिल से मुहब्बत थी, इस लिए उस ने कहा, “अगर मुझे आप की छोटी बेटी राखिल मिल जाए तो आप के लिए सात साल काम करूँगा।”<sup>19</sup> लाबन ने कहा, “किसी और आदमी की निस्वत मुझे यह ज़्यादा पसन्द है कि आप ही से उस की शादी कराऊँ।”

<sup>20</sup>पस याकूब ने राखिल को पाने के लिए सात साल तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसा दो एक दिन ही गुज़रे हों क्योंकि वह राखिल को शिद्दत से प्यार करता था।

<sup>21</sup>इस के बाद उस ने लाबन से कहा, “मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे अपनी बेटी से शादी करने दें।”<sup>22</sup> लाबन ने उस मक़ाम के तमाम लोगों को दावत दे कर शादी की ज़ियाफ़त की।<sup>23</sup> लेकिन उस रात वह राखिल की बजाए लियाह को याकूब के पास ले आया, और याकूब उसी से हमबिसतर हुआ।<sup>24</sup> (लाबन ने लियाह को अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा दे दी थी ताकि वह उस की खिदमत करे।)

<sup>25</sup>जब सुबह हुई तो याकूब ने देखा कि लियाह ही मेरे पास है। उस ने लाबन के पास जा कर कहा, “यह आप ने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैं ने राखिल के लिए काम नहीं किया? आप ने मुझे धोका क्यों दिया?”<sup>26</sup> लाबन ने जवाब दिया, “यहाँ दस्तूर नहीं है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी से पहले कर दी जाए।<sup>27</sup> एक हफ़्ते के बाद शादी की रूसूमात पूरी हो जाएँगी। उस वक़्त तक सन्न करें। फिर मैं आप को राखिल भी दे दूँगा। शर्त यह है कि आप मज़ीद सात साल मेरे लिए काम करें।”

<sup>28</sup>याकूब मान गया। चुनाँचे जब एक हफ़्ते के बाद शादी की रूसूमात पूरी हुई तो लाबन ने अपनी बेटी राखिल की शादी भी उस के साथ कर दी।<sup>29</sup> (लाबन ने राखिल को अपनी लौंडी बिल्हाह दे दी ताकि वह उस की खिदमत करे।)<sup>30</sup> याकूब राखिल से भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की निस्वत उसे ज़्यादा प्यार

करता था। फिर उस ने राखिल के इवज़ सात साल और लाबन की खिदमत की।

### याकूब के बच्चे

<sup>31</sup>जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती है तो उस ने उसे औलाद दी जबकि राखिल के हॉ बच्चे पैदा न हुए।

<sup>32</sup>लियाह हामिला हुई और उस के बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, “रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।” उस ने उस का नाम रूबिन यानी ‘देखो एक बेटा’ रखा।

<sup>33</sup>वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, “रब ने सुना कि मुझ से नफ़रत की जाती है, इस लिए उस ने मुझे यह भी दिया है।” उस ने उस का नाम शमाऊन यानी ‘रब ने सुना है’ रखा।

<sup>34</sup>वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, “अब आखिरकार शौहर के साथ मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्योंकि मैं ने उस के लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।” उस ने उस का नाम लावी यानी बंधन रखा।

<sup>35</sup>वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, “इस दफ़ा मैं रब की तम्ज़ीद करूँगी।” उस ने उस का नाम यहूदाह यानी तम्ज़ीद रखा। इस के बाद उस से और बच्चे पैदा न हुए।

**30** लेकिन राखिल बेऔलाद ही रही, इस लिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी। उस ने याकूब से कहा, “मुझे भी औलाद दें वर्ना मैं मर जाऊँगी।”<sup>28</sup> याकूब को गुस्सा आया। उस ने कहा, “क्या मैं अल्लाह हूँ जिस ने तुझे औलाद से महरूम रखा है?”<sup>29</sup> राखिल ने कहा, “यहाँ मेरी लौंडी बिल्हाह है। उस के साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफ़त माँ बन जाऊँ।”

4यूँ उस ने अपने शौहर को बिल्हाह दी, और वह उस से हमबिसतर हुआ। 5बिल्हाह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 6राखिल ने कहा, “अल्लाह ने मेरे हक़ में फ़ैसला दिया है। उस ने मेरी दुआ सुन कर मुझे बेटा दे दिया है।” उस ने उस का नाम दान यानी ‘किसी के हक़ में फ़ैसला करने वाला’ रखा।

7बिल्हाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा पैदा हुआ। 8राखिल ने कहा, “मैं ने अपनी बहन से सख़्त कुशती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।” उस ने उस का नाम नफ़्ताली यानी ‘कुशती में मुझ से जीता गया’ रखा।

9जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं हो रहे तो उस ने याक़ूब को अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा दे दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10ज़िल्फ़ा के भी एक बेटा पैदा हुआ। 11लियाह ने कहा, “मैं कितनी खुशक्रिसमत हूँ!” चुनाँचे उस ने उस का नाम जद यानी खुशक्रिसमती रखा।

12फिर ज़िल्फ़ा के दूसरा बेटा पैदा हुआ। 13लियाह ने कहा, “मैं कितनी मुबारक हूँ। अब खवातीन मुझे मुबारक कहेंगी।” उस ने उस का नाम आशर यानी मुबारक रखा।

14एक दिन अनाज की फ़सल की कटाई हो रही थी कि रूबिन बाहर निकल कर खेतों में चला गया। वहाँ उसे मर्दुमगयाह<sup>3</sup> मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ लियाह के पास ले आया। यह देख कर राखिल ने लियाह से कहा, “मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से कुछ दे दो।” 15लियाह ने जवाब दिया, “क्या यही काफ़ी नहीं कि तुम ने मेरे शौहर को मुझ से छीन लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना चाहती हो।” राखिल ने कहा, “अगर तुम मुझे अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याक़ूब के साथ सो सकती हो।”

16शाम को याक़ूब खेतों से वापस आ रहा था कि लियाह आगे से उस से मिलने को गई और कहा, “आज रात आप को मेरे साथ सोना है, क्योंकि मैं ने अपने बेटे के मर्दुमगयाह के इवज़ आप को उजरत पर लिया है।” चुनाँचे याक़ूब ने लियाह के पास रात गुज़ारी।

17उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी और वह हामिला हुई। उस के पाँचवाँ बेटा पैदा हुआ। 18लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इस का अज़्र दिया है कि मैं ने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी।” उस ने उस का नाम इश्कार यानी अज़्र रखा।

19इस के बाद वह एक और दफ़ा हामिला हुई। उस के छटा बेटा पैदा हुआ। 20उस ने कहा, “अल्लाह ने मुझे एक अच्छा-खासा तोहफ़ा दिया है। अब मेरा खावन्द मेरे साथ रहेगा, क्योंकि मुझ से उस के छः बेटे पैदा हुए हैं।” उस ने उस का नाम ज़बूलून यानी रिहाइश रखा।

21इस के बाद बेटा पैदा हुई। उस ने उस का नाम दीना रखा।

22फिर अल्लाह ने राखिल को भी याद किया। उस ने उस की दुआ सुन कर उसे औलाद बख़शी। 23वह हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा, “मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी इज़ज़त बहाल कर दी है। 24रब मुझे एक और बेटा दे।” उस ने उस का नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’ रखा।

### याक़ूब का लाबन के साथ सौदा

25यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याक़ूब ने लाबन से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन और घर को वापस जाऊँ। 26मुझे मेरे बाल-बच्चे दें जिन के इवज़ मैं ने आप की खिदमत की है। फिर मैं चला जाऊँगा। आप तो ख़ुद जानते हैं कि मैं ने कितनी मेहनत के साथ आप के लिए काम किया है।”

<sup>3</sup>एक पौदा जिस के बारे में खयाल किया जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

27लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहर-बानी करें और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता चला है कि रब ने मुझे आप के सबब से बरकत दी है। 28अपनी उजरत खुद मुकर्रर करें तो मैं वही दिया करूँगा।”

29याकूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैं ने किस तरह आप के लिए काम किया, कि मेरे वसीले से आप के मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30जो थोड़ा बहुत मेरे आने से पहले आप के पास था वह अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। रब ने मेरे काम से आप को बहुत बरकत दी है। अब वह वक़्त आ गया है कि मैं अपने घर के लिए कुछ करूँ।”

31लाबन ने कहा, “मैं आप को क्या दूँ?” याकूब ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर आप की भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी रखूँगा कि 32आज मैं आप के रेवड़ में से गुज़र कर उन तमाम भेड़ों को अलग कर लूँगा जिन के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों या जो सफ़ेद न हों। इसी तरह मैं उन तमाम बकरियों को भी अलग कर लूँगा जिन के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों। यही मेरी उजरत होगी। 33आइन्दा जिन बकरियों के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे होंगे या जिन भेड़ों का रंग सफ़ेद नहीं होगा वह मेरा अज़्र होंगी। जब कभी आप उन का मुआइना करेंगे तो आप मालूम कर सकेंगे कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्योंकि मेरे जानवरों के रंग से ही ज़ाहिर होगा कि मैं ने आप का कुछ चुराया नहीं है।” 34लाबन ने कहा, “ठीक है। ऐसा ही हो जैसा आप ने कहा है।”

35उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग कर लिया जिन के जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और उन तमाम बकरियों को जिन के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे थे। जिस के भी जिस्म पर सफ़ेद निशान था उसे उस ने अलग कर लिया। इसी तरह उस ने उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे तौर पर सफ़ेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने बेटों के सपुर्द कर दिया 36जो उन के साथ याकूब से इतना

दूर चले गए कि उन के दरमियान तीन दिन का फ़ासिला था। तब याकूब लाबन की बाक़ी भेड़-बकरियों की देख-भाल करता गया।

37याकूब ने सफ़ेदा, बादाम और चनार की हरी हरी शाखें ले कर उन से कुछ छिलका यूँ उतार दिया कि उस पर सफ़ेद धारियाँ नज़र आईं। 38उस ने उन्हें भेड़-बकरियों के सामने उन हौज़ों में गाड़ दिया जहाँ वह पानी पीते थे, क्योंकि वहाँ यह जानवर मस्त हो कर मिलाप करते थे। 39जब वह इन शाखों के सामने मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उन के जिस्म पर छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ होती थीं। 40फिर याकूब ने भेड़ के बच्चों को अलग करके अपने रेवड़ों को लाबन के उन जानवरों के सामने चरने दिया जिन के जिस्म पर धारियाँ थीं और जो सफ़ेद न थे। यूँ उस ने अपने ज़ाती रेवड़ों को अलग कर लिया और उन्हें लाबन के रेवड़ के साथ चरने न दिया।

41लेकिन उस ने यह शाखें सिर्फ़ उस वक़्त हौज़ों में खड़ी कीं जब ताक़तवर जानवर मस्त हो कर मिलाप करते थे। 42कमज़ोर जानवरों के साथ उस ने ऐसा न किया। इसी तरह लाबन को कमज़ोर जानवर और याकूब को ताक़तवर जानवर मिल गए। 43यूँ याकूब बहुत अमीर बन गया। उस के पास बहुत से रेवड़, गुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

### याकूब की हिज़्रत

**31** एक दिन याकूब को पता चला कि लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं, “याकूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है। उस ने यह तमाम दौलत हमारे बाप की मिलकियत से हासिल की है।” 2याकूब ने यह भी देखा कि लाबन का मेरे साथ रवय्या पहले की निस्बत बिगड़ गया है। 3फिर रब ने उस से कहा, “अपने बाप के मुल्क और अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ हूँगा।”

4उस वक्रत याकूब खुले मैदान में अपने रेवड़ों के पास था। उस ने वहाँ से राखिल और लियाह को बुला कर 5उन से कहा, "मैं ने देख लिया है कि आप के बाप का मेरे साथ रवय्या पहले की निस्बत बिगड़ गया है। लेकिन मेरे बाप का खुदा मेरे साथ रहा है। 6आप दोनों जानती हैं कि मैं ने आप के अब्बू के लिए कितनी जाँफ़िशानी से काम किया है। 7लेकिन वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे नुक्सान पहुँचाने न दिया। 8जब मामू लाबन कहते थे, 'जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे हों वही आप को उजरत के तौर पर मिलेंगे' तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिन के जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्होंने कहा, 'जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आप को उजरत के तौर पर मिलेंगे' तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिन के जिस्मों पर धारियाँ ही थीं। 9यूँ अल्लाह ने आप के अब्बू के मवेशी छीन कर मुझे दे दिए हैं। 10अब ऐसा हुआ कि हैवानों की मस्ती के मौसम में मैं ने एक ख़्वाब देखा। उस में जो मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे थे उन के जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ थीं। 11उस ख़्वाब में अल्लाह के फ़रिश्ते ने मुझ से बात की, 'याकूब!' मैं ने कहा, 'जी, मैं हाज़िर हूँ।' 12फ़रिश्ते ने कहा, 'अपनी नज़र उठा कर उस पर ग़ौर कर जो हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बकरे जो भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे हैं उन के जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह खुद करवा रहा हूँ, क्योंकि मैं ने वह सब कुछ देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ किया है। 13मैं वह खुदा हूँ जो बैत-एल में तुझ पर ज़ाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ तू ने सतून पर तेल उंडेल कर उसे मेरे लिए मख़सूस किया और मेरे हुज़ूर क्रसम खाई थी। अब उठ और रवाना हो कर अपने वतन वापस चला जा'।"

14राखिल और लियाह ने जवाब में याकूब से कहा, "अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15उस का हमारे साथ अजनबी का सा सुलूक है। पहले उस ने हमें बेच दिया, और अब उस ने वह सारे पैसे खा भी लिए हैं। 16चुनाँचे जो भी दौलत अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी अल्लाह ने आप को बताया है वह करें।"

17तब याकूब ने उठ कर अपने बाल-बच्चों को ऊँटों पर बिठाया 18और अपने तमाम मवेशी और मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम सामान ले कर मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के हाँ जाने के लिए रवाना हुआ। 19उस वक्रत लाबन अपनी भेड़-बकरियों की पश्म कतरने को गया हुआ था। उस की ग़ैरमौजूदगी में राखिल ने अपने बाप के बुत चुरा लिए।

20याकूब ने लाबन को फ़रेब दे कर उसे इत्तिला न दी कि मैं जा रहा हूँ 21बल्कि अपनी सारी मिलकियत समेट कर फ़रार हुआ। दरया-ए-फ़ुरात को पार करके वह जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ सफ़र करने लगा।

### लाबन याकूब का ताक़ुब करता है

22तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को बताया गया कि याकूब भाग गया है। 23अपने रिश्तेदारों को साथ ले कर उस ने उस का ताक़ुब किया। सात दिन चलते चलते उस ने याकूब को आ लिया जब वह जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में पहुँच गया था। 24लेकिन उस रात अल्लाह ने ख़्वाब में लाबन के पास आ कर उस से कहा, "ख़बरदार! याकूब को बुरा-भला न कहना।"

25जब लाबन उस के पास पहुँचा तो याकूब ने जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में अपने ख़ैमे लगाए हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के साथ वहीं अपने ख़ैमे लगाए। 26उस ने याकूब से कहा, "यह आप ने क्या किया है?"

आप मुझे धोका दे कर मेरी बेटियों को क्यों जंगी क़ैदियों की तरह हॉक लाए हैं? 27 आप क्यों मुझे फ़रेब दे कर ख़ामोशी से भाग आए हैं? अगर आप मुझे इत्तिला देते तो मैं आप को खुशी खुशी दफ़ और सरोद के साथ गाते बजाते रुख़सत करता। 28 आप ने मुझे अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देने का मौक़ा भी न दिया। आप की यह हरकत बड़ी अहमक़ाना थी। 29 मैं आप को बहुत नुक्रसान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात आप के अब्बू के खुदा ने मुझ से कहा, 'ख़बरदार! याक़ूब को बुरा-भला न कहना।' 30 ठीक है, आप इस लिए चले गए कि अपने बाप के घर वापस जाने के बड़े आरज़ूमन्द थे। लेकिन यह आप ने क्या किया है कि मेरे बुत चुरा लाए हैं?"

31 याक़ूब ने जवाब दिया, "मुझे डर था कि आप अपनी बेटियों को मुझ से छीन लेंगे। 32 लेकिन अगर आप को यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल जाएँ तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों की मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आप की कोई चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।" याक़ूब को मालूम नहीं था कि राख़िल ने बुतों को चुराया है।

33 लाबन याक़ूब के ख़ैमे में दाख़िल हुआ और ढूँडने लगा। वहाँ से निकल कर वह लियाह के ख़ैमे में और दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन उस के बुत कहीं नज़र न आए। आख़िर में वह राख़िल के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। 34 राख़िल बुतों को ऊँटों की एक काठी के नीचे छुपा कर उस पर बैठ गई थी। लाबन टटोल टटोल कर पूरे ख़ैमे में से गुज़रा लेकिन बुत न मिले। 35 राख़िल ने अपने बाप से कहा, "अब्बू, मुझ से नाराज़ न होना कि मैं आप के सामने खड़ी नहीं हो सकती।

मैं अघ्याम-ए-माहवारी के सबब से उठ नहीं सकती।" लाबन उसे छोड़ कर ढूँडता रहा, लेकिन कुछ न मिला।

36 फिर याक़ूब को गुस्सा आया और वह लाबन से झगड़ने लगा। उस ने पूछा, "मुझ से क्या जुर्म सरज़द हुआ है? मैं ने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी तुन्दी से मेरे ताक़ुकुब के लिए निकले हैं? 37 आप ने टटोल टटोल कर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है। तो आप का क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फ़ैसला करें कि हम में से कौन हक़ पर है। 38 मैं बीस साल तक आप के साथ रहा हूँ। उस दौरान आप की भेड़-बकरियाँ बच्चों से महरूम नहीं रहीं बल्कि मैं ने आप का एक मेंढा भी नहीं खाया। 39 जब भी कोई भेड़ या बकरी किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आप के पास न लाया बल्कि मुझे खुद उस का नुक्रसान भरना पड़ा। आप का तक्राज़ा था कि मैं खुद चोरी हुए माल का इवज़ाना दूँ, ख़वाह वह दिन के वक़्त चोरी हुआ या रात को। 40 मैं दिन की शदीद गर्मी के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नींद से महरूम रहा। 41 पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र गए। चौदह साल मैं ने आप की बेटियों के इवज़ काम किया और छः साल आप की भेड़-बकरियों के लिए। उस दौरान आप ने दस बार मेरी तनख़्वाह बदल दी। 42 अगर मेरे बाप इस्हाक़ का खुदा और मेरे दादा इब्राहीम का माबूद<sup>3</sup> मेरे साथ न होता तो आप मुझे ज़रूर खाली हाथ रुख़सत करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरी सख़्त मेहनत-मशक्क़त देखी है, इस लिए उस ने कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला दिया।"

<sup>3</sup> लफ़्ज़ी तर्जुमा : दहशत यानी इस्हाक़ का वह खुदा जिस से इन्सान दहशत खाता है।

### याकूब और लाबन के दरमियान अह्द

<sup>43</sup>तब लाबन ने याकूब से कहा, "यह बेटियाँ तो मेरी बेटियाँ हैं, और इन के बच्चे मेरे बच्चे हैं। यह भेड़-बकरियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं अपनी बेटियों और उन के बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता। <sup>44</sup>इस लिए आओ, हम एक दूसरे के साथ अह्द बांधें। इस के लिए हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ जो अह्द की गवाही देता रहे।"

<sup>45</sup>चुनाँचे याकूब ने एक पत्थर ले कर उसे सतून के तौर पर खड़ा किया। <sup>46</sup>उस ने अपने रिश्तेदारों से कहा, "कुछ पत्थर जमा करें।" उन्होंने ने पत्थर जमा करके ढेर लगा दिया। फिर उन्होंने ने उस ढेर के पास बैठ कर खाना खाया। <sup>47</sup>लाबन ने उस का नाम यज़-शाहदूथा रखा जबकि याकूब ने जल-एद रखा। दोनों नामों का मतलब 'गवाही का ढेर' है यानी वह ढेर जो गवाही देता है। <sup>48</sup>लाबन ने कहा, "आज हम दोनों के दरमियान यह ढेर अह्द की गवाही देता है।" इस लिए उस का नाम जल-एद रखा गया। <sup>49</sup>उस का एक और नाम मिस्रहाह यानी 'पहरेदारों का मीनार' भी रखा गया। क्योंकि लाबन ने कहा, "रब हम पर पहरा दे जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। <sup>50</sup>मेरी बेटियों से बुरा सुलूक न करना, न उन के इलावा किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और आप के सामने गवाह है। <sup>51</sup>यहाँ यह ढेर है जो मैं ने लगा दिया है और यहाँ यह सतून भी है। <sup>52</sup>यह ढेर और सतून दोनों इस के गवाह हैं कि न मैं यहाँ से गुज़र कर आप को नुकसान पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से गुज़र कर मुझे नुकसान पहुँचाएँगे। <sup>53</sup>इब्राहीम, नहूर और उन के बाप का खुदा हम दोनों के दरमियान फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई मुआमला हो।" जवाब में याकूब ने इस्हाक़ के माबूद की क्रसम खाई कि मैं यह अह्द कभी नहीं तोड़ूँगा। <sup>54</sup>उस ने पहाड़ पर एक जानवर कुर्बानी के तौर पर चढ़ाया और अपने रिश्तेदारों को खाना

खाने की दावत दी। उन्होंने ने खाना खा कर वहीं पहाड़ पर रात गुज़ारी।

<sup>55</sup>अगले दिन सुबह-सवेरे लाबन ने अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा दे कर उन्हें बरकत दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

### याकूब एसौ से मिलने के लिए तय्यार हो जाता है

**32** याकूब ने भी अपना सफ़र जारी रखा। रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते उस से मिले। <sup>2</sup>उन्हें देख कर उस ने कहा, "यह अल्लाह की लश्करगाह है।" उस ने उस मक़ाम का नाम महनाइम यानी 'दो लश्करगाहें' रखा।

<sup>3</sup>याकूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने आगे आगे क़ासिद भेजे। एसौ सर्ईर यानी अदोम के मुल्क में आबाद था। <sup>4</sup>उन्हें एसौ को बताना था, "आप का खादिम याकूब आप को इत्तिला देता है कि मैं परदेस में जा कर अब तक लाबन का मेहमान रहा हूँ। <sup>5</sup>वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, गुलाम और लौंडियाँ हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को इत्तिला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और आप की नज़र-ए-करम का ख़्वाहिशमन्द हूँ।"

<sup>6</sup>जब क़ासिद वापस आए तो उन्होंने ने कहा, "हम आप के भाई एसौ के पास गए, और वह 400 आदमी साथ ले कर आप से मिलने आ रहा है।"

<sup>7</sup>याकूब घबरा कर बहुत परेशान हुआ। उस ने अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और ऊँटों को दो गुरोहों में तक्रसीम किया। <sup>8</sup>ख़याल यह था कि अगर एसौ आ कर एक गुरोह पर हम्ला करे तो बाक़ी गुरोह शायद बच जाए। <sup>9</sup>फिर याकूब ने दुआ की, "ऐ मेरे दादा इब्राहीम और मेरे बाप इस्हाक़ के खुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ रब, तू ने खुद मुझे बताया, 'अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस जा, और मैं तुझे कामयाबी दूँगा।' <sup>10</sup>मैं उस

तमाम मेहरबानी और वफ़ादारी के लाइक्र नहीं जो तू ने अपने खादिम को दिखाई है। जब मैं ने लाबन के पास जाते वक्रत दरया-ए-यर्दन को पार किया तो मेरे पास सिर्फ़ यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो गुरोह हैं।<sup>11</sup>मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्योंकि मुझे डर है कि वह मुझ पर हम्ला करके बाल-बच्चों समेत सब कुछ तबाह कर देगा।<sup>12</sup>तू ने खुद कहा था, 'मैं तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि वह समुन्दर की रेत की मानिन्द बेशुमार होगी'।<sup>13</sup>

<sup>13</sup>याकूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उस ने अपने माल में से एसौ के लिए तोहफ़े चुन लिए : 14200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़ें, 20 मेंढे, <sup>15</sup>30 दूध देने वाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत, 40 गाएँ, 10 बैल, 20 गधियाँ और 10 गधे।<sup>16</sup>उस ने उन्हें मुख्तलिफ़ रेवड़ों में तव्रसीम करके अपने मुख्तलिफ़ नौकरों के सपुर्द किया और उन से कहा, "मेरे आगे आगे चलो लेकिन हर रेवड़ के दरमियान फ़ासिला रखो।"

<sup>17</sup>जो नौकर पहले रेवड़ ले कर आगे निकला उस से याकूब ने कहा, "मेरा भाई एसौ तुम से मिलेगा और पूछेगा, 'तुम्हारा मालिक कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे सामने के जानवर किस के हैं?'<sup>18</sup>जवाब में तुम्हें कहना है, 'यह आप के खादिम याकूब के हैं। यह तोहफ़ा हैं जो वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे हैं। याकूब हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं'।"

<sup>19</sup>याकूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया जिसे रेवड़ ले कर उस के आगे आगे जाना था। उस ने कहा, "जब तुम एसौ से मिलोगे तो उस से यही कहना है।<sup>20</sup>तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है, आप के खादिम याकूब हमारे पीछे आ रहे हैं।" क्योंकि याकूब ने सोचा, 'मैं इन तोहफ़ों से उस के साथ सुलह करूँगा। फिर जब उस से मुलाकात होगी तो शायद वह

मुझे क़बूल कर ले।' <sup>21</sup>यूँ उस ने यह तोहफ़े अपने आगे आगे भेज दिए। लेकिन उस ने खुद ख़ैमागाह में रात गुज़ारी।

### याकूब की कुशती

<sup>22</sup>उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों, दो लौंडियों और ग्यारह बेटों को ले कर दरया-ए-यब्बोक़ को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई थी।<sup>23</sup>फिर उस ने अपना सारा सामान भी वहाँ भेज दिया।<sup>24</sup>लेकिन वह खुद अकेला ही पीछे रह गया।

उस वक्रत एक आदमी आया और पौ फटने तक उस से कुशती लड़ता रहा।<sup>25</sup>जब उस ने देखा कि मैं याकूब पर गालिब नहीं आ रहा तो उस ने उस के कूल्हे को छुआ, और उस का जोड़ निकल गया।<sup>26</sup>आदमी ने कहा, "मुझे जाने दे, क्योंकि पौ फटने वाली है।"

याकूब ने कहा, "पहले मुझे बरकत दें, फिर ही आप को जाने दूँगा।"<sup>27</sup>आदमी ने पूछा, "तेरा क्या नाम है?" उस ने जवाब दिया, "याकूब।"<sup>28</sup>आदमी ने कहा, "अब से तेरा नाम याकूब नहीं बल्कि इस्राईल यानी 'वह अल्लाह से लड़ता है' होगा। क्योंकि तू अल्लाह और आदमियों के साथ लड़ कर गालिब आया है।"

<sup>29</sup>याकूब ने कहा, "मुझे अपना नाम बताएँ।" उस ने कहा, "तू क्यूँ मेरा नाम जानना चाहता है?" फिर उस ने याकूब को बरकत दी।

<sup>30</sup>याकूब ने कहा, "मैं ने अल्लाह को रू-ब-रू देखा तो भी बच गया हूँ।" इस लिए उस ने उस मक़ाम का नाम फ़नीएल रखा।<sup>31</sup>याकूब वहाँ से चला तो सूरज तुलू हो रहा था। वह कूल्हे के सबब से लंगड़ाता रहा।

<sup>32</sup>यही वजह है कि आज भी इस्राईल की औलाद कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते, क्योंकि याकूब की इसी नस को छुआ गया था।

### याकूब एसौ से मिलता है

**33** फिर एसौ उन की तरफ़ आता हुआ नज़र आया। उस के साथ 400 आदमी थे। उन्हें देख कर याकूब ने बच्चों को बाँट कर लियाह, राखिल और दोनों लौंडियों के हवाले कर दिया। 2 उस ने दोनों लौंडियों को उन के बच्चों समेत आगे चलने दिया। फिर लियाह उस के बच्चों समेत और आखिर में राखिल और यूसुफ़ आए। 3 याकूब खुद सब से आगे एसौ से मिलने गया। चलते चलते वह सात दफ़ा ज़मीन तक झुका। 4 लेकिन एसौ दौड़ कर उस से मिलने आया और उसे गले लगा कर बोसा दिया। दोनों रो पड़े।

5 फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा। उस ने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?” याकूब ने कहा, “यह आप के खादिम के बच्चे हैं जो अल्लाह ने अपने करम से नवाज़े हैं।”

6 दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आ कर उस के सामने झुक गईं। 7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ आई और आखिर में यूसुफ़ और राखिल आ कर झुक गए।

8 एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े गोल से मेरी मुलाक़ात हुई उस से क्या मुराद है?” याकूब ने जवाब दिया, “यह तोहफ़ा है ताकि आप का खादिम आप की नज़र में मक़बूल हो।” 9 लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत कुछ है। यह अपने पास ही रखो।” 10 याकूब ने कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर आप के करम की नज़र है तो मेरे इस तोहफ़े को ज़रूर क़बूल फ़रमाएँ। क्योंकि जब मैं ने आप का चेहरा देखा तो वह मेरे लिए अल्लाह के चेहरे की मानिन्द था, आप ने मेरे साथ इस क्रदर अच्छा सुलूक किया है। 11 मेहरबानी करके यह तोहफ़ा क़बूल करें जो मैं आप के लिए लाया हूँ। क्योंकि अल्लाह ने मुझ पर अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे पास बहुत कुछ है।”

याकूब इसरार करता रहा तो आखिरकार एसौ ने उसे क़बूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा, 12 “आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे आगे चलूँगा।” 13 याकूब ने जवाब दिया, “मेरे मालिक, आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाजुक हैं। मेरे पास भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और उन के दूध पीने वाले बच्चे भी हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के लिए भी हद से ज़्यादा हाँकूँ तो वह मर जाएंगे। 14 मेरे मालिक, मेहरबानी करके मेरे आगे आगे जाएँ। मैं आराम से उसी रफ़्तार से आप के पीछे पीछे चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से मेरे मवेशी और मेरे बच्चे चल सकेंगे। यूँ हम आहिस्ता चलते हुए आप के पास सईर पहुँचेंगे।” 15 एसौ ने कहा, “क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आप के पास छोड़ दूँ?” लेकिन याकूब ने कहा, “क्या ज़रूरत है? सब से अहम बात यह है कि आप ने मुझे क़बूल कर लिया है।”

16 उस दिन एसौ सईर के लिए और 17 याकूब सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उस ने अपने लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के लिए झोंपड़ियाँ। इस लिए उस मक़ाम का नाम सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़ गया।

18 फिर याकूब चलते चलते सलामती से सिकम शहर पहुँचा। यूँ उस का मसोपुतामिया से मुल्क-ए-कनआन तक का सफ़र इखतिताम तक पहुँच गया। उस ने अपने ख़ैमे शहर के सामने लगाए। 19 उस के ख़ैमे हमोर की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उस ने यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले ख़रीद ली। 20 वहाँ उस ने कुर्बानगाह बनाई जिस का नाम उस ने ‘एल ख़ुदा-ए-इसाईल’ रखा।

### दीना की इस्मतदरी

**34** एक दिन याकूब और लियाह की बेटी दीना कनआनी औरतों से मिलने के लिए घर से निकली। 2 शहर में



एक आदमी बनाम सिकम रहता था। उस का वालिद हमोर उस इलाक़े का हुक्मरान था और हिच्ची क्रौम से ताल्लुक़ रखता था। जब सिकम ने दीना को देखा तो उस ने उसे पकड़ कर उस की इस्मतदरी की। <sup>3</sup>लेकिन उस का दिल दीना से लग गया। वह उस से मुहब्बत करने लगा और प्यार से उस से बातें करता रहा। <sup>4</sup>उस ने अपने बाप से कहा, “इस लड़की के साथ मेरी शादी करा दें।”

<sup>5</sup>जब याकूब ने अपनी बेटी की इस्मतदरी की खबर सुनी तो उस के बेटे मवेशियों के साथ खुले मैदान में थे। इस लिए वह उन के वापस आने तक खामोश रहा।

<sup>6</sup>सिकम का बाप हमोर शहर से निकल कर याकूब से बात करने के लिए आया। <sup>7</sup>जब याकूब के बेटों को दीना की इस्मतदरी की खबर मिली तो उन के दिल रंजिश और गुस्से से भर गए कि सिकम ने याकूब की बेटी की इस्मतदरी से इस्राईल की इतनी बेइज़्ज़ती की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस आए। <sup>8</sup>हमोर ने याकूब से कहा, “मेरे बेटे का दिल आप की बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके उस की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें। <sup>9</sup>हमारे साथ रिश्ता बांधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ शादियाँ कराएँ। <sup>10</sup>फिर आप हमारे साथ इस मुल्क में रह सकेंगे और पूरा मुल्क आप के लिए खुला होगा। आप जहाँ भी चाहें आबाद हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और ज़मीन खरीद सकेंगे।” <sup>11</sup>सिकम ने खुद भी दीना के बाप और भाइयों से मिन्नत की, “अगर मेरी यह दरख्वास्त मन्ज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा कर दूँगा। <sup>12</sup>जितना भी महर और तोहफ़े आप मुकर्रर करें मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी यह ख्वाहिश पूरी करें कि यह लड़की मेरे अक़द में आ जाए।”

<sup>13</sup>लेकिन दीना की इस्मतदरी के सबब से याकूब के बेटों ने सिकम और उस के बाप हमोर से चालाकी करके <sup>14</sup>कहा, “हम ऐसा नहीं कर सकते। हम अपनी बहन की शादी

किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते जिस का खतना नहीं हुआ। इस से हमारी बेइज़्ज़ती होती है। <sup>15</sup>हम सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे कि आप अपने तमाम लड़कों और मर्दों का खतना करवाने से हमारी मानिन्द हो जाएँ। <sup>16</sup>फिर आप के बेटे-बेटियों के साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आप के साथ एक क्रौम बन जाएंगे। <sup>17</sup>लेकिन अगर आप खतना कराने के लिए तय्यार नहीं हैं तो हम अपनी बहन को ले कर चले जाएंगे।”

<sup>18</sup>यह बातें हमोर और उस के बेटे सिकम को अच्छी लगीं। <sup>19</sup>नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन पर अमल किया, क्योंकि वह दीना को बहुत पसन्द करता था। सिकम अपने खानदान में सब से मुअज़्ज़ था। <sup>20</sup>हमोर अपने बेटे सिकम के साथ शहर के दरवाज़े पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए जाते थे। वहाँ उन्होंने ने बाक़ी शहरियों से बात की। <sup>21</sup>“यह आदमी हम से झगड़ने वाले नहीं हैं, इस लिए क्यों न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और हमारे दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क में उन के लिए भी काफ़ी जगह है। आओ, हम उन की बेटियों और बेटों से शादियाँ करें। <sup>22</sup>लेकिन यह आदमी सिर्फ़ इस शर्त पर हमारे दरमियान रहने और एक ही क्रौम बनने के लिए तय्यार हैं कि हम उन की तरह अपने तमाम लड़कों और मर्दों का खतना कराएँ। <sup>23</sup>अगर हम ऐसा करें तो उन के तमाम मवेशी और सारा माल हमारा ही होगा। चुनाँचे आओ, हम मुत्तफ़िक़ हो कर फ़ैसला कर लें ताकि वह हमारे दरमियान रहें।”

<sup>24</sup>सिकम के शहरी हमोर और सिकम के मश्वरे पर राज़ी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों का खतना कराया गया। <sup>25</sup>तीन दिन के बाद जब खतने के सबब से लोगों की हालत बुरी थी तो दीना के दो भाई शमाऊन और लावी अपनी तलवारें ले कर शहर में दाखिल हुए। किसी को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा। अन्दर जा कर उन्होंने ने बच्चों से ले कर बूढ़ों

तक तमाम मर्दों को क्रल्ल कर दिया <sup>26</sup>जिन में हमोर और उस का बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना को सिकम के घर से ले कर चले गए।

<sup>27</sup>इस क्रल्ल-ए-आम के बाद याकूब के बाक्री बेटे शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यूँ उन्होंने ने अपनी बहन की इस्मतदरी का बदला लिया। <sup>28</sup>वह भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के अन्दर और बाहर का सब कुछ ले कर चलते बने। <sup>29</sup>उन्होंने ने सारे माल पर क्रब्जा किया, औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान भी ले गए।

<sup>30</sup>फिर याकूब ने शमाऊन और लावी से कहा, “तुम ने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब कनआनी, फ़रिज़्ज़ी और मुल्क के बाक्री बाशिन्दों में मेरी बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी हैं। अगर दूसरे मिल कर हम पर हम्ला करें तो हमारे पूरे खानदान का सत्यानास हो जाएगा।” <sup>31</sup>लेकिन उन्होंने ने कहा, “क्या यह ठीक था कि उस ने हमारी बहन के साथ कस्बी का सा सुलूक किया?”

### बैत-एल में याकूब पर अल्लाह की बरकत

**35** अल्लाह ने याकूब से कहा, “उठ, बैत-एल जा कर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के लिए जो तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब तू अपने भाई एसौ से भाग रहा था कुर्बानगाह बना।” <sup>2</sup>चुनाँचे याकूब ने अपने घर वालों और बाक्री सारे साथियों से कहा, “जो भी अजनबी बुत आप के पास हैं उन्हें फैंक दें। अपने आप को पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें, <sup>3</sup>क्योंकि हमें यह जगह छोड़ कर बैत-एल जाना है। वहाँ मैं उस खुदा के लिए कुर्बानगाह बनाऊँगा जिस ने मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया वहाँ वह मेरे साथ रहा है।” <sup>4</sup>यह सुन कर उन्होंने ने याकूब को तमाम बुत दे दिए जो उन के पास थे

और तमाम बालियाँ जो उन्होंने ने तावीज़ के तौर पर कानों में पहन रखी थीं। उस ने सब कुछ सिकम के करीब बलूत के दरख़्त के नीचे ज़मीन में दबा दिया। <sup>5</sup>फिर वह रवाना हुए। इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ़ से इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया कि उन्होंने ने याकूब और उस के बेटों का ताक़ुब न किया।

<sup>6</sup>चलते चलते याकूब अपने लोगों समेत लूज़ पहुँच गया जो मुल्क-ए-कनआन में था। आज लूज़ का नाम बैत-एल है। <sup>7</sup>याकूब ने वहाँ कुर्बानगाह बना कर मक्काम का नाम बैत-एल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा। क्योंकि वहाँ अल्लाह ने अपने आप को उस पर ज़ाहिर किया था जब वह अपने भाई से फ़रार हो रहा था।

<sup>8</sup>वहाँ रिबका की दाया दबोरा मर गई। वह बैत-एल के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़न हुई, इस लिए उस का नाम अल्लोन-बकूत यानी ‘रोने का बलूत का दरख़्त’ रखा गया।

<sup>9</sup>अल्लाह याकूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर हुआ और उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। <sup>10</sup>अल्लाह ने उस से कहा, “अब से तेरा नाम याकूब नहीं बल्कि इस्राईल होगा।” यूँ उस ने उस का नया नाम इस्राईल रखा। <sup>11</sup>अल्लाह ने यह भी उस से कहा, “मैं अल्लाह क्रादिर-ए-मुतलक़ हूँ। फल फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम नहीं बल्कि बहुत सी क़ौमें तुझ से निकलेंगी। तेरी औलाद में बादशाह भी शामिल होंगे। <sup>12</sup>मैं तुझे वही मुल्क दूँगा जो इब्राहीम और इस्हाक़ को दिया है। और तेरे बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।”

<sup>13</sup>फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला गया। <sup>14</sup>जहाँ अल्लाह याकूब से हमकलाम हुआ था वहाँ उस ने पत्थर का सतून खड़ा किया और उस पर मै और तेल उंडेल कर उसे मख़्सूस किया। <sup>15</sup>उस ने जगह का नाम बैत-एल रखा।

### राखिल की मौत

16 फिर याकूब अपने घर वालों के साथ बैत-एल को छोड़ कर इफ़्राता की तरफ़ चल पड़ा। राखिल उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश का वक़्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ। 17 जब दर्द-ए-ज़ह उरूज को पहुँच गया तो दाई ने उस से कहा, “मत डरो, क्योंकि एक और बेटा है।” 18 लेकिन वह दम तोड़ने वाली थी, और मरते मरते उस ने उस का नाम बिन-ऊनी यानी ‘मेरी मुसीबत का बेटा’ रखा। लेकिन उस के बाप ने उस का नाम बिनयमीन यानी ‘दहने हाथ या खुशक्रिसमती का बेटा’ रखा। 19 राखिल फ़ौत हुई, और वह इफ़्राता के रास्ते में दफ़न हुई। आजकल इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता है। 20 याकूब ने उस की क़ब्र पर पत्थर का सतून खड़ा किया। वह आज तक राखिल की क़ब्र की निशानदिही करता है।

21 वहाँ से याकूब ने अपना सफ़र जारी रखा और मिज्दल-इदर की परलौ तरफ़ अपने खैमे लगाए। 22 जब वह वहाँ ठहरे थे तो रूबिन याकूब की हरम बिल्हाह से हमबिसतर हुआ। याकूब को मालूम हो गया।

### याकूब के बेटे

याकूब के बारह बेटे थे। 23 लियाह के बेटे यह थे : उस का सब से बड़ा बेटा रूबिन, फिर शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून। 24 राखिल के दो बेटे थे, यूसुफ़ और बिनयमीन। 25 राखिल की लौंडी बिल्हाह के दो बेटे थे, दान और नफ़ताली। 26 लियाह की लौंडी ज़िल्फ़ा के दो बेटे थे, जद और आशर। याकूब के यह बेटे मसोपुतामिया में पैदा हुए।

### इस्हाक़ की मौत

27 फिर याकूब अपने बाप इस्हाक़ के पास पहुँच गया जो हब्रून के करीब मग्रे में अजनबी की हैसियत से रहता था (उस वक़्त हब्रून का नाम क्रियत-अर्बा था)। वहाँ इस्हाक़ और उस

से पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28-29 इस्हाक़ 180 साल का था जब वह उम्ररसीदा और ज़िन्दगी से आसूदा हो कर अपने बापदादा से जा मिला। उस के बेटे एसौ और याकूब ने उसे दफ़न किया।

### एसौ की औलाद

**36** यह एसौ की औलाद का नसब-नामा है (एसौ को अदोम भी कहा जाता है) :

2 एसौ ने तीन कनआनी औरतों से शादी की : हिती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की बेटी उहलीबामा से जो हिक्वी आदमी सिबओन की नवासी थी 3 और इस्माईल की बेटी बासमत से जो नबायोत की बहन थी। 4 अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा हुआ। 5 उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस, यालाम और क्रोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्क-ए-कनआन में पैदा हुए।

6 बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उस ने अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहने वालों को अपने तमाम मवेशियों और मुल्क-ए-कनआन में हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया। 7 वह इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों के पास इतने रेवड़ थे कि चराने की जगह कम पड़ गई। 8 चुनाँचे एसौ पहाड़ी इलाक़े सर्ईर में आबाद हुआ। एसौ का दूसरा नाम अदोम है।

9 यह एसौ यानी सर्ईर के पहाड़ी इलाक़े में आबाद अदोमियों का नसबनामा है : 10 एसौ की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि उस की बीवी बासमत का एक बेटा रऊएल था। 11 इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ो, जाताम, क़नज़ 12 और अमालीक़ थे। अमालीक़ इलीफ़ज़ की हरम तिमना का बेटा था। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद में शामिल थे। 13 रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़ज़ा थे। यह सब एसौ की बीवी

बासमत की औलाद में शामिल थे। <sup>14</sup>एसौ की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी और सिबओन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस, यालाम और क्रोरह थे।

<sup>15</sup>एसौ से मुख्तलिफ़ क्रबीलों के सरदार निकले। उस के पहलौठे इलीफ़ज़ से यह क्रबाइली सरदार निकले : तेमान, ओमर, सफ़ो, क्रनज़, <sup>16</sup>क्रोरह, जाताम और अमालीक़। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद थे। <sup>17</sup>एसौ के बेटे रऊएल से यह क्रबाइली सरदार निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद थे। <sup>18</sup>एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की बेटी से यह क्रबाइली सरदार निकले : यऊस, यालाम और क्रोरह। <sup>19</sup>यह तमाम सरदार एसौ की औलाद हैं।

### सईर की औलाद

<sup>20</sup>मुल्क-ए-अदोम के कुछ बाशिन्दे होरी आदमी सईर की औलाद थे। उन के नाम लोतान, सोबल, सिबओन, अना, <sup>21</sup>दीसोन, एसर और दीसान थे। सईर के यह बेटे मुल्क-ए-अदोम में होरी क्रबीलों के सरदार थे।

<sup>22</sup>लोतान होरी और हेमाम का बाप था। (तिमना लोतान की बहन थी।) <sup>23</sup>सोबल के बेटे अल्वान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे। <sup>24</sup>सिबओन के बेटे अय्याह और अना थे। इसी अना को गर्म चश्मे मिले जब वह बयाबान में अपने बाप के गधे चरा रहा था। <sup>25</sup>अना का एक बेटा दीसोन और एक बेटी उहलीबामा थी। <sup>26</sup>दीसोन के चार बेटे हम्दान, इशबान, यित्रान और किरान थे। <sup>27</sup>एसर के तीन बेटे बिल्हान, ज़ावान और अक्रान थे। <sup>28</sup>दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

<sup>29-30</sup>यही यानी लोतान, सोबल, सिबओन, अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के मुल्क में होरी क्रबाइल के सरदार थे।

### अदोम के बादशाह

<sup>31</sup>इस से पहले कि इस्राईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्क-ए-अदोम में हुकूमत करते थे :

<sup>32</sup>बाला बिन बओर जो दिन्हाबा शहर का था मुल्क-ए-अदोम का पहला बादशाह था।

<sup>33</sup>उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुस्त्रा शहर का था।

<sup>34</sup>उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था।

<sup>35</sup>उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिस ने मुल्क-ए-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत का था।

<sup>36</sup>उस की मौत पर सम्ला जो मस्त्रिका का था।

<sup>37</sup>उस की मौत पर साऊल जो दरया-ए-फुरात पर रहोबोत शहर का था।

<sup>38</sup>उस की मौत पर बाल-हनान बिन अक्बोर।

<sup>39</sup>उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का था (बीवी का नाम महेतब-एल बिन्त मत्रिद बिन्त मेज़ाहाब था)।

<sup>40-43</sup>एसौ से अदोमी क्रबीलों के यह सरदार निकले : तिमना, अल्वह, यतेत, उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, क्रनज़, तेमान, मिब्सार, मजदीएल और इराम। अदोम के सरदारों की यह फ़हरिस्त उन की मौरूसी ज़मीन की आबादियों और क्रबीलों के मुताबिक़ ही बयान की गई है। एसौ उन का बाप है।

### यूसुफ़ के ख़्वाब

**37** याकूब मुल्क-ए-कनआन में रहता था जहाँ पहले उस का बाप भी परदेसी था। यह याकूब के खानदान का बयान है।

उस वक़्त याकूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल का था। वह अपने भाइयों यानी बिल्हाह और ज़िल्फ़ा के बेटों के साथ भेड़-बकरियों की देख-भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को

अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तिला दिया करता था।

<sup>3</sup>याकूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निस्बत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इस लिए याकूब ने उस के लिए एक खास रंगदार लिबास बनवाया। <sup>4</sup>जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हम से ज़्यादा प्यार करता है तो वह उस से नफ़रत करने लगे और अदब से उस से बात नहीं करते थे।

<sup>5</sup>एक रात यूसुफ़ ने ख़्वाब देखा। जब उस ने अपने भाइयों को ख़्वाब सुनाया तो वह उस से और भी नफ़रत करने लगे। <sup>6</sup>उस ने कहा, "सुनो, मैं ने ख़्वाब देखा। <sup>7</sup>हम सब खेत में पूले बांध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आप के पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा हो कर उस के सामने झुक गए।" <sup>8</sup>उस के भाइयों ने कहा, "अच्छा, तू बादशाह बन कर हम पर हुकूमत करेगा?" उस के ख़्वाबों और उस की बातों के सबब से उन की उस से नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

<sup>9</sup>कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़्वाब देखा। उस ने अपने भाइयों से कहा, "मैं ने एक और ख़्वाब देखा है। उस में सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।" <sup>10</sup>उस ने यह ख़्वाब अपने बाप को भी सुनाया तो उस ने उसे डाँटा। उस ने कहा, "यह कैसा ख़्वाब है जो तू ने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आ कर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?" <sup>11</sup>नतीजे में उस के भाई उस से बहुत हसद करने लगे। लेकिन उस के बाप ने दिल में यह बात महफूज़ रखी।

### यूसुफ़ को बेचा जाता है

<sup>12</sup>एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे <sup>13</sup>तो याकूब ने यूसुफ़ से कहा, "तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उन के पास भेज देता हूँ।" यूसुफ़ ने जवाब

दिया, "ठीक है।" <sup>14</sup>याकूब ने कहा, "जा कर मालूम कर कि तेरे भाई और उन के साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आ कर मुझे बता देना।" चुनाँचे उस के बाप ने उसे वादी-ए-हब्रून से भेज दिया, और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।

<sup>15</sup>वहाँ वह इधर उधर फिरता रहा। आख़िरकार एक आदमी उस से मिला और पूछा, "आप क्या ढूँड रहे हैं?" <sup>16</sup>यूसुफ़ ने जवाब दिया, "मैं अपने भाइयों को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।" <sup>17</sup>आदमी ने कहा, "वह यहाँ से चले गए हैं। मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ, हम दूतैन जाएँ।" यह सुन कर यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल गए।

<sup>18</sup>जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उस के भाइयों ने उस के पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने का मन्सूबा बनाया। <sup>19</sup>उन्होंने कहा, "देखो, ख़्वाब देखने वाला आ रहा है। <sup>20</sup>आओ, हम उसे मार डालें और उस की लाश किसी गढ़े में फैंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उस के ख़्वाबों की क्या हक़ीक़त है।"

<sup>21</sup>जब रूबिन ने उन की बातें सुनीं तो उस ने यूसुफ़ को बचाने की कोशिश की। उस ने कहा, "नहीं, हम उसे क़त्ल न करें। <sup>22</sup>उस का ख़ून न करना। बेशक उसे इस गढ़े में फैंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।" उस ने यह इस लिए कहा कि वह उसे बचा कर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता था।

<sup>23</sup>जुँ ही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने ने उस का रंगदार लिबास उतार कर <sup>24</sup>यूसुफ़ को गढ़े में फैंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उस में पानी नहीं था। <sup>25</sup>फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक इस्माइलियों का एक क्राफ़िला नज़र आया। वह जिलिआद

से मिस्र जा रहे थे, और उन के ऊँट क्रीमती मसालों यानी लादन, बल्सान और मुर से लदे हुए थे।<sup>26</sup> तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या फ़ाइदा है अगर अपने भाई को क़ल्ल करके उस के ख़ून को छुपा दें? <sup>27</sup>आओ, हम उसे इन इस्माईलियों के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ। आखिर वह हमारा भाई है।”

उस के भाई राज़ी हुए।<sup>28</sup> चुनाँचे जब मिदियानी ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खँच कर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के इवज़ बेच डाला। इस्माईली उसे ले कर मिस्र चले गए।

<sup>29</sup>उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े के पास वापस आया तो यूसुफ़ उस में नहीं था। यह देख कर उस ने परेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले।<sup>30</sup> वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा, “लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह अब्बू के पास जाऊँ?”<sup>31</sup> तब उन्होंने ने बकरा ज़बह करके यूसुफ़ का लिबास उस के ख़ून में डुबोया,<sup>32</sup> फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह आप के बेटे का लिबास तो नहीं?”

<sup>33</sup>याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़ दिया गया है।”<sup>34</sup> याक़ूब ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़ कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा।<sup>35</sup> उस के तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली देने आए, लेकिन उस ने तसल्ली पाने से इन्कार किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

<sup>36</sup>इतने में मिदियानी मिस्र पहुँच कर यूसुफ़ को बेच चुके थे। मिस्र के बादशाह फ़िरऔन के एक आला अप्रसर फ़ूतीफ़ार ने उसे खरीद

लिया। फ़ूतीफ़ार बादशाह के मुहाफ़िज़ों पर मुकर्रर था।

### यहूदाह और तमर

**38** उन दिनों में यहूदाह अपने भाइयों को छोड़ कर एक आदमी के पास रहने लगा जिस का नाम हीरा था और जो अदुल्लाम शहर से था।<sup>2</sup> वहाँ यहूदाह की मुलाक़ात एक कनआनी औरत से हुई जिस के बाप का नाम सूअ था। उस ने उस से शादी की।<sup>3</sup> बेटा पैदा हुआ जिस का नाम यहूदाह ने एर रखा।<sup>4</sup> एक और बेटा पैदा हुआ जिस का नाम बीवी ने ओनान रखा।<sup>5</sup> उस के तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उस ने उस का नाम सेला रखा। यहूदाह क़ज़ीब में था जब वह पैदा हुआ।

<sup>6</sup>यहूदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक लड़की से कराई जिस का नाम तमर था।<sup>7</sup> रब के नज़दीक एर शरीर था, इस लिए उस ने उसे हलाक कर दिया।<sup>8</sup> इस पर यहूदाह ने एर के छोटे भाई ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के पास जाओ और उस से शादी करो ताकि तुम्हारे भाई की नस्ल क़ाइम रहे।”<sup>9</sup> ओनान ने ऐसा किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक़ मेरे बड़े भाई के होंगे। इस लिए जब भी वह तमर से हमबिसतर होता तो नुत्फ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई के बच्चे पैदा हों।<sup>10</sup> यह बात रब को बुरी लगी, और उस ने उसे भी सज़ा-ए-मौत दी।<sup>11</sup> तब यहूदाह ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर वापस चली जाओ और उस वक़्त तक बेवा रहो जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उस ने यह इस लिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनाँचे तमर अपने मैके चली गई।

<sup>12</sup>काफ़ी दिनों के बाद यहूदाह की बीवी जो सूअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त

गुजर गया तो यहूदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के साथ तिम्नत गया जहाँ यहूदाह की भेड़ों की पश्म कतरी जा रही थी।<sup>13</sup> तमर को बताया गया, “आप का सुसर अपनी भेड़ों की पश्म कतरने के लिए तिम्नत जा रहा है।”<sup>14</sup> यह सुन कर तमर ने बेवा के कपड़े उतार कर आम कपड़े पहन लिए। फिर वह अपना मुँह चादर से लपेट कर ऐनीम शहर के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिम्नत के रास्ते में था। तमर ने यह हरकत इस लिए की कि यहूदाह का बेटा सेला अब बालिग हो चुका था तो भी उस की उस के साथ शादी नहीं की गई थी।

<sup>15</sup> जब यहूदाह वहाँ से गुज़रा तो उस ने उसे देख कर सोचा कि यह कस्बी है, क्योंकि उस ने अपना मुँह छुपाया हुआ था।<sup>16</sup> वह रास्ते से हट कर उस के पास गया और कहा, “ज़रा मुझे अपने हाँ आने दें।” (उस ने नहीं पहचाना कि यह मेरी बहू है।) तमर ने कहा, “आप मुझे क्या देंगे?”<sup>17</sup> उस ने जवाब दिया, “मैं आप को बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा, “ठीक है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।”<sup>18</sup> उस ने पूछा, “मैं आप को क्या दूँ?” तमर ने कहा, “अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की डोरी। वह लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।” चुनाँचे यहूदाह उसे यह चीज़ें दे कर उस के साथ हमबिसतर हुआ। नतीजे में तमर उम्मीद से हुई।<sup>19</sup> फिर तमर उठ कर अपने घर वापस चली गई। उस ने अपनी चादर उतार कर दुबारा बेवा के कपड़े पहन लिए।

<sup>20</sup> यहूदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के हाथ बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें वापस मिल जाएँ जो उस ने ज़मानत के तौर पर दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत कहाँ है।<sup>21</sup> उस ने ऐनीम के बाशिन्दों से पूछा, “वह कस्बी कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?” उन्होंने जवाब दिया, “यहाँ ऐसी कोई कस्बी नहीं थी।”

<sup>22</sup> उस ने यहूदाह के पास वापस जा कर कहा, “वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहने वालों ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कस्बी थी नहीं।”<sup>23</sup> यहूदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत की चीज़ें अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वर्ना लोग हमारा मज़ाक उड़ाएँगे। हम ने तो पूरी कोशिश की कि उसे बकरी का बच्चा मिल जाए, लेकिन खोज लगाने के बावजूद आप को पता न चला कि वह कहाँ है।”

<sup>24</sup> तीन माह के बाद यहूदाह को इत्तिला दी गई, “आप की बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब वह हामिला है।” यहूदाह ने हुम्म दिया, “उसे बाहर ला कर जला दो।”<sup>25</sup> तमर को जलाने के लिए बाहर लाया गया तो उस ने अपने सुसर को खबर भेज दी, “यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी की हैं जिस की मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता करें कि यह मुहर, उस की डोरी और यह लाठी किस की हैं।”<sup>26</sup> यहूदाह ने उन्हें पहचान लिया। उस ने कहा, “मैं नहीं बल्कि यह औरत हक़ पर है, क्योंकि मैं ने उस की अपने बेटे सेला से शादी नहीं कराई।” लेकिन बाद में यहूदाह कभी भी तमर से हमबिसतर न हुआ।

<sup>27</sup> जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं।<sup>28</sup> एक बच्चे का हाथ निकला तो दाई ने उसे पकड़ कर उस में सुर्ख धागा बांध दिया और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।”<sup>29</sup> लेकिन उस ने अपना हाथ वापस खँच लिया, और उस का भाई पहले पैदा हुआ। यह देख कर दाई बोल उठी, “तू किस तरह फूट निकला है!” उस ने उस का नाम फ़ारस यानी फूट रखा।<sup>30</sup> फिर उस का भाई पैदा हुआ जिस के हाथ में सुर्ख धागा बंधा हुआ था। उस का नाम ज़ारह यानी चमक रखा गया।

### यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीबी

**39** इस्माईलियों ने यूसुफ़ को मिस्र ले जा कर बेच दिया था। मिस्र के बादशाह के एक आला अप्रसर बनाम

फूतीफ़ार ने उसे खरीद लिया। वह शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान था। 2रब यूसुफ़ के साथ था। जो भी काम वह करता उस में कामयाब रहता। वह अपने मिस्री मालिक के घर में रहता था 3जिस ने देखा कि रब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी देता है। 4चुनाँचे यूसुफ़ को मालिक की खास मेहरबानी हासिल हुई, और फूतीफ़ार ने उसे अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उस ने उसे अपने घराने के इन्तिज़ाम पर मुक़रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उस के सपुर्द कर दी। 5जिस वक़्त से फूतीफ़ार ने अपने घराने का इन्तिज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सपुर्द की उस वक़्त से रब ने फूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उस की बरकत फूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़्वाह घर में थी या खेत में। 6फूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इस लिए फूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मुआमले की फ़िक्र नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ुबसूरत आदमी था। 7कुछ देर के बाद उस के मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उस ने उस से कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” 8यूसुफ़ इन्कार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मुआमले की फ़िक्र नहीं है। उन्होंने ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। 9घर के इन्तिज़ाम पर उन का इख्तियार मेरे इख्तियार से ज़्यादा नहीं है। आप के सिवा उन्होंने ने कोई भी चीज़ मुझ से बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

10मालिक की बीवी रोज़-ब-रोज़ यूसुफ़ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इन्कार करता रहा।

11एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। 12फूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास

पकड़ कर कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भाग कर बाहर चला गया लेकिन उस का लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। 13जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया है 14तो उस ने घर के नौकरों को बुला कर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक इस इब्रानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें ज़लील करे। वह मेरी इस्मतदरी करने के लिए मेरे कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीखने लगी। 15जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।” 16उस ने मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने पास रखा। 17जब वह घर वापस आया तो उस ने उसे यही कहानी सुनाई, “यह इब्रानी गुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास आया। 18लेकिन जब मैं मदद के लिए चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।”

### यूसुफ़ कैदखाने में

19यह सुन कर फूतीफ़ार बड़े गुस्से में आ गया। 20उस ने यूसुफ़ को गिरफ़्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के कैदी रखे जाते थे। वहीं वह रहा। 21लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उस ने उस पर मेहरबानी की और उसे कैदखाने के दारोगे की नज़र में मक़बूल किया। 22यूसुफ़ यहाँ तक मक़बूल हुआ कि दारोगे ने तमाम कैदियों को उस के सपुर्द करके उसे पूरा इन्तिज़ाम चलाने की जिम्मादारी दी। 23दारोगे को किसी भी मुआमले की जिसे उस ने यूसुफ़ के सपुर्द किया था फ़िक्र न रही, क्योंकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बरख़्शी।

### कैदियों के ख़्वाब

40 कुछ देर के बाद यूँ हुआ कि मिस्र के बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचारज ने अपने मालिक का गुनाह



किया। <sup>2</sup>फ़िरऔन को दोनों अप्सरों पर गुस्सा आ गया। <sup>3</sup>उस ने उन्हें उस कैदखाने में डाल दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों के कप्तान के सपुर्द था और जिस में यूसुफ़ था। <sup>4</sup>मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया ताकि वह उन की खिदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

<sup>5</sup>एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचारज ने ख्वाब देखा। दोनों का ख्वाब फ़र्क़ फ़र्क़ था, और उन का मतलब भी फ़र्क़ फ़र्क़ था। <sup>6</sup>जब यूसुफ़ सुबह के वक़्त उन के पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। <sup>7</sup>उस ने उन से पूछा, “आज आप क्यूँ इतने परेशान हैं?” <sup>8</sup>उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने ख्वाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उन का मतलब बताए।” यूसुफ़ ने कहा, “ख्वाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख्वाब तो सुनाएँ।”

<sup>9</sup>सरदार साक़ी ने शुरू किया, “मैं ने ख्वाब में अपने सामने अंगूर की बेल देखी। <sup>10</sup>उस की तीन शाखें थीं। उस के पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक गए। <sup>11</sup>मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैं ने अंगूरों को तोड़ कर यूँ भींच दिया कि उन का रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैं ने प्याला बादशाह को पेश किया।”

<sup>12</sup>यूसुफ़ ने कहा, “तीन शाखों से मुराद तीन दिन हैं। <sup>13</sup>तीन दिन के बाद फ़िरऔन आप को बहाल कर लेगा। आप को पहली ज़िम्मादारी वापस मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी की हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे। <sup>14</sup>लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा खयाल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िज़र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। <sup>15</sup>क्यूँकि मुझे इब्रानियों के मुल्क से अग़वा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझ से कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फँका जाता।”

<sup>16</sup>जब शाही बेकरी के इंचारज ने देखा कि सरदार साक़ी के ख्वाब का अच्छा मतलब निकला तो उस ने यूसुफ़ से कहा, “मेरा ख्वाब भी सुनें। मैं ने सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीज़ों से भरी हुई थीं। <sup>17</sup>सब से ऊपर वाली टोकरी में वह तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिन्दे आ कर उन्हें खा रहे थे।”

<sup>18</sup>यूसुफ़ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। <sup>19</sup>तीन दिन के बाद ही फ़िरऔन आप को कैदखाने से निकाल कर दरख़्त से लटका देगा। परिन्दे आप की लाश को खा जाएंगे।”

<sup>20</sup>तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह थी। उस ने अपने तमाम अप्सरों की ज़ियाफ़त की। इस मौक़े पर उस ने सरदार साक़ी और बेकरी के इंचारज को जेल से निकाल कर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। <sup>21</sup>सरदार साक़ी को पहले वाली ज़िम्मादारी सौंप दी गई, <sup>22</sup>लेकिन बेकरी के इंचारज को सज़ा-ए-मौत दे कर दरख़्त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने कहा था।

<sup>23</sup>लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का खयाल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

### बादशाह के ख्वाब

**41** दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने ख्वाब देखा। वह दरया-ए-नील के किनारे खड़ा था। <sup>2</sup>अचानक दरया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकल कर सरकंडों में चरने लगीं। <sup>3</sup>उन के बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी हो कर <sup>4</sup>पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इस के बाद मिस्र का बादशाह जाग उठा। <sup>5</sup>फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उस ने एक और ख्वाब देखा। अनाज के एक

पौदे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। 6 फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक्की हवा से झुलसी हुई थीं। 7 अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और खूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फिरऔन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैं ने ख्वाब ही देखा है।

8 सुबह हुई तो वह परेशान था, इस लिए उस ने मिस्र के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उस ने उन्हें अपने ख्वाब सुनाए, लेकिन कोई भी उन की ताबीर न कर सका।

9 फिर सरदार साक्की ने फिरऔन से कहा, "आज मुझे अपनी खताएँ याद आती हैं। 10 एक दिन फिरऔन अपने खादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे और बेकरी के इंचारज को कैदखाने में डलवा दिया जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुकर्रर था। 11 एक ही रात में हम दोनों ने मुख्तलिफ़ ख्वाब देखे जिन का मतलब फ़र्क़ फ़र्क़ था। 12 वहाँ जेल में एक इब्रानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों के कप्तान का गुलाम था। हम ने उसे अपने ख्वाब सुनाए तो उस ने हमें उन का मतलब बता दिया। 13 और जो कुछ भी उस ने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी ज़िम्मादारी वापस मिल गई जबकि बेकरी के इंचारज को सज़ा-ए-मौत दे कर दरख्त से लटका दिया गया।"

14 यह सुन कर फिरऔन ने यूसुफ़ को बुलाया, और उसे जल्दी से कैदखाने से लाया गया। उस ने शेव करवा कर अपने कपड़े बदले और सीधे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

15 बादशाह ने कहा, "मैं ने ख्वाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू ख्वाब को सुन कर उस का मतलब बता सकता है।" 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, "यह मेरे इख्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम देगा।"

17 फिरऔन ने यूसुफ़ को अपने ख्वाब सुनाए, "मैं ख्वाब में दरया-ए-नील के किनारे खड़ा था। 18 अचानक दरया में से सात मोटी मोटी और खूबसूरत गाएँ निकल कर सरकंडों में चरने लगीं। 19 इस के बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैं ने इतनी बदसूरत गाएँ मिस्र में कहीं भी नहीं देखीं। 20 दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। 21 और निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्होंने ने मोटी गायों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इस के बाद मैं जाग उठा। 22 फिर मैं ने एक और ख्वाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर लगी थीं। 23 इस के बाद सात और बालें निकलीं जो खराब, दुबली-पतली और मशरिक्की हवा से झुलसी हुई थीं। 24 सात दुबली-पतली बालें सात अच्छी बालों को निगल गईं। मैं ने यह सब कुछ अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इस की ताबीर न कर सके।"

25 यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, "दोनों ख्वाबों का एक ही मतलब है। इन से अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। 26 सात अच्छी गायों से मुराद सात साल हैं। इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात साल हैं। दोनों ख्वाब एक ही बात बयान करते हैं। 27 जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में निकलें उन से मुराद सात और साल हैं। यही सात दुबली-पतली और मशरिक्की हवा से झुलसी हुई बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। 28 यह वही बात है जो मैं ने हुज़ूर से कही कि अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा। 29 सात साल आएँगे जिन के दौरान मिस्र के पूरे मुल्क में कसत से पैदावार होगी। 30 उस के बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएंगे कि पहले इतनी कसत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह

कर देगा।<sup>31</sup> काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की कस्रत याद ही नहीं रहेगी।<sup>32</sup> हुजूर को इस लिए एक ही पैगाम दो मुख्तलिफ़ ख्वाबों की सूरत में मिला कि अल्लाह इस का पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा।<sup>33</sup> अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमन्द आदमी को मुल्क-ए-मिस्र का इन्तिज़ाम सौंपें।<sup>34</sup> इस के इलावा वह ऐसे आदमी मुकर्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें।<sup>35</sup> वह उन अच्छे सालों के दौरान खुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख्तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बना कर अनाज को मट्फूज़ कर लें।<sup>36</sup> वह खुराक काल के उन सात सालों के लिए मख्सूस की जाए जो मिस्र में आने वाले हैं। यूँ मुल्क तबाह नहीं होगा।”

### यूसुफ़ को मिस्र पर हाकिम मुकर्रर किया जाता है

<sup>37</sup> यह मन्सूबा बादशाह और उस के अप्रसरान को अच्छा लगा।<sup>38</sup> उस ने उन से कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लाइक आदमी नहीं मिलेगा। उस में अल्लाह की रूह है।”<sup>39</sup> बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इस लिए कोई भी तुझ से ज़्यादा समझदार और दानिशमन्द नहीं है।<sup>40</sup> मैं तुझे अपने महल पर मुकर्रर करता हूँ। मेरी तमाम रियाया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख्तियार सिर्फ़ मेरे इख्तियार से कम होगा।<sup>41</sup> अब मैं तुझे पूरे मुल्क-ए-मिस्र पर हाकिम मुकर्रर करता हूँ।”

<sup>42</sup> बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी जिस से मुहर लगाता था और उसे यूसुफ़ की उंगली में पहना दिया। उस ने उसे कतान का बारीक लिबास पहनाया और उस के गले में सोने का गलूबन्द पहना दिया।<sup>43</sup> फिर उस ने उसे अपने दूसरे रथ में सवार किया और लोग उस के आगे आगे पुकारते रहे, “घुटने टेको! घुटने टेको!”

यूँ यूसुफ़ पूरे मिस्र का हाकिम बना।<sup>44</sup> फिर औन ने उस से कहा, “मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँओ नहीं हिलाएगा।”<sup>45-46</sup> उस ने यूसुफ़ का मिस्री नाम साफ़नत-फ़ानेह रखा और औन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत के साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिस्र के बादशाह फिर औन की खिदमत करने लगा। उस ने फिर औन के हुजूर से निकल कर मिस्र का दौरा किया।

<sup>47</sup> सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं।<sup>48</sup> यूसुफ़ ने तमाम खुराक जमा करके शहरों में मट्फूज़ कर ली। हर शहर में उस ने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार मट्फूज़ रखी।<sup>49</sup> जमाशुदा अनाज समुन्दर की रेत की मानिन्द बकस्रत था। इतना अनाज था कि यूसुफ़ ने आखिरकार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।

<sup>50</sup> काल से पहले यूसुफ़ और आसनत के दो बेटे पैदा हुए।<sup>51</sup> उस ने पहले का नाम मनस्सी यानी ‘जो भुला देता है’ रखा। क्योंकि उस ने कहा, “अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।”<sup>52</sup> दूसरे का नाम उस ने इफ़्राईम यानी ‘दुगना फलदार’ रखा। क्योंकि उस ने कहा, “अल्लाह ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने फूलने दिया है।”

<sup>53</sup> सात अच्छे साल जिन में कस्रत की फ़सलें उगीं गुजर गए।<sup>54</sup> फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिस्र में वाफ़िर खुराक पाई जाती थी।<sup>55</sup> जब काल ने तमाम मिस्र में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीख कर खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब फिर औन ने उन से कहा, “यूसुफ़ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।”<sup>56</sup> जब काल पूरी

दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोल कर मिस्त्रियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत ख़राब हो गए थे।<sup>57</sup> तमाम ममालिक से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में थी।

### यूसुफ़ के भाई मिस्र में

**42** जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिस्र में अनाज है तो उस ने अपने बेटों से कहा, “तुम क्यूँ एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2सुना है कि मिस्र में अनाज है। वहाँ जा कर हमारे लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।”

<sup>3</sup>तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए मिस्र गए।<sup>4</sup>लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उस ने कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़सान पहुँचे।”<sup>5</sup>यूँ याक़ूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिस्र गए, क्योंकि मुल्क-ए-कनआन भी काल की गिरिफ़्त में था।

<sup>6</sup>यूसुफ़ मिस्र के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इस लिए उस के भाई आ कर उस के सामने मुँह के बल झुक गए।<sup>7</sup>जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखा तो उस ने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उन से नावाक़िफ़ हो और सख़्ती से उन से बात की, “तुम कहाँ से आए हो?” उन्होंने जवाब दिया, “हम मुल्क-ए-कनआन से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।”<sup>8</sup>गो यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना।<sup>9</sup>उसे वह ख़्वाब याद आए जो उस ने उन के बारे में देखे थे। उस ने कहा, “तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।”

<sup>10</sup>उन्होंने ने कहा, “जनाब, हरगिज़ नहीं। आप के गुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं।<sup>11</sup>हम

सब एक ही मर्द के बेटे हैं। आप के खादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।”<sup>12</sup>लेकिन यूसुफ़ ने इसरार किया, “नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।”

<sup>13</sup>उन्होंने ने अर्ज़ की, “आप के खादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनआन में रहता है। सब से छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।”<sup>14</sup>लेकिन यूसुफ़ ने अपना इल्ज़ाम दोहराया, “ऐसा ही है जैसा मैं ने कहा है कि तुम जासूस हो।<sup>15</sup>मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फ़िरऔन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सब से छोटा भाई आए, वर्ना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे।<sup>16</sup>एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फ़िरऔन की हयात की क़सम, इस का मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।”

<sup>17</sup>यह कह कर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए क़ैदखाने में डाल दिया।<sup>18</sup>तीसरे दिन उस ने उन से कहा, “मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इस लिए तुम को एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा।<sup>19</sup>अगर तुम वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुम में से एक यहाँ क़ैदखाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज ले कर अपने भूके घर वालों के पास वापस जाएँ।<sup>20</sup>लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इस से तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।”

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए।<sup>21</sup>वह आपस में कहने लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर जुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हम ने उस की बड़ी मुसीबत देख कर भी उस की न सुनी। इस लिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।”<sup>22</sup>और रूबिन ने कहा, “क्या मैं ने नहीं कहा था कि

लड़के पर जुल्म मत करो, लेकिन तुम ने मेरी एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-किताब किया जा रहा है।”

<sup>23</sup>उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतर्जिम की मारिफ़त उन से बात करता था। <sup>24</sup>यह बातें सुन कर वह उन्हें छोड़ कर रोने लगा। फिर वह सँभल कर वापस आया। उस ने शमाऊन को चुन कर उसे उन के सामने ही बांध लिया।

### यूसुफ़ के भाई कनआन वापस जाते हैं

<sup>25</sup>यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उन की बोरियों अनाज से भर कर हर एक भाई के पैसे उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ने ऐसा ही किया। <sup>26</sup>फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लाद कर रवाना हो गए।

<sup>27</sup>जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की गरज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उस के पैसे पड़े हैं। <sup>28</sup>उस ने अपने भाइयों से कहा, “मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।” यह देख कर उन के होश उड़ गए। काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, “यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?”

<sup>29</sup>मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के पास पहुँच कर उन्होंने ने उसे सब कुछ सुनाया जो उन के साथ हुआ था। उन्होंने ने कहा, <sup>30</sup>“उस मुल्क के मालिक ने बड़ी सख्ती से हमारे साथ बात की। उस ने हमें जासूस करार दिया। <sup>31</sup>लेकिन हम ने उस से कहा, ‘हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं। <sup>32</sup>हम बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सब से छोटा भाई इस वक़्त कनआन में बाप के पास है।’ <sup>33</sup>फिर उस मुल्क के मालिक ने हम से कहा, ‘इस से मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़ लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घर वालों के लिए खुराक ले

कर चले जाओ। <sup>34</sup>लेकिन अपने सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हो। फिर मैं तुम को तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से तिजारत कर सकोगे।’”

<sup>35</sup>उन्होंने ने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उस के पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देख कर वह खुद और उन का बाप डर गए। <sup>36</sup>उन के बाप ने उन से कहा, “तुम ने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझ से छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे खिलाफ़ है।” <sup>37</sup>फिर रूबिन बोल उठा, “अगर मैं उसे सलामती से आप के पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सज़ा-ए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सपुर्द करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।” <sup>38</sup>लेकिन याकूब ने कहा, “मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्योंकि उस का भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया है। अगर उस को रास्ते में जानी नुक्सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।”

### बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

**43** काल ने ज़ोर पकड़ा। <sup>2</sup>जब मिस्र से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याकूब ने कहा, “अब वापस जा कर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।” <sup>3</sup>लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द ने सख्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’ <sup>4</sup>अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जा कर आप के लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे <sup>5</sup>वर्ना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उस के पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।” <sup>6</sup>याकूब ने कहा, “तुम ने उसे क्यूँ बताया कि हमारा एक और भाई

भी है? इस से तुम ने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया है।" 7उन्होंने ने जवाब दिया, "वह आदमी हमारे और हमारे खानदान के बारे में पूछता रहा, 'क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िन्दा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?' फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।" 8फिर यहूदाह ने बाप से कहा, "लड़के को मेरे साथ भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएंगे। वर्ना आप, हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएंगे। 9मैं खुद उस का ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का ज़िम्मादार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िन्दगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा। 10जितनी देर तक हम झिजकते रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिस्र जा कर वापस आ सकते थे।"

11तब उन के बाप इस्राईल ने कहा, "अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफ़े के तौर पर ले कर उस आदमी को दे दो यानी कुछ बल्सान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और बादाम। 12अपने साथ दुगनी रकम ले कर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से ग़लती हुई हो। 13अपने भाई को ले कर सीधे वापस पहुँचना। 14अल्लाह क्रादिर-ए-मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।"

15चुनाँचे वह तोहफ़े, दुगनी रकम और बिनयमीन को साथ ले कर चल पड़े। मिस्र पहुँच कर वह यूसुफ़ के सामने हाज़िर हुए। 16जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उन के साथ देखा तो उस ने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, "इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ

ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके खाना तय्यार करो।"

17मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ़ के घर ले गया। 18जब उन्हें उस के घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डर कर सोचने लगे, "हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हम्ला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें गुलाम बना लेंगे।"

19इस लिए घर के दरवाज़े पर पहुँच कर उन्होंने ने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, 20"जनाब-ए-आली, हमारी बात सुन लीजिए। इस से पहले हम अनाज खरीदने के लिए यहाँ आए थे। 21लेकिन जब हम यहाँ से रवाना हो कर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो हम ने अपनी बोरियाँ खोल कर देखा कि हर बोरी के मुँह में हमारे पैसों की पूरी रकम पड़ी है। हम यह पैसे वापस ले आए हैं। 22नीज़, हम मज़ीद ख़ुराक खरीदने के लिए और पैसे ले आए हैं। ख़ुदा जाने किस ने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।"

23मुलाज़िम ने कहा, "फ़िक्र न करें। मत डरें। आप के और आप के बाप के ख़ुदा ने आप के लिए आप की बोरियों में यह खज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आप के पैसे मिल गए हैं।"

मुलाज़िम शमाऊन को उन के पास बाहर ले आया। 24फिर उस ने भाइयों को यूसुफ़ के घर में ले जा कर उन्हें पाँओ धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया। 25उन्होंने ने अपने तोहफ़े तय्यार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, "यूसुफ़ दोपहर का खाना आप के साथ ही खाएगा।"

26जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तोहफ़े ले कर उस के सामने आए और मुँह के बल झुक गए। 27उस ने उन से ख़ैरियत दरयाफ़्त की और फिर कहा, "तुम ने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक है? क्या वह

अब तक ज़िन्दा हैं?" 28उन्होंने जवाब दिया, "जी, आप के खादिम हमारे बाप अब तक ज़िन्दा हैं।" वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

29जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उस ने कहा, "क्या यह तुम्हारा सब से छोटा भाई है जिस का तुम ने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़र-ए-करम तुम पर हो।" 30यूसुफ़ अपने भाई को देख कर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इस लिए वह जल्दी से वहाँ से निकल कर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। 31फिर वह अपना मुँह धो कर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पा कर उस ने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग इन्तिज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिस्रियों के लिए भी खाने का अलग इन्तिज़ाम था, क्योंकि इब्रानियों के साथ खाना खाना उन की नज़र में क़ाबिल-ए-नफ़रत था। 33भाइयों को उन की उम्र की तरतीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने बिठाया गया। यह देख कर भाई निहायत हैरान हुए। 34नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना ले कर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निस्बत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यूँ उन्होंने ने यूसुफ़ के साथ जी भर कर खाया और पिया।

### गुमशुदा प्याला

**44** यूसुफ़ ने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, "उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठा कर ले जा सकें। हर एक के पैसे उस की अपनी बोरी के मुँह में रख देना। 2सब से छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।" मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

3अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उन के गधों समेत रुख़सत कर दिया गया। 4वह अभी शहर से निकल कर दूर नहीं गए थे

कि यूसुफ़ ने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, "जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़ुक़ करो। उन के पास पहुँच कर यह पूछना, 'आप ने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यूँ किया है? 5आप ने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यूँ चुराया है? उस से वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुर्तक़िब हुए हैं।'"

6जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उस ने उन से यही बातें कहीं। 7जवाब में उन्होंने ने कहा, "हमारे मालिक ऐसी बातें क्यूँ करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आप के खादिम ऐसा करें। 8आप तो जानते हैं कि हम मुल्क-ए-कनआन से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यूँ आप के मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? 9अगर वह आप के खादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आप के गुलाम बनें।"

10मुलाज़िम ने कहा, "ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा गुलाम बनेगा जिस ने प्याला चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।" 11उन्होंने ने जल्दी से अपनी बोरियाँ उतार कर ज़मीन पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके आखिरकार सब से छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। 13भाइयों ने यह देख कर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लाद कर शहर वापस आ गए।

14जब यहूदाह और उस के भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उस के सामने मुँह के बल गिर गए। 15यूसुफ़ ने कहा, "यह तुम ने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?" 16यहूदाह ने कहा, "जनाब-ए-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा

में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें कुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आप के गुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिस के पास से प्याला मिल गया।”<sup>17</sup>यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा गुलाम होगा जिस के पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

### यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

<sup>18</sup>लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आ कर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बन्दे को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर गुस्सा न करें अगरचे आप मिस्र के बादशाह जैसे हैं।<sup>19</sup>जनाब-ए-आली, आप ने हम से पूछा, ‘क्या तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?’<sup>20</sup>हम ने जवाब दिया, ‘हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उस का बाप उसे शिद्दत से प्यार करता है।’<sup>21</sup>जनाब-ए-आली, आप ने हमें बताया, ‘उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं खुद उसे देख सकूँ।’<sup>22</sup>हम ने जवाब दिया, ‘यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वरना उस का बाप मर जाएगा।’<sup>23</sup>फिर आप ने कहा, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा सब से छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।’<sup>24</sup>जब हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हम ने उन्हें सब कुछ बताया जो आप ने कहा था।<sup>25</sup>फिर उन्होंने ने हम से कहा, ‘मिस्र लौट कर कुछ ग़ल्ला ख़रीद लाओ।’<sup>26</sup>हम ने जवाब दिया, ‘हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ़ इस सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा सब से छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।’<sup>27</sup>हमारे बाप ने हम से कहा, ‘तुम जानते हो कि मेरी बीवी राख़िल

से मेरे दो बेटे पैदा हुए।<sup>28</sup>पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्यूँकि उसी वक़्त से मैं ने उसे नहीं देखा।<sup>29</sup>अगर इस को भी मुझ से ले जाने की वजह से जानी नुक़सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे।”

<sup>30-31</sup>यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, “जनाब-ए-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उन की ज़िन्दगी इस क़दर लड़के की ज़िन्दगी पर मुन्हसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे।<sup>32</sup>न सिर्फ़ यह बल्कि मैं ने बाप से कहा, ‘मैं खुद इस का ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िन्दगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा।’<sup>33</sup>अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रह कर इस लड़के की जगह गुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए।<sup>34</sup>अगर लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।”

### यूसुफ़ अपने आप को ज़ाहिर करता है

**45** यह सुन कर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उस ने ऊँची आवाज़ से हुक़म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है।<sup>2</sup>वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिस्रियों ने उस की आवाज़ सुनी और फिर औन के घराने को पता चल गया।<sup>3</sup>यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िन्दा है?”

लेकिन उस के भाई यह सुन कर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।



4 फिर यूसुफ़ ने कहा, "मेरे करीब आओ।" वह करीब आए तो उस ने कहा, "मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ जिसे तुम ने बेच कर मिस्र भिजवाया। 5 अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आप को इल्ज़ाम दो कि हम ने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने खुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। 6 यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। 7 अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा मट्फ़ूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। 8 चुनाँचे तुम ने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उस ने मुझे फ़िरऔन का बाप, उस के पूरे घराने का मालिक और मिस्र का हाकिम बना दिया है। 9 अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जा कर उन से कहो, 'आप का बेटा यूसुफ़ आप को इत्तिला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिस्र का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। 10 आप जुशन के इलाक़े में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे करीब होंगे, आप, आप की आल-ओ-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आप का है। 11 वहाँ मैं आप की ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेंगे। वर्ना आप, आप के घर वाले और जो भी आप के हैं बदहाल हो जाएंगे।' 12 तुम खुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ़ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। 13 मेरे बाप को मिस्र में मेरे असर-ओ-रसूख के बारे में इत्तिला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुम ने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।"

14 यह कह कर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगा कर रो पड़ा। बिनयमीन भी उस के गले लग कर रोने लगा। 15 फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इस

के बाद उस के भाई उस के साथ बातें करने लगे।

16 जब यह खबर बादशाह के महल तक पहुँची कि यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरऔन और उस के तमाम अप्रसरान खुश हुए। 17 उस ने यूसुफ़ से कहा, "अपने भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर ग़ल्ला लाद कर मुल्क-ए-कनआन वापस चले जाओ। 18 वहाँ अपने बाप और खानदानों को ले कर मेरे पास आ जाओ। मैं तुम को मिस्र की सब से अच्छी ज़मीन दे दूँगा, और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे। 19 उन्हें यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के लिए मिस्र से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को भी बिठा कर यहाँ ले आओ। 20 अपने माल की ज़्यादा फ़िक्र न करो, क्योंकि तुम्हें मुल्क-ए-मिस्र का बेहतरीन माल मिलेगा।"

21 यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ़ ने उन्हें बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ गाड़ियाँ और सफ़र के लिए ख़राक दी। 22 उस ने हर एक भाई को कपड़ों का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन बिनयमीन को उस ने चाँदी के 300 सिक्के और पाँच जोड़े दिए। 23 उस ने अपने बाप को दस गधे भिजवा दिए जो मिस्र के बेहतरीन माल से लदे हुए थे और दस गधियाँ जो अनाज, रोटी और बाप के सफ़र के लिए खाने से लदी हुई थीं। 24 यूँ उस ने अपने भाइयों को रुख़सत करके कहा, "रास्ते में झगड़ा न करना।"

25 वह मिस्र से रवाना हो कर मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के पास पहुँचे। 26 उन्होंने उस से कहा, "यूसुफ़ ज़िन्दा है! वह पूरे मिस्र का हाकिम है।" लेकिन याक़ूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि उसे यक़ीन न आया। 27 ताहम उन्होंने ने उसे सब कुछ बताया जो यूसुफ़ ने उन से कहा था, और उस ने खुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिस्र ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याक़ूब की जान में जान आ गई, 28 और उस ने कहा, "मेरा बेटा

यूसुफ़ जिन्दा है! यही काफ़ी है। मरने से पहले मैं जा कर उस से मिलूँगा।”

### याक़ूब मिस्र जाता है

**46** याक़ूब सब कुछ ले कर रवाना हुआ और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उस ने अपने बाप इस्हाक़ के खुदा के हुज़ूर कुर्बानियाँ चढ़ाईं। 2 रात को अल्लाह रोया में उस से हमकलाम हुआ। उस ने कहा, “याक़ूब, याक़ूब!” याक़ूब ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 3 अल्लाह ने कहा, “मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप इस्हाक़ का खुदा। मिस्र जाने से मत डर, क्योंकि वहाँ मैं तुझ से एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा। 4 मैं तेरे साथ मिस्र जाऊँगा और तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू मरेगा तो यूसुफ़ खुद तेरी आँखें बन्द करेगा।”

5 इस के बाद याक़ूब बैर-सबा से रवाना हुआ। उस के बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन गाड़ियों में बिठा दिया जो मिस्र के बादशाह ने भिजवाई थीं। 6 यूसुफ़ और उस की तमाम औलाद अपने मवेशी और कनआन में हासिल किया हुआ माल ले कर मिस्र चले गए। 7 याक़ूब के बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ और बाक़ी औलाद सब साथ गए।

8 इस्राईल की औलाद के नाम जो मिस्र चली गई यह हैं :

याक़ूब के पहलौठे रूबिन 9 के बेटे हनूक, फ़ल्तू, हस्रोन और कर्मी थे। 10 शमाऊन के बेटे यमूएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे (साऊल कनआनी औरत का बच्चा था)। 11 लावी के बेटे जैसॉन, क्रिहात और मिरारी थे। 12 यहूदाह के बेटे एर, ओनान, सेला, फ़ारस और ज़ारह थे (एर और ओनान कनआन में मर चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे हस्रोन और हमूल थे। 13 इश्कार के बेटे तोला, फुव्वा, योब और सिम्रोन थे। 14 ज़बूलून के बेटे सरद, ऐलोन और यहलीएल थे। 15 इन बेटों की माँ लियाह थी, और वह मसोपुतामिया में पैदा

हुए। इन के इलावा दीना उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद थे।

16 जद के बेटे सिप्रयान, हज्जी, सूनी, इस्बून, एरी, अरूदी और अरेली थे। 17 आशर के बेटे यिम्ना, इस्वाह, इस्वी और बरीआ थे। आशर की बेटी सिरह थी, और बरीआ के दो बेटे थे, हिबर और मल्कीएल। 18 कुल 16 अफ़राद ज़िल्फ़ा की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था।

19 राखिल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन थे। 20 यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़्राईम मिस्र में पैदा हुए। उन की माँ ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत थी। 21 बिनयमीन के बेटे बाला, बकर, अशबेल, जीरा, नामान, इखी, रोस, मुफ़फ़ीम, हुफ़फ़ीम और अर्द थे। 22 कुल 14 मर्द राखिल की औलाद थे।

23 दान का बेटा हुशीम था। 24 नफ़ताली के बेटे यहसीएल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे। 25 कुल 7 मर्द बिल्हाह की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया था।

26 याक़ूब की औलाद के 66 अफ़राद उस के साथ मिस्र चले गए। इस तादाद में बेटों की बीवियाँ शामिल नहीं थीं। 27 जब हम याक़ूब, यूसुफ़ और उस के दो बेटे इन में शामिल करते हैं तो याक़ूब के घराने के 70 अफ़राद मिस्र गए।

### याक़ूब और उस का खानदान मिस्र में

28 याक़ूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह जुशन में उन से मिले। जब वह वहाँ पहुँचे 29 तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार हो कर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देख कर वह उस के गले लग कर काफ़ी देर रोता रहा। 30 याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “अब मैं मरने के लिए तय्यार हूँ, क्योंकि मैं ने खुद देखा है कि तू जिन्दा है।”

31 फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने बाप के खानदान के बाक़ी अफ़राद से कहा, “ज़रूरी है कि मैं जा कर बादशाह को इत्तिला

दूँ कि मेरे भाई और मेरे बाप का पूरा खानदान जो कनआन के रहने वाले हैं मेरे पास आ गए हैं।<sup>32</sup> मैं उस से कहूँगा, 'यह आदमी भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। वह मवेशी पालते हैं, इस लिए अपनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और बाक्री सारा माल अपने साथ ले आए हैं।' <sup>33</sup> बादशाह तुम्हें बुला कर पूछेगा कि तुम क्या काम करते हो? <sup>34</sup> फिर तुम को जवाब देना है, 'आप के खादिम बचपन से मवेशी पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है।' अगर तुम यह कहो तो तुम्हें जुशन में रहने की इजाज़त मिलेगी। क्योंकि भेड़-बकरियों के चरवाहे मिस्रियों की नज़र में क्राबिल-ए-नफ़रत हैं।"

**47** यूसुफ़ फ़िरऔन के पास गया और उसे इत्तिला दे कर कहा, "मेरा बाप और भाई अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और सारे माल समेत मुल्क-ए-कनआन से आ कर जुशन में ठहरे हुए हैं।" <sup>2</sup> उस ने अपने भाइयों में से पाँच को चुन कर फ़िरऔन के सामने पेश किया। <sup>3</sup> फ़िरऔन ने भाइयों से पूछा, "तुम क्या काम करते हो?" उन्होंने जवाब दिया, "आप के खादिम भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है। <sup>4</sup> हम यहाँ आए हैं ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से आप के पास ठहरें, क्योंकि काल ने कनआन में बहुत ज़ोर पकड़ा है। वहाँ आप के खादिमों के जानवरों के लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इस लिए हमें जुशन में रहने की इजाज़त दें।"

<sup>5</sup> बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, "तेरा बाप और भाई तेरे पास आ गए हैं। <sup>6</sup> मुल्क-ए-मिस्र तेरे सामने खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन में रहें। और अगर उन में से कुछ हैं जो खास क्राबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की निगहदाशत पर रख।"

<sup>7</sup> फिर यूसुफ़ अपने बाप याकूब को ले आया और फ़िरऔन के सामने पेश किया। याकूब ने बादशाह को बरकत दी। <sup>8</sup> बादशाह ने उस

से पूछा, "तुम्हारी उम्र क्या है?" <sup>9</sup> याकूब ने जवाब दिया, "मैं 130 साल से इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी ज़िन्दगी मुख़्तसर और तकलीफ़दिह थी, और मेरे बापदादा मुझ से ज़्यादा उप्ररसीदा हुए थे जब वह इस दुनिया के मेहमान थे।" <sup>10</sup> यह कह कर याकूब फ़िरऔन को दुबारा बरकत दे कर चला गया।

<sup>11</sup> फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिस्र में आबाद किया। उस ने उन्हें रामसीस के इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। <sup>12</sup> यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक मुहय्या करता रहा। हर खानदान को उस के बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

### काल का सख़्त असर

<sup>13</sup> काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं मिलती थी। मिस्र और कनआन में लोग निढाल हो गए।

<sup>14</sup> मिस्र और कनआन के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके फ़िरऔन के महल में ले आया। <sup>15</sup> जब मिस्र और कनआन के पैसे ख़त्म हो गए तो मिस्रियों ने यूसुफ़ के पास आ कर कहा, "हमें रोटी दें। हम आप के सामने क्यूँ मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।" <sup>16</sup> यूसुफ़ ने जवाब दिया, "अगर आप के पैसे ख़त्म हैं तो मुझे अपने मवेशी दें। मैं उन के इवज़ रोटी देता हूँ।" <sup>17</sup> चुनाँचे वह अपने घोड़े, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इन के इवज़ उस ने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उस ने उन्हें उन के तमाम मवेशियों के इवज़ ख़ुराक मुहय्या की।

<sup>18</sup> अगले साल वह दुबारा उस के पास आए। उन्होंने कहा, "जनाब-ए-आली, हम यह बात आप से नहीं छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी ज़मीन को आप को दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं।" <sup>19</sup> हम क्यूँ आप की

आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन क्यों तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी ज़मीन बादशाह की होगी। हम फ़िरऔन के गुलाम होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन तबाह न हो जाए।”

<sup>20</sup>चुनाँचे यूसुफ़ ने फ़िरऔन के लिए मिस्र की पूरी ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब से तमाम मिस्रियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीक़े से पूरा मुल्क फ़िरऔन की मिलकियत में आ गया। <sup>21</sup>यूसुफ़ ने मिस्र के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को शहरों में मुन्तक़िल कर दिया। <sup>22</sup>सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि उन्हें फ़िरऔन से इतना वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

<sup>23</sup>यूसुफ़ ने लोगों से कहा, “ग़ौर से सुनें। आज मैंने आप को और आप की ज़मीन को बादशाह के लिए ख़रीद लिया है। अब यह बीज ले कर अपने खेतों में बोना। <sup>24</sup>आप को फ़िरऔन को फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा देना है। बाक़ी पैदावार आप की होगी। आप इस से बीज बो सकते हैं, और यह आप के और आप के घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।” <sup>25</sup>उन्होंने जवाब दिया, “आप ने हमें बचाया है। हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फ़िरऔन के गुलाम बनेंगे।”

<sup>26</sup>इस तरह यूसुफ़ ने मिस्र में यह क़ानून नाफ़िज़ किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का है। यह क़ानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन बादशाह की मिलकियत में न आई।

### याक़ूब की आखिरी गुज़ारिश

<sup>27</sup>इस्राईली मिस्र में जुशन के इलाक़े में आबाद हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए।

<sup>28</sup>याक़ूब 17 साल मिस्र में रहा। वह 147 साल का था जब फ़ौत हुआ। <sup>29</sup>जब मरने का

वक़्त करीब आया तो उसने यूसुफ़ को बुला कर कहा, “मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख कर क़सम खा कि तू मुझे पर शफ़क़त और वफ़ादारी का इस तरह इज़हार करेगा कि मुझे मिस्र में दफ़न नहीं करेगा। <sup>30</sup>जब मैं मर कर अपने बापदादा से जा मिलूँगा तो मुझे मिस्र से ले जा कर मेरे बापदादा की क़ब्र में दफ़नाना।” यूसुफ़ ने जवाब दिया, “ठीक है।” <sup>31</sup>याक़ूब ने कहा, “क़सम खा कि तू ऐसा ही करेगा।” यूसुफ़ ने क़सम खाई। तब इस्राईल ने अपने बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिज्दा किया।

### याक़ूब इफ़्राईम और मनस्सी

#### को बरकत देता है

**48** कुछ देर के बाद यूसुफ़ को इत्तिला दी गई कि आप का बाप बीमार है। वह अपने दो बेटों मनस्सी और इफ़्राईम को साथ ले कर याक़ूब से मिलने गया।

य़ाक़ूब को बताया गया, “आप का बेटा आ गया है” तो वह अपने आप को सँभाल कर अपने बिस्तर पर बैठ गया। <sup>3</sup>उसने यूसुफ़ से कहा, “जब मैं कनआनी शहर लूज़ में था तो अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ मुझे पर ज़ाहिर हुआ। उसने मुझे बरकत दे कर <sup>4</sup>कहा, ‘मैं तुझे फलने फूलने दूँगा और तेरी औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझ से बहुत सी क़ौमें निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क हमेशा के लिए दे दूँगा।’ <sup>5</sup>अब मेरी बात सुन। मैं चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिस्र में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़्राईम और मनस्सी रूबिन और शमाऊन के बराबर ही मेरे बेटे हों। <sup>6</sup>अगर इन के बाद तेरे हों और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह उन्हें इफ़्राईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी। <sup>7</sup>मैं यह तेरी माँ राखिल के सबब से कर रहा हूँ जो मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनआन में इफ़्राता के करीब

मर गई। मैं ने उसे वहीं रास्ते में दफ़न किया” (आज इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता है)।

११ फिर याक़ूब ने यूसुफ़ के बेटों पर नज़र डाल कर पूछा, “यह कौन हैं?” १२ यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ मिस्र में दिए।” याक़ूब ने कहा, “उन्हें मेरे क़रीब ले आ ताकि मैं उन्हें बरकत दूँ।” १३ बूढ़ा होने के सबब से याक़ूब की आँखें कमज़ोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं सकता था। यूसुफ़ अपने बेटों को याक़ूब के पास ले आया तो उस ने उन्हें बोसा दे कर गले लगाया १४ और यूसुफ़ से कहा, “मुझे तवक्क़ो ही नहीं थी कि मैं कभी तेरा चेहरा देखूँगा, और अब अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को देखने का मौक़ा भी दिया है।”

१५ फिर यूसुफ़ उन्हें याक़ूब की गोद में से ले कर ख़ुद उस के सामने मुँह के बल झुक गया। १६ यूसुफ़ ने इफ़्राईम को याक़ूब के बाएँ हाथ रखा और मनस्सी को उस के दाएँ हाथ। १७ लेकिन याक़ूब ने अपना दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ा कर इफ़्राईम के सर पर रखा अगरचे वह छोटा था। इस तरह उस ने अपना बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ा कर मनस्सी के सर पर रखा जो बड़ा था। १८ फिर उस ने यूसुफ़ को उस के बेटों की मारिफ़त बरकत दी, “अल्लाह जिस के हुज़ूर मेरे बापदादा इब्राहीम और इस्हाक़ चलते रहे और जो शुरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे। १९ जिस फ़रिश्ते ने इवज़ाना दे कर मुझे हर नुक़सान से बचाया है वह इन्हें बरकत दे। अल्लाह करे कि इन में मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम और इस्हाक़ के नाम जीते रहें। दुनिया में इन की औलाद की तादाद बहुत बढ़ जाए।”

२० जब यूसुफ़ ने देखा कि बाप ने अपना दहना हाथ छोटे बेटे इफ़्राईम के सर पर रखा है तो यह उसे बुरा लगा, इस लिए उस ने बाप का हाथ पकड़ा ताकि उसे इफ़्राईम के सर पर से उठा कर मनस्सी के सर पर रखे। २१ उस ने कहा, “अब्बू, ऐसे नहीं। दूसरा लड़का बड़ा है।

उसी पर अपना दहना हाथ रखें।” २२ लेकिन बाप ने इन्कार करके कहा, “मुझे पता है बेटा, मुझे पता है। वह भी एक बड़ी क़ौम बनेगा। फिर भी उस का छोटा भाई उस से बड़ा होगा और उस से क़ौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।”

२३ उस दिन उस ने दोनों बेटों को बरकत दे कर कहा, “इस्राईली तुम्हारा नाम ले कर बरकत दिया करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो कहेंगे, ‘अल्लाह आप के साथ वैसा करे जैसा उस ने इफ़्राईम और मनस्सी के साथ किया है’।” इस तरह याक़ूब ने इफ़्राईम को मनस्सी से बड़ा बना दिया। २४ यूसुफ़ से उस ने कहा, “मैं तो मरने वाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे बापदादा के मुल्क में वापस ले जाएगा। २५ एक बात में मैं तुझे तेरे भाइयों पर तर्जीह देता हूँ, मैं तुझे कनआन में वह क़ितआ देता हूँ जो मैं ने अपनी तलवार और कमान से अमोरियों से छीना था।”

### याक़ूब अपने बेटों को बरकत देता है

**49** याक़ूब ने अपने बेटों को बुला कर कहा, “मेरे पास जमा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या क्या होगा। २६ याक़ूब के बेटे, इकट्ठे हो कर सुनो, अपने बाप इस्राईल की बातों पर ग़ौर करो।

२७ रूबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और मेरी ताक़त का पहला फल। तुम इज़ज़त और कुव्वत के लिहाज़ से बरतर हो। २८ लेकिन चूँकि तुम बेकाबू सैलाब की मानिन्द हो इस लिए तुम्हारी अव्वल हैसियत जाती रहे। क्योंकि तुम ने मेरी हरम से हमबिसतर हो कर अपने बाप की बेहुरमती की है।

२९ शमाऊन और लावी दोनों भाइयों की तलवारें ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद के हथियार रहे हैं। ३० मेरी जान न उन की मजलिस में शामिल और न उन की जमाअत में दाख़िल हो, क्योंकि उन्होंने ने गुस्से में आ कर दूसरों को क़त्ल किया है, उन्होंने ने अपनी मर्ज़ी से बैलों की कोंचें काटी

हैं। 7उन के गुस्से पर लानत हो जो इतना ज़बरदस्त है और उन के तैश पर जो इतना सख्त है। मैं उन्हें याकूब के मुल्क में तित्तर-बित्तर करूँगा, उन्हें इस्राईल में मुन्तशिर कर दूँगा।

8यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ़ करेंगे। तुम अपने दुश्मनों की गर्दन पकड़े रहोगे, और तुम्हारे बाप के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। 9यहूदाह शेरबबर का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी अभी शिकार मार कर वापस आए हो। यहूदाह शेरबबर बल्कि शेरनी की तरह दबक कर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने की जुरअत करेगा? 10शाही असा यहूदाह से दूर नहीं होगा बल्कि शाही इख्तियार उस वक्रत तक उस की औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए जिस के ताबे क्रौमें रहेंगे। 11वह अपना जवान गधा अंगूर की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन अंगूर की बेल से बांधेगा। वह अपना लिबास मै में और अपना कपड़ा अंगूर के खून में धोएगा। 12उस की आँखें मै से ज़्यादा गदली और उस के दाँत दूध से ज़्यादा सफ़ेद होंगे।

13ज़बूलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक होगी।

14इश्कार ताक़तवर गधा है जो अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा है। 15जब वह देखेगा कि उस की आरामगाह अच्छी और उस का मुल्क खुशनुमा है तो वह बोझ उठाने के लिए तय्यार हो जाएगा और उजरत के बग़ैर काम करने के लिए मजबूर किया जाएगा।

16दान अपनी क्रौम का इन्साफ़ करेगा अगरचे वह इस्राईल के क्रबीलों में से एक ही है। 17दान सड़क के साँप और रास्ते के अफ़ई की मानिन्द होगा। वह घोड़े की एड़ियों को काटेगा तो उस का सवार पीछे गिर जाएगा।

18ऐ रब, मैं तेरी ही नजात के इन्तिज़ार में हूँ!

19जद पर डाकुओं का जथ्था हम्ला करेगा, लेकिन वह पलट कर उसी पर हम्ला कर देगा।

20आशर को गिज़ाइयत वाली ख़ुराक हासिल होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहय्या करेगा।

21नफ़्ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह ख़ूबसूरत बातें करता है।<sup>a</sup>

22यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी हुई फलदार बेल है जिस की शाखें दीवार पर चढ़ गई हैं। 23तीरअन्दाज़ों ने उस पर तीर चला कर उसे तंग किया और उस के पीछे पड़ गए, 24लेकिन उस की कमान मज़बूत रही, और उस के बाजू याकूब के ज़ोर-आवर ख़ुदा के सबब से ताक़तवर रहे, उस चरवाहे के सबब से जो इस्राईल का ज़बरदस्त सूरमा है। 25क्यूँकि तेरे बाप का ख़ुदा तेरी मदद करता है, अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे आसमान की बरकत, ज़मीन की गहराइयों की बरकत और औलाद की बरकत देता है। 26तेरे बाप की बरकत क़दीम पहाड़ों और अबदी पहाड़ियों की मर्ग़ब चीज़ों से ज़्यादा अज़ीम है। यह तमाम बरकत यूसुफ़ के सर पर हो, उस शख्स के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा है।

27बिनयमीन फाड़ने वाला भेड़िया है। सुब्ह वह अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा हुआ माल तव्रसीम कर देता है।"

28यह इस्राईल के कुल बारह क्रबीले हैं। और यह वह कुछ है जो उन के बाप ने उन से बरकत देते वक्रत कहा। उस ने हर एक को उस की अपनी बरकत दी।

### याकूब का इन्तिक़ाल

29फिर याकूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, "अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के साथ उस ग़ार में दफ़नाना जो हिती आदमी इफ़ोन के खेत में है। 30यानी उस ग़ार में जो मुल्क-ए-कनआन में मग्ने के मशरिक् में मक्फ़ीला के खेत में है।

<sup>a</sup>या ख़ूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों को दफ़नाने के लिए इफ़्रोने हित्ती से ख़रीद लिया था।<sup>31</sup> वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए गए, वहाँ इस्हाक़ और उस की बीवी रिब्का दफ़नाए गए और वहाँ मैं ने लियाह को दफ़न किया।<sup>32</sup> वह खेत और उस का ग़ार हित्तियों से ख़रीदा गया था।”

<sup>33</sup>इन हिदायात के बाद याक़ूब ने अपने पाँओ बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़ कर अपने बापदादा से जा मिला।

### याक़ूब को दफ़न किया जाता है

**50** यूसुफ़ अपने बाप के चेहरे से लिपट गया। उस ने रोते हुए उसे बोसा दिया।<sup>2</sup> उस के मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उस ने उन्हें हिदायत दी कि मेरे बाप इस्राईल की लाश को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्होंने ने ऐसा ही किया।<sup>3</sup> इस में 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिस्त्रियों ने 70 दिन तक याक़ूब का मातम किया।

<sup>4</sup>जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यूसुफ़ ने बादशाह के दरबारियों से कहा, “मेहरबानी करके यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5कि मेरे बाप ने मुझे क्रसम दिला कर कहा था, ‘मैं मरने वाला हूँ। मुझे उस क़ब्र में दफ़न करना जो मैं ने मुल्क-ए-कनआन में अपने लिए बनवाई।’ अब मुझे इजाज़त दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न करके वापस आऊँ।”<sup>6</sup>फ़िरऔन ने जवाब दिया, “जा, अपने बाप को दफ़न कर जिस तरह उस ने तुझे क्रसम दिलाई थी।”

<sup>7</sup>चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए कनआन रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुजुर्ग़ और पूरे मिस्र के बुजुर्ग़ उस के साथ थे।<sup>8</sup>यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उस के भाई और उस के बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उन के बच्चे, उन की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल

जुशन में रहे। श्रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिल कर बड़ा लश्कर बन गए।

<sup>10</sup>जब वह यर्दन के क़रीब अतद के खलियान पर पहुँचे तो उन्होंने ने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया।<sup>11</sup>जब मक़ामी कनआनियों ने अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्होंने ने कहा, “यह तो मातम का बहुत बड़ा इन्तिज़ाम है जो मिस्री करवा रहे हैं।” इस लिए उस जगह का नाम अबील-मिस्रीम यानी ‘मिस्रियों का मातम’ पड़ गया।<sup>12</sup>यू याक़ूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया।<sup>13</sup>उन्होंने ने उसे मुल्क-ए-कनआन में ले जा कर मक्फ़ीला के खेत के ग़ार में दफ़न किया जो मग्ने के मशरिफ़ में है। यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़्रोने हित्ती से अपने लोगों को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।

<sup>14</sup>इस के बाद यूसुफ़, उस के भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिस्र को लौट आए।

### यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

<sup>15</sup>जब याक़ूब इन्तिक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के भाई डर गए। उन्होंने ने कहा, “खतरा है कि अब यूसुफ़ हमारा ताक़ूब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हम ने उस के साथ किया था। फिर क्या होगा?”<sup>16</sup>यह सोच कर उन्होंने ने यूसुफ़ को खबर भेजी, “आप के बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी<sup>17</sup>कि यूसुफ़ को बताना, ‘अपने भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो उन्होंने ने तुम्हारे साथ किया।’ अब हमें जो आप के बाप के खुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।”

यह खबर सुन कर यूसुफ़ रो पड़ा।<sup>18</sup>फिर उस के भाई खुद आए और उस के सामने गिर गए। उन्होंने ने कहा, “हम आप के खादिम हैं।”<sup>19</sup>लेकिन यूसुफ़ ने कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! <sup>20</sup>तुम

ने मुझे नुक्सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उस से भलाई पैदा की। और अब इस का मक्सद पूरा हो रहा है। बहुत से लोग मौत से बच रहे हैं।<sup>21</sup> चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को खुराक मुहय्या करता रहूँगा।”

यूँ यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उन से नर्मी से बात की।

### यूसुफ़ का इन्तिक़ाल

<sup>22</sup>यूसुफ़ अपने बाप के खानदान समेत मिस्र में रहा। वह 110 साल ज़िन्दा रहा।<sup>23</sup> मौत से पहले उस ने न सिर्फ़ इफ़्राईम के बच्चों को बल्कि उस के पोतों को भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर के बच्चे भी उस की मौजूदगी में

पैदा हो कर उस की गोद में रखे गए।<sup>a</sup>

<sup>24</sup>फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरने वाला हूँ। लेकिन अल्लाह ज़रूर आप की देख-भाल करके आप को इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिस का उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से क़सम खा कर वादा किया है।”<sup>25</sup> फिर यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क़सम दिला कर कहा, “अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा कर साथ ले जाना।”

<sup>26</sup>फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल का था। उसे हनूत करके मिस्र में एक ताबूत में रखा गया।

<sup>a</sup>ग़ालिबन इस का मतलब यह है कि उस ने उन्हें लेपालक बनाया।



---

# खुर्रुज

---

## याकूब का खानदान मिस्र में

**1** ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने बाप याकूब और अपने खानदानों समेत मिस्र में आए थे : २रूबिन, शमाऊन, लावी, यहूदाह, ३इश्कार, ज़बूलून, बिनयमीन, ४दान, नफ़्ताली, जद और आशर। ५उस वक़्त याकूब की औलाद की तादाद 70 थी। यूसुफ़ तो पहले ही मिस्र आ चुका था।

६मिस्र में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने में यूसुफ़, उस के तमाम भाई और उस नस्ल के तमाम लोग मर गए। ७इस्राईली फले फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उन से भर गया।

## इस्राईलियों को दबाया जाता है

८होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ़ से नावाक्रिफ़ था। ९उस ने अपने लोगों से कहा, “इस्राईलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त में हम से बढ़ गए हैं। १०आओ, हम हिक्मत से काम लें, वर्ना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न हो कि वह किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ दे कर हम से लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

११चुनौचे मिस्रियों ने इस्राईलियों पर निगरान मुकर्रर किए ताकि बेगार में उन से काम करवा कर उन्हें दबाते रहें। उस वक़्त उन्होंने ने

पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों में फ़िरऔन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे। १२लेकिन जितना इस्राईलियों को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए। आख़िरकार मिस्री उन से दृशत खाने लगे, १३और वह बड़ी बेरहमी से उन से काम करवाते रहे। १४इस्राईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तय्यार करके ईटें बनाना और खेतों में मुख़्तलिफ़ क्रिस्म के काम करना पड़े। इस में मिस्री उन से बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

## दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

१५इस्राईलियों की दो दाइयाँ थीं जिन के नाम सिफ़्रा और फ़ूआ थे। मिस्र के बादशाह ने उन से कहा, १६“जब इब्रानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।” १७लेकिन दाइयाँ अल्लाह का खौफ़ मानती थीं। उन्होंने ने मिस्र के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को भी जीने दिया।

१८तब मिस्र के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुला कर पूछा, “तुम ने यह क्यूँ किया? तुम लड़कों को क्यूँ जीता छोड़ देती हो?” १९उन्होंने ने जवाब दिया, “इब्रानी औरतें मिस्री औरतों से

ज़्यादा मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।”

<sup>20</sup>चुनाँचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और इस्राईली क्रौम तादाद में बढ़ कर बहुत ताक़तवर हो गई। <sup>21</sup>और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं इस लिए उस ने उन्हें औलाद दे कर उन के ख़ानदानों को क़ाइम रखा।

<sup>22</sup>आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, “जब भी इब्रानियों के लड़के पैदा हों तो उन्हें दरया-ए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो।”

### मूसा की पैदाइश और बचाओ

**2** उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की। <sup>2</sup>औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लड़का ख़ूबसूरत है, इस लिए उस ने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। <sup>3</sup>जब वह उसे और ज़्यादा न छुपा सकी तो उस ने आबी नर्सल से टोकरी बना कर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उस ने बच्चे को टोकरी में रख कर टोकरी को दरया-ए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। <sup>4</sup>बच्चे की बहन कुछ फ़ासिले पर खड़ी देखती रही कि उस का क्या बनेगा।

<sup>5</sup>उस वक़्त फ़िरऔन की बेटी नहाने के लिए दरया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरया के किनारे टहलने लगीं। तब उस ने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। <sup>6</sup>उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फ़िरऔन की बेटी को उस पर तरस आया। उस ने कहा, “यह कोई इब्रानी बच्चा है।”

<sup>7</sup>अब बच्चे की बहन फ़िरऔन की बेटी के पास गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इब्रानी औरत ढूँड लाऊँ?” <sup>8</sup>फ़िरऔन की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।” लड़की चली गई और बच्चे की सगी

माँ को ले कर वापस आई। <sup>9</sup>फ़िरऔन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इस का मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

<sup>10</sup>जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फ़िरऔन की बेटी के पास ले गई, और वह उस का बेटा बन गया। फ़िरऔन की बेटी ने उस का नाम मूसा यानी ‘निकाला गया’ रख कर कहा, “मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।”

### मूसा फ़रार होता है

<sup>11</sup>जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकल कर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिस्त्री मेरे एक इब्रानी भाई को मार रहा है। <sup>12</sup>मूसा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उस ने मिस्त्री को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

<sup>13</sup>अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफ़ा दो इब्रानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो ग़लती पर था उस से मूसा ने पूछा, “तुम अपने भाई को क्यों मार रहे हो?” <sup>14</sup>आदमी ने जवाब दिया, “किस ने आप को हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़रर किया है? क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिस्त्री को मार डाला था?” तब मूसा डर गया। उस ने सोचा, “हाय, मेरा भेद खुल गया है!”

<sup>15</sup>बादशाह को भी पता लगा तो उस ने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ गया। <sup>16</sup>मिदियान में एक इमाम था जिस की सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर आईं और पानी निकाल कर हौज़ भरने लगीं। <sup>17</sup>लेकिन कुछ चरवाहों ने आ कर उन्हें भगा दिया। यह देख

कर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों से बचा कर उन के रेवड़ को पानी पिलाया।

<sup>18</sup>जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस आईं तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी जल्दी से क्यों वापस आ गई हो?” <sup>19</sup>लड़कियों ने जवाब दिया, “एक मिस्री आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उस ने हमारे लिए पानी भी निकाल कर रेवड़ को पिला दिया।” <sup>20</sup>रऊएल ने कहा, “वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यों छोड़ कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

<sup>21</sup>मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सप्रफ़ूरा से हुई। <sup>22</sup>सप्रफ़ूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, “इस का नाम जैसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्योंकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

<sup>23</sup>काफ़ी अर्सा गुजर गया। इतने में मिस्र का बादशाह इन्तिकाल कर गया। इस्राईली अपनी गुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे, और उन की चीखें अल्लाह तक पहुँच गईं। <sup>24</sup>अल्लाह ने उन की आर्हे सुनीं और उस अहद को याद किया जो उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से बांधा था। <sup>25</sup>अल्लाह इस्राईलियों की हालत देख कर उन का खयाल करने लगा।

### जलती हुई झाड़ी

**3** मूसा अपने सुसर यिब्रो की भेड़-बकरियों की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम रऊएल यिब्रो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। <sup>2</sup>वहाँ रब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। <sup>3</sup>मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है।

क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं ज़रा वहाँ जा कर यह हैरतअंगेज़ मन्ज़र देखूँ।”

<sup>4</sup>जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उस ने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” <sup>5</sup>रब ने कहा, “इस से ज़यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है। <sup>6</sup>मैं तेरे बाप का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इस्हाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा हूँ।” यह सुन कर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

<sup>7</sup>रब ने कहा, “मैं ने मिस्र में अपनी क्रौम की बुरी हालत देखी और गुलामी में उन की चीखें सुनी हैं, और मैं उन के दुखों को ख़ूब जानता हूँ। <sup>8</sup>अब मैं उन्हें मिस्रियों के क़्राबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कस्रत है, गो इस वक़्त कनआनी, हिती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिब्वी और यबूसी उस में रहते हैं। <sup>9</sup>इस्राईलियों की चीखें मुझ तक पहुँची हैं। मैं ने देखा है कि मिस्री उन पर किस तरह का जुल्म ढा रहे हैं। <sup>10</sup>चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरऔन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क्रौम इस्राईल को मिस्र से निकाल कर लाना है।”

<sup>11</sup>लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फ़िरऔन के पास जा कर इस्राईलियों को मिस्र से निकाल लाऊँ?” <sup>12</sup>अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इस का सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिस्र से निकलने के बाद तुम यहाँ आ कर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

<sup>13</sup>लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “अगर मैं इस्राईलियों के पास जा कर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास

भेजा है तो वह पूछेंगे, 'उस का नाम क्या है?' फिर मैं उन को क्या जवाब दूँ?"

14अल्लाह ने कहा, "मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उन से कहना, 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' 15रब जो तुम्हारे बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इस्हाक़ का खुदा और याकूब का खुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही नाम ले कर मुझे नस्ल-दर-नस्ल याद करेंगे।

16अब जा और इस्राईल के बुजुर्गों को जमा करके उन को बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याकूब का खुदा मुझ पर ज़ाहिर हुआ है। वह फ़रमाता है, 'मैं ने ख़ूब देख लिया है कि मिस्र में तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है। 17इस लिए मैं ने फ़ैसला किया है कि तुम्हें मिस्र की मुसीबत से निकाल कर कनआनियों, हितियों, अमोरियों, फ़रिज़ियों, हिवियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कस्रत है।' 18बुजुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उन के साथ मिस्र के बादशाह के पास जा कर उस से कहना, 'रब इब्रानियों का खुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए हमें इजाज़त दे कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने खुदा के लिए कुर्बानियाँ चढ़ाएँ।'

19लेकिन मुझे मालूम है कि मिस्र का बादशाह सिर्फ़ इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई ज़बरदस्ती तुम्हें ले जाए। 20इस लिए मैं अपनी कुदरत ज़ाहिर करके अपने मोज़िज़ों की मारिफ़त मिस्रियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा। 21उस वक़्त मैं मिस्रियों के दिलों को तुम्हारे लिए नर्म कर दूँगा। तुम्हें ख़ाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22तमाम इब्रानी औरतें अपनी मिस्री पड़ोसनों और अपने घर में रहने वाली मिस्री औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपड़े माँग कर अपने

बच्चों को पहनाएँगी। यूँ मिस्रियों को लूट लिया जाएगा।"

4 मूसा ने एतिराज़ किया, "लेकिन इस्राईली न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ'।" 2जवाब में रब ने मूसा से कहा, "तू ने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?" मूसा ने कहा, "लाठी।" 3रब ने कहा, "उसे ज़मीन पर डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डर कर भागा। 4रब ने कहा, "अब साँप की दुम को पकड़ ले।" मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

5रब ने कहा, "यह देख कर लोगों को यक़ीन आएगा कि रब जो उन के बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इस्हाक़ का खुदा और याकूब का खुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।" मूसा ने ऐसा किया। जब उस ने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी। 7तब रब ने कहा, "अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।" मूसा ने ऐसा किया। जब उस ने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमन्द था।

8रब ने कहा, "अगर लोगों को पहला मोज़िज़ा देख कर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोज़िज़ा देख कर यक़ीन आए। 9अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरया-ए-नील से कुछ पानी निकाल कर उसे खुशक़ ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही खून बन जाएगा।"

10लेकिन मूसा ने कहा, "मेरे आक्रा, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझ से बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुक कर बोलता हूँ।" 11रब ने कहा, "किस ने

इन्सान का मुँह बनाया? कौन एक को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक को देखने की क्राबिलियत देता है और दूसरे को इस से महरूम रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? <sup>12</sup>अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं खुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।”

<sup>13</sup>लेकिन मूसा ने इल्लिजा की, “मेरे आक्रा, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।”

<sup>14</sup>तब रब मूसा से सख़्त खफ़ा हुआ। उस ने कहा, “क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझ से मिलने के लिए निकल चुका है। तुझे देख कर वह निहायत खुश होगा। <sup>15</sup>उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते वक़्त मैं तेरे और उस के साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा। <sup>16</sup>हारून तेरी जगह क्रौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है। <sup>17</sup>लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना, क्योंकि इसी के ज़रीए तू यह मौजिज़े करेगा।”

### मूसा मिस्र को लौट जाता है

<sup>18</sup>फिर मूसा अपने सुसर यित्रो के घर वापस चला गया। उस ने कहा, “मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास वापस जाने दें जो मिस्र में हैं। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िन्दा हैं कि नहीं।” यित्रो ने जवाब दिया, “ठीक है, सलामती से जाएँ।” <sup>19</sup>मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने उस से कहा, “मिस्र को वापस चला जा, क्योंकि जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।” <sup>20</sup>चुनाँचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिस्र को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उस के हाथ में थी।

<sup>21</sup>रब ने उस से यह भी कहा, “मिस्र जा कर फिरऔन के सामने वह तमाम मौजिज़े दिखा जिन का मैं ने तुझे इख़तियार दिया है। लेकिन

मेरे कहने पर वह अड़ा रहेगा। वह इस्राईलियों को जाने की इजाज़त नहीं देगा। <sup>22</sup>उस वक़्त फिरऔन को बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि इस्राईल मेरा पहलौठा है। <sup>23</sup>मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा।’”

<sup>24</sup>एक दिन जब मूसा अपने ख़ानदान के साथ रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने उस पर हमला करके उसे मार देने की कोशिश की। <sup>25</sup>यह देख कर सप्रफ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे का खतना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर छुए। उस ने कहा, “यक्रीनन तुम मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।” <sup>26</sup>तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सप्रफ़ूरा ने उसे खतने के बाइस ही ‘खूनी दूल्हा’ कहा था।

<sup>27</sup>रब ने हारून से भी बात की, “रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।” हारून चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उस ने उसे बोसा दिया। <sup>28</sup>मूसा ने हारून को सब कुछ सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उस ने उसे उन मौजिज़ों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

<sup>29</sup>फिर दोनों मिल कर मिस्र गए। वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया। <sup>30</sup>हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाई जो रब ने मूसा को बताई थीं। उस ने मज़कूरा मौजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए। <sup>31</sup>फिर उन्हें यक्रीन आया। और जब उन्होंने ने सुना कि रब को तुम्हारा खयाल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्होंने ने रब को सिपदा किया।

**मूसा और हारून फिरऔन के दरबार में**  
**5** फिर मूसा और हारून फिरऔन के पास गए। उन्होंने ने कहा, “रब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क्रौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।’”

२फ़िरऔन ने जवाब दिया, “यह रब कौन है? मैं क्यों उस का हुक्म मान कर इस्राईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इस्राईलियों को जाने दूँगा।”

३हारून और मूसा ने कहा, “इब्रानियों का खुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए मेहरबानी करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन दिन का सफ़र करके रब अपने खुदा के हुज़ूर कुर्बानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी या तलवार से न मारे।”

४लेकिन मिस्र के बादशाह ने इन्कार किया, “मूसा और हारून, तुम लोगों को काम से क्यों रोक रहे हो? जाओ, जो काम हम ने तुम को दिया है उस पर लग जाओ! ५इस्राईली जैसे भी तादाद में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से रोक रहे हो।”

### जवाब में फ़िरऔन का सख़्त दबाओ

६उसी दिन फ़िरऔन ने मिस्री निगरानों और उन के तहत के इस्राईली निगरानों को हुक्म दिया, ७“अब से इस्राईलियों को ईंटें बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह खुद जा कर भूसा जमा करें। ८तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए चीख रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने खुदा को कुर्बानियाँ पेश करें। ९उन से और ज़्यादा सख़्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उन के पास इतना वक़्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”

१०मिस्री निगरान और उन के तहत के इस्राईली निगरानों ने लोगों के पास जा कर उन से कहा, “फ़िरऔन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए। ११इस लिए खुद जाओ और भूसा ढूँड कर जमा करो। लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

१२यह सुन कर इस्राईली भूसा जमा करने के लिए पूरे मुल्क में फैल गए। १३मिस्री निगरान यह कह कर उन पर दबाओ डालते रहे कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।

१४जो इस्राईली निगरान उन्हीं ने मुकर्रर किए थे उन्हीं वह पीटते और कहते रहे, “तुम ने कल और आज उतनी ईंटें क्यों नहीं बनवाई जितनी पहले बनवाते थे?”

१५फ़िर इस्राईली निगरान फ़िरऔन के पास गए। उन्हीं ने शिकायत करके कहा, “आप अपने खादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यों कर रहे हैं? १६हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में आप के अपने लोग ग़लती पर हैं।”

१७फ़िरऔन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इस लिए तुम यह जगह छोड़ना और रब को कुर्बानियाँ पेश करना चाहते हो। १८अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

१९जब इस्राईली निगरानों को बताया गया कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि हम फंस गए हैं। २०फ़िरऔन के महल से निकल कर उन की मुलाक़ात मूसा और हारून से हुई जो उन के इन्तिज़ार में थे। २१उन्हीं ने मूसा और हारून से कहा, “रब खुद आप की अदालत करे। क्योंकि आप के सबब से फ़िरऔन और उस के मुलाज़िमों को हम से घिन आती है। आप ने उन्हें हमें मार देने का मौक़ा दे दिया है।”

### मूसा की शिकायत और रब का जवाब

२२यह सुन कर मूसा रब के पास वापस आया और कहा, “ऐ आक्रा, तू ने इस क़ौम से ऐसा बुरा सुलूक क्यों किया? क्या तू ने इसी मक्क़सद से मुझे यहाँ भेजा है? २३जब से मैं ने फ़िरऔन के पास जा कर उसे तेरी मज़्जी बताई है वह इस्राईली क़ौम से बुरा सुलूक कर रहा

है। और तू ने अब तक उन्हें बचाने का कोई कदम नहीं उठाया।”

**6** रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं फिरऔन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम कुदरत का तजरिबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर करेगा।”

<sup>2</sup>अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब हूँ। <sup>3</sup>मैं इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़<sup>a</sup> से वाकिफ़ हुए, लेकिन मैं ने उन पर अपने नाम रब<sup>b</sup> का इन्किशाफ़ नहीं किया। <sup>4</sup>मैं ने उन से अहद करके वादा किया कि उन्हें मुल्क-ए-कनआन दूँगा जिस में वह अजनबी के तौर पर रहते थे। <sup>5</sup>अब मैं ने सुना है कि इस्राईली किस तरह मिस्रियों की गुलामी में कराह रहे हैं, और मैं ने अपना अहद याद किया है। <sup>6</sup>चुनाँचे इस्राईलियों को बताना, ‘मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिस्रियों के जूए से आज़ाद करूँगा और उन की गुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी कुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उन की अदालत करूँगा। <sup>7</sup>मैं तुम्हें अपनी क्रौम बनाऊँगा और तुम्हारा खुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जिस ने तुम्हें मिस्रियों के जूए से आज़ाद कर दिया है। <sup>8</sup>मैं तुम्हें उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस का वादा मैं ने कसम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब हूँ।”

<sup>9</sup>मूसा ने यह सब कुछ इस्राईलियों को बता दिया, लेकिन उन्होंने ने उस की बात न मानी, क्योंकि वह सख्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे। <sup>10</sup>तब रब ने मूसा से कहा, <sup>11</sup>“जा, मिस्र के बादशाह फिरऔन को बता देना कि इस्राईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।” <sup>12</sup>लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “इस्राईली मेरी बात सुनना नहीं चाहते तो फिरऔन क्यों

मेरी बात माने जबकि मैं रुक रुक कर बोलता हूँ?”

<sup>13</sup>लेकिन रब ने मूसा और हारून को हुक्म दिया, “इस्राईलियों और मिस्र के बादशाह फिरऔन से बात करके इस्राईलियों को मिस्र से निकालो।”

### मूसा और हारून के आबा-ओ-अजदाद

<sup>14</sup>इस्राईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे : इस्राईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी थे। इन से रूबिन की चार शाखें निकलीं।

<sup>15</sup>शमाऊन के पाँच बेटे यमूएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनआनी औरत का बच्चा था)। इन से शमाऊन की पाँच शाखें निकलीं।

<sup>16</sup>लावी के तीन बेटे जैसॉन, क्रिहात और मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

<sup>17</sup>जैसॉन के दो बेटे लिब्नी और सिमई थे। इन से जैसॉन की दो शाखें निकलीं। <sup>18</sup>क्रिहात के चार बेटे अग्राम, इज़हार, हब्रून और उज़ज़ीएल थे। (क्रिहात 133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। <sup>19</sup>मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन सब से लावी की मुख्तलिफ़ शाखें निकलीं।

<sup>20</sup>अग्राम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उन के दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। (अग्राम 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

<sup>21</sup>इज़हार के तीन बेटे क्रोरह, नफ़ज और ज़िक्री थे। <sup>22</sup>उज़ज़ीएल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सित्री थे।

<sup>23</sup>हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा अम्मीनदाब की बेटी और नह्सोन की बहन थी)। उन के चार बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर थे। <sup>24</sup>क्रोरह के तीन बेटे अस्सीर, इल्काना और अबियासफ़ थे। उन से क्रोरहियों की तीन शाखें निकलीं। <sup>25</sup>हारून

<sup>a</sup>इब्रानी में एल-शदई।

<sup>b</sup>इब्रानी में यहवे।

के बेटे इलीअज़र ने फ़ूतीएल की एक बेटी से शादी की। उन का एक बेटा फ़ीन्हास था।

यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।

26रब ने अग्राम के दो बेटों हारून और मूसा को हुक्म दिया कि मेरी क्रौम को उस के खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिस्र से निकालो। 27इन ही दो आदमियों ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात की कि इस्राईलियों को मिस्र से जाने दे।

### रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28मिस्र में रब ने मूसा से कहा, 29“मैं रब हूँ। मिस्र के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं तुझे बताता हूँ।” 30मूसा ने एतिराज़ किया, “मैं तो रुक रुक कर बोलता हूँ। फ़िरऔन किस तरह मेरी बात मानेगा?”

**7** लेकिन रब ने कहा, “देख, मेरे कहने पर तू फ़िरऔन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा और तेरा भाई हारून तेरा पैग़म्बर होगा। 2जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता दे। फिर वह सब कुछ फ़िरऔन को बताए ताकि वह इस्राईलियों को अपने मुल्क से जाने दे। 3लेकिन मैं फ़िरऔन को अड़ जाने दूँगा। अगरचे मैं मिस्र में बहुत से निशानों और मोजिज़ों से अपनी कुदरत का मुज़ाहरा करूँगा 4तो भी फ़िरऔन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिस्रियों पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उन को सख़्त सज़ा दे कर अपनी क्रौम इस्राईल को खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाऊँगा। 5जब मैं मिस्र के खिलाफ़ अपनी कुदरत का इज़हार करके इस्राईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं रब हूँ।”

6मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7फ़िरऔन से बात करते वक़्त मूसा 80 साल का और हारून 83 साल का था।

### मूसा की लाठी साँप बन जाती है

8रब ने मूसा और हारून से कहा, 9“जब फ़िरऔन तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह साँप बन जाएगी।”

10मूसा और हारून ने फ़िरऔन के पास जा कर ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरऔन और उस के उह्देदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन गई। 11यह देख कर फ़िरऔन ने अपने आलिमों और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। 12हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर फैंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी ने उन की लाठियों को निगल लिया।

13ताहम फ़िरऔन इस से मुतअस्सिर न हुआ। उस ने मूसा और हारून की बात सुनने से इन्कार किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

### पानी खून में बदल जाता है

14फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन अड़ गया है। वह मेरी क्रौम को मिस्र छोड़ने से रोकता है। 15कल सुबह-सवेरे जब वह दरया-ए-नील पर आएगा तो उस से मिलने के लिए दरया के किनारे पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो साँप बन गई थी। 16जब वह वहाँ पहुँचे तो उस से कहना, ‘रब इब्रानियों के ख़ुदा ने मुझे आप को यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आप ने अभी तक उस की नहीं सुनी। 17चुनाँचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है ले कर दरया-ए-नील के पानी को माँरूँगा। फिर वह खून में बदल जाएगा। 18दरया-ए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरया से बद्बू उठेगी और मिस्री दरया का पानी नहीं पी सकेंगे।”

19रब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि वह अपनी लाठी ले कर अपना हाथ उन



तमाम जगहों की तरफ़ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिस्र की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का पानी खून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में खून ही खून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बर्तनों का पानी भी खून में बदल जाएगा।”

<sup>20</sup>चुनाँचे मूसा और हारून ने फिरऔन और उस के उह्देदारों के सामने अपनी लाठी उठा कर दरया-ए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरया का सारा पानी खून में बदल गया। <sup>21</sup>दरया की मछलियाँ मर गईं, और उस से इतनी बदबू उठने लगी कि मिस्री उस का पानी न पी सके। मिस्र में चारों तरफ़ खून ही खून था।

<sup>22</sup>लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा ही किया। इस लिए फिरऔन अड़ गया और मूसा और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था। <sup>23</sup>फिरऔन पलट कर अपने घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं थी जो मूसा और हारून ने किया था। <sup>24</sup>लेकिन मिस्री दरया से पानी न पी सके, और उन्होंने ने पीने का पानी हासिल करने के लिए दरया के किनारे किनारे गढ़े खोदे। <sup>25</sup>पानी के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए।

### मेंढक

**8** फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरऔन के पास जा कर उसे बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 2वर्ना मैं पूरे मिस्र को मेंढकों से सज़ा दूँगा। <sup>3</sup>दरया-ए-नील मेंढकों से इतना भर जाएगा कि वह दरया से निकल कर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसँगे। वह तेरे उह्देदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बर्तनों में भी फुदकते फिरँगे। <sup>4</sup>मेंढक तुझ पर, तेरी क्रौम पर और तेरे उह्देदारों पर चढ़ जाएँगे।”

<sup>5</sup>रब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि वह अपनी लाठी को हाथ में ले कर उसे दरयाओं, नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढक बाहर निकल कर मिस्र के मुल्क में फैल जाएँ।” <sup>6</sup>हारून ने मुल्क-ए-मिस्र के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई तो मेंढकों के गोल पानी से निकल कर पूरे मुल्क पर छा गए। <sup>7</sup>लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरया से मेंढक निकाल लाए।

<sup>8</sup>फिरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा, “रब से दुआ करो कि वह मुझ से और मेरी क्रौम से मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क्रौम को जाने दूँगा ताकि वह रब को कुर्बानियाँ पेश करें।”

<sup>9</sup>मूसा ने जवाब दिया, “वह वक्रत मुकर्रर करें जब मैं आप के उह्देदारों और आप की क्रौम के लिए दुआ करूँ। फिर जो मेंढक आप के पास और आप के घरों में हैं उसी वक्रत खत्म हो जाएँगे। मेंढक सिर्फ़ दरया में पाए जाएँगे।”

<sup>10</sup>फिरऔन ने कहा, “ठीक है, कल उन्हें खत्म करो।” मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस तरह आप को मालूम होगा कि हमारे खुदा की मानिन्द कोई नहीं है। <sup>11</sup>मेंढक आप, आप के घरों, आप के उह्देदारों और आप की क्रौम को छोड़ कर सिर्फ़ दरया में रह जाएँगे।”

<sup>12</sup>मूसा और हारून फिरऔन के पास से चले गए, और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के वह गोल दूर करे जो उस ने फिरऔन के खिलाफ़ भेजे थे। <sup>13</sup>रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों में मेंढक मर गए। <sup>14</sup>लोगों ने उन्हें जमा करके उन के ढेर लगा दिए। उन की बदबू पूरे मुल्क में फैल गई।

<sup>15</sup>लेकिन जब फिरऔन ने देखा कि मसला हल हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उन की न सुनी। यूँ रब की बात दुरुस्त निकली।

### जूएँ

16 फिर रब ने मूसा से कहा, "हारून से कहना कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे। जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिस्र की गर्द जूओं में बदल जाएगी।"

17 उन्होंने ने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जूओं में बदल गई। उन के गोल जानवरों और आदमियों पर छा गए। 18 जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जूएँ न बना सके। जूएँ आदमियों और जानवरों पर छा गईं। 19 जादूगरों ने फिरऔन से कहा, "अल्लाह की कुदरत ने यह किया है।" लेकिन फिरऔन ने उन की न सुनी। पूँ रब की बात दुरुस्त निकली।

### काटने वाली मक्खियाँ

20 फिर रब ने मूसा से कहा, "जब फिरऔन सुबह-सवेरे दरया पर जाए तो तू उस के रास्ते में खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है, 'मेरी क्रौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।' 21 वर्ना मैं तेरे और तेरे उह्देदारों के पास, तेरी क्रौम के पास और तेरे घरों में काटने वाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिस्रियों के घर मक्खियों से भर जाएंगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी। 22 लेकिन उस वक़्त मैं अपनी क्रौम के साथ जो जुशन में रहती है फ़र्क़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक भी काटने वाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। 23 मैं अपनी क्रौम और तेरी क्रौम में इम्तियाज़ करूँगा। कल ही मेरी कुदरत का इज़हार होगा।"

24 रब ने ऐसा ही किया। काटने वाली मक्खियों के गोल फिरऔन के महल, उस के उह्देदारों के घरों और पूरे मिस्र में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो गया।

25 फिर फिरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा, "चलो, इसी मुल्क में अपने खुदा को कुर्बानियाँ पेश करो।" 26 लेकिन मूसा ने कहा, "यह मुनासिब नहीं है। जो कुर्बानियाँ हम रब अपने खुदा को पेश करेंगे वह मिस्रियों की नज़र में धिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे? 27 इस लिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में ही रब अपने खुदा को कुर्बानियाँ पेश करें जिस तरह उस ने हमें हुक्म भी दिया है।"

28 फिरऔन ने जवाब दिया, "ठीक है, मैं तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने खुदा को कुर्बानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।"

29 मूसा ने कहा, "ठीक, मैं जाते ही रब से दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फिरऔन, उस के उह्देदारों और उस की क्रौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि हम रब को कुर्बानियाँ पेश कर सकें।"

30 फिर मूसा फिरऔन के पास से चला गया और रब से दुआ की। 31 रब ने मूसा की दुआ सुनी। काटने वाली मक्खियाँ फिरऔन, उस के उह्देदारों और उस की क्रौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न रही। 32 लेकिन फिरऔन फिर अकड़ गया। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

### मवेशियों में वबा

9 फिर रब ने मूसा से कहा, "फिरऔन के पास जा कर उसे बता कि रब इब्रानियों का खुदा फ़रमाता है, 'मेरी क्रौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।' 2 अगर आप इन्कार करें और उन्हें रोकते रहें 3 तो रब अपनी कुदरत का इज़हार करके आप के मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा जो आप के घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और

मेंदों में फैल जाएगी। <sup>4</sup>लेकिन रब इस्राईल और मिस्र के मवेशियों में इन्तियाज़ करेगा। इस्राईलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। <sup>5</sup>रब ने फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”

<sup>6</sup>अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिस्र के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इस्राईलियों का एक भी जानवर न मरा। <sup>7</sup>फ़िरऔन ने कुछ लोगों को उन के पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फ़िरऔन अड़ा रहा। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

### फोड़े-फुंसियाँ

<sup>8</sup>फ़िर रब ने मूसा और हारून से कहा, “अपनी मुठियाँ किसी भट्टी की राख से भर कर फ़िरऔन के पास जाओ। फ़िर मूसा फ़िरऔन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे। <sup>9</sup>यह राख बारीक धूल का बादल बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उस के असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ फूट निकलेंगे।”

<sup>10</sup>मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख ले कर फ़िरऔन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इन्सानों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए। <sup>11</sup>इस मर्तबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्योंकि उन के जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए थे। तमाम मिस्रियों का यही हाल था। <sup>12</sup>लेकिन रब ने फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस ने मूसा और हारून की न सुनी। यूँ वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

### ओले

<sup>13</sup>इस के बाद रब ने मूसा से कहा, “सुब्ह-सवेरे उठ और फ़िरऔन के सामने खड़े हो कर उसे बता कि रब इब्रानियों का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क्रौम को जाने दे ताकि वह मेरी

इबादत कर सके। <sup>14</sup>वर्ना मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे उद्देदारों पर और तेरी क्रौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। <sup>15</sup>अगर मैं चाहता तो अपनी कुदरत से ऐसी वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी क्रौम को दुनिया से मिटा दिया जाता। <sup>16</sup>लेकिन मैं ने तुझे इस लिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी कुदरत का इज़हार करूँ और यूँ तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए। <sup>17</sup>तू अभी तक अपने आप को सरफ़राज़ करके मेरी क्रौम के खिलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। <sup>18</sup>इस लिए कल मैं इसी वक़्त भयानक क्रिस्म के ओलों का तूफ़ान भेज दूँगा। मिस्री क्रौम की इब्तिदा से ले कर आज तक मिस्र में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं आया होगा। <sup>19</sup>अपने बन्दों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को ला कर महफूज़ कर लें। क्योंकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, ख्वाह इन्सान हो या हैवान।”

<sup>20</sup>फ़िरऔन के कुछ उद्देदार रब का पैग़ाम सुन कर डर गए और भाग कर अपने जानवरों और गुलामों को घरों में ले आए। <sup>21</sup>लेकिन दूसरों ने रब के पैग़ाम की परवा न की। उन के जानवर और गुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

<sup>22</sup>रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिस्र के तमाम इन्सानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।” <sup>23</sup>मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ़ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। <sup>24</sup>ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिस्री क्रौम की इब्तिदा से ले कर अब तक ऐसे खतरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे। <sup>25</sup>इन्सानों से ले कर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बर्बाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और

दरख्त भी तोड़ दिए। <sup>26</sup>वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ इस्राईली आबाद थे।

<sup>27</sup>तब फिरऔन ने मूसा और हारून को बुलाया। उस ने कहा, “इस मर्तबा मैं ने गुनाह किया है। रब हक़ पर है। मुझ से और मेरी क्रौम से ग़लती हुई है। <sup>28</sup>ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज़यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।”

<sup>29</sup>मूसा ने फिरऔन से कहा, “मैं शहर से निकल कर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठा कर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले रुक जाएंगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है। <sup>30</sup>लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आप के उद्देदार अभी तक रब खुदा का ख़ौफ़ नहीं मानते।”

<sup>31</sup>उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ की बालें लग गई थीं। इस लिए यह फ़सलें तबाह हो गई। <sup>32</sup>लेकिन गेहूँ और एक और क्रिस्म की गन्दुम जो बाद में पकती है बर्बाद न हुई।

<sup>33</sup>मूसा फिरऔन को छोड़ कर शहर से निकला। उस ने रब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान रुक गया। <sup>34</sup>जब फिरऔन ने देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह और उस के उद्देदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। <sup>35</sup>फ़िरऔन अड़ा रहा और इस्राईलियों को जाने न दिया। वैसे ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

### टिड्डियाँ

**10** फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन के पास जा, क्योंकि मैं ने उस का और उस के दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है ताकि उन के दरमियान अपने मौजिज़ों और अपनी कुदरत का इज़हार कर सकूँ <sup>2</sup>और तुम अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैं ने मिस्त्रियों के साथ क्या सुलूक किया है और

उन के दरमियान किस तरह के मौजिज़े करके अपनी कुदरत का इज़हार किया है। यूँ तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ।”

<sup>3</sup>मूसा और हारून फिरऔन के पास गए। उन्होंने उस से कहा, “रब इब्रानियों के ख़ुदा का फ़रमान है, ‘तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से इन्कार करेगा? मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, <sup>4</sup>वर्ना मैं कल तेरे मुल्क में टिड्डियाँ लाऊँगा। <sup>5</sup>उन के गोल ज़मीन पर यूँ छा जाएंगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए दरख़्तों के पत्ते भी ख़त्म हो जाएंगे। <sup>6</sup>तेरे महल, तेरे उद्देदारों और बाक़ी लोगों के घर उन से भर जाएंगे। जब से मिस्त्री इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुम ने कभी टिड्डियों का ऐसा सख़्त हम्ला नहीं देखा होगा’।” यह कह कर मूसा पलट कर वहाँ से चला गया।

<sup>7</sup>इस पर दरबारियों ने फिरऔन से बात की, “हम कब तक इस मर्द के जाल में फंसे रहें? इस्राईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आप को अभी तक मालूम नहीं कि मिस्त्र बर्बाद हो गया है?”

<sup>8</sup>तब मूसा और हारून को फिरऔन के पास बुलाया गया। उस ने उन से कहा, “जाओ, अपने ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?” <sup>9</sup>मूसा ने जवाब दिया, “हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएंगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी साथ ले कर जाएंगे। हम सब के सब जाएंगे, क्योंकि हमें रब की ईद मनानी है।”

<sup>10</sup>फ़िरऔन ने तन्ज़न कहा, “ठीक है, जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सब को बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुम ने कोई बुरा मन्सूबा बनाया है। <sup>11</sup>नहीं, सिर्फ़ मर्द जा कर रब की इबादत कर सकते हैं। तुम ने तो यही दरख़्वास्त की

थी।” तब मूसा और हारून को फिरऔन के सामने से निकाल दिया गया।

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “मिस्र पर अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आ कर मिस्र की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।”

13 मूसा ने अपनी लाठी मिस्र पर उठाई तो रब ने मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक मिस्र में टिड्डियाँ पहुँचाईं। 14 बेशुमार टिड्डियाँ पूरे मुल्क पर हम्ला करके हर जगह बैठ गईं। इस से पहले या बाद में कभी भी टिड्डियों का इतना सख्त हम्ला न हुआ था। 15 उन्होंने ज़मीन को ढूँँ ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख्तों के फल थे उन्होंने न खा लिया। मिस्र में एक भी दरख्त या पौदा न रहा जिस के पत्ते बच गए हों।

16 तब फिरऔन ने मूसा और हारून को जल्दी से बुलवाया। उस ने कहा, “मैं ने तुम्हारे खुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है। 17 अब एक और मर्तबा मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने खुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझ से दूर हो जाए।”

18 मूसा ने महल से निकल कर रब से दुआ की। 19 जवाब में रब ने हवा का रुख बदल दिया। उस ने मगरिब से तेज़ आँधी चलाई जिस ने टिड्डियों को उड़ा कर बहर-ए-कुलज़ुम में डाल दिया। मिस्र में एक भी टिड्डी न रही। 20 लेकिन रब ने होने दिया कि फिरऔन फिर अड़ गया। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

### अंधेरा

21 इस के बाद रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिस्र पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि

बन्दा उसे छू सकेगा।” 22 मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिस्र पर गहरा अंधेरा छाया रहा। 23 तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इस्राईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24 तब फिरऔन ने मूसा को फिर बुलवाया और कहा, “जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।” 25 मूसा ने जवाब दिया, “क्या आप ही हमें कुर्बानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब अपने खुदा को पेश करें? 26 यक्रीनन नहीं। इस लिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ ले कर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मन्ज़िल-ए-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इस लिए ज़रूरी है कि हम सब को अपने साथ ले कर जाएँ।”

27 लेकिन रब की मर्ज़ी के मुताबिक़ फिरऔन अड़ गया। उस ने उन्हें जाने न दिया। 28 उस ने मूसा से कहा, “दफ़ा हो जा। खबरदार! फिर कभी अपनी शक़ल न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।” 29 मूसा ने कहा, “ठीक है, आप की मर्ज़ी। मैं फिर कभी आप के सामने नहीं आऊँगा।”

### आखिरी सज़ा का एलान

**11** तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फिरऔन और मिस्र पर आखिरी आफ़त लाने को हूँ। इस के बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2 इस्राईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” 3 (रब ने मिस्रियों के दिल इस्राईलियों की तरफ़ माइल

कर दिए थे। वह फिरऔन के उद्देदारों समेत खासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘आज आधी रात के वक़्त मैं मिस्र में से गुज़रूंगा। 5तब बादशाह के पहलौठे से ले कर चक्की पीसने वाली नौकरानी के पहलौठे तक मिस्रियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएंगे। 6मिस्र की सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7लेकिन इस्राईली और उन के जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इस्राईलियों की निस्बत मिस्रियों से फ़र्क़ सुलूक करता है।” 8मूसा ने यह कुछ फिरऔन को बताया फिर कहा, “उस वक़्त आप के तमाम उद्देदार आ कर मेरे सामने झुक जाएंगे और मिन्नत करेंगे, ‘अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।’ तब मैं चला ही जाऊँगा।” यह कह कर मूसा फिरऔन के पास से चला गया। वह बड़े गुस्से में था।

9रब ने मूसा से कहा था, “फ़िरऔन तुम्हारी नहीं सुनेगा। क्यूँकि लाज़िम है कि मैं मिस्र में अपनी कुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।” 10गो मूसा और हारून ने फिरऔन के सामने यह तमाम मौजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने फिरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस ने इस्राईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

### फ़सह की ईद

**12** फिर रब ने मिस्र में मूसा और हारून से कहा, 2“अब से यह महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना हो।” 3इस्राईल की पूरी जमाअत को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर खानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे। 4अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों तो वह अपने सब से क़रीबी पड़ोसी के साथ

मिल कर लेला हासिल करें। इतने लोग उस में से खाएँ कि सब के लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए। 5इस के लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिस में नुक्स न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

6महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो। उस दिन तमाम इस्राईली सूरज के गुरूब होते वक़्त अपने लेले ज़बह करें। 7हर खानदान अपने जानवर का कुछ खून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह खून चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगाया जाए। 8लाज़िम है कि लोग जानवर को भून कर उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेखमीरी रोटियाँ भी खाएँ। 9लेले का गोश्त कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और अन्दरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना। 10लाज़िम है कि पूरा गोश्त उसी रात खाया जाए। अगर कुछ सुबह तक बच जाए तो उसे जलाना है। 11खाना खाते वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यूँ मनाना।

12मैं आज रात मिस्र में से गुज़रूंगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, ख्वाह इन्सान का हो या हैवान का। यूँ मैं जो रब हूँ मिस्र के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा। 13लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ खून तुम्हारा खास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह खून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिस्र पर हम्ला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नस्ल-दर-नस्ल और हर साल रब की खास ईद के तौर पर मनाना।

### बेखमीरी रोटी की ईद

15सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम खमीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान खमीर खाए तो उसे क्रौम में से मिटाया जाए। 16इस ईद के पहले और आखिरी दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक्रिद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तय्यार करना। 17बेखमीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्योंकि उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद खानदानों को मिस्र से निकाल लाया। इस लिए यह दिन नस्ल-दर-नस्ल हर साल याद रखना। 18पहले महीने के 14वें दिन की शाम से ले कर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेखमीरी रोटी खाना। 19सात दिन तक तुम्हारे घरों में खमीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान खमीर खाए उसे इस्राईल की जमाअत में से मिटाया जाए, ख्वाह वह इस्राईली शहरी हो या अजनबी। 20गरज़, इस ईद के दौरान खमीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेखमीरी रोटी ही खाना है।

### पहलौठों की हलाकत

21फिर मूसा ने तमाम इस्राईली बुज़ुर्गों को बुला कर उन से कहा, "जाओ, अपने खानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुन कर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। 22ज़ूफ़े का गुच्छा ले कर उसे खून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे ले कर खून को चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले। 23जब रब मिस्रियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगा हुआ खून देख कर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करने वाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जा कर तुम्हें हलाक करे।

24तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायात पर अमल करना। 25यह रस्म उस वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा। 26और जब तुम्हारे बच्चे तुम से पूछें कि हम यह ईद क्यों मनाते हैं 27तो उन से कहो, 'यह फ़सह की कुर्बानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्योंकि जब रब मिस्रियों को हलाक कर रहा था तो उस ने हमारे घरों को छोड़ दिया था'।"

यह सुन कर इस्राईलियों ने अल्लाह को सिज्दा किया। 28फिर उन्होंने ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून को बताया था।

29आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से ले कर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिस्रियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए। 30उस रात मिस्र के हर घर में कोई न कोई मर गया। फ़िरऔन, उस के उह्देदार और मिस्र के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीखने लगे।

### इस्राईलियों की हिज़्रत

31अभी रात थी कि फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा, "अब तुम और बाक़ी इस्राईली मेरी क्रौम में से निकल जाओ। अपनी दरख्वास्त के मुताबिक़ रब की इबादत करो। 32जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत देना।" 33बाक़ी मिस्रियों ने भी इस्राईलियों पर ज़ोर दे कर कहा, "जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वना हम सब मर जाएंगे।"

34इस्राईलियों के गूँधे हुए आटे में खमीर नहीं था। उन्होंने ने उसे गूँधने के बर्तनों में रख कर अपने कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया। 35इस्राईली मूसा की हिदायत पर अमल करके अपने मिस्री पड़ोसियों के पास गए और उन से

कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं।<sup>36</sup> रब ने मिस्त्रियों के दिलों को इस्राईलियों की तरफ़ माइल कर दिया था, इस लिए उन्होंने उन की हर दरख्वास्त पूरी की। यूँ इस्राईलियों ने मिस्त्रियों को लूट लिया।

<sup>37</sup> इस्राईली रामसीस से रवाना हो कर सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़ कर उन के 6 लाख मर्द थे।<sup>38</sup> वह अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत से ऐसे लोग भी उन के साथ निकले जो इस्राईली नहीं थे।<sup>39</sup> रास्ते में उन्होंने उनसे बेखमीरी आटे से रोटियाँ बनाई जो वह साथ ले कर निकले थे। आटे में इस लिए खमीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिस्र से निकाल दिया गया था कि खाना तय्यार करने का वक़्त ही न मिला था।

<sup>40</sup> इस्राईली 430 साल तक मिस्र में रहे थे।<sup>41</sup> 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम खानदान मिस्र से निकले।<sup>42</sup> उस खास रात रब ने खुद पहरा दिया ताकि इस्राईली मिस्र से निकल सकें। इस लिए तमाम इस्राईलियों के लिए लाज़िम है कि वह नस्ल-दर-नस्ल इस रात रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उन के बाद की औलाद भी।

### फ़सह की ईद की हिदायात

<sup>43</sup> रब ने मूसा और हारून से कहा, “फ़सह की ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है।<sup>44</sup> अगर तुम ने किसी गुलाम को खरीद कर उस का खतना किया है तो वह फ़सह का खाना खा सकता है।<sup>45</sup> लेकिन ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है।<sup>46</sup> यह खाना एक ही घर के अन्दर खाना है। न गोशत घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना।<sup>47</sup> लाज़िम है कि इस्राईल की पूरी जमाअत यह ईद मनाए।<sup>48</sup> अगर कोई परदेसी

तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सह की ईद में शिकत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उस के घराने के हर मर्द का खतना किया जाए। तब वह इस्राईली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिस का खतना न हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है।<sup>49</sup> यही उसूल हर एक पर लागू होगा, ख्वाह वह इस्राईली हो या परदेसी।”

<sup>50</sup> तमाम इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हारून से कहा था।<sup>51</sup> उसी दिन रब तमाम इस्राईलियों को खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाया।

### यह ईद नजात की याद दिलाती

**13** रब ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “इस्राईलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, ख्वाह इन्सान का हो या हैवान का।”<sup>3</sup> फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम कुदरत के बाइस मिस्र की गुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिस में खमीर हो।<sup>4</sup> आज ही अबीब के महीने<sup>5</sup> में तुम मिस्र से रवाना हो रहे हो।<sup>5</sup> रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर वादा किया है कि वह तुम को कनआनी, हित्ती, अमोरी, हिक्वी और यबूसी क़ौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिस में दूध और शहद की कसत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ।<sup>6</sup> सात दिन बेखमीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ।<sup>7</sup> सात दिन खमीरी रोटी न खाना। कहीं भी खमीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में खमीर का नाम-ओ-निशान तक न हो।

<sup>8</sup> उस दिन अपने बेटे से यह कहो, ‘मैं यह ईद उस काम की खुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया जब मैं मिस्र से निकला।’

<sup>3</sup> मार्च ता अप्रैल।



१५ यह ईद तुम्हारे हाथ या पेशानी पर निशान की मानिन्द हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है। क्योंकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम कुदरत से मिस्र से निकाल लाया। १० इस दिन की याद हर साल ठीक वक़्त पर मनाना।

### पहलौठों की मख़सूसियत

११ रब तुम्हें कनआनियों के उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा उस ने क्रसम खा कर तुम और तुम्हारे बापदादा से किया है। १२ लाज़िम है कि वहाँ पहुँच कर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब के लिए मख़सूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी रब की मिलकियत हैं। १३ अगर तुम अपना पहलौठा गधा ख़ुद रखना चाहो तो रब को उस के बदले भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गर्दन तोड़ डालो। लेकिन इन्सान के पहलौठों के लिए हर सूरत में इवज़ी देना है।

१४ आने वाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इस का क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, 'रब अपनी अज़ीम कुदरत से हमें मिस्र की गुलामी से निकाल लाया। १५ जब फ़िरऔन ने अकड़ कर हमें जाने न दिया तो रब ने मिस्र के तमाम इन्सानों और हैवानों के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने जानवरों का हर पहला बच्चा रब को कुर्बान करता और अपने हर पहलौठे के लिए इवज़ी देता हूँ'। १६ यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मानिन्द हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब हमें अपनी कुदरत से मिस्र से निकाल लाया।"

### मिस्र से निकलने का रास्ता

१७ जब फ़िरऔन ने इस्राईली क्रौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रने वाले रास्ते से ले कर न गया, अगरचै उस पर चलते हुए वह जल्द ही मुल्क-

ए-कनआन पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदल कर मिस्र लौट जाएँ।" १८ इस लिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से ले कर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहर-ए-कुल्ज़ुम की तरफ़ बढ़े। मिस्र से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। १९ मूसा यूसुफ़ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क्रसम दिला कर कहा था, "अल्लाह यकीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा कर साथ ले जाना।"

२० इस्राईलियों ने सुक्कात को छोड़ कर एताम में अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर था। २१ रब उन के आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यूँ वह दिन और रात सफ़र कर सकते थे। २२ दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के वक़्त आग का सतून उन के सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

### इस्राईल समुन्दर में से गुज़रता है

**14** तब रब ने मूसा से कहा, २ "इस्राईलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़ कर मिज्दाल और समुन्दर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़दीक रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक्काबिल साहिल पर अपने ख़ैमे लगाएँ। ३ यह देख कर फ़िरऔन समझेगा कि इस्राईली रास्ता भूल कर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा है। ४ फिर मैं फ़िरऔन को दुबारा अड़ जाने दूँगा, और वह इस्राईलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं फ़िरऔन और उस की पूरी फ़ौज पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। मिस्री जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।" इस्राईलियों ने ऐसा ही किया।

<sup>5</sup>जब मिस्र के बादशाह को इत्तिला दी गई कि इस्राईली हिज्रत कर गए हैं तो उस ने और उस के दरबारियों ने अपना खयाल बदल कर कहा, "हम ने क्या किया है? हम ने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उन की खिदमत से महरूम हो गए हैं।" <sup>6</sup>चुनाँचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तय्यार करवाया और अपनी फ़ौज को ले कर निकला। <sup>7</sup>वह 600 बेहतरीन क्रिस्म के रथ और मिस्र के बाक़ी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अप्रसरान मुकर्रर थे। <sup>8</sup>रब ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को दुबारा अड़ जाने दिया था, इस लिए जब इस्राईली बड़े इख्तियार के साथ निकल रहे थे तो वह उन का ताक्कुब करने लगा। <sup>9</sup>इस्राईलियों का पीछा करते करते फ़िरऔन के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फ़ौजी उन के करीब पहुँचे। इस्राईली बहर-ए-कुल्जुम के साहिल पर बाल-सफ़ोन के मुक्काबिल फ़ी-हखीरोत के नज़दीक ख़ैमे लगा चुके थे।

<sup>10</sup>जब इस्राईलियों ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीखने-चिल्लाने लगे। <sup>11</sup>उन्होंने मूसा से कहा, "क्या मिस्र में क्रब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिस्र से निकाल कर आप ने हमारे साथ क्या किया है? <sup>12</sup>क्या हम ने मिस्र में आप से दरख्वास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिस्रियों की खिदमत करने दें? यहाँ आ कर रेगिस्तान में मर जाने की निस्बत बेहतर होता कि हम मिस्रियों के गुलाम रहते।"

<sup>13</sup>लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिस्रियों को फिर कभी नहीं देखोगे। <sup>14</sup>रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।"

<sup>15</sup>फिर रब ने मूसा से कहा, "तू मेरे सामने क्यों चीख रहा है? इस्राईलियों को आगे बढ़ने

का हुक्म दे। <sup>16</sup>अपनी लाठी को पकड़ कर उसे समुन्दर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़रेंगे। <sup>17</sup>मैं मिस्रियों को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इस्राईलियों का पीछा करें। फिर मैं फ़िरऔन, उस की सारी फ़ौज, उस के रथों और उस के सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा। <sup>18</sup>जब मैं फ़िरऔन, उस के रथों और उस के सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

<sup>19</sup>अल्लाह का फ़रिश्ता इस्राईली लश्कर के आगे आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हट कर उन के पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हट कर उन के पीछे जा खड़ा हुआ। <sup>20</sup>इस तरह बादल मिस्रियों और इस्राईलियों के लश्करों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिस्रियों की तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इस्राईलियों की तरफ़ रौशनी थी। इस लिए मिस्री पूरी रात के दौरान इस्राईलियों के करीब न आ सके।

<sup>21</sup>मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उस ने समुन्दर को पीछे हटा कर उस की तह ख़ुश्क कर दी। समुन्दर दो हिस्सों में बट गया <sup>22</sup>तो इस्राईली समुन्दर में से ख़ुश्क ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उन के दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

<sup>23</sup>जब मिस्रियों को पता चला तो फ़िरऔन के तमाम घोड़े, रथ और घुडसवार भी उन के पीछे पीछे समुन्दर में चले गए। <sup>24</sup>सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिस्र की फ़ौज पर निगाह की और उस में अब्दरी पैदा कर दी। <sup>25</sup>उन के रथों के पहिए निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। मिस्रियों ने कहा, "आओ, हम इस्राईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उन के साथ है। वही मिस्र का मुक्काबला कर रहा है।"

26 तब रब ने मूसा से कहा, "अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आ कर मिस्रियों, उन के रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।" 27 मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिस्री भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यूँ रब ने उन्हें समुन्दर में बहा कर ग़र्क़ कर दिया। 28 पानी वापस आ गया। उस ने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फिर औन की पूरी फ़ौज जो इस्राईलियों का ताक़्क़ुब कर रही थी डूब कर तबाह हो गई। उन में से एक भी न बचा। 29 लेकिन इस्राईली खुशक ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़रे। उन के दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

30 उस दिन रब ने इस्राईलियों को मिस्रियों से बचाया। मिस्रियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। 31 जब इस्राईलियों ने रब की यह अज़ीम कुदरत देखी जो उस ने मिस्रियों पर ज़ाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उस के खादिम मूसा पर एतिमाद करने लगे।

### मूसा का गीत

**15** तब मूसा और इस्राईलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,

"मैं रब की तम्ज़ीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार को उस ने समुन्दर में पटख़ दिया है।

2 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और मैं उस की ताज़ीम करूँगा।

3 रब सूरमा है, रब उस का नाम है।

4 फिर औन के रथों और फ़ौज को उस ने समुन्दर में पटख़ दिया तो बादशाह के बेहतरीन अप्रसरान बहर-ए-कुल्जुम में डूब गए।

5 गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर की तरह समुन्दर की तह तक उतर गए।

6 ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी कुदरत से ज़ाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।

7 जो तेरे खिलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर पटख़ देता है। तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8 तू ने गुस्से में आ कर फूँक मारी तो पानी ढेर की सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन गया, समुन्दर गहराई तक जम गया।

9 दुश्मन ने डींग मार कर कहा, 'मैं उन का पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उन का लूटा हुआ माल तक्सीम करूँगा। मेरी लालची जान उन से सेर हो जाएगी, मैं अपनी तलवार खँच कर उन्हें हलाक करूँगा।'

10 लेकिन तू ने उन पर फूँक मारी तो समुन्दर ने उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह ज़ोरदार मौजों में डूब गए।

11 ऐ रब, कौन सा माबूद तेरी मानिन्द है? कौन तेरी तरह जलाली और कुदूस है? कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।

12 तू ने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन हमारे दुश्मनों को निगल गई।

13 अपनी शफ़क़त से तू ने इवज़ाना दे कर अपनी क्रौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई की है, अपनी कुदरत से तू ने उसे अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।

14 यह सुन कर दीगर क्रौमें काँप उठीं, फ़िलिस्ती डर के मारे पेच-ओ-ताब खाने लगे।

15 अदोम के रईस सहम गए, मोआब के राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और कनआन के तमाम बाशिन्दे हिम्मत हार गए।

<sup>16</sup>दहशत और खौफ़ उन पर छा गया। तेरी अज़ीम कुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी क्रौम गुज़र न गई। वह बेहिस्स-ओ-हरकत रहे जब तक तेरी ख़रीदी हुई क्रौम गुज़र न गई।

<sup>17</sup>ऐ रब, तू अपने लोगों को ले कर पौदों की तरह अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह पर जो तू ने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है, जहाँ तू ने अपने हाथों से अपना मक्दिस तय्यार किया है।

<sup>18</sup>रब अबद तक बादशाह है!"

<sup>19</sup>जब फिरऔन के घोड़े, रथ और घुड़सवार समुन्दर में चले गए तो रब ने उन्हें समुन्दर के पानी से ढाँक लिया। लेकिन इस्राईली खुशक ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़र गए। <sup>20</sup>तब हारून की बहन मरियम जो नबिया थी ने दफ़र लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़र ले कर उस के पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गा कर उन की राहनुमाई की,

<sup>21</sup>"रब की तम्जीद में गीत गाओ, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार को उस ने समुन्दर में पटक दिया है।"

### मारा और एलीम के चश्मे

<sup>22</sup>मूसा के कहने पर इस्राईली बहर-ए-कुल्जुम से रवाना हो कर दशत-ए-शूर में चले गए। वहाँ वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान उन्हें पानी न मिला। <sup>23</sup>आखिरकार वह मारा पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था। लेकिन वह कड़वा था, इस लिए मक्क़ाम का नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया। <sup>24</sup>यह देख कर लोग मूसा के खिलाफ़ बुड़बुड़ा कर कहने लगे, "हम क्या पिँएँ?" <sup>25</sup>मूसा ने मदद के लिए रब से इल्तिजा की तो उस ने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया। जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी की कड़वाहट खत्म हो गई।

मारा में रब ने अपनी क्रौम को क़वानीन दिए। वहाँ उस ने उन्हें आज़माया भी। <sup>26</sup>उस ने कहा, "ग़ौर से रब अपने खुदा की आवाज़ सुनो! जो कुछ उस की नज़र में दुरुस्त है वही करो। उस के अहक़ाम पर ध्यान दो और उस की तमाम हिदायात पर अमल करो। फिर मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो मिस्त्रियों पर लाया था, क्योंकि मैं रब हूँ जो तुझे शिफ़ा देता हूँ।" <sup>27</sup>फिर इस्राईली रवाना हो कर एलीम पहुँचे जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ उन्होंने ने पानी के क़रीब अपने खैमे लगाए।

### मन और बटेरें

**16** इस के बाद इस्राईली की पूरी जमाअत एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और सीना के दरमियान है। वह मिस्र से निकलने के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे। रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। <sup>3</sup>उन्होंने ने कहा, "काश रब हमें मिस्र में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़र कम जी भर कर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इस लिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।"

<sup>4</sup>तब रब ने मूसा से कहा, "मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जा कर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इस से मैं उन्हें आज़मा कर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। <sup>5</sup>हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी हो। लेकिन छठे दिन जब वह खाना तय्यार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।"

<sup>6</sup>मूसा और हारून ने इस्राईलियों से कहा, "आज शाम को तुम जान लोगे कि रब ही तुम्हें मिस्र से निकाल लाया है। <sup>7</sup>और कल सुबह

तुम रब का जलाल देखोगे। उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ बुडबुडा रहे हो। 8 फिर भी रब तुम को शाम के वक़्त गोशत और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ हैं।”

9 मूसा ने हारून से कहा, “इस्राईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं’।” 10 जब हारून पूरी जमाअत के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलट कर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। 11 रब ने मूसा से कहा, 12 “मैं ने इस्राईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज गुरूब होने लगेगा तो तुम गोशत खाओगे और कल सुबह पेट भर कर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

13 उसी शाम बटेरों के गोल आए जो पूरी खैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह खैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। 14 जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। 15 जब इस्राईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हू?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उन को समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। 16 रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उस के खानदान को ज़रूरत हो। अपने खानदान के हर फ़र्द के लिए दो लिटर जमा करो।”

17 इस्राईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। 18 लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिस ने ज़्यादा जमा किया था उस के पास कुछ न बचा। लेकिन जिस ने कम जमा किया था उस के

पास भी काफ़ी था। 19 मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

20 लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुबह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उस से बहुत बदबू आ रही है। यह सुन कर मूसा उन से नाराज़ हुआ।

21 हर सुबह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघल कर ख़त्म हो जाता था।

22 छठे दिन जब लोग यह खुराक जमा करते तो वह मिक्कदार में दुगनी होती थी यानी हर फ़र्द के लिए चार लिटर। जब जमाअत के बुजुर्गों ने मूसा के पास आ कर उसे इत्तिला दी 23 तो उस ने उन से कहा, “रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए मट्फूज़ रखो।”

24 लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना मट्फूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उस में कीड़े पड़े। 25 मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्योंकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26 छः दिन के दौरान यह खुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

27 तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28 तब रब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अक्काम और हिदायात पर अमल करने से इन्कार करोगे? 29 देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुकर्रर किया है कि सबत का दिन आराम का दिन है। इस लिए वह तुम्हें जुमए को दो दिन के लिए खुराक देता है। हफ़्ते को

सब को अपने खैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”

<sup>30</sup>चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।

<sup>31</sup>इस्राईलियों ने इस खुराक का नाम ‘मन’ रखा। उस के दाने धनिए की मानिन्द सफ़ेद थे, और उस का ज़ाइका शहद से बने केक की मानिन्द था।

<sup>32</sup>मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन एक मर्तबान में रख कर उसे आने वाली नस्लों के लिए महफूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिस्र से निकाल लाया।’” <sup>33</sup>मूसा ने हारून से कहा, “एक मर्तबान लो और उसे दो लिटर मन से भर कर रब के सामने रखो ताकि वह आने वाली नस्लों के लिए महफूज़ रहे।” <sup>34</sup>हारून ने ऐसा ही किया। उस ने मन के इस मर्तबान को अहद के सन्दूक के सामने रखा ताकि वह महफूज़ रहे।

<sup>35</sup>इस्राईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकल कर कनआन की सरहद पर न पहुँचे। <sup>36</sup>(जो पैमाना इस्राईली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बर्तन था जिस का नाम ओमर था।)

### चटान से पानी

**17** फिर इस्राईल की पूरी जमाअत सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुकम देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने ने खैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। <sup>2</sup>इस लिए वह मूसा के साथ यह कह कर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझ से क्यों झगड़ रहे हो? रब को क्यों आज़मा रहे हो?” <sup>3</sup>लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिस्र से क्यों लाए हैं? क्या

इस लिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”

<sup>4</sup>तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़र्याद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।” <sup>5</sup>रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुजुर्ग साथ ले कर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिस से तू ने दरया-ए-नील को मारा था। <sup>6</sup>मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उस से पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

मूसा ने इस्राईल के बुजुर्गों के सामने ऐसा ही किया। <sup>7</sup>उस ने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी ‘आज़माना और झगड़ना’ रखा, क्योंकि वहाँ इस्राईली बुड़बुड़ाए और यह पूछ कर रब को आज़माया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

### अमालीक्रियों की शिकस्त

<sup>8</sup>रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीक़ी इस्राईलियों से लड़ने आए। <sup>9</sup>मूसा ने यशूअ से कहा, “लड़ने के क़ाबिल आदमियों को चुन लो और निकल कर अमालीक्रियों का मुक़ाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।”

<sup>10</sup>यशूअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़ अमालीक्रियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। <sup>11</sup>और यूँ हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इस्राईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीक़ी जीतते रहे। <sup>12</sup>कुछ देर के बाद मूसा के बाज़ू थक गए। इस लिए हारून और हूर एक चटान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्होंने ने उस के दाईं और बाईं तरफ़ खड़े हो कर उस के बाज़ूओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के गुरुब होने तक उन्होंने ने यूँ मूसा की मदद की। <sup>13</sup>इस तरह यशूअ

ने अमालीक्रियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14 तब रब ने मूसा से कहा, “यह वाक्रीआ यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि यह सब कुछ यशूअ की याद में रहे, क्योंकि मैं दुनिया से अमालीक्रियों का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा।” 15 उस वक़्त मूसा ने कुर्बानगाह बना कर उस का नाम ‘रब मेरा झंडा है’ रखा। 16 उस ने कहा, “रब के तख़्त के खिलाफ़ हाथ उठाया गया है, इस लिए रब की अमालीक्रियों से हमेशा तक जंग रहेगी।”

### यित्रो से मुलाक़ात

**18** मूसा का सुसर यित्रो अब तक मिदियान में इमाम था। जब उस ने सब कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क्रौम के लिए किया है, कि वह उन्हें मिस्र से निकाल लाया है 2 तो वह मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सप्रफ़ूरा को अपने साथ लाया, क्योंकि मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था। 3 यित्रो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैसॉम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।” 4 दूसरे बेटे का नाम इलीअज़र यानी ‘मेरा खुदा मददगार है’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के खुदा ने मेरी मदद करके मुझे फ़िरऔन की तलवार से बचाया है।”

5 यित्रो मूसा की बीवी और बेटे साथ ले कर उस वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उस ने रेगिस्तान में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के क़रीब ख़ैमा लगाया हुआ था। 6 उस ने मूसा को पैग़ाम भेजा था, “मैं, आप का सुसर यित्रो आप की बीवी और दो बेटों को साथ ले कर आप के पास आ रहा हूँ।”

7 मूसा अपने सुसर के इस्तिक्बाल के लिए बाहर निकला, उस के सामने झुका और उसे बोसा दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा,

फ़िर ख़ैमे में चले गए। 8 मूसा ने यित्रो को तप्रसील से बताया कि रब ने इस्राईलियों की खातिर फ़िरऔन और मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया है। उस ने रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब ने हमें किस तरह उन से बचाया है।

9 यित्रो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुन कर खुश हुआ जो रब ने इस्राईलियों के लिए किए थे जब उस ने उन्हें मिस्रियों के हाथ से बचाया था। 10 उस ने कहा, “रब की तम्ज़ीद हो जिस ने आप को मिस्रियों और फ़िरऔन के क़ब्ज़े से नजात दिलाई है। उसी ने क्रौम को गुलामी से छुड़ाया है! 11 अब मैं ने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्योंकि उस ने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्होंने अपने गुरूर में इस्राईलियों के साथ बुरा सुलूक किया था।” 12 फिर यित्रो ने अल्लाह को भस्म होने वाली कुर्बानी और दीगर कई कुर्बानियाँ पेश कीं। तब हारून और तमाम बुजुर्ग मूसा के सुसर यित्रो के साथ अल्लाह के हुज़ूर खाना खाने बैठे।

### 70 बुजुर्गों को मुकर्रर किया जाता है

13 अगले दिन मूसा लोगों का इन्साफ़ करने के लिए बैठ गया। उन की तादाद इतनी ज़यादा थी कि वह सुबह से ले कर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे। 14 जब यित्रो ने यह सब कुछ देखा तो उस ने पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं? सारा दिन वह आप को घेरे रहते और आप उन की अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यों कर रहे हैं?”

15 मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आ कर अल्लाह की मर्ज़ी मालूम करते हैं। 16 जब कभी कोई तनाज़ा या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास आती हैं। मैं फ़ैसला करके उन्हें अल्लाह के अहक़ाम और हिदायात बताता हूँ।”

17मूसा के सुसर ने उस से कहा, "आप का तरीका अच्छा नहीं है। 18काम इतना वसी है कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इस से आप और वह लोग जो आप के पास आते हैं बुरी तरह थक जाते हैं। 19मेरी बात सुनें! मैं आप को एक मश्वरा देता हूँ। अल्लाह उस में आप की मदद करे। लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने क्रौम के नुमाइन्दा रहें और उन के मुआमलात उस के सामने पेश करें। 20यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह जिन्दगी गुज़ारें और क्या क्या करें। 21लेकिन साथ साथ क्रौम में से क्राबिल-ए-एतिमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का खौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्तत से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़रर करें। 22उन आदमियों की जिम्मादारी यह होगी कि वह हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा मुआमला हो तो वह फ़ैसले के लिए आप के पास आएँ, लेकिन दीगर मुआमलों का फ़ैसला वह खुद करें। यूँ वह काम में आप का हाथ बटाएँगे और आप का बोझ हल्का हो जाएगा।

23अगर मेरा यह मश्वरा अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप अपनी जिम्मादारी निभा सकेंगे और यह तमाम लोग इन्साफ़ के मिलने पर सलामती के साथ अपने अपने घर जा सकेंगे।"

24मूसा ने अपने सुसर का मश्वरा मान लिया और ऐसा ही किया। 25उस ने इस्राईलियों में से क्राबिल-ए-एतिमाद आदमी चुने और उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़रर किया। 26यह मर्द क्राज़ी बन कर मुस्तक़िल तौर पर लोगों का इन्साफ़ करने लगे। आसान मसलों का फ़ैसला वह खुद करते और मुश्किल मुआमलों को मूसा के पास ले आते थे।

27कुछ अर्से बाद मूसा ने अपने सुसर को रुख़सत किया तो यित्री अपने वतन वापस चला गया।

### कोह-ए-सीना

**19** इस्राईलियों को मिस्र से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। 2उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़ कर दशत-ए-सीना में आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के क़रीब डेरे डाले।

3तब मूसा पहाड़ पर चढ़ कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकार कर कहा, "याक़ूब के घराने बनी इस्राईल को बता, 4'तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुम को उक्राब के परोँ पर उठा कर यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अह्द के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम क्रौमों में से मेरी खास मिलकियत होंगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क्रौम होंगे।' अब जा कर यह सारी बातें इस्राईलियों को बता।"

7मूसा ने पहाड़ से उतर कर और क्रौम के बुज़ुर्गों को बुला कर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। 8जवाब में पूरी क्रौम ने मिल कर कहा, "हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उस ने फ़रमाई है।" मूसा ने पहाड़ पर लौट कर रब को क्रौम का जवाब बताया। 9जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, "मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझ से हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।" तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताईं जो लोगों ने की थीं।

10रब ने मूसा से कहा, "अब लोगों के पास लौट कर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास



धो कर 11 तीसरे दिन के लिए तय्यार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा। 12 लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हदें मुकर्रर कर। उन्हें खबरदार कर कि हुदूद को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उस के दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए। 13 और उसे हाथ से छू कर नहीं मारना है बल्कि पत्थरों या तीरों से। ख़्वाह इन्सान हो या हैवान, वह ज़िन्दा नहीं रह सकता। जब तक नरसिंगा देर तक फूँक न जाए उस वक़्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।”

14 मूसा ने पहाड़ से उतर कर लोगों को अल्लाह के लिए मख्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। उन्होंने ने अपने लिबास भी धोए। 15 उस ने उन से कहा, “तीसरे दिन के लिए तय्यार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर न हों।”

16 तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। 17 तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। 18 सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्दत से लरज़ने लगा। 19 नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20 रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा। 21 रब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतर कर लोगों को खबरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़ की हुदूद में ज़बरदस्ती दाख़िल न हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत से हलाक हो जाएंगे। 22 इमाम भी जो रब के हुज़ूर आते

हैं अपने आप को मख्सूस-ओ-मुक़द्दस करें, वर्ना मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर नहीं आ सकते, क्योंकि तू ने खुद ही हमें खबरदार किया कि हम पहाड़ की हदें मुकर्रर करके उसे मख्सूस-ओ-मुक़द्दस करें।”

24 रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हारून को साथ ले कर वापस आ। लेकिन इमामों और लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास आएँ तो मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25 मूसा ने लोगों के पास उतर कर उन्हें यह बातें बता दीं।

### दस अहक़ाम

**20** तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाई, 2 “मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र की गुलामी से निकाल लाया। 3 मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना। 4 अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। 5 न बुतों की परस्तिश, न उन की खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुशत तक सज़ा दूँगा। 6 लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे अहक़ाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुशतों तक मेहरबानी करूँगा।

7 रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। 9 हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 10 लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न

तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। <sup>11</sup>क्यूँकि रब ने पहले छः दिन में आसमान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इस लिए रब ने सबत के दिन को बरकत दे कर मुकर्रर किया कि वह मख्सूस और मुक़द्दस हो।

<sup>12</sup>अपने बाप और अपनी माँ की इज़ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देने वाला है देर तक जीता रहेगा।

<sup>13</sup>क़त्ल न करना।

<sup>14</sup>ज़िना न करना।

<sup>15</sup>चोरी न करना।

<sup>16</sup>अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

<sup>17</sup>अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उस के नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

### लोग घबरा जाते हैं

<sup>18</sup>जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। <sup>19</sup>उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हम से बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हम से बात न करने दें वरना हम मर जाएंगे।”

<sup>20</sup>लेकिन मूसा ने उन से कहा, “मत डरो, क्यूँकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उस का ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।” <sup>21</sup>लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के करीब गया जहाँ अल्लाह था।

<sup>22</sup>तब रब ने मूसा से कहा, “इस्राईलियों को बता, ‘तुम ने खुद देखा कि मैं ने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं।’ <sup>23</sup>चुनाँचे मेरी

परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ। <sup>24</sup>मेरे लिए मिट्टी की कुर्बानगाह बना कर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होने वाली और सलामती की कुर्बानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में कुर्बानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आ कर तुझे बरकत दूँगा।

<sup>25</sup>अगर तू मेरे लिए कुर्बानगाह बनाने की खातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्यूँकि तू तराशने के लिए इस्तेमाल होने वाले औज़ार से उस की बेहुरमती करेगा। <sup>26</sup>कुर्बानगाह को सीढ़ियों के बग़ैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।’

**21** इस्राईलियों को यह अहक़ाम बता,

### इब्रानी गुलाम के हुक्क

<sup>2</sup>अगर तू इब्रानी गुलाम खरीदे तो वह छः साल तेरा गुलाम रहे। इस के बाद लाज़िम है कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।

<sup>3</sup>अगर गुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आज़ाद हो कर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद हो कर जाए। <sup>4</sup>अगर मालिक ने गुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद जब गुलाम आज़ाद हो कर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।

<sup>5</sup>अगर गुलाम कहे, “मैं अपने मालिक और अपने बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद नहीं होना चाहता” <sup>6</sup>तो गुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से उस के कान

की लौ छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर उस का गुलाम बना रहेगा।

7 अगर कोई अपनी बेटी को गुलामी में बेच डाले तो उस के लिए आज्ञादी मिलने की शराइत मर्द से फ़र्क़ हैं। 8 अगर उस के मालिक ने उसे मुन्तख़ब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसन्द न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा ले कर उसे उस के रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख़तियार नहीं है, क्योंकि उस ने उस के साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।

9 अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक्क़ हासिल होंगे।

10 अगर मालिक ने उस से शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इस के इलावा उस के साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है। 11 अगर वह यह तीन फ़राइज़ अदा न करे तो उसे औरत को आज्ञाद करना पड़ेगा। इस सूत्र में उसे मुफ़्त आज्ञाद करना होगा।

### ज़ख़मी करने की सज़ा

12 जो किसी को जान-बूझ कर इतना सख़्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना है। 13 लेकिन अगर उस ने उसे जान-बूझ कर न मारा बल्कि यह इत्तिफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारने वाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुकर्रर करूँगा। वहाँ उसे क्रल्ल किए जाने की इजाज़त नहीं होगी। 14 लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी कुर्बानगाह से भी छीन कर सज़ा-ए-मौत देना है।

15 जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटाता है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

16 जिस ने किसी को अग़वा कर लिया है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे गुलाम बना कर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

18 हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़मी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो। 19 अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शिफ़ा पाए कि दुबारा उठ कर लाठी के सहारे चल फिर सके तो चोट पहुँचाने वाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उस का पूरा इलाज करवाना है।

20 जो अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से यूँ मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए।

21 लेकिन अगर गुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन ज़िन्दा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्योंकि जो रक़म उस ने उस के लिए दी थी उस का नुक्सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22 हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यूँ टकरा जाएँ कि उस का बच्चा ज़ाए हो जाए। अगर कोई और नुक्सान न हुआ हो तो ज़र्ब पहुँचाने वाले को जुर्माना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह जुर्माना मुकर्रर करे, और अदालत में इस की तस्दीक़ हो।

23 लेकिन अगर उस औरत को और नुक्सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़र्ब पहुँचाने वाले को इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान, 24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँओ के बदले पाँओ, 25 जलने के ज़ख़म के बदले जलने का ज़ख़म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26 अगर कोई मालिक अपने गुलाम की आँख पर यूँ मारे कि वह ज़ाए हो जाए तो

उसे गुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत। <sup>27</sup>अगर मालिक के पीटने से गुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे गुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत।

### नुक्सान का मुआवज़ा

<sup>28</sup>अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उस का गोशत खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूरत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। <sup>29</sup>लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उस ने बैल को खुला छोड़ा था जिस के नतीजे में उस ने किसी को मार डाला। ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उस के मालिक को भी संगसार करना है। <sup>30</sup>लेकिन अगर फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िद्या दे तो जितना मुआवज़ा भी मुकर्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

<sup>31</sup>सज़ा में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा जाए या बेटी को। <sup>32</sup>लेकिन अगर बैल किसी गुलाम या लौंडी को मार दे तो उस का मालिक गुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को संगसार किया जाए।

<sup>33</sup>हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा खोद कर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उस में गिर कर मर गया। <sup>34</sup>ऐसी सूरत में हौज़ का मालिक मुर्दा जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को उस की पूरी क़ीमत अदा करे और मुर्दा जानवर खुद ले ले।

<sup>35</sup>अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िन्दा बैल को बेच कर उस के पैसे आपस में बराबर बाँट लें। इसी तरह वह मुर्दा बैल को भी बराबर तब्रसीम करें। <sup>36</sup>लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे

जानवरों पर हम्ला करता है, इस के बावजूद उस ने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी सूरत में उसे मुर्दा बैल के इवज़ उस के मालिक को नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुर्दा बैल खुद ले ले।

### मिलकियत की हिफ़ाज़त

**22** जिस ने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी के बैल के इवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के इवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

<sup>2</sup>हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो और लोग उसे पकड़ कर यहाँ तक मारते पीटते रहें कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो तो वह उस के खून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते। <sup>3</sup>लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ हो तो जिस ने उसे मारा वह क़ातिल ठहरगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का इवज़ाना देना है। अगर उस के पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे गुलाम बना कर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के इवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

<sup>4</sup>अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िन्दा पाया जाए तो उसे हर जानवर के इवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

<sup>5</sup>हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत या अंगूर के बाग़ में छोड़ कर चरने दे और होते होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जा कर चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का मालिक नुक्सान के इवज़ अपने अंगूर के बाग़ और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

<sup>6</sup>हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक फैल कर उस के अनाज के पौलों को, उस की पकी हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को बर्बाद कर दे। ऐसी

सूरत में जिस ने आग जलाई हो उसे उस की पूरी क्रीमत अदा करनी है।

<sup>7</sup>हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और माल अपने किसी वाकिफ़कार के सपुर्द कर दिया हो ताकि वह उसे महफूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उस के घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगनी क्रीमत अदा करनी पड़ेगी। <sup>8</sup>लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक जिस के सपुर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उस ने खुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

<sup>9</sup>हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा हो, और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों कि यह मेरी है। अगर कोई क्रीमती चीज़ हो मसलन बैल, गधा, भेड़, बकरी, कपड़े या कोई खोई हुई चीज़ तो मुआमला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे अल्लाह कुसूरवार करार दे उसे दूसरे को ज़ेर-ए-बह्स चीज़ की दुगनी क्रीमत अदा करनी है।

<sup>10</sup>हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल, भेड़, बकरी या कोई और जानवर किसी वाकिफ़कार के सपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़ख्मी हो जाए, या कोई उस पर क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो। <sup>11</sup>यह मुआमला यूँ हल किया जाए कि जिस के सपुर्द जानवर किया गया था वह रब के हुज़ूर क़सम खा कर कहे कि मैं ने अपने वाकिफ़कार के जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे को इस के बदले कुछ नहीं देना होगा। <sup>12</sup>लेकिन अगर वाक़ई जानवर को चोरी किया गया है तो जिस के सपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क्रीमत अदा करनी पड़ेगी। <sup>13</sup>अगर किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ डाला हो

तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क्रीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

<sup>14</sup>हो सकता है कि कोई अपने वाकिफ़कार से इजाज़त ले कर उस का जानवर इस्तेमाल करे। अगर जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख्स को जिस के पास जानवर उस वक़्त था उस का मुआवज़ा देना पड़ेगा। <sup>15</sup>लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उस ने जानवर को किराए पर लिया हो तो उस का नुक्सान किराए से पूरा हो जाएगा।

### लड़की को वरगालाने का जुर्म

<sup>16</sup>अगर किसी कुंवारी की मंगनी नहीं हुई और कोई मर्द उसे वरगाला कर उस से हमबिसतर हो जाए तो वह महर दे कर उस से शादी करे। <sup>17</sup>लेकिन अगर लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने से इन्कार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुंवारी के लिए मुकर्ररा रक़म देनी पड़ेगी।

### सज़ा-ए-मौत के लाइक़ जराइम

<sup>18</sup>जादूगरनी को जीने न देना।

<sup>19</sup>जो शख्स किसी जानवर के साथ जिन्सी ताल्लुकात रखता हो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

<sup>20</sup>जो न सिर्फ़ रब को कुर्बानियाँ पेश करे बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे क़ौम से निकाल कर हलाक़ किया जाए।

### कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अहक़ाम

<sup>21</sup>जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना और न उस से बुरा सुलूक करना, क्योंकि तुम भी मिस्र में परदेसी थे।

<sup>22</sup>किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना। <sup>23</sup>अगर तू ऐसा करे और वह चिल्ला

कर मुझ से फ़र्याद करें तो मैं ज़रूर उन की सुनूँगा। <sup>24</sup>मैं बड़े गुस्से में आ कर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ खुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे खुद यतीम बन जाएंगे।

<sup>25</sup>अगर तू ने मेरी क़ौम के किसी गरीब को क़र्ज़ दिया है तो उस से सूद न लेना।

<sup>26</sup>अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही वापस कर देना है, <sup>27</sup>क्योंकि इसी को वह सोने के लिए इस्तेमाल करता है। वर्ना वह क्या चीज़ ओढ़ कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह शख्स चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद करे तो मैं उस की सुनूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ।

### अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़राइज़

<sup>28</sup>अल्लाह को न कोसना, न अपनी क़ौम के किसी सरदार पर लानत करना।

<sup>29</sup>मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हूओं की पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे देना। <sup>30</sup>अपने बैलों, भेड़ों और बकरियों के पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

<sup>31</sup>अपने आप को मेरे लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस रखना। इस लिए ऐसे जानवर का गोशत मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे गोशत को कुत्तों को खाने देना।

### अदालत में इन्साफ़ और दूसरों से मुहब्बत

**23** ग़लत अप्रवाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ दे कर झूठी गवाही देना मना है। <sup>2</sup>अगर अक्सरियत ग़लत काम कर रही हो तो उस के पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अक्सरियत के

साथ मिल कर ऐसी बात न करना जिस से ग़लत फ़ैसला किया जाए। <sup>3</sup>लेकिन अदालत में किसी गरीब की तरफ़दारी भी न करना।

<sup>4</sup>अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना। <sup>5</sup>अगर तुझ से नफ़रत करने वाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

<sup>6</sup>अदालत में गरीब के हुकूम न मारना। <sup>7</sup>ऐसे मुआमले से दूर रहना जिस में लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ा-ए-मौत न देना, क्योंकि मैं कुसूरवार को हक़-ब-जानिब नहीं ठहराऊँगा। <sup>8</sup>रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत देखने वाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

<sup>9</sup>जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाओ न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से खूब वाकिफ़ हो, क्योंकि तुम खुद मिस्र में परदेसी रहे हो।

### सबत का साल और सबत

<sup>10</sup>छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बो कर उस की पैदावार जमा करना। <sup>11</sup>लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के गरीब लोग खाएँ। जो उन से बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना है।

<sup>12</sup>छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहने वाला परदेसी भी ताज़ामद हो जाएंगे।

<sup>13</sup>जो भी हिदायत मैं ने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उन के नामों तक का ज़िक़्र न सुनूँ।

### तीन खास ईदें

14साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना। 15पहले, बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने<sup>a</sup> में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैं ने हुक्म दिया है, क्योंकि इस महीने में तू मिस्र से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर खाली हाथ न आए। 16दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के इख़तिताम<sup>b</sup> पर मनाना है जब तू ने अंगूर और बाक़ी बाग़ों के फल जमा किए होंगे। 17यूँ तेरे तमाम मर्द तीन मर्तबा रब क़ादिर-ए-मुतलक़ के हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

18जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुर्बानी के तौर पर पेश करे तो उस के खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिस में खमीर हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए उन की चर्बी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे।

19अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में लाना।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।

### रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले जाएगा जो मैं ने तेरे लिए तय्यार की है। 21उस की मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस की सुनना, और उस की खिलाफ़वरज़ी न करना। अगर तू सरकश हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उस में हाज़िर होगा। 22लेकिन अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुखालिफ़ों का मुखालिफ़ हूँगा।

<sup>a</sup>मार्च ता अप्रैल।

23क्योंकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे मुल्क-ए-कनआन तक पहुँचा देगा जहाँ अमोरी, हिती, फ़रिज़्ज़ी, कनआनी, हिक्वी और यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। 24उन के माबूदों को सिज्दा न करना, न उन की खिदमत करना। उन के रस्म-ओ-रिवाज भी न अपनाना बल्कि उन के बुतों को तबाह कर देना। जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते हैं उन को भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25रब अपने खुदा की खिदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को बरकत दे कर तमाम बीमारियाँ तुझ से दूर करूँगा। 26फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाए होगा, न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िन्दगी अता करूँगा।

27मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अब्तरी पैदा करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलट कर भाग जाएंगे। 28मैं तेरे आगे ज़म्बूर भेज दूँगा जो हिक्वी, कनआनी और हिती को मुल्क छोड़ने पर मजबूर करेगा। 29लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वर्ना पूरा मुल्क वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैल कर तेरे लिए नुक़सान का बाइस बन जाएंगे। 30इस लिए मैं तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिन्दों को थोड़ा थोड़ा करके निकालता जाऊँगा। इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी और तू रफ़ता रफ़ता मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31मैं तेरी सरहदें मुकर्रर करूँगा। बहर-ए-कुल्ज़ुम एक हद होगी और फ़िलिस्तियों का समुन्दर दूसरी, जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरया-ए-फ़ुरात दूसरी। मैं मुल्क के बाशिन्दों को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर करता जाएगा। 32लाज़िम है कि तू उन के साथ या उन के माबूदों के साथ अहद न बांधे। 33उन का

<sup>b</sup>सितम्बर ता अक्तूबर।

तेरे मुल्क में रहना मना है, वर्ना तू उन के सबब से मेरा गुनाह करेगा। अगर तू उन के माबूदों की इबादत करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा।”

### रब इस्राईल से अह्द बांधता है

**24** रब ने मूसा से कहा, “तू, हारून, नदब, अबीहू और इस्राईल के 70 बुजुर्ग मेरे पास ऊपर आएँ। कुछ फ्रांसिले पर खड़े हो कर मुझे सिज्दा करो। 2सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे करीब आ, दूसरे दूर रहें। और क्रौम के बाक़ी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न चढ़ें।”

3तब मूसा ने क्रौम के पास जा कर रब की तमाम बातें और अह्दकाम पेश किए। जवाब में सब ने मिल कर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।”

4तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया। उस के दामन में उस ने कुर्बानगाह बनाई। साथ ही उस ने इस्राईल के हर एक क़बीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खड़ा किया। 5फिर उस ने कुछ इस्राईली नौजवानों को कुर्बानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब की ताज़ीम में भस्म होने वाली कुर्बानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की कुर्बानी के तौर पर पेश करें। 6मूसा ने कुर्बानियों का खून जमा किया। उस का आधा हिस्सा उस ने बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा कुर्बानगाह पर छिड़क दिया।

7फिर उस ने वह किताब ली जिस में रब के साथ अह्द की तमाम शराइत दर्ज थीं और उसे क्रौम को पढ़ कर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की सुनेंगे।” 8इस पर मूसा ने बासनों में से खून ले कर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह खून उस अह्द की तस्दीक

करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर मब्नी है।”

9इस के बाद मूसा, हारून, नदब, अबीहू और इस्राईल के 70 बुजुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े। 10वहाँ उन्होंने ने इस्राईल के खुदा को देखा। लगता था कि उस के पाँओ के नीचे संग-ए-लाजवर्द का सा तख्ता था। वह आसमान की मानिन्द साफ़-ओ-शाफ़फ़ाफ़ था। 11अगरचे इस्राईल के राहनुमाओं ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और उस के हुज़ूर अह्द का खाना खाते और पीते रहे।

### पत्थर की तख्तियाँ

12पहाड़ से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास पहाड़ पर आ कर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख्तियाँ ढूँगा जिन पर मैं ने अपनी शरीअत और अह्दकाम लिखे हैं और जो इस्राईल की तालीम-ओ-तर्बियत के लिए ज़रूरी हैं।”

13मूसा अपने मददगार यशूअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। 14पहले उस ने बुजुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इन्तिज़ार में यहाँ ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मुआमला हो तो लोग उन ही के पास जाएँ।”

### मूसा रब से मिलता है

15जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। 16रब का जलाल कोह-ए-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। 17रब का जलाल इस्राईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यूँ लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। 18चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाखिल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।



## मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने के लिए हदिए

**25** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों को बता कि वह हदिए ला कर मुझे उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करें। लेकिन सिर्फ़ उन से हदिए क़बूल करो जो दिली खुशी से दें। <sup>3</sup>उन से यह चीज़ें हदिए के तौर पर क़बूल करो : सोना, चाँदी, पीतल; <sup>4</sup>नीले, अर्वावानी और क्रिमिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, <sup>5</sup>मेंढों की सुख़ रंगी हुई खालें, तख़स<sup>a</sup> की खालें, कीकर की लकड़ी, <sup>6</sup>शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले, <sup>7</sup>अक़ीक़-ए-अह्यर और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे। <sup>8</sup>इन चीज़ों से लोग मेरे लिए मक्बिदिस बनाएँ ताकि मैं उन के दरमियान रहूँ। <sup>9</sup>मैं तुझे मक्बिदिस और उस के तमाम सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्योंकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के मुताबिक़ बनाना है।

### अहद का सन्दूक

<sup>10-12</sup>लोग कीकर की लकड़ी का सन्दूक बनाएँ। उस की लम्बाई पौने चार फुट हो जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो फुट हो। पूरे सन्दूक पर अन्दर और बाहर से खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। सन्दूक को उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें सन्दूक के चारपाइयों पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो कड़े हों। <sup>13</sup>फिर कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक को उठाने के लिए तय्यार करना। उन पर सोना चढ़ा कर <sup>14</sup>उन को दोनों तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उन से सन्दूक को उठाया जाए। <sup>15</sup>यह लकड़ियाँ सन्दूक के इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए। <sup>16</sup>सन्दूक में शरीअत की वह दो तख्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

<sup>17</sup>सन्दूक का ढकना खालिस सोने का बनाना। उस की लम्बाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट हो। उस का नाम कफ़फ़ारे का ढकना है। <sup>18-19</sup>सोने से घड़ कर दो करूबी फ़रिशते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फ़रिशते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं। <sup>20</sup>फ़रिशतों के पर यूँ ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें। उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ़ देखें।

<sup>21</sup>ढकने को सन्दूक पर लगा, और सन्दूक में शरीअत की वह दो तख्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा। <sup>22</sup>वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिशतों के दरमियान से मैं अपने आप को तुझ पर ज़ाहिर करके तुझ से हमकलाम हूँगा और तुझे इस्राईलियों के लिए तमाम अहकाम दूँगा।

### मख़सूस रोटियों की मेज़

<sup>23</sup>कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की लम्बाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट हो। <sup>24</sup>उस पर खालिस सोना चढ़ाना, और उस के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। <sup>25</sup>मेज़ की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिस की ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो। <sup>26</sup>सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। <sup>27</sup>यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उन में वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिन से मेज़ को उठाया जाएगा। <sup>28</sup>यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उन से मेज़ को उठाना है।

<sup>29</sup>उस के थाल, प्याले, मर्तबान और मै की नज़रें पेश करने के बर्तन खालिस सोने से बनाना है। <sup>30</sup>मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हुज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मख़सूस हैं।

<sup>a</sup>गालिबन इस मतरूक इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद कोई समुन्दरी जानवर है।

### शमादान

31खालिस सोने का शमादान भी बनाना। उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाना है। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शकल की होंगी पाएँ और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों। 32डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलें। 33हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और फूलों की शकल की हों। 34शमादान की डंडी पर भी इस क्रिसम की प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार। 35इन में से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी हों। वह यूँ लगी हों कि हर प्याली से दो शाखें निकलें। 36शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान खालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़ कर बनाना है।

37शमादान के लिए सात चराश बना कर उन्हें यूँ शाखों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन करें। 38बत्ती कतरने की कैंचियाँ और जलते कोएले के लिए छोटे बर्तन भी खालिस सोने से बनाएँ जायें। 39शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम खालिस सोना इस्तेमाल किया जाए। 40गौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

### मुलाक़ात का ख़ैमा

**26** मुक़द्दस ख़ैमे के लिए दस पर्दे बनाना। उन के लिए बारीक कतान और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। पर्दों में किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिशतों का डिज़ाइन बनवाना। 2हर पर्दे की लम्बाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 3पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन जाएंगे। 4दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले धागे के हल्के

बनाना। यह हल्के हर टुकड़े के 42 फ़ुट वाले एक किनारे पर लगाएँ जाएँ, 5एक टुकड़े के हाशिए पर 50 हल्के और दूसरे पर भी उतने ही हल्के। इन दो हाशियों के हल्के एक दूसरे के आमने-सामने हों। 6फिर सोने की 50 हुकें बना कर उन से आमने-सामने के हल्के एक दूसरे के साथ मिलाना। यूँ दोनों टुकड़े जुड़ कर ख़ैमे का काम देंगे।

7बकरी के बालों से भी 11 पर्दे बनाना जिन्हें कपड़े वाले ख़ैमे के ऊपर रखा जाए। 8हर पर्दे की लम्बाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 9पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी छः भी। इन छः पर्दों के छठे पर्दे को एक दफ़ा तह करना। यह सामने वाले हिस्से से लटके।

10बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को भी मिलाना है। इस के लिए हर टुकड़े के 45 फ़ुट वाले एक किनारे पर पचास पचास हल्के लगाना। 11फिर पीतल की 50 हुकें बना कर उन से दोनों हिस्से मिलाना। 12जब बकरियों के बालों का यह ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे के ऊपर लगाया जाएगा तो आधा पर्दा बाक़ी रहेगा। वह ख़ैमे की पिछली तरफ़ लटका रहे। 13ख़ैमे के दाईं और बाईं तरफ़ बकरी के बालों का ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे की निस्बत डेढ़ डेढ़ फ़ुट लम्बा होगा। यूँ वह दोनों तरफ़ लटके हुए कपड़े के ख़ैमे को मटफ़ूज़ रखेगा।

14एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त के लिए दो ग़िलाफ़ बनाने हैं। बकरी के बालों के ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें जोड़ कर रखी जाएँ और उन पर तखस की खालें मिला कर रखी जाएँ।

15कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाना जो खड़े किए जाएँ ताकि ख़ैमे की दीवारों का काम दें। 16हर तख्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट हो और चौड़ाई सवा दो फ़ुट। 17हर तख्ते के नीचे दो दो चूल्हें हों। यह चूल्हें हर तख्ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ेंगी ताकि तख्ता खड़ा रहे। 18ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20

तख्तों की ज़रूरत है <sup>19</sup>और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख्ते खड़े किए जाएंगे। हर तख्ते के नीचे दो पाए होंगे, और हर पाए में एक चूल लगेगी। <sup>20</sup>इसी तरह खैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख्तों की ज़रूरत है <sup>21</sup>और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। वह भी तख्तों को खड़ा करने के लिए है। हर तख्ते के नीचे दो पाए होंगे। <sup>22</sup>खैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख्ते बनाना। <sup>23</sup>इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो तख्ते बनाना। <sup>24</sup>इन दो तख्तों में नीचे से ले कर ऊपर तक कोना हो ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए जाएँ। <sup>25</sup>यूँ पिछले यानी मगरिबी तख्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इन के लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख्ते के नीचे दो दो पाए होंगे।

<sup>26-27</sup>इस के इलावा कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख्तों पर यूँ लगाए जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ। <sup>28</sup>दरमियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया जाए। <sup>29</sup>शहतीरों को तख्तों के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बना कर तख्तों में लगाना। तमाम तख्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

<sup>30</sup>पूरे मुकद्दस खैमे को उसी नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

### मुकद्दस खैमे के पर्दे

<sup>31</sup>अब एक और पर्दा बनाना। इस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई

के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनवाना। <sup>32</sup>इसे सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों। <sup>33</sup>यह पर्दा मुकद्दस कमरे को मुकद्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिस में अह्द का सन्दूक पड़ा रहेगा। पर्दे को लटकाने के बाद उस के पीछे मुकद्दसतरीन कमरे में अह्द का सन्दूक रखना। <sup>34</sup>फिर अह्द के सन्दूक पर कफ़ारे का ढकना रखना।

<sup>35</sup>जिस मेज़ पर मेरे लिए मख्सूस की गई रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह पर्दे के बाहर मुकद्दस कमरे में शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उस के मुकाबिल जुनूब की तरफ़ शमादान रखा जाए।

<sup>36</sup>फिर खैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा बनाया जाए। इस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए। <sup>37</sup>इस पर्दे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

### जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह

**27** कीकर की लकड़ी की कुर्बानगाह बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार फुट हो जबकि उस की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फुट हो। <sup>2</sup>उस के ऊपर चारों कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और कुर्बानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना। <sup>3</sup>उस का तमाम साज़-ओ-सामान और बर्तन भी पीतल के हों यानी राख को उठा कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोएले के लिए बर्तन और छिड़काओ के कटोरे।

<sup>4</sup>कुर्बानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। <sup>5</sup>कुर्बानगाह

की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और कुर्बानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए। 6उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है। 7उन को कुर्बानगाह के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल देना।

8पूरी कुर्बानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अन्दर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

### खैमे का सहन

9मुकद्दस खैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फुट हो। 10कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खम्बों के साथ लगाया जाए। हर खम्बा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी की मानिन्द हो। 12खैमे के पीछे मगरिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खम्बों के साथ लगाया जाए। यह खम्बे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13सामने, मशरिफ़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट हो। 14-15यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फुट चौड़ा हो और उस के बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन लकड़ी के खम्बों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16दरवाज़े का पर्दा 30 फुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अर्वावानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खम्बों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17तमाम खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खम्बे के साथ लगाया जाए। 18चारदीवारी की लम्बाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई साढ़े 7 फुट हो। खम्बों के तमाम पाए पीतल के हों। 19जो भी साज़-ओ-सामान मुकद्दस खैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। खैमे और चारदीवारी की मेखें भी पीतल की हों।

### शमादान का तेल

20इस्त्राईलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों का खालिस तेल लाएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चरागा मुतवातिर जलते रहें। 21हारून और उस के बेटे शमादान को मुलाक्रात के खैमे के मुकद्दस कमरे में रखें, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे अह्द का सन्दूक है। उस में वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से ले कर सुबह तक जलता रहे। इस्त्राईलियों का यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

### इमामों के लिबास

**28** अपने भाई हारून और उस के बेटों नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर को बुला। मैं ने उन्हें इस्त्राईलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी खिदमत करें। 2अपने भाई हारून के लिए मुकद्दस लिबास बनवाना जो पुरवकार और शानदार हों। 3लिबास बनाने की ज़िम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिन को मैं ने हिक्मत की रूह से भर दिया है। क्योंकि जब हारून को मख्सूस किया जाएगा और वह मुकद्दस खैमे की खिदमत सरअन्जाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4उस के लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोगा, बुना हुआ ज़ेरजामा, पगड़ी और कमरबन्द। यह कपड़े

अपने भाई हारून और उस के बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर खिदमत कर सकें।<sup>5</sup> इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

### हारून का बालापोश

<sup>6</sup>बालापोश को भी सोने और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया जाए।<sup>7</sup> उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रख कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों।<sup>8</sup> इस के इलावा एक पटका बुनना है जिस से बालापोश को बांधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उस के लिए भी सोना, नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

<sup>9</sup>फिर अक्रीक-ए-अह्वर के दो पत्थर चुन कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम कन्दा करना।<sup>10</sup> हर जौहर पर छः छः नाम उन की पैदाइश की तरतीब के मुताबिक कन्दा किए जाएँ।<sup>11</sup> यह नाम उस तरह जौहरों पर कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के खानों में जड़ कर<sup>12</sup> बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हारून मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उस के कंधों पर होंगे और मुझे इस्राईलियों की याद दिलाएँगे।

<sup>13</sup>सोने के खाने बनाना<sup>14</sup> और खालिस सोने की दो ज़न्जीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। फिर इन दो ज़न्जीरों को सोने के खानों के साथ लगाना।

### सीने का कीसा

<sup>15</sup>सीने के लिए कीसा बनाना। उस में वह कुरए पड़े रहें जिन की मारिफ़त मेरी मज़ीं मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन ही चीज़ों से बनाए जिन से हारून का बालापोश बनाया गया है यानी सोने और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से।<sup>16</sup> जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया हो तो कीसे की लम्बाई और चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

<sup>17</sup>उस पर चार क्रतारों में जवाहिर जड़ना। हर क्रतार में तीन तीन जौहर हों। पहली क्रतार में लाल,<sup>a</sup> ज़बर्जद<sup>b</sup> और ज़ुमुरद।<sup>18</sup> दूसरी में फ़ीरोज़ा, संग-ए-लाजवर्द<sup>c</sup> और हज़्र-उल-क्रमर।<sup>d</sup> 19तीसरी में ज़रक्रोन,<sup>e</sup> अक्रीक<sup>f</sup> और याकूत-ए-अर्गवानी।<sup>g</sup> 20चौथी में पुखराज,<sup>h</sup> अक्रीक-ए-अह्वर<sup>i</sup> और यशब।<sup>j</sup> हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ हो।<sup>21</sup> यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की नुमाइन्दगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक क़बीले का नाम कन्दा किया जाए। यह नाम उस तरह कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।

<sup>22</sup>सीने के कीसे पर खालिस सोने की दो ज़न्जीरें लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों।<sup>23</sup> उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बना कर कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाना।<sup>24</sup> अब

<sup>a</sup>या एक किस्म का सुर्ख अक्रीक। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अब्सर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

<sup>b</sup>peridot

<sup>c</sup>lapis lazuli

<sup>d</sup>moonstone

<sup>e</sup>hyacinth

<sup>f</sup>agate

<sup>g</sup>amethyst

<sup>h</sup>topas

<sup>i</sup>carnelian

<sup>j</sup>jasper

दोनों ज़न्जीरों उन दो कड़ों से लगाना। <sup>25</sup>उन के दूसरे सिरे बालापोश की कंधों वाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ़ लगाना। <sup>26</sup>कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाना। वह अन्दर, बालापोश की तरफ़ लगे हों। <sup>27</sup>अब दो और कड़े बना कर बालापोश की कंधों वाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की तरफ़ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। <sup>28</sup>सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बांधे जाएँ। यूँ कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहेगा।

<sup>29</sup>जब भी हारून मक्दिदस में दाखिल हो कर रब के हुज़ूर आएगा वह इस्राईली क़बीलों के नाम अपने दिल पर सीने के कीसे की सूरत में साथ ले जाएगा। यूँ वह क्रौम की याद दिलाता रहेगा।

<sup>30</sup>सीने के कीसे में दोनों कुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक्दिदस में रब के सामने आते वक़्त हारून के दिल पर हों। यूँ जब हारून रब के हुज़ूर होगा तो रब की मर्ज़ी पूछने का वसीला हमेशा उस के दिल पर होगा।

### हारून का चोगा

<sup>31</sup>चोगा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया जाए। चोगे को बालापोश से पहले पहना जाए। <sup>32</sup>उस के गरेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे। <sup>33</sup>नीले, अर्वावानी और किर्मिज़ी रंग के धागे से अनार बना कर उन्हें चोगे के दामन में लगा देना। उन के दरमियान सोने की घंटियाँ लगाना। <sup>34</sup>दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

<sup>35</sup>हारून खिदमत करते वक़्त हमेशा चोगा पहने। जब वह मक्दिदस में रब के हुज़ूर आएगा और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर वह नहीं मरेगा।

### माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

<sup>36</sup>ख़ालिस सोने की तख़्ती बना कर उस पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा करना, 'रब के लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस।' यह अल्फ़ाज़ यूँ कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। <sup>37</sup>उसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले हिस्से से लगाया जाए <sup>38</sup>ताकि वह हारून के माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मक्दिदस में जाए तो यह तख़्ती साथ हो। जब इस्राईली अपने नज़राने ला कर रब के लिए मख़सूस करें लेकिन किसी ग़लती के बाइस कुसूरवार हों तो उन का यह कुसूर हारून पर मुन्तक़िल होगा। इस लिए यह तख़्ती हर वक़्त उस के माथे पर हो ताकि रब इस्राईलियों को क़बूल कर ले।

<sup>39</sup>ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबन्द बनाना। उस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

### बाक़ी लिबास

<sup>40</sup>हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबन्द और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवक्कार और शानदार नज़र आएँ। <sup>41</sup>यह सब अपने भाई हारून और उस के बेटों को पहनाना। उन के सरों पर तेल उंडेल कर उन्हें मसह करना। यूँ उन्हें उन के उट्टे पर मुकर्रर करके मेरी खिदमत के लिए मख़सूस करना।

<sup>42</sup>उन के लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उन की लम्बाई कमर से रान तक हो। <sup>43</sup>जब भी हारून और उस के बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाखिल हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुक़द्दस कमरे में खिदमत करने के लिए कुर्बानगाह के पास आना होता है तो वह यह पहनें, वर्ना वह कुसूरवार ठहर कर मर जाएंगे। यह हारून और उस की औलाद के लिए एक अबदी उसूल है।

### इमामों की मख्सूसियत

**29** इमामों को मख्सूसियत में मेरी खिदमत के लिए मख्सूस करने का यह तरीका है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना। 2बेहतरीन मैदे से तीन किसम की चीजें पकाना जिन में खमीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिस में तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो। 3यह चीजें टोकरी में रख कर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना। 4फिर हारून और उस के बेटों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर ला कर गुसल कराना। 5इस के बाद ज़ेरजामा, चोगा, बालापोश और सीने का कीसा ले कर हारून को पहनाना। बालापोश को उस के महारत से बुने हुए पटके के ज़रीए बांधना। 6उस के सर पर पगड़ी बांध कर उस पर सोने की मुकद्दस तख्ती लगाना। 7हारून के सर पर मसह का तेल उंडेल कर उसे मसह करना।

8फिर उस के बेटों को आगे ला कर ज़ेरजामा पहनाना। 9उन के पगड़ियाँ और कमरबन्द बांधना। यूँ तू हारून और उस के बेटों को उन के मन्सब पर मुकर्रर करना। सिर्फ़ वह और उन की औलाद हमेशा तक मख्सूस में मेरी खिदमत करते रहें।

10बैल को मुलाकात के खैमे के सामने लाना। हारून और उस के बेटे उस के सर पर अपने हाथ रखें। 11उसे खैमे के दरवाजे के सामने रब के हुज़ूर ज़बह करना। 12बैल के खून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से कुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक्री खून कुर्बानगाह के पाए पर उंडेल देना। 13अंतड़ियों पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत ले कर कुर्बानगाह पर जला देना। 14लेकिन बैल के गोशत, खाल और अंतड़ियों के गोबर को खैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की कुर्बानी है।

15इस के बाद पहले मेंढे को ले आना। हारून और उस के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 16उसे ज़बह करके उस का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कना। 17मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर और बाक्री टुकड़ों के साथ मिला कर 18पूरे मेंढे को कुर्बानगाह पर जला देना। जलने वाली यह कुर्बानी रब के लिए भस्म होने वाली कुर्बानी है, और उस की खुशबू रब को पसन्द है।

19अब दूसरे मेंढे को ले आना। हारून और उस के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 20उस को ज़बह करना। उस के खून में से कुछ ले कर हारून और उस के बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना। इसी तरह खून को उन के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर भी लगाना। बाक्री खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कना। 21जो खून कुर्बानगाह पर पड़ा है उस में से कुछ ले कर और मसह के तेल के साथ मिला कर हारून और उस के कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उस के बेटों और उन के कपड़ों पर भी छिड़कना। यूँ वह और उस के बेटे खिदमत के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस हो जाएंगे।

22इस मेंढे का खास मन्सद यह है कि हारून और उस के बेटों को मख्सूस में खिदमत करने का इख्तियार और उहदा दिया जाए। मेंढे की चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग करनी है। 23उस टोकरी में से जो रब के हुज़ूर यानी खैमे के दरवाजे पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिस में तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो निकालना। 24मेंढे से अलग की गई चीजें और बेखमीरी रोटी की टोकरी की यह चीजें ले कर हारून और उस के बेटों के हाथों में देना, और वह उन्हें हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने

हिलाएँ।<sup>25</sup> फिर यह चीज़ें उन से वापस ले कर भस्म होने वाली कुर्बानी के साथ कुर्बानिगाह पर जला देना। यह रब के लिए जलने वाली कुर्बानी है, और उस की खुशबू रब को पसन्द है।

<sup>26</sup> अब उस मेंढे का सीना लेना जिस की मारिफ़त हारून को इमाम-ए-आज़म का इखतियार दिया जाता है। सीने को भी हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह सीना कुर्बानी का तेरा हिस्सा होगा।<sup>27</sup> यूँ तुझे हारून और उस के बेटों की मख्सूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मख्सूस-ओ-मुकद्दस करने हैं। उस के सीने को रब के सामने हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए और उस की रान को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर उठाया जाए।<sup>28</sup> हारून और उस की औलाद को इस्राईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने का हक़ है। जब भी इस्राईली रब को अपनी सलामती की कुर्बानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े मिलेंगे।

<sup>29</sup> जब हारून फ़ौत हो जाएगा तो उस के मुकद्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे मसह करके हारून की जगह मुक़र्रर किया जाएगा।<sup>30</sup> जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

<sup>31</sup> जो मेंढा हारून और उस के बेटों की मख्सूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे मुकद्दस जगह पर उबालना है।<sup>32</sup> फिर हारून और उस के बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोश्त और टोकरी की बेखमीरी रोटियाँ खाएँ।<sup>33</sup> वह यह चीज़ें खाएँ जिन से उन्हें गुनाहों का कफ़रारा और इमाम का उहदा मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्योंकि यह मख्सूस-ओ-मुकद्दस है।<sup>34</sup> और अगर अगली सुबह तक इस गोश्त या रोटी में

से कुछ बच जाए तो उसे जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्योंकि वह मुकद्दस है।

<sup>35</sup> जब तू हारून और उस के बेटों को इमाम मुक़र्रर करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह तक्रीब सात दिन तक मनाई जाए।<sup>36</sup> इस के दौरान गुनाह की कुर्बानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इस से तू कुर्बानिगाह का कफ़रारा दे कर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इस के इलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इस से वह मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस हो जाएगा।<sup>37</sup> सात दिन तक कुर्बानिगाह का कफ़रारा दे कर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मख्सूस-ओ-मुकद्दस करना। फिर कुर्बानिगाह निहायत मुकद्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मख्सूस-ओ-मुकद्दस हो जाएगा।

### रोज़मर्रा की कुर्बानियाँ

<sup>38</sup> रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे कुर्बानिगाह पर जला देना,<sup>39</sup> एक को सुबह के वक़्त, दूसरे को सूरज के गुरूब होने के ऐन बाद।<sup>40</sup> पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी कुर्बानिगाह पर उंडेलना।<sup>41</sup> दूसरे जानवर के साथ भी ग़ल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है।

<sup>42</sup> लाज़िम है कि आने वाली तमाम नस्लें भस्म होने वाली यह कुर्बानी बाक़ाइदगी से मुकद्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुम से मिला करूँगा और तुम से हमकलाम हूँगा।<sup>43</sup> वहाँ मैं इस्राईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह मेरे जलाल से मख्सूस-ओ-मुकद्दस हो जाएगी।<sup>44</sup> यूँ मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और कुर्बानिगाह को मख्सूस करूँगा और हारून और उस के बेटों को



मख्सूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी खिदमत करें।

<sup>45</sup>तब मैं इस्राईलियों के दरमियान रहूँगा और उन का खुदा हूँगा। <sup>46</sup>वह जान लेंगे कि मैं रब उन का खुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि उन के दरमियान सुकूनत करूँ। मैं रब उन का खुदा हूँ।

### बखूर जलाने की कुर्बानगाह

**30** कीकर की लकड़ी की कुर्बानगाह बनाना जिस पर बखूर जलाया जाए। <sup>2</sup>वह डेढ़ फुट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची हो। उस के चारों कोनों में से सींग निकलें जो कुर्बानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। <sup>3</sup>उस की ऊपर की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों पर खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो। <sup>4</sup>सोने के दो कड़े बना कर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुकाबिल पहलूओं पर लगाना। इन कड़ों में कुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी। <sup>5</sup>यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

<sup>6</sup>इस कुर्बानगाह को खैमे के मुकद्दस कमरे में उस पर्दे के सामने रखना जिस के पीछे अह्द का सन्दूक और उस का ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा। <sup>7</sup>जब हारून हर सुबह शमादान के चरागा तय्यार करे उस वक़्त वह उस पर खुशबूदार बखूर जलाए। <sup>8</sup>सूरज के गुरूब होने के बाद भी जब वह दुबारा चरागा की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बखूर जलाए। यूँ रब के सामने बखूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नस्लें भी इस उसूल पर क़ाइम रहें।

<sup>9</sup>इस कुर्बानगाह पर सिर्फ़ जाइज़ बखूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की कुर्बानियाँ चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ। <sup>10</sup>हारून साल में एक दफ़ा उस का क़फ़ारा दे कर उसे पाक करे।

इस के लिए वह क़फ़ारे के दिन उस कुर्बानी का कुछ खून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक क़ाइम रहे। यह कुर्बानगाह रब के लिए निहायत मुकद्दस है।”

### मर्दुमशुमारी के पैसे

<sup>11</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>12</sup>“जब भी तू इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिन का शुमार किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िद्या दें ताकि उन में वबा न फैले। <sup>13</sup>जिस जिस का शुमार किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर रक़म उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक्त्रिदेस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इस लिए छः ग्राम चाँदी देनी है। <sup>14</sup>जिस की भी उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद हो वह रब को यह रक़म उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर दे। <sup>15</sup>अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्योंकि यही नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का क़फ़ारा दिया जाता है। <sup>16</sup>क़फ़ारे की यह रक़म मुलाक़ात के खैमे की खिदमत के लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का क़फ़ारा दिया गया है।”

### धोने का हौज़

<sup>17</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>18</sup>“पीतल का ढाँचा बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बना कर रखना है। यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाक़ात के खैमे और जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह के दरमियान रख कर पानी से भर देना। <sup>19</sup>हारून और उस के बेटे अपने हाथ-पाँओ धोने के लिए उस का पानी इस्तेमाल करें। <sup>20</sup>मुलाक़ात के खैमे में दाखिल होने से पहले ही वह अपने आप को धोएँ वर्ना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी वह खैमे के बाहर की कुर्बानगाह पर जानवरों की कुर्बानियाँ चढ़ाएँ <sup>21</sup>तो लाज़िम है कि पहले

हाथ-पाँओ धो लें, वर्ना वह मर जाएंगे। यह उसूल हारून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक क्राइम रहे।”

### मसह का तेल

22रब ने मूसा से कहा, 23“मसह के तेल के लिए उम्दा क्रिस्म के मसाले इस्तेमाल करना। 6 किलोग्राम आब-ए-मुर, 3 किलोग्राम खुशबूदार दारचीनी, 3 किलोग्राम खुशबूदार बेद 24और 6 किलोग्राम तेजपात। यह चीजें मक्दिस के बाटों के हिसाब से तोल कर चार लिटर ज़ैतून के तेल में डालना। 25सब कुछ मिला कर खुशबूदार तेल तय्यार करना। वह मुकद्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख्स मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस किया जाए।

26यही तेल ले कर मुलाक्रात का ख़ैमा और उस का सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अहद का सन्दूक, 27मेज़ और उस का सामान, शमादान और उस का सामान, बख़ूर जलाने की कुर्बानगाह, 28जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह और उस का सामान, धोने का हौज़ और उस का ढाँचा। 29यूँ तू यह तमाम चीज़ें मख्सूस-ओ-मुकद्दस करेगा। इस से वह निहायत मुकद्दस हो जाएगी। जो भी उन्हें छुएगा वह मुकद्दस हो जाएगा।

30हारून और उस के बेटों को भी इस तेल से मसह करना ताकि वह मुकद्दस हो कर मेरे लिए इमाम का काम सरअन्जाम दे सकें। 31इसाईलियों को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस है। 32इस लिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना। यह तेल मख्सूस-ओ-मुकद्दस है और तुम्हें भी इसे यूँ ठहराना है। 33जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता है या किसी आम शख्स पर लगाता है उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।”

### बख़ूर की कुर्बानी

34रब ने मूसा से कहा, “बख़ूर इस तरकीब से बनाना है : मस्तकी, ओनिका,<sup>a</sup> बिरीजा और ख़ालिस लुबान बराबर के हिस्सों में 35मिला कर खुशबूदार बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन, ख़ालिस और मुकद्दस हो। 36इस में से कुछ पीस कर पाउडर बनाना और मुलाक्रात के ख़ैमे में अहद के सन्दूक के सामने डालना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुकद्दसतरीन ठहराना। 37इसी तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना। इसे रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस ठहराना है। 38जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस क्रिस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।”

### बज़लीएल और उहलियाब

31 फिर रब ने मूसा से कहा, 2“मैं ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुकद्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। 3मैं ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 4वह नक्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 5वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क्राबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

6साथ ही मैं ने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को मुकर्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इस के इलावा मैं ने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें जो मैं ने तुझे दी हैं। 7यानी मुलाक्रात का ख़ैमा, कप़फ़ारे के ढकने समेत अहद का सन्दूक और ख़ैमे का सारा दूसरा

<sup>a</sup>onycha (unguis odoratus)

सामान, <sup>8</sup>मेज़ और उस का सामान, खालिस सोने का शमादान और उस का सामान, बखूर जलाने की कुर्बानगाह, <sup>9</sup>जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह और उस का सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, <sup>10</sup>वह लिबास जो हारून और उस के बेटे मरिदिस में खिदमत करने के लिए पहनते हैं, <sup>11</sup>मसह का तेल और मरिदिस के लिए खुशबूदार बखूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैं ने तुझे हुक्म दिया है।”

### सबत यानी हफ़्ते का दिन

<sup>12</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>13</sup>“इस्राईलियों को बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्योंकि सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है जिस से जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नस्ल-दर-नस्ल क़ाइम रहेगा। <sup>14</sup>सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए। <sup>15</sup>छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस है।

<sup>16</sup>इस्राईलियों को हाल में और मुस्तक्रबिल में सबत का दिन अबदी अहद समझ कर मनाना है। <sup>17</sup>वह मेरे और इस्राईलियों के दरमियान अबदी निशान होगा। क्योंकि रब ने छः दिन के दौरान आसमान-ओ-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उस ने आराम किया और ताज़ादम हो गया।”

### रब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

<sup>18</sup>यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

### सोने का बछड़ा

**32** पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इन्तिज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा हो कर कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।”

<sup>2</sup>जवाब में हारून ने कहा, “आप की बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतार कर मेरे पास ले आएँ।” <sup>3</sup>सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतार कर हारून के पास ले आए <sup>4</sup>तो उस ने यह ज़ेवरात ले कर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देख कर लोग बोल उठे, “ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिस्र से निकाल लाए।”

<sup>5</sup>जब हारून ने यह देखा तो उस ने बछड़े के सामने कुर्बानगाह बना कर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” <sup>6</sup>अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होने वाली कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठ कर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

### मूसा अपनी क्रौम की शफ़ाअत करता है

<sup>7</sup>उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। <sup>8</sup>वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैं ने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने ने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बना कर उसे सिज्दा किया है। उन्होंने ने उसे कुर्बानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिस्र से निकाल लाए हैं’।” <sup>9</sup>अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैं ने देखा है कि यह क्रौम बड़ी हटधर्म है। <sup>10</sup>अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेल कर उन

को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूंगा। उन की जगह मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बना दूंगा।”

11लेकिन मूसा ने कहा, “ए रब, तू अपनी क़ौम पर अपना गुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू खुद अपनी अज़ीम कुदरत से उसे मिस्र से निकाल लाया है। 12मिस्री क्यों कहें, ‘रब इस्राईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मक्दस से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यँ उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटाए’? अपना गुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क़ौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह। 13याद रख कि तू ने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से अपनी ही क्रसम खा कर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यँ बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिस का वादा मैं ने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे।’”

14मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिस का एलान उस ने कर दिया था बल्कि वह अपनी क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

### बुतपरस्ती के नताइज

15मूसा मुड़ कर पहाड़ से उतरा। उस के हाथों में शरीअत की दोनों तख्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे लिखा गया था। 16अल्लाह ने खुद तख्तियों को बना कर उन पर अपने अत्काम कन्दा किए थे।

17उतरते उतरते यशूअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!” 18मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़ल्हमन्दों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख-पुकार। मुझे गाने वालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

19जब वह ख़ैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उस ने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े गुस्से में आ कर उस ने तख्तियों को ज़मीन पर पटख दिया, और

वह टुकड़े टुकड़े हो कर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20मूसा ने इस्राईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उस ने पीस पीस कर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी पर छिड़क कर इस्राईलियों को पिला दिया।

21उस ने हारून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुम ने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फंसा दिया?” 22हारून ने कहा, “मेरे आक्रा। गुस्से न हों। आप खुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। 23उन्होंने मुझ से कहा, ‘हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।’ 24इस लिए मैं ने उन को बताया, ‘जिस के पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।’ जो कुछ उन्होंने ने मुझे दिया उसे मैं ने आग में फैंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।”

25मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्योंकि हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यँ वह इस्राईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए थे। 26मूसा ख़ैमागाह के दरवाज़े पर खड़े हो कर बोला, “जो भी रब का बन्दा है वह मेरे पास आए।” जवाब में लावी के क़बीले के तमाम लोग उस के पास जमा हो गए। 27फिर मूसा ने उन से कहा, “रब इस्राईल का खुदा फ़रमाता है, ‘हर एक अपनी तलवार ले कर ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलने वाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मुड़ कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ।’”

28लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक्ररीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29यह देख कर मूसा ने लावियों से कहा, “आज अपने आप को मक्त्रिदिस में

रब की खिदमत करने के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के खिलाफ़ लड़ने के लिए तय्यार थे। इस लिए रब तुम को आज बरकत देगा।”

<sup>30</sup>अगले दिन मूसा ने इस्राईलियों से बात की, “तुम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़रारा दे सकूँ।”

<sup>31</sup>चुनाँचे मूसा ने रब के पास वापस जा कर कहा, “हाय, इस क्रौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने ने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। <sup>32</sup>मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिस में तू ने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।” <sup>33</sup>रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उस को अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। <sup>34</sup>अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिस का ज़िक्र मैं ने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुकर्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

<sup>35</sup>फिर रब ने इस्राईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इस लिए कि उन्होंने ने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

**33** रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को ले कर जिन को तू मिस्र से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिस का वादा मैं ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। उन ही से मैं ने क्रसम खा कर कहा था, ‘मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।’ <sup>2</sup>मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेज कर कनआनी, अमोरी, हिती, फ़रिज़्ज़ी, हिक्वी और यबूसी अक्वाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा। <sup>3</sup>उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कसत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो खतरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बर्बाद कर दूँ।”

<sup>4</sup>जब इस्राईलियों ने यह सख़्त अल्फ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने, <sup>5</sup>क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, “इस्राईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लम्हा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो खतरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।”

<sup>6</sup>इन अल्फ़ाज़ पर इस्राईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

### मुलाक़ात का ख़ैमा

<sup>7</sup>उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा ले कर उसे कुछ फ़ासिले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उस ने उस का नाम ‘मुलाक़ात का ख़ैमा’ रखा। जो भी रब की मर्ज़ी दरयाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकल कर वहाँ जाता। <sup>8</sup>जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकल कर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों पर खड़े हो कर मूसा के पीछे देखने लगते। उस के मुलाक़ात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

<sup>9</sup>मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल का सतून उतर कर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। <sup>10</sup>जब इस्राईली मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर सिज्दा करते। <sup>11</sup>रब मूसा से रू-ब-रू बातें करता था, ऐसे शख्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इस के बाद मूसा निकल कर ख़ैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उस का जवान मददगार यशूअ बिन नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता था।

### मूसा रब का जलाल देखता है

<sup>12</sup>मूसा ने रब से कहा, “देख, तू मुझ से कहता आया है कि इस क्रौम को कनआन ले

चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तू ने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तू ने कहा है, 'मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।'<sup>13</sup> अगर मुझे वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का खयाल रख कि यह क्रौम तेरी ही उम्मत है।"

<sup>14</sup>रब ने जवाब दिया, "मैं खुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।"<sup>15</sup>मूसा ने कहा, "अगर तू खुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना।<sup>16</sup>अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क्रौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क्रौमों से अलग और मुत्ताज़ हैं।"

<sup>17</sup>रब ने मूसा से कहा, "मैं तेरी यह दरख्वास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।"

<sup>18</sup>फिर मूसा बोला, "बराह-ए-करम मुझे अपना जलाल दिखा।"<sup>19</sup>रब ने जवाब दिया, "मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।<sup>20</sup>लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िन्दा नहीं रह सकता।"<sup>21</sup>फिर रब ने फ़रमाया, "देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चटान पर खड़ा हो जा।<sup>22</sup>जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चटान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान मट्फूज़ रहे।<sup>23</sup>इस के बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता।"

### पत्थर की नई तख्तियाँ

**34** रब ने मूसा से कहा, "अपने लिए पत्थर की दो तख्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिन्द हों। फिर मैं उन पर वह अल्फ़ाज़ लिखूँगा जो पहली तख्तियों पर लिखे थे जिन्हें तू ने पटख दिया था।<sup>2</sup>सुबह तक तय्यार हो कर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा।<sup>3</sup>तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।"

<sup>4</sup>चुनाँचे मूसा ने दो तख्तियाँ तराश लीं जो पहली की मानिन्द थीं। फिर वह सुबह-सवेरे उठ कर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उस के हाथों में पत्थर की दोनों तख्तियाँ थीं।<sup>5</sup>जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उस के पास खड़े हो कर अपने नाम रब का एलान किया।<sup>6</sup>मूसा के सामने से गुज़रते हुए उस ने पुकारा, "रब, रब, रहीम और मेहरबान खुदा। तहम्मूल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर।<sup>7</sup>वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क्राइम रखता और लोगों का कुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह मुआफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदेन गुनाह करें तो उन की औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नताइज भुगतने पड़ेंगे।"

<sup>8</sup>मूसा ने जल्दी से झुक कर सिज्दा किया।<sup>9</sup>उस ने कहा, "ए रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क्रौम हटधर्म है, तो भी हमारा कुसूर और गुनाह मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।"

<sup>10</sup>तब रब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अहद बांधूँगा। तेरी क्रौम के सामने ही मैं ऐसे मौजिज़े करूँगा जो अब तक दुनिया भर की किसी भी क्रौम में नहीं किए गए। पूरी क्रौम जिस

के दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उस से डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा।<sup>11</sup> जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनआनी, हिती, फ़रिज़्ज़ी, हिन्वी और यबूसी अन्नवाम को तेरे आगे आगे मुल्क से निकाल दूँगा।<sup>12</sup> खबरदार, जो उस मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उन से अहद न बांधना। वरना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फंसाते रहेंगे।<sup>13</sup> उन की कुर्बानिगाहें ढा देना, उन के बुतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उन की देवी यसीरत के खम्बे काट डालना।

<sup>14</sup> किसी और माबूद की परस्तिश न करना, क्योंकि रब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमन्द है।<sup>15</sup> खबरदार, उस मुल्क के बाशिन्दों से अहद न करना, क्योंकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और उन्हें कुर्बानियाँ चढ़ाएँगे। आखिरकार वह तुझे भी अपनी कुर्बानियों में शिर्कत की दावत देंगे।<sup>16</sup> खतरा है कि तू उन की बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बांधे। फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगी तो उन के सबब से तेरे बेटे भी उन की पैरवी करने लगेंगे।

<sup>17</sup> अपने लिए देवता न ढालना।

### सालाना ईदें

<sup>18</sup> बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने<sup>a</sup> में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैं ने हुक्म दिया है। क्योंकि इस महीने में तू मिस्र से निकला।

<sup>19</sup> हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला।<sup>20</sup> लेकिन पहलौठे गधे के इवज़ भेड़ देना। अगर यह मुमकिन न हो तो उस की गर्दन तोड़ डालना। अपने पहलौठे बेटों के लिए भी इवज़ी देना। कोई मेरे पास खाली हाथ न आए।

<sup>a</sup>मार्च ता अप्रैल।

<sup>21</sup> छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। ख्वाह हल चलाना हो या फ़सल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

<sup>22</sup> गन्दुम की फ़सल की कटाई की ईद<sup>b</sup> उस वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा। अंगूर और फल जमा करने की ईद इस्राईली साल के इख़तिताम पर मनानी है।<sup>23</sup> लाज़िम है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मर्तबा रब कादिर-ए-मुतलक़ के सामने जो इस्राईल का ख़ुदा है हाज़िर हों।<sup>24</sup> मैं तेरे आगे आगे क़ौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी सरहदें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन मर्तबा रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

<sup>25</sup> जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुर्बानी के तौर पर पेश करता है तो उस के ख़ून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिस में खमीर हो। ईद-ए-फ़सह की कुर्बानी से अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रहे।

<sup>26</sup> अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब अपने ख़ुदा के घर में ले आना।

बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।”

### मूसा के चेहरे पर चमक

<sup>27</sup> रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले, क्योंकि यह उस अहद की बुन्याद हैं जो मैं ने तेरे और इस्राईल के साथ बांधा है।”

<sup>28</sup> मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उस ने कुछ खाया न पिया। उस ने पत्थर की तख़्तियों पर अहद के दस अहकाम लिखे।

<sup>29</sup> इस के बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उस के चेहरे की ज़िन्द चमक रही थी, क्योंकि उस ने रब से बात की थी। लेकिन उसे

<sup>b</sup>सितम्बर ता अक्तूबर।

खुद इस का इल्म नहीं था।<sup>30</sup> जब हारून और तमाम इस्राईलियों ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह उस के पास आने से डर गए।<sup>31</sup> लेकिन उस ने उन्हें बुलाया तो हारून और जमाअत के तमाम सरदार उस के पास आए, और उस ने उन से बात की।<sup>32</sup> बाद में बाक़ी इस्राईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोह-ए-सीना पर दिए थे।

<sup>33</sup> यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चेहरे पर निक्काब डाल लिया।<sup>34</sup> जब भी वह रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता तो निक्काब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार लेता। और जब वह निकल कर इस्राईलियों को रब से मिले हुए अहकाम सुनाता<sup>35</sup> तो वह देखते कि उस के चेहरे की जिल्द चमक रही है। इस के बाद मूसा दुबारा निक्काब को अपने चेहरे पर डाल लेता, और वह उस वक़्त तक चेहरे पर रहता जब तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में न जाता था।

### सबत का दिन

**35** मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत को इकट्ठा करके कहा, “रब ने तुम को यह हुक्म दिए हैं :<sup>2</sup> छः दिन काम-काज किया जाए, लेकिन सातवाँ दिन मख्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। वह रब के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।<sup>3</sup> हफ़्ते के दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

### मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

<sup>4</sup> मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत से कहा, “रब ने हिदायत दी है<sup>5</sup> कि जो कुछ तुम्हारे पास है उस में से हदिए ला कर रब को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करो। जो भी दिली खुशी से देना चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल;

6नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 7मेंढों की सुख़्ख़ रंगी हुई खालें, तखस की खालें, कीकर की लकड़ी, 8शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले, 9अक़ीक़-ए-अहज़र और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे।

<sup>10</sup> तुम में से जितने माहिर कारीगर हैं वह आ कर वह कुछ बनाएँ जो रब ने फ़रमाया 11यानी ख़ैमा और वह ग़िलाफ़ जो उस के ऊपर लगाए जाएंगे, हुकें, दीवारों के तख्ते, शहतीर, सतून और पाए, 12अहद का सन्दूक, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस के कफ़फ़ारे का ढकना, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का पर्दा, 13मख्सूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस का सारा सामान और रोटियाँ, 14शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 15बखूर जलाने की कुर्बानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 16जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह, उस का पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखा जाता है, 17चारदीवारी के पर्दे उन के खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा, 18ख़ैमे और चारदीवारी की मेखें और रस्से, 19और वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उस के बेटे मक्निदस में खिदमत करने के लिए पहनते हैं।”

<sup>20</sup> यह सुन कर इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा के पास से चली गई।<sup>21</sup> और जो जो दिली खुशी से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उस के सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया ले कर वापस आया।<sup>22</sup> रब के हदिए के लिए मर्द और खवातीन दिली खुशी से अपने सोने के ज़ेवरात मसलन जड़ाओ



पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए।<sup>23</sup>जिस जिस के पास दरकार चीज़ों में से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, क्रिमिज़ी और अर्गवानी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें और तखस की खालें।<sup>24</sup>चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिए के तौर पर लाई गई।<sup>25</sup>और जितनी औरतें कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी नीले, क्रिमिज़ी और अर्गवानी रंग का धागा और बारीक कतान।<sup>26</sup>इसी तरह जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थी और दिली खुशी से मक्वदिस के लिए काम करना चाहती थी वह यह कात कर ले आईं।<sup>27</sup>सरदार अक्रीक-ए-अह्वार और दीगर जवाहिर ले आए जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे।<sup>28</sup>वह शमादान, मसह के तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले और ज़ैतून का तेल भी ले आए।

<sup>29</sup>यूँ इस्त्राईल के तमाम मर्द और खवातीन जो दिली खुशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिए ले आए जो रब ने मूसा की मारिफत करने को कहा था।

### बज़लीएल और उहलियाब

<sup>30</sup>फिर मूसा ने इस्त्राईलियों से कहा, "रब ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है।<sup>31</sup>उस ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है।<sup>32</sup>वह नक्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है।<sup>33</sup>वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।<sup>34</sup>साथ ही रब ने उसे और दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को दूसरों को सिखाने की क़ाबिलियत भी दी है।<sup>35</sup>उस ने

उन्हें वह महारत और हिकमत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक्शे भी बना सकते हैं।

**36** लाज़िम है कि बज़लीएल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिन को रब ने मक्वदिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ बनाएँ जो रब ने दी हैं।"

### इस्त्राईली दिली खुशी से देते हैं

<sup>2</sup>मूसा ने बज़लीएल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उस ने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक्वदिस की तामीर के लिए हिकमत और महारत दी थी और जो खुशी से आना और यह काम करना चाहता था।<sup>3</sup>उन्हें मूसा से तमाम हदिए मिले जो इस्त्राईली मक्वदिस की तामीर के लिए लाए थे।

इस के बाद भी लोग रोज़-ब-रोज़ सुबह के वक़्त हदिए लाते रहे।<sup>4</sup>आखिरकार तमाम कारीगर जो मक्वदिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़ कर मूसा के पास आए।<sup>5</sup>उन्होंने कहा, "लोग हद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है उस के लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।"<sup>6</sup>तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक्वदिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यूँ उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, क्योंकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़्यादा हो गया था।

### मुलाक़ात का ख़ैमा

<sup>8</sup>जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे को बनाया। उन्होंने ने बारीक कतान और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी धागे से दस

पर्दे बनाए। पर्दों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। 9हर पर्दे की लम्बाई 42 फुट और चौड़ाई 6 फुट थी। 10पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन गए। 11दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्होंने नीले धागे के हल्के बनाए। यह हल्के हर टुकड़े के 42 फुट वाले एक किनारे पर लगाए गए, 12एक टुकड़े के हाशिए पर 50 हल्के और दूसरे पर भी उतने ही हल्के। इन दो हाशियों के हल्के एक दूसरे के आमने-सामने थे। 13फिर बज़लीएल ने सोने की 50 हुकें बना कर उन से आमने-सामने के हल्कों को एक दूसरे के साथ मिलाया। यूँ दोनों टुकड़ों के जोड़ने से खैमा बन गया।

14उस ने बकरी के बालों से भी 11 पर्दे बनाए जिन्हें कपड़े वाले खैमे के ऊपर रखना था। 15हर पर्दे की लम्बाई 45 फुट और चौड़ाई 6 फुट थी। 16पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस तरह बाक़ी छः भी। 17इन दोनों टुकड़ों को मिलाने के लिए उस ने हर टुकड़े के 45 फुट वाले एक किनारे पर पचास पचास हल्के लगाए। 18फिर पीतल की 50 हुकें बना कर उस ने दोनों हिस्से मिलाए।

19एक दूसरे के ऊपर के दोनों खैमों की हिफ़ाज़त के लिए बज़लीएल ने दो और ग़िलाफ़ बनाए। बकरी के बालों के खैमे पर रखने के लिए उस ने मेंढों की सुख़ रंगी हुई खालें जोड़ दीं और उस के ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें मिलाईं।

20इस के बाद उस ने कीकर की लकड़ी के तख़ते बनाए जो खैमे की दीवारों का काम देते थे। 21हर तख़ते की ऊँचाई 15 फुट थी और चौड़ाई सवा दो फुट। 22हर तख़ते के नीचे दो दो चूलें थीं। इन चूलों से हर तख़ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ा जाता था ताकि तख़ता

खड़ा रहे। 23खैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़ते बनाए गए 24और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर तख़ते खड़े किए जाते थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी। 25इसी तरह खैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़ते बनाए गए 26और साथ ही चाँदी के 40 पाए जो तख़तों को खड़ा करने के लिए थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे। 27खैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख़ते बनाए गए। 28इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो तख़ते बनाए गए। 29इन दो तख़तों में नीचे से ले कर ऊपर तक कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। 30यूँ पिछले यानी मगरिबी तख़तों की पूरी तादाद 8 थी और इन के लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़ते के नीचे दो पाए।

31-32फिर बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़तों पर यूँ लगाने के लिए थे कि उन से तख़ते एक दूसरे के साथ मिलाए जाएँ। 33दरमियानी शहतीर यूँ बनाया गया कि वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34उस ने तमाम तख़तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख़तों के साथ लगाने के लिए उस ने सोने के कड़े बनाए जो तख़तों में लगाने थे।

### मुक़द्दस खैमे के पर्दे

35अब बज़लीएल ने एक और पर्दा बनाया। उस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। 36फिर उस ने पर्दे को

लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।

<sup>37</sup>बज़लीएल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। <sup>38</sup>इस पर्दे को लटकाने के लिए उस ने सोने की हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उन के पाए पीतल के थे।

### अहद का सन्दूक

**37** बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फुट थी। <sup>2</sup>उस ने पूरे सन्दूक पर अन्दर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उस ने सोने की झालर लगाई। <sup>3</sup>सन्दूक को उठाने के लिए उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें सन्दूक के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे। <sup>4</sup>फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक को उठाने के लिए तप्यार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। <sup>5</sup>उस ने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उन से सन्दूक को उठाया जा सके।

<sup>6</sup>बज़लीएल ने सन्दूक का ढकना ख़ालिस सोने का बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट थी। <sup>7-8</sup>फिर उस ने दो करूबी फ़रिशते सोने से घड़ कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिशते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए। <sup>9</sup>फ़रिशतों के पर यूँ ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे।

### मख्सूस रोटियों की मेज़

<sup>10</sup>इस के बाद बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लम्बाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट थी। <sup>11</sup>उस ने उस पर ख़ालिस सोना चढ़ा कर उस के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। <sup>12</sup>मेज़ की ऊपर की सतह पर उस ने चौखटा भी लगाया जिस की ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। <sup>13</sup>अब उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। <sup>14</sup>यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उन में वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिन से मेज़ को उठाना था। <sup>15</sup>बज़लीएल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाई और उन पर सोना चढ़ाया।

<sup>16</sup>आखिरकार उस ने ख़ालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

### शमादान

<sup>17</sup>फिर बज़लीएल ने ख़ालिस सोने का शमादान बनाया। उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाए गए। उस की प्यालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। <sup>18</sup>डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलती थीं। <sup>19</sup>हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की थीं। <sup>20</sup>शमादान की डंडी पर भी इस क्रिस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। <sup>21</sup>इन में से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी थीं। वह यूँ लगी थीं कि हर प्याली से दो शाखें निकलती थीं। <sup>22</sup>शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़ कर बनाया गया।

<sup>23</sup>बज़लीएल ने शमादान के लिए ख़ालिस सोने के सात चरागा बनाए। उस ने बत्ती कतरने की कैंचियाँ और जलते कोएले के लिए छोटे

बर्तन भी ख़ालिस सोने से बनाए। <sup>24</sup>शमादान और उस के तमाम सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

### बख़ूर जलाने की कुर्बानगाह

<sup>25</sup>बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की कुर्बानगाह बनाई जो बख़ूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फ़ुट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची थी। उस के चार कोनों में से सींग निकलते थे जो कुर्बानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। <sup>26</sup>उस की ऊपर की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द बज़लीएल ने सोने की झालर बनाई। <sup>27</sup>सोने के दो कड़े बना कर उस ने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के मुकाबिल पहलूओं पर लगाया। इन कड़ों में कुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं। <sup>28</sup>यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर भी सोना चढ़ाया गया।

<sup>29</sup>बज़लीएल ने मसह करने का मुकद्दस तेल और खुशबूदार ख़ालिस बख़ूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का काम था।

### जानवरों को पेश करने की कुर्बानगाह

**38** बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की एक और कुर्बानगाह बनाई जो भस्म होने वाली कुर्बानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट, उस की लम्बाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फ़ुट थी। <sup>2</sup>उस के ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे। सींग और कुर्बानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस पर पीतल चढ़ाया गया। <sup>3</sup>उस का तमाम साज़-ओ-सामान और बर्तन भी पीतल के थे यानी राख को उठा कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोएले के लिए बर्तन और छिड़काओ के कटोरे।

<sup>4</sup>कुर्बानगाह को उठाने के लिए उस ने पीतल का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था

और यूँ बनाया गया कि जब कुर्बानगाह उस में रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे जो कुर्बानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी। <sup>5</sup>उस ने कुर्बानगाह को उठाने के लिए चार कड़े बना कर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया। <sup>6</sup>फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ बना कर उन पर पीतल चढ़ाया <sup>7</sup>और कुर्बानगाह के दोनों तरफ़ लगे इन कड़ों में डाल दीं। यूँ उसे उठाया जा सकता था। कुर्बानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

<sup>8</sup>बज़लीएल ने धोने का हौज़ और उस का ढाँचा भी पीतल से बनाया। उस का पीतल उन औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खिदमत करती थीं।

### ख़ैमे का सहन

<sup>9</sup>फिर बज़लीएल ने सहन बनाया। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई। चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट थी। <sup>10</sup>कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खम्बे और उन के पाए बनाए गए। <sup>11</sup>चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी तरह बनाई गई। <sup>12</sup>ख़ैमे के पीछे मगरिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट थी। कपड़े के इलावा उस के लिए 10 खम्बे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। <sup>13</sup>सामने, मशरिफ़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट थी। <sup>14-15</sup>कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढ़े 22 फ़ुट चौड़ा था और उस के बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन खम्बों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे। <sup>16</sup>चारदीवारी के तमाम पर्दों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। <sup>17</sup>खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और पर्दे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खम्बों के साथ लगे थे। खम्बों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी।

सहन के तमाम खम्बों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

<sup>18</sup>चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे पर्दों की तरह साढ़े सात फुट ऊँचा था। <sup>19</sup>उस के चार खम्बे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खम्बों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। <sup>20</sup>खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें पीतल की थीं।

### खैमे का तामीरी सामान

<sup>21</sup>ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो मक्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमाम-ए-आज़म हारून के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तय्यार की। <sup>22</sup>(यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर ने वह सब कुछ बनाया जो रब ने मूसा को बताया था। <sup>23</sup>उस के साथ दान के क़बीले का उहलियाब बिन अखीसमक था जो कारीगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

<sup>24</sup>उस सोने का वज़न जो लोगों के हृदियों से जमा हुआ और मक्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तक्ररीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक्दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

<sup>25</sup>तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब से वसूल हुई, उस का वज़न तक्ररीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक्दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)। <sup>26</sup>जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इस से ज़ा़इद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी। <sup>27</sup>चूँकि

दीवारों के तख़्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सतूनों के पाए चाँदी के थे इस लिए तक्ररीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई। <sup>28</sup>तक्ररीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इस से चारदीवारी के खम्बों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गई, और यह खम्बों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गई।

<sup>29</sup>जो पीतल हृदियों से जमा हुआ उस का वज़न तक्ररीबन 2,425 किलोग्राम था। <sup>30</sup>खैमे के दरवाज़े के पाए, जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह, उस का जंगला, बर्तन और साज़-ओ-सामान, <sup>31</sup>चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाज़े के पाए और खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें इसी से बनाई गईं।

### हारून का बालापोश

**39** बज़लीएल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग का धागा ले कर मक्दिस में खिदमत के लिए लिबास बनाए। उन्होंने ने हारून के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ बनाए जो रब ने मूसा को दी थीं। <sup>2</sup>उन्होंने ने इमाम-ए-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया। <sup>3</sup>उन्होंने ने सोने को कूट कूट कर वर्क़ बनाया और फिर उसे काट कर धागे बनाए। जब नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ। <sup>4</sup>उन्होंने ने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाई और उन्हें बालापोश के कंधों पर रख कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाइं। <sup>5</sup>पटका भी बनाया गया जिस से बालापोश को बांधा जाता था। इस के लिए भी सोना, नीले, अर्गवानी और किर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

६फिर उन्होंने ने अक्रीक-ए-अह्मर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के खानों में जड़ कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम कन्दा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कन्दा किए गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। ७उन्होंने ने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यूँ लगाया कि वह हारून के कंधों पर रब को इस्राईलियों की याद दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायात के ऐन मुताबिक्र हुआ।

### सीने का कीसा

८इस के बाद उन्होंने ने सीने का कीसा बनाया। यह माहिर कारीगर का काम था और उन ही चीजों से बना जिन से हारून का बालापोश भी बना था यानी सोने और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से। ९जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लम्बाई और चौड़ाई नौ नौ इंच थी। १०उन्होंने ने उस पर चार क्रतारों में जवाहिर जड़े। हर क्रतार में तीन तीन जौहर थे। पहली क्रतार में लाल, ज़बर्जद और जुमुरद। ११दूसरी में फ़ीरोज़ा, संग-ए-लाजवर्द और हज़्र-उल-क़मर। १२तीसरी में ज़रक्रोन, अक्रीक और याकूत-ए-अर्गवानी। १३चौथी में पुरखराज, अक्रीक-ए-अह्मर और यशब। हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ था। १४यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की नुमाइन्दगी करते थे। एक एक जौहर पर एक क़बीले का नाम कन्दा किया गया, और यह नाम उस तरह कन्दा किए गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।

१५अब उन्होंने ने सीने के कीसे के लिए खालिस सोने की दो ज़न्जीरें बनाई जो डोरी की तरह गुंधी हुई थीं। १६साथ साथ उन्होंने ने सोने के दो खाने और दो कड़े भी बनाए। उन्होंने ने यह कड़े कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाए। १७फिर दोनों ज़न्जीरें उन दो कड़ों के साथ लगाई गईं। १८उन के दूसरे सिरे बालापोश

की कंधों वाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ़ लगाए गए। १९उन्होंने ने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह अन्दर, बालापोश की तरफ़ लगे थे। २०अब उन्होंने ने दो और कड़े बना कर बालापोश की कंधों वाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ़ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। २१उन्होंने ने सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बांधे। यूँ कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक्र हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

### हारून का चोगा

२२फिर कारीगरों ने चोगा बुना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया गया। चोगे को बालापोश से पहले पहनना था। २३उस के गरेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया गया ताकि वह न फटे। २४उन्होंने ने नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे से अनार बना कर उन्हें चोगे के दामन में लगा दिया। २५उन के दरमियान खालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं। २६दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं। लाज़िम था कि हारून खिदमत करने के लिए हमेशा यह चोगा पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

### खिदमत के लिए दीगर लिबास

२७कारीगरों ने हारून और उस के बेटों के लिए बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुनने वाले का काम था। २८साथ साथ उन्होंने ने बारीक कतान की पगड़ियाँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए। २९कमरबन्द को बारीक कतान और नीले, अर्गवानी और क्रिमिज़ी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई करने वालों ने इस पर काम किया। सब कुछ

उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

<sup>30</sup>उन्होंने ने मुकद्दस ताज यानी खालिस सोने की तख्ती बनाई और उस पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा किए, 'रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस।' <sup>31</sup>फिर उन्होंने ने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थीं।

### सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

<sup>32</sup>आखिरकार मक्दिदस का काम मुकम्मल हुआ। इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया था जो रब ने मूसा को दी थीं। <sup>33</sup>वह मक्दिदस की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुकद्दस खैमा और उस का सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख्ते, शहतीर, सतून और पाए, <sup>34</sup>खैमे पर मेंदों की सुर्ख रंगी हुई खालों का गिलाफ़ और तखस की खालों का गिलाफ़, मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का पर्दा, <sup>35</sup>अहद का सन्दूक जिस में शरीअत की तख्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ और उस का ढकना, <sup>36</sup>मख्सूस रोटियों की मेज़, उस का सारा सामान और रोटियाँ, <sup>37</sup>खालिस सोने का शमादान और उस पर रखने के चरागा उस के सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल, <sup>38</sup>बखूर जलाने की सोने की कुर्बानगाह, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्दस खैमे के दरवाज़े का पर्दा, <sup>39</sup>जानवरों को चढ़ाने की पीतल की कुर्बानगाह, उस का पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक्री सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था, <sup>40</sup>चारदीवारी के पर्दे उन के खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा, चारदीवारी के रस्से और मेखें, मुलाक्रात के खैमे में खिदमत करने का बाक्री सारा सामान <sup>41</sup>और मक्दिदस में खिदमत

करने के वह मुकद्दस लिबास जो हारून और उस के बेटों को पहनने थे।

<sup>42</sup>सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थीं। <sup>43</sup>मूसा ने तमाम चीज़ों का मुआइना किया और मालूम किया कि उन्होंने ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक बनाया था। तब उस ने उन्हें बरकत दी।

### मक्दिदस को खड़ा करने की हिदायात

**40** फिर रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>"पहले महीने की पहली तारीख को मुलाक्रात का खैमा खड़ा करना। <sup>3</sup>अहद का सन्दूक जिस में शरीअत की तख्तियाँ हैं मुकद्दसतरीन कमरे में रख कर उस के दरवाज़े का पर्दा लगाना। <sup>4</sup>इस के बाद मख्सूस रोटियों की मेज़ मुकद्दस कमरे में ला कर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस पर उस के चरागा रखना। <sup>5</sup>बखूर की सोने की कुर्बानगाह उस पर्दे के सामने रखना जिस के पीछे अहद का सन्दूक है। फिर खैमे में दाखिल होने के दरवाज़े पर पर्दा लगाना। <sup>6</sup>जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह सहन में खैमे के दरवाज़े के सामने रखी जाए। <sup>7</sup>खैमे और इस कुर्बानगाह के दरमियान धोने का हौज़ रख कर उस में पानी डालना। <sup>8</sup>सहन की चारदीवारी खड़ी करके उस के दरवाज़े का पर्दा लगाना।

<sup>9</sup>फिर मसह का तेल ले कर उसे खैमे और उस के सारे सामान पर छिड़क देना। यूँ तू उसे मेरे लिए मख्सूस करेगा और वह मुकद्दस होगा। <sup>10</sup>फिर जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह और उस के सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यूँ तू उसे मेरे लिए मख्सूस करेगा और वह निहायत मुकद्दस होगा। <sup>11</sup>इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मख्सूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

<sup>12</sup>हारून और उस के बेटों को मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर ला कर गुसल कराना।

13फिर हारून को मुकद्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करना ताकि इमाम के तौर पर मेरी खिदमत करे। 14उस के बेटों को ला कर उन्हें ज़ेरजामे पहना देना। 15उन्हें उन के वालिद की तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर मेरी खिदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो वह और बाद में उन की औलाद हमेशा तक मक्दिसे में इस खिदमत के लिए मख्सूस होंगे।”

### मक्दिसे को खड़ा किया जाता है

16मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ किया। 17पहले महीने की पहली तारीख को मुकद्दस खैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिस्र से निकले पूरा एक साल हो गया था। 18मूसा ने दीवार के तख्तों को उन के पाइयों पर खड़ा करके उन के साथ शहतीर लगाए। इसी तरह उस ने सतूनों को भी खड़ा किया। 19उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ दीवारों पर कपड़े का खैमा लगाया और उस पर दूसरे गिलाफ़ रखे।

20उस ने शरीअत की दोनों तख्तियाँ ले कर अह्द के सन्दूक में रख दीं, उठाने के लिए लकड़ियाँ सन्दूक के कड़ों में डाल दीं और कफ़रारे का ढकना उस पर लगा दिया। 21फिर उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ सन्दूक को मुकद्दसतरीन कमरे में रख कर उस के दरवाज़े का पर्दा लगा दिया। यूँ अह्द के सन्दूक पर पर्दा पड़ा रहा। 22मूसा ने मख्सूस रोटियों की मेज़ मुकद्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस पर्दे के सामने रख दी जिस के पीछे अह्द का सन्दूक था। 23उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ रब के लिए मख्सूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24उसी कमरे के जुनूबी हिस्से में उस ने शमादान को मेज़ के मुकाबिल रख दिया। 25उस पर उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ रब के सामने चरागा रख दिए। 26उस ने बखूर की सोने की

कुर्बानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस पर्दे के बिलकुल सामने जिस के पीछे अह्द का सन्दूक था। 27उस ने उस पर रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ खुशबूदार बखूर जलाया।

28फिर उस ने खैमे का दरवाज़ा लगा दिया। 29बाहर जा कर उस ने जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह खैमे के दरवाज़े के सामने रख दी। उस पर उस ने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ भस्म होने वाली कुर्बानियाँ और गल्ला की नज़रें चढ़ाईं।

30उस ने धोने के हौज़ को खैमे और उस कुर्बानगाह के दरमियान रख कर उस में पानी डाल दिया। 31मूसा, हारून और उस के बेटे उसे अपने हाथ-पाँओ धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32जब भी वह मुलाकात के खैमे में दाखिल होते या जानवरों को चढ़ाने की कुर्बानगाह के पास आते तो रब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ पहले गुसल करते।

33आखिर में मूसा ने खैमा, कुर्बानगाह और चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का पर्दा लगा दिया। यूँ मूसा ने मक्दिसे की तामीर मुकम्मल की।

### खैमे में रब का जलाल

34फिर मुलाकात के खैमे पर बादल छा गया और मक्दिसे रब के जलाल से भर गया। 35मूसा खैमे में दाखिल न हो सका, क्योंकि बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक्दिसे रब के जलाल से भर गया था।

36तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक्दिसे के ऊपर से बादल उठता तो इस्राईली सफ़र के लिए तय्यार हो जाते। 37अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता। 38दिन के वक़्त बादल मक्दिसे के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह तमाम इस्राईलियों को आग की सूरत में नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।



---

## अहबार

---

### भस्म होने वाली कुर्बानी

**1** रब ने मुलाक्रात के खैमे में से मूसा को बुला कर कहा <sup>2</sup>कि इस्राईलियों को इत्तिला दे,

“अगर तुम में से कोई रब को कुर्बानी पेश करना चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से जानवर चुन ले।

<sup>3</sup>अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होने वाली कुर्बानी चढ़ाना चाहे तो वह बेऐब बैल चुन कर उसे मुलाक्रात के खैमे के दरवाजे पर पेश करे ताकि रब उसे क़बूल करे। <sup>4</sup>कुर्बानी पेश करने वाला अपना हाथ जानवर के सर पर रखे तो यह कुर्बानी मक़बूल हो कर उस का क़फ़ारा देगी। <sup>5</sup>कुर्बानी पेश करने वाला बैल को वहाँ रब के सामने ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का खून रब को पेश करके उसे दरवाजे पर की कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। <sup>6</sup>इस के बाद कुर्बानी पेश करने वाला खाल उतार कर जानवर के टुकड़े टुकड़े करे। <sup>7</sup>इमाम कुर्बानगाह पर आग लगा कर उस पर तरतीब से लकड़ियाँ चुनें। <sup>8</sup>उस पर वह जानवर के टुकड़े सर और चर्बी समेत रखें। <sup>9</sup>लाज़िम है कि कुर्बानी पेश करने वाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को कुर्बानगाह पर जला दे। इस जलने वाली कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है।

<sup>10</sup>अगर भस्म होने वाली कुर्बानी भेड़-बकरियों में से चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। <sup>11</sup>पेश करने वाला उसे रब के सामने कुर्बानगाह की शिमाली सिम्त में ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। <sup>12</sup>इस के बाद पेश करने वाला जानवर के टुकड़े टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चर्बी समेत कुर्बानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर तरतीब से रखे। <sup>13</sup>लाज़िम है कि कुर्बानी पेश करने वाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को रब को पेश करके कुर्बानगाह पर जला दे। इस जलने वाली कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है।

<sup>14</sup>अगर भस्म होने वाली कुर्बानी परिन्दा हो तो वह कुम्भी या जवान कबूतर हो। <sup>15</sup>इमाम उसे कुर्बानगाह के पास ले आए और उस का सर मरोड़ कर कुर्बानगाह पर जला दे। वह उस का खून यूँ निकलने दे कि वह कुर्बानगाह की एक तरफ़ से नीचे टपके। <sup>16</sup>वह उस का पोटा और जो उस में है दूर करके कुर्बानगाह की मशरिक्की सिम्त में फैंक दे, वहाँ जहाँ राख फैंकी जाती है। <sup>17</sup>उसे पेश करते वक़्त इमाम उस के पर पकड़ कर परिन्दे को फाड़ डाले, लेकिन यूँ कि वह बिलकुल टुकड़े टुकड़े न हो जाए। फिर इमाम उसे कुर्बानगाह पर जलती

हुई लकड़ियों पर जला दे। इस जलने वाली कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है।

### गल्ला की नज़र

**2** अगर कोई रब को गल्ला की नज़र पेश करना चाहे तो वह इस के लिए बेहतरीन मैदा इस्तेमाल करे। उस पर वह जैतून का तेल उंडेले और लुबान रख कर उसे हारून के बेटों के पास ले आए जो इमाम हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुट्ठी भर मैदा और तमाम लुबान ले कर कुर्बानगाह पर जला दे। यह यादगार का हिस्सा है, और उस की खुशबू रब को पसन्द है।<sup>3</sup> बाक़ी मैदा और तेल हारून और उस के बेटों का हिस्सा है। वह रब की जलने वाली कुर्बानियों में से एक निहायत मुकद्दस हिस्सा है।

<sup>4</sup> अगर यह कुर्बानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो तो उस में खमीर न हो। इस की दो क्रिस्में हो सकती हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई हों और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।

<sup>5</sup> अगर यह कुर्बानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उस में खमीर न हो।<sup>6</sup> चूँकि वह गल्ला की नज़र है इस लिए रोटी को टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।

<sup>7</sup> अगर यह कुर्बानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

<sup>8</sup> अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई गल्ला की नज़र रब के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश करना। वही उसे कुर्बानगाह के पास ले आए।<sup>9</sup> फिर इमाम यादगार का हिस्सा अलग करके उसे कुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है।<sup>10</sup> कुर्बानी का बाक़ी हिस्सा हारून और उस के बेटों के लिए है। वह रब की जलने वाली कुर्बानियों में से एक निहायत मुकद्दस हिस्सा है।

<sup>11</sup> गल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश करते हो उन में खमीर न हो, क्योंकि लाज़िम

है कि तुम रब को जलने वाली कुर्बानी पेश करते वक़्त न खमीर, न शहद जलाओ।<sup>12</sup> यह चीज़ें फ़सल के पहले फलों के साथ रब को पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें कुर्बानगाह पर न जलाया जाए, क्योंकि वहाँ रब को उन की खुशबू पसन्द नहीं है।<sup>13</sup> गल्ला की हर नज़र में नमक हो, क्योंकि नमक उस अहद की नुमाइन्दगी करता है जो तेरे खुदा ने तेरे साथ बाँधा है। तुझे हर कुर्बानी में नमक डालना है।

<sup>14</sup> अगर तू गल्ला की नज़र के लिए फ़सल के पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कच्ची बालियाँ भून कर पेश करना।<sup>15</sup> चूँकि वह गल्ला की नज़र है इस लिए उस पर तेल उंडेलना और लुबान रखना।<sup>16</sup> कुचले हुए दानों और तेल का जो हिस्सा रब का है यानी यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान के साथ जला दे। यह नज़र रब के लिए जलने वाली कुर्बानी है।

### सलामती की कुर्बानी

**3** अगर कोई रब को सलामती की कुर्बानी पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना चाहे तो वह जानवर बेऐब हो।<sup>1</sup> वह अपना हाथ जानवर के सर पर रख कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें।<sup>2-4</sup> पेश करने वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलने वाली कुर्बानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है।<sup>5</sup> फिर हारून के बेटे यह सब कुछ भस्म होने वाली कुर्बानी के साथ कुर्बानगाह की लकड़ियों पर जला दें। यह जलने वाली कुर्बानी है, और इस की खुशबू रब को पसन्द है।

<sup>6</sup> अगर सलामती की कुर्बानी के लिए भेड़-बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब नर या मादा हो।

7अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह उसे रब के सामने ले आए। 8वह अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे मुलाक्रात के खैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे उस का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 9-10पेश करने वाला चर्बी, पूरी दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलने वाली कुर्बानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 11इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके कुर्बानगाह पर जला दे। यह खुराक जलने वाली कुर्बानी है।

12अगर सलामती की कुर्बानी बकरी की हो 13तो पेश करने वाला उस पर हाथ रख कर उसे मुलाक्रात के खैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे जानवर का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 14-15पेश करने वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलने वाली कुर्बानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 16इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके कुर्बानगाह पर जला दे। यह खुराक जलने वाली कुर्बानी है, और इस की खुशबू रब को पसन्द है।

सारी चर्बी रब की है। 17तुम्हारे लिए खून या चर्बी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम रहते हो।”

### गुनाह की कुर्बानी

**4** रब ने मूसा से कहा, 2“इसाईलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

### इमाम के लिए गुनाह की कुर्बानी

3अगर इमाम-ए-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम कुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल ले कर गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश करे। 4वह जवान बैल को मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे रब के सामने ज़बह करे। 5फिर वह जानवर के खून में से कुछ ले कर खैमे में जाए। 6वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के। 7फिर वह खैमे के अन्दर की उस कुर्बानगाह के चारों सींगों पर खून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी खून वह बाहर खैमे के दरवाज़े पर की उस कुर्बानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8जवान बैल की सारी चर्बी, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, 9गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 10यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की कुर्बानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस कुर्बानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11लेकिन वह उस की खाल, उस का सारा गोश्त, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उन का गोबर 12खैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस पाक जगह पर जहाँ कुर्बानियों की राख फेंकी जाती है लकड़ियों पर रख कर जला देनी हैं।

### क़ौम के लिए गुनाह की कुर्बानी

13अगर इसाईल की पूरी जमाअत ने ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ किया है और जमाअत को मालूम नहीं था तो भी वह कुसूरवार है। 14जब लोगों को पता लगे कि हम ने गुनाह किया है तो जमाअत मुलाक्रात के खैमे के पास एक

जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश करे।<sup>15</sup> जमाअत के बुजुर्ग रब के सामने अपने हाथ उस के सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए।<sup>16</sup> फिर इमाम-ए-आज़म जानवर के खून में से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए।<sup>17</sup> वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के पर्दे पर छिड़के।<sup>18</sup> फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस कुर्बानिगाह के चारों सींगों पर खून लगाए जिस पर बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी खून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े की उस कुर्बानिगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं।<sup>19</sup> इस के बाद वह उस की तमाम चर्बी निकाल कर कुर्बानिगाह पर जला दे।<sup>20</sup> उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है। यूँ वह लोगों का कफ़़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी।<sup>21</sup> आख़िर में वह बैल को ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमाअत का गुनाह दूर करने की कुर्बानी है।

### क्रौम के राहनुमा के लिए गुनाह की कुर्बानी

<sup>22</sup> अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ कुसूरवार ठहरे तो <sup>23</sup> जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह हुआ है तो वह कुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरा ले आए।<sup>24</sup> वह अपना हाथ बकरे के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली कुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की कुर्बानी है।<sup>25</sup> इमाम अपनी उंगली खून में डाल कर उसे उस कुर्बानिगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी खून वह कुर्बानिगाह के पाए पर उंडेले।<sup>26</sup> फिर वह उस की सारी चर्बी कुर्बानिगाह पर उस तरह

जला दे जिस तरह वह सलामती की कुर्बानियों की चर्बी जला देता है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

### आम लोगों के लिए गुनाह की कुर्बानी

<sup>27</sup> अगर कोई आम शख्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ कुसूरवार ठहरे तो <sup>28</sup> जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह हुआ है तो वह कुर्बानी के लिए एक बेऐब बकरी ले आए।<sup>29</sup> वह अपना हाथ बकरी के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली कुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं।<sup>30</sup> इमाम अपनी उंगली खून में डाल कर उसे उस कुर्बानिगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी खून वह कुर्बानिगाह के पाए पर उंडेले।<sup>31</sup> फिर वह उस की सारी चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की कुर्बानियों की चर्बी निकालता है। इस के बाद वह उसे कुर्बानिगाह पर जला दे। ऐसी कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

<sup>32</sup> अगर वह गुनाह की कुर्बानी के लिए भेड़ का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो।<sup>33</sup> वह अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली कुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं।<sup>34</sup> इमाम अपनी उंगली खून में डाल कर उसे उस कुर्बानिगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी खून वह कुर्बानिगाह के पाए पर उंडेले।<sup>35</sup> फिर वह उस की तमाम चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की कुर्बानी के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चर्बी निकाली जाती है। इस के बाद इमाम चर्बी को कुर्बानिगाह पर उन कुर्बानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यूँ इमाम उस

आदमी का कफ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

### गुनाह की कुर्बानियों के बारे में खास हिदायत

**5** हो सकता है कि किसी ने यूँ गुनाह किया कि उस ने कोई जुर्म देखा या वह उस के बारे में कुछ जानता है। तो भी जब गवाहों को क्रसम के लिए बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने नहीं आता। इस सूत्र में वह कुसूरवार ठहरता है।

<sup>2</sup>हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी नापाक चीज़ को छू लिया है, ख़्वाह वह किसी जंगली जानवर, मवेशी या रंगने वाले जानवर की लाश क्यूँ न हो। इस सूत्र में वह नापाक है और कुसूरवार ठहरता है।

<sup>3</sup>हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी शख्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई ऐसी चीज़ जिस से वह नापाक हो गया है। जब उसे मालूम हो जाता है तो वह कुसूरवार ठहरता है।

<sup>4</sup>हो सकता है कि किसी ने बेपरवाई से कुछ करने की क्रसम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या ग़लत। जब वह जान लेता है कि उस ने क्या किया है तो वह कुसूरवार ठहरता है।

<sup>5</sup>जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर कुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम करे। <sup>6</sup>फिर वह गुनाह की कुर्बानी के तौर पर एक भेड़ या बकरी पेश करे। यूँ इमाम उस का कफ़ारा देगा।

<sup>7</sup>अगर कुसूरवार शख्स गुर्बत के बाइस भेड़ या बकरी न दे सके तो वह रब को दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की कुर्बानी के लिए और एक भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए। <sup>8</sup>वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की कुर्बानी के लिए परिन्दा पेश करे। वह उस की गर्दन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए। <sup>9</sup>फिर वह उस के खून में से कुछ कुर्बानगाह के एक पहलू

पर छिड़के। बाक़ी खून वह यूँ निकलने दे कि वह कुर्बानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की कुर्बानी है। <sup>10</sup>फिर इमाम दूसरे परिन्दे को क़्वाइद के मुताबिक़ भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करे। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

<sup>11</sup>अगर वह शख्स गुर्बत के बाइस दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की कुर्बानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्यूँकि यह ग़ल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की कुर्बानी है। <sup>12</sup>वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुट्ठी भर उन कुर्बानियों के साथ जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की कुर्बानी है। <sup>13</sup>यूँ इमाम उस आदमी का कफ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। ग़ल्ला की नज़र की तरह बाक़ी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

### कुसूर की कुर्बानी

<sup>14</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>15</sup>“अगर किसी ने बेईमानी करके ग़ैरइरादी तौर पर रब की मख्सूस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख्स कुसूर की कुर्बानी के तौर पर रब को बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश करे। उस की क़ीमत मक्दिदस की शरह के मुताबिक़ मुक़रर की जाए। <sup>16</sup>जितना नुक्सान मक्दिदस को हुआ है उतना ही वह दे। इस के इलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को कुसूर की कुर्बानी के तौर पर पेश करके उस का कफ़ारा दे। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

<sup>17</sup>अगर कोई ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह कुसूरवार है, और वह उस का ज़िम्मादार ठहरेगा। <sup>18</sup>वह कुसूर की कुर्बानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और क़ीमत

के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की क्रीमत मक्दिस की शरह के मुताबिक़ मुकर्रर की जाए। फिर इमाम यह कुर्बानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो कुसूरवार शरूख़ ने गैरइरादी तौर पर किया है। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।<sup>19</sup> यह कुसूर की कुर्बानी है, क्योंकि वह रब का गुनाह करके कुसूरवार ठहरा है।”

**6** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“हो सकता है किसी ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उस ने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उस के सपुर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उस ने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उस ने किसी से कोई चीज़ छीन ली, <sup>3</sup>या उस ने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट बोला जब उसे मिल गई, या उस ने क्रसम खा कर झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह किया है। <sup>4</sup>अगर वह इस तरह का गुनाह करके कुसूरवार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़ वापस करे जो उस ने चोरी की या छीन ली या जो उस के सपुर्द की गई या जो गुमशुदा हो कर उस के पास आ गई है <sup>5</sup>या जिस के बारे में उस ने क्रसम खा कर झूट बोला है। वह उस का उतना ही वापस करके 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। और वह यह सब कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी कुसूर की कुर्बानी पेश करता है। <sup>6</sup>कुसूर की कुर्बानी के तौर पर वह एक बेऐब और क्रीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब को पेश करे। उस की क्रीमत मक्दिस की शरह के मुताबिक़ मुकर्रर की जाए। <sup>7</sup>फिर इमाम रब के सामने उस का कफ़रारा देगा तो उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।”

### भस्म होने वाली कुर्बानी

<sup>8</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>9</sup>“हारून और उस के बेटों को भस्म होने वाली कुर्बानियों के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : भस्म होने वाली

कुर्बानी पूरी रात सुब्ह तक कुर्बानगाह की उस जगह पर रहे जहाँ आग जलती है। आग को बुझने न देना। <sup>10</sup>सुब्ह को इमाम कतान का लिबास और कतान का पाजामा पहन कर कुर्बानी से बची हुई राख कुर्बानगाह के पास ज़मीन पर डाले। <sup>11</sup>फिर वह अपने कपड़े बदल कर राख को खैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर छोड़ आए। <sup>12</sup>कुर्बानगाह पर आग जलती रहे। वह कभी भी न बुझे। हर सुब्ह इमाम लकड़ियाँ चुन कर उस पर भस्म होने वाली कुर्बानी तरतीब से रखे और उस पर सलामती की कुर्बानी की चर्बी जला दे। <sup>13</sup>आग हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

### ग़ल्ला की नज़र

<sup>14</sup>ग़ल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं : हारून के बेटे उसे कुर्बानगाह के सामने रब को पेश करें। <sup>15</sup>फिर इमाम यादागर का हिस्सा यानी तेल से मिलाया गया मुट्टी भर बेहतरीन मैदा और कुर्बानी का तमाम लुबान ले कर कुर्बानगाह पर जला दे। इस की खुशबू रब को पसन्द है। <sup>16</sup>हारून और उस के बेटे कुर्बानी का बाक़ी हिस्सा खा लें। लेकिन वह उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक्रात के खैमे की चारदीवारी के अन्दर खाएँ, और उस में खमीर न हो। <sup>17</sup>उसे पकाने के लिए उस में खमीर न डाला जाए। मैं ने जलने वाली कुर्बानियों में से यह हिस्सा उन के लिए मुकर्रर किया है। यह गुनाह की कुर्बानी और कुसूर की कुर्बानी की तरह निहायत मुक़द्दस है। <sup>18</sup>हारून की औलाद के तमाम मर्द उसे खाएँ। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे। जो भी उसे छुएगा वह मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।”

<sup>19</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>20</sup>“जब हारून और उस के बेटों को इमाम की ज़िम्मादारी उठाने के लिए मख़सूस करके तेल से मसह किया जाएगा तो वह डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें। उस का आधा हिस्सा सुब्ह को और आधा हिस्सा शाम के वक़्त पेश किया जाए।

वह गल्ला की यह नज़र रोज़ाना पेश करें।<sup>21</sup>उसे तेल के साथ मिला कर तवे पर पकाना है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके गल्ला की नज़र के तौर पर पेश करना। उस की खुशबू रब को पसन्द है।<sup>22</sup>यह कुर्बानी हमेशा हारून की नस्ल का वह आदमी पेश करे जिसे मसह करके इमाम-ए-आज़म का उहदा दिया गया है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए जला दे।<sup>23</sup>इमाम की गल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर पर जलाना। उसे न खाना।”

### गुनाह की कुर्बानी

<sup>24</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>25</sup>“हारून और उस के बेटों को गुनाह की कुर्बानी के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : गुनाह की कुर्बानी को रब के सामने वहीं ज़बह करना है जहाँ भस्म होने वाली कुर्बानी ज़बह की जाती है। वह निहायत मुकद्दस है।<sup>26</sup>उसे पेश करने वाला इमाम उसे मुकद्दस जगह पर यानी मुलाक्रात के खैमे की चारदीवारी के अन्दर खाए।<sup>27</sup>जो भी इस कुर्बानी के गोशत को छू लेता है वह मख्सूस-ओ-मुकद्दस हो जाता है। अगर कुर्बानी के खून के छींटे किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो उसे मुकद्दस जगह पर धोना है।<sup>28</sup>अगर गोशत को हडिया में पकाया गया हो तो उस बर्तन को बाद में तोड़ देना है। अगर उस के लिए पीतल का बर्तन इस्तेमाल किया गया हो तो उसे खूब माँझ कर पानी से साफ़ करना।<sup>29</sup>इमामों के खानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। यह खाना निहायत मुकद्दस है।<sup>30</sup>लेकिन गुनाह की हर वह कुर्बानी खाई न जाए जिस का खून मुलाक्रात के खैमे में इस लिए लाया गया है कि मख़िदस में किसी का कफ़्रारा दिया जाए। उसे जलाना है।

### कुसूर की कुर्बानी

**7** कुसूर की कुर्बानी जो निहायत मुकद्दस है उस के बारे में हिदायात यह हैं :

<sup>2</sup>कुसूर की कुर्बानी वहीं ज़बह करनी है जहाँ भस्म होने वाली कुर्बानी ज़बह की जाती है। उस का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़का जाए।<sup>3</sup>उस की तमाम चर्बी निकाल कर कुर्बानगाह पर चढ़ानी है यानी उस की दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी, <sup>4</sup>गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है।<sup>5</sup>इमाम यह सब कुछ रब को कुर्बानगाह पर जलने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करे। यह कुसूर की कुर्बानी है।<sup>6</sup>इमामों के खानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। लेकिन उसे मुकद्दस जगह पर खाया जाए। यह निहायत मुकद्दस है।

<sup>7</sup>गुनाह और कुसूर की कुर्बानी के लिए एक ही उसूल है, जो इमाम कुर्बानी को पेश करके कफ़्रारा देता है उस को उस का गोशत मिलता है।<sup>8</sup>इस तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को जानवर की खाल मिलती है।<sup>9</sup>और इसी तरह तनूर में, कड़ाही में या तवे पर पकाई गई गल्ला की हर नज़र उस इमाम को मिलती है जिस ने उसे पेश किया है।<sup>10</sup>लेकिन हारून के तमाम बेटों को गल्ला की बाक़ी नज़रें बराबर बराबर मिलती रहें, ख़्वाह उन में तेल मिलाया गया हो या वह खुशक हों।

### सलामती की कुर्बानी

<sup>11</sup>सलामती की कुर्बानी जो रब को पेश की जाती है उस के बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :  
<sup>12</sup>अगर कोई इस कुर्बानी से अपनी शुक्रगुज़ारी का इज़हार करना चाहे तो वह जानवर के साथ बेखमीरी रोटी जिस में तेल डाला गया हो, बेखमीरी रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो और रोटी जिस में बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे।<sup>13</sup>इस के इलावा वह खमीरी रोटी भी पेश करे।<sup>14</sup>पेश करने वाला कुर्बानी की हर चीज़ का एक हिस्सा उठा कर रब के लिए मख्सूस करे। यह

उस इमाम का हिस्सा है जो जानवर का खून कुर्बानगाह पर छिड़कता है।<sup>15</sup> गोशत उसी दिन खाया जाए जब जानवर को ज़बह किया गया हो। अगली सुबह तक कुछ नहीं बचना चाहिए।

<sup>16</sup> इस कुर्बानी का गोशत सिर्फ़ इस सूत्र में अगले दिन खाया जा सकता है जब किसी ने मन्नत मान कर या अपनी खुशी से उसे पेश किया है।<sup>17</sup> अगर कुछ गोशत तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना है।<sup>18</sup> अगर उसे तीसरे दिन भी खाया जाए तो रब यह कुर्बानी क़बूल नहीं करेगा। उस का कोई फ़ाइदा नहीं होगा बल्कि उसे नापाक करार दिया जाएगा। जो भी उस से खाएगा वह कुसूरवार ठहरेगा।<sup>19</sup> अगर यह गोशत किसी नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोशत पाक है तो हर शख्स जो खुद पाक है उसे खा सकता है।<sup>20</sup> लेकिन अगर नापाक शख्स रब को पेश की गई सलामती की कुर्बानी का यह गोशत खाए तो उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।<sup>21</sup> हो सकता है कि किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू लिया है चाहे वह नापाक शख्स, जानवर या कोई और घिनौनी और नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा शख्स रब को पेश की गई सलामती की कुर्बानी का गोशत खाए तो उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।<sup>22</sup>

### चर्बी और खून खाना मना है

<sup>22</sup> रब ने मूसा से कहा, <sup>23</sup> "इस्राईलियों को बता देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की चर्बी खाना तुम्हारे लिए मना है।<sup>24</sup> तुम फ़ित्री तौर पर मरे हुए जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चर्बी दीगर कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना मना है।<sup>25</sup> जो भी उस चर्बी में से खाए जो जला कर रब को पेश की जाती है उसे उस की क्रौम में से मिटा डालना है।<sup>26</sup> जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिन्दों या दीगर जानवरों का खून खाना

मना है।<sup>27</sup> जो भी खून खाए उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए।"

### कुर्बानियों में से इमाम का हिस्सा

<sup>28</sup> रब ने मूसा से कहा, <sup>29</sup> "इस्राईलियों को बताना कि जो रब को सलामती की कुर्बानी पेश करे वह रब के लिए एक हिस्सा मख्सूस करे।<sup>30</sup> वह जलने वाली यह कुर्बानी अपने हाथों से रब को पेश करे। इस के लिए वह जानवर की चर्बी और सीना रब के सामने पेश करे। सीना हिलाने वाली कुर्बानी हो।<sup>31</sup> इमाम चर्बी को कुर्बानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून और उस के बेटों का हिस्सा है।<sup>32</sup> कुर्बानी की दहनी रान इमाम को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर दी जाए।<sup>33</sup> वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती की कुर्बानी का खून और चर्बी चढ़ाता है।

<sup>34</sup> इस्राईलियों की सलामती की कुर्बानियों में से मैं ने हिलाने वाला सीना और उठाने वाली रान इमामों को दी है। यह चीज़ें हमेशा के लिए इस्राईलियों की तरफ़ से इमामों का हक़ हैं।"

<sup>35</sup> यह उस दिन जलने वाली कुर्बानियों में से हारून और उस के बेटों का हिस्सा बन गई जब उन्हें मक्दिदस में रब की खिदमत में पेश किया गया।<sup>36</sup> रब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म दिया था कि इस्राईली यह हिस्सा हमेशा इमामों को दिया करें।

<sup>37</sup> गरज़ यह हिदायात तमाम कुर्बानियों के बारे में हैं यानी भस्म होने वाली कुर्बानी, गल्ला की नज़र, गुनाह की कुर्बानी, कुसूर की कुर्बानी, इमाम को मक्दिदस में खिदमत के लिए मख्सूस करने की कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी के बारे में।<sup>38</sup> रब ने मूसा को यह हिदायात सीना पहाड़ पर दी, उस दिन जब उस ने इस्राईलियों को हुक्म दिया कि वह दशत-ए-सीना में रब को अपनी कुर्बानियाँ पेश करें।



### हारून और उस के बेटों की मख्सूसियत

8 रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“हारून और उस के बेटों को मेरे हुज़ूर ले आना। नीज़ इमामों के लिबास, मसह का तेल, गुनाह की कुर्बानी के लिए जवान बैल, दो मेंढे और बेखमीरी रोटियों की टोकरी ले आना। <sup>3</sup>फिर पूरी जमाअत को खैमे के दरवाज़े पर जमा करना।”

<sup>4</sup>मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमाअत इकट्ठी हो गई तो <sup>5</sup>उस ने उन से कहा, “अब मैं वह कुछ करता हूँ जिस का हुक्म रब ने दिया है।” <sup>6</sup>मूसा ने हारून और उस के बेटों को सामने ला कर गुसल कराया। <sup>7</sup>उस ने हारून को कतान का ज़ेरजामा पहना कर कमरबन्द लपेटा। फिर उस ने चोगा पहनाया जिस पर उस ने बालापोश को महारत से बुने हुए पटके से बांधा। <sup>8</sup>इस के बाद उस ने सीने का कीसा लगा कर उस में दोनों कुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे। <sup>9</sup>फिर उस ने हारून के सर पर पगड़ी रखी जिस के सामने वाले हिस्से पर उस ने मुकद्दस ताज यानी सोने की तख्ती लगा दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

<sup>10</sup>इस के बाद मूसा ने मसह के तेल से मक्दिदस को और जो कुछ उस में था मसह करके उसे मख्सूस-ओ-मुकद्दस किया। <sup>11</sup>उस ने यह तेल सात बार जानवर चढ़ाने की कुर्बानगाह और उस के सामान पर छिड़क दिया। इसी तरह उस ने सात बार धोने के हौज़ और उस ढाँचे पर तेल छिड़क दिया जिस पर हौज़ रखा हुआ था। यूँ यह चीज़ें मख्सूस-ओ-मुकद्दस हुईं। <sup>12</sup>उस ने हारून के सर पर मसह का तेल उंडेल कर उसे मसह किया। यूँ वह मख्सूस-ओ-मुकद्दस हुआ।

<sup>13</sup>फिर मूसा ने हारून के बेटों को सामने ला कर उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबन्द लपेटे और उन के सरों पर पगड़ियाँ बांधीं। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

<sup>14</sup>अब मूसा ने गुनाह की कुर्बानी के लिए जवान बैल को पेश किया। हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस के सर पर रखे। <sup>15</sup>मूसा ने उसे ज़बह करके उस के खून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से कुर्बानगाह के सींगों पर लगा दिया ताकि वह गुनाहों से पाक हो जाए। बाक़ी खून उस ने कुर्बानगाह के पाए पर उंडेल दिया। यूँ उस ने उसे मख्सूस-ओ-मुकद्दस करके उस का कफ़फ़ारा दिया। <sup>16</sup>मूसा ने अंतड़ियों पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत ले कर कुर्बानगाह पर जला दिए। <sup>17</sup>लेकिन बैल की खाल, गोशत और अंतड़ियों के गोबर को उस ने खैमागाह के बाहर ले जा कर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

<sup>18</sup>इस के बाद उस ने भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए पहला मेंढा पेश किया। हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस के सर पर रख दिए। <sup>19</sup>मूसा ने उसे ज़बह करके उस का खून कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। <sup>20</sup>उस ने मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके सर, टुकड़े और चर्बी जला दी। <sup>21</sup>उस ने अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे मेंढे को कुर्बानगाह पर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब ने मूसा को दिया था। रब के लिए जलने वाली यह कुर्बानी भस्म होने वाली कुर्बानी थी, और उस की खुशबू रब को पसन्द थी।

<sup>22</sup>इस के बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया। इस कुर्बानी का मक्दस इमामों को मक्दिदस में खिदमत के लिए मख्सूस करना था। हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए। <sup>23</sup>मूसा ने उसे ज़बह करके उस के खून में से कुछ ले कर हारून के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाया। <sup>24</sup>यही उस ने हारून के बेटों के साथ भी किया। उस ने उन्हें सामने ला कर उन के दहने कान की

लौ पर और उन के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगुठों पर खून लगाया। बाक्री खून उस ने कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया।<sup>25</sup> उस ने मेंढे की चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों गुदें उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग की।<sup>26</sup> फिर वह रब के सामने पड़ी बेखमीरी रोटियों की टोकरी में से एक सादा रोटी, एक रोटी जिस में तेल डाला गया था और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया था ले कर चर्बी और रान पर रख दी।<sup>27</sup> उस ने यह सब कुछ हारून और उस के बेटों के हाथों पर रख कर उसे हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब को पेश किया।<sup>28</sup> फिर उस ने यह चीजें उन से वापस ले कर कुर्बानगाह पर जला दीं जिस पर पहले भस्म होने वाली कुर्बानी रखी गई थी। रब के लिए जलने वाली यह कुर्बानी इमामों को मख्सूस करने के लिए चढ़ाई गई, और उस की खुशबू रब को पसन्द थी।

<sup>29</sup> मूसा ने सीना भी लिया और उसे हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाया। यह मख्सूसियत के मेंढे में से मूसा का हिस्सा था। मूसा ने इस में भी सब कुछ रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ किया।

<sup>30</sup> फिर उस ने मसह के तेल और कुर्बानगाह पर के खून में से कुछ ले कर हारून, उस के बेटों और उन के कपड़ों पर छिड़क दिया। यूँ उस ने उन्हें और उन के कपड़ों को मख्सूस-ओ-मुकद्दस किया।

<sup>31</sup> मूसा ने उन से कहा, "गोश्त को मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर उबाल कर उसे उन रोटियों के साथ खाना जो मख्सूसियत की कुर्बानियों की टोकरी में पड़ी हैं। क्योंकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है।<sup>32</sup> गोश्त और रोटियों का बक्राया जला देना।<sup>33</sup> सात दिन तक मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े में से न निकलना, क्योंकि मक्विदस में खिदमत के लिए तुम्हारी मख्सूसियत के इतने ही दिन हैं।<sup>34</sup> जो कुछ आज हुआ है वह रब के हुक्म

के मुताबिक़ हुआ ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए।<sup>35</sup> तुम्हें सात रात और दिन तक खैमे के दरवाज़े के अन्दर रहना है। रब की इस हिदायत को मानो वर्ना तुम मर जाओगे, क्योंकि यह हुक्म मुझे रब की तरफ़ से दिया गया है।"

<sup>36</sup> हारून और उस के बेटों ने उन तमाम हिदायत पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी थीं।

### हारून कुर्बानियाँ चढ़ाता है

**9** मख्सूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हारून, उस के बेटों और इस्राईल के बुजुर्गों को बुलाया।<sup>2</sup> उस ने हारून से कहा, "एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुन कर रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की कुर्बानी के लिए और मेंढा भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए हो।<sup>3</sup> फिर इस्राईलियों को कह देना कि गुनाह की कुर्बानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो।<sup>4</sup> साथ ही सलामती की कुर्बानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिललाई हुई गल्ला की नज़र भी ले कर सब कुछ रब को पेश करो। क्योंकि आज ही रब तुम पर ज़ाहिर होगा।"

<sup>5</sup> इस्राईली मूसा की मतलूबा तमाम चीजें मुलाक्रात के खैमे के सामने ले आए। पूरी जमाअत क़रीब आ कर रब के सामने खड़ी हो गई।<sup>6</sup> मूसा ने उन से कहा, "तुम्हें वही करना है जिस का हुक्म रब ने तुम्हें दिया है। क्योंकि आज ही रब का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।"

<sup>7</sup> फिर उस ने हारून से कहा, "कुर्बानगाह के पास जा कर गुनाह की कुर्बानी और भस्म होने वाली कुर्बानी चढ़ा कर अपना और अपनी क़ौम का कफ़ारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक़ क़ौम के लिए भी कुर्बानी पेश करना ताकि उस का कफ़ारा दिया जाए।"

8हारून कुर्बानगाह के पास आया। उस ने बछड़े को ज़बह किया। यह उस के लिए गुनाह की कुर्बानी था। 9उस के बेटे बछड़े का खून उस के पास ले आए। उस ने अपनी उंगली खून में डुबो कर उसे कुर्बानगाह के सींगों पर लगाया। बाक्री खून को उस ने कुर्बानगाह के पाए पर उंडेल दिया। 10फिर उस ने उस की चर्बी, गुदों और जोड़कलेजी को कुर्बानगाह पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था वैसे ही हारून ने किया। 11बछड़े का गोश्त और खाल उस ने खैमागाह के बाहर ले जा कर जला दी।

12इस के बाद हारून ने भस्म होने वाली कुर्बानी को ज़बह किया। उस के बेटों ने उसे उस का खून दिया, और उस ने उसे कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। 13उन्होंने उसे कुर्बानी के मुख्तलिफ़ टुकड़े सर समेत दिए, और उस ने उन्हें कुर्बानगाह पर जला दिया। 14फिर उस ने उस की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धो कर भस्म होने वाली कुर्बानी की बाक्री चीज़ों पर रख कर जला दीं।

15अब हारून ने क्रौम के लिए कुर्बानी चढ़ाई। उस ने गुनाह की कुर्बानी के लिए बकरा ज़बह करके उसे पहली कुर्बानी की तरह चढ़ाया। 16उस ने भस्म होने वाली कुर्बानी भी क़वाइद के मुताबिक़ चढ़ाई। 17उस ने ग़ल्ला की नज़र पेश की और उस में से मुट्ठी भर कुर्बानगाह पर जला दिया। यह ग़ल्ला की उस नज़र के इलावा थी जो सुबह को भस्म होने वाली कुर्बानी के साथ चढ़ाई गई थी। 18फिर उस ने सलामती की कुर्बानी के लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी क्रौम के लिए थी। उस के बेटों ने उसे जानवरों का खून दिया, और उस ने उसे कुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। 19लेकिन उन्होंने ने बैल और मेंढे को चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी और जोड़कलेजी निकाल कर 20सीने के टुकड़ों पर रख दिया। हारून ने चर्बी का हिस्सा कुर्बानगाह पर जला दिया। 21सीने के टुकड़े

और दहनी रानें उस ने हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाईं। उस ने सब कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक़ ही किया।

22तमाम कुर्बानियाँ पेश करने के बाद हारून ने अपने हाथ उठा कर क्रौम को बरकत दी। फिर वह कुर्बानगाह से उतर कर 23मूसा के साथ मुलाक़ात के खैमे में दाखिल हुआ। जब दोनों बाहर आए तो उन्होंने ने क्रौम को बरकत दी। तब रब का जलाल पूरी क्रौम पर ज़ाहिर हुआ। 24रब के हुज़ूर से आग निकल कर कुर्बानगाह पर उतरी और भस्म होने वाली कुर्बानी और चर्बी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह देख कर लोग ख़ुशी के नारे मारने लगे और मुँह के बल गिर गए।

### नदब और अबीहू का गुनाह

**10** हारून के बेटे नदब और अबीहू ने अपने अपने बख़ूरदान ले कर उन में जलते हुए कोएले डाले। उन पर बख़ूर डाल कर वह रब के सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन यह आग नाजाइज़ थी। रब ने यह पेश करने का हुक्म नहीं दिया था। 2अचानक रब के हुज़ूर से आग निकली जिस ने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं रब के सामने वह मर गए।

3मूसा ने हारून से कहा, “अब वही हुआ है जो रब ने फ़रमाया था कि जो मेरे क़रीब हैं उन से मैं अपनी कुदूसियत ज़ाहिर करूँगा, मैं तमाम क्रौम के सामने ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।”

हारून ख़ामोश रहा। 4मूसा ने हारून के चचा उज़्ज़ीएल के बेटों मीसाएल और इल्सफ़न को बुला कर कहा, “इधर आओ और अपने रिश्तेदारों को मक्त्रिदस के सामने से उठा कर खैमागाह के बाहर ले जाओ।” 5वह आए और मूसा के हुक्म के ऐन मुताबिक़ उन्हें उन के ज़ेरजामों समेत उठा कर खैमागाह के बाहर ले गए।

6मूसा ने हारून और उस के दीगर बेटों इलीअज़र और इतमर से कहा, “मातम का

इज़हार न करो। न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वर्ना तुम मर जाओगे और रब पूरी जमाअत से नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम इस्राईली ज़रूर इन का मातम करें जिन को रब ने आग से हलाक कर दिया है। 7 मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो वर्ना तुम मर जाओगे, क्योंकि तुम्हें रब के तेल से मसह किया गया है।” चुनाँचे उन्हों ने ऐसा ही किया।

### इमामों के लिए हिदायात

8 रब ने हारून से कहा, 9 “जब भी तुझे या तेरे बेटों को मुलाक्रात के ख़ैमे में दाखिल होना है तो मैं या कोई और नशाआवर चीज़ पीना मना है, वर्ना तुम मर जाओगे। यह उसूल आने वाली नस्तों के लिए भी अबद तक अनमित है। 10 यह भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इम्तियाज़ करो। 11 तुम्हें इस्राईलियों को तमाम पाबन्दियों सिखानी हैं जो मैं ने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई हैं।”

12 मूसा ने हारून और उस के बचे हुए बेटों इलीअज़र और इतमर से कहा, “ग़ल्ला की नज़र का जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने लिए ले कर बेखमीरी रोटी पकाना और कुर्बानिगाह के पास ही खाना। क्योंकि वह निहायत मुक़द्दस है। 13 उसे मुक़द्दस जगह पर खाना, क्योंकि वह रब की जलने वाली कुर्बानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्योंकि मुझे इस का हुक्म दिया गया है। 14 जो सीना हिलाने वाली कुर्बानी और दहनी रान उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाना है। इस्राईलियों की सलामती की कुर्बानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा हैं। 15 लेकिन पहले इमाम रान और सीने को जलने वाली कुर्बानियों की चर्बी के साथ पेश करें। वह उन्हें

हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। रब फ़रमाता है कि यह टुकड़े अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।”

16 मूसा ने दरयाफ़्त किया कि उस बकरे के गोशत का क्या हुआ जो गुनाह की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह भी जल गया था। यह सुन कर उसे हारून के बेटों इलीअज़र और इतमर पर गुस्सा आया। उस ने पूछा, 17 “तुम ने गुनाह की कुर्बानी का गोशत क्यों नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्दस जगह पर खाना था। यह एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है जो रब ने तुम्हें दिया ताकि तुम जमाअत का कुसूर दूर करके रब के सामने लोगों का क़फ़ारा दो। 18 चूँकि इस बकरे का ख़ून मक्दि़स में न लाया गया इस लिए तुम्हें उस का गोशत मक्दि़स में खाना था जिस तरह मैं ने तुम्हें हुक्म दिया था।”

19 हारून ने मूसा को जवाब दे कर कहा, “देखें, आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की कुर्बानी और भस्म होने वाली कुर्बानी रब को पेश की है जबकि मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह की कुर्बानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा लगता?” 20 यह बात मूसा को अच्छी लगी।

### पाक और नापाक जानवर

**11** रब ने मूसा और हारून से कहा, 2 “इस्राईलियों को बताना कि तुम्हें ज़मीन पर रहने वाले जानवरों में से ज़ैल के जानवरों को खाने की इजाज़त है : 3 जिन के खुर या पाँओ बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 4-6 ऊँट, बिज्जू या खरगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ चिरे हुए नहीं हैं। 7 सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। 8 न उन का

गोशत खाना, न उन की लाशों को छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

<sup>9</sup>समुन्दरी और दरयाई जानवर खाने के लिए जाइज़ हैं अगर उन के पर और छिलके हों। <sup>10</sup>लेकिन जिन के पर या छिलके नहीं हैं वह सब तुम्हारे लिए मकरूह हैं, ख्वाह वह बड़ी तादाद में मिल कर रहते हैं या नहीं। <sup>11</sup>इस लिए उन का गोशत खाना मना है, और उन की लाशों से भी घिन खाना है। <sup>12</sup>पानी में रहने वाले तमाम जानवर जिन के पर या छिलके न हों तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

<sup>13</sup>ज़ैल के परिन्दे तुम्हारे लिए क़ाबिल-ए-घिन हों। इन्हें खाना मना है, क्योंकि वह मकरूह हैं : उक्राब, ददियल गिद्ध, काला गिद्ध, <sup>14</sup>लाल चील, हर क्रिस्म की काली चील, <sup>15</sup>हर क्रिस्म का कव्वा, <sup>16</sup>उक्राबी उल्लू, छोटे कान वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क्रिस्म का बाज़, <sup>17</sup>छोटा उल्लू, कूक़, चिंघाड़ने वाला उल्लू, <sup>18</sup>सफ़ेद उल्लू, दशती उल्लू, मिस्री गिद्ध, <sup>19</sup>लक़लक़, हर क्रिस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।<sup>a</sup>

<sup>20</sup>तमाम पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, <sup>21</sup>सिवाए उन के जिन की टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते हैं। उन को तुम खा सकते हो। <sup>22</sup>इस नाते से तुम मुख्तलिफ़ क्रिस्म के टिड्डे खा सकते हो। <sup>23</sup>बाक़ी सब पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

<sup>24-28</sup>जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखने वाले तमाम जानवर सिवाए उन के जिन के खुर या पाँओ पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उन की

लाशें उठाए या छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इस के बावुजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

<sup>29-30</sup>ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों में से छहूँदर, मुख्तलिफ़ क्रिस्म के चूहे और मुख्तलिफ़ क्रिस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं। <sup>31</sup>जो भी उन्हें और उन की लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>32</sup>अगर उन में से किसी की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी हो, न इस से कोई फ़र्क़ पड़ता है कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है। उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगी। <sup>33</sup>अगर ऐसी लाश मिट्टी के बर्तन में गिर जाए तो जो कुछ भी उस में है नापाक हो जाएगा और तुम्हें उस बर्तन को तोड़ना है। <sup>34</sup>हर खाने वाली चीज़ जिस पर ऐसे बर्तन का पानी डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बर्तन से निकली हुई हर पीने वाली चीज़ नापाक है। <sup>35</sup>जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े तो उन को तोड़ देना है। वह नापाक हैं और तुम्हारे लिए नापाक रहेंगे। <sup>36</sup>लेकिन जिस चश्मे या हौज़ में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। <sup>37</sup>अगर ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिन को अभी बोना है तो वह पाक रहते हैं। <sup>38</sup>लेकिन अगर बीजों पर पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर पड़े तो वह नापाक हैं।

<sup>39</sup>अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक नापाक रहेगा। <sup>40</sup>जो उस में से कुछ खाए या उसे उठा कर ले जाए उसे

<sup>a</sup>याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है क्राबिल-ए-घिन है। उसे खाना मना है, 42चाहे वह अपने पेट पर चाहे चार या इस से ज़ाइद पाँओ पर चलता हो। 43इन तमाम रेंगने वालों से अपने आप को घिन का बाइस और नापाक न बनाना, 44क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने आप को मख्सूस-ओ-मुकद्दस रखो, क्योंकि मैं कुद्दूस हूँ। अपने आप को ज़मीन पर रेंगने वाले तमाम जानवरों से नापाक न बनाना। 45मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा खुदा बनूँ। लिहाज़ा मुकद्दस रहो, क्योंकि मैं कुद्दूस हूँ।

46ज़मीन पर चलने वाले जानवरों, परिन्दों, आबी जानवरों और ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों के बारे में शरअ यही है। 47लाज़िम है कि तुम नापाक और पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के लिए जाइज़ हैं और ऐसों में जो नाजाइज़ हैं।”

### बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबन्दियाँ

**12** रब ने मूसा से कहा, 2”इसाईलियों को बता कि जब किसी औरत के लड़का पैदा हो तो वह माहवारी के अय्याम की तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3आठवें दिन लड़के का खतना करवाना है। 4फिर माँ मज़ीद 33 दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो खून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मख्सूस और मुकद्दस चीज़ न छुए, न मक्त्रिदिस के पास जाए।

5अगर उस के लड़की पैदा हो जाए तो वह माहवारी के अय्याम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66 दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो खून बहने से पैदा हुई है।

6जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की कुर्बानी के लिए एक जवान कबूतर या कुम्भी। 7इमाम यह जानवर रब को पेश करके उस का कफ़फ़ारा दे। फिर खून बहने के बाइस पैदा होने वाली नापाकी दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या लड़की।

8अगर वह गुर्बत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे सके तो फिर वह दो कुम्भियाँ या दो जवान कबूतर ले आए, एक भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए और दूसरा गुनाह की कुर्बानी के लिए। 9इमाम उस का कफ़फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।”

### जिल्दी बीमारियाँ

**13** रब ने मूसा और हारून से कहा, 2”अगर किसी की जिल्द में सूजन या पपड़ी या सफ़ेद दाग़ हो और खतरा है कि वबाई जिल्दी बीमारी हो तो उसे इमामों यानी हारून या उस के बेटों के पास ले आना है। 3इमाम उस जगह का मुआइना करे। अगर उस के बाल सफ़ेद हो गए हों और वह जिल्द में धंसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक करार दे। 4लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद तो है लेकिन जिल्द में धंसी हुई नहीं है, न उस के बाल सफ़ेद हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख्स को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 5सातवें दिन इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे। 6सातवें दिन वह एक और मर्तबा उस का मुआइना करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमन्द जिल्द के रंग की मानिन्द हो रहा हो और फैली न हो तो वह उसे पाक

क्रार दे। इस का मतलब है कि यह मर्ज़ आम पपड़ी से ज़्यादा नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा।<sup>7</sup>लेकिन अगर इस के बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा अपने आप को इमाम को दिखाए।<sup>8</sup>इमाम उस का मुआइना करे। अगर जगह वाकई फैल गई हो तो इमाम उसे नापाक क्रार दे, क्योंकि यह वबाई जिल्दी मर्ज़ है।

<sup>9</sup>अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मर्ज़ नज़र आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए।<sup>10</sup>इमाम उस का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफ़ेद सूजन हो, उस के बाल भी सफ़ेद हो गए हों, और उस में कच्चा गोशत मौजूद हो<sup>11</sup>तो इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस शख्स को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रख कर इन्तिज़ार न करे बल्कि उसे फ़ौरन नापाक क्रार दे, क्योंकि यह उस की नापाकी का सबूत है।<sup>12</sup>लेकिन अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि सर से ले कर पाँओ तक पूरी जिल्द मुतअस्सिरा हुई हो<sup>13</sup>तो इमाम यह देख कर मरीज़ को पाक क्रार दे। चूँकि पूरी जिल्द सफ़ेद हो गई है इस लिए वह पाक है।<sup>14</sup>लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोशत नज़र आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है।<sup>15</sup>इमाम यह देख कर मरीज़ को नापाक क्रार दे। कच्चा गोशत हर सूरत में नापाक है, क्योंकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।<sup>16</sup>अगर कच्चे गोशत का यह ज़ख़म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह की जिल्द सफ़ेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास जाए।<sup>17</sup>अगर इमाम देखे कि वाकई ऐसा ही हुआ है और मुतअस्सिरा जिल्द सफ़ेद हो गई है तो वह उसे पाक क्रार दे।

<sup>18</sup>अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन वह ठीक हो जाए<sup>19</sup>और उस की जगह सफ़ेद सूजन या सुखी-माइल सफ़ेद दाग़ नज़र आए तो मरीज़ अपने आप को इमाम को दिखाए।<sup>20</sup>अगर वह उस का मुआइना करके

देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के अन्दर धंसी हुई है और उस के बाल सफ़ेद हो गए हैं तो वह मरीज़ को नापाक क्रार दे। क्योंकि इस का मतलब है कि जहाँ पहले फोड़ा था वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है।<sup>21</sup>लेकिन अगर इमाम देखे कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती और उस का रंग दुबारा सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे।<sup>22</sup>अगर इस दौरान बीमारी मर्ज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़ को नापाक क्रार दे, क्योंकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।<sup>23</sup>लेकिन अगर दाग़ न फैले तो इस का मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है जो फोड़े से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क्रार दे।

<sup>24</sup>अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़म लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुखी-माइल सफ़ेद दाग़ या सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाए<sup>25</sup>तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर मालूम हो जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद हो गए हैं और वह जिल्द में धंसी हुई है तो इस का मतलब है कि चोट की जगह पर वबाई जिल्दी मर्ज़ लग गया है। इमाम उसे नापाक क्रार दे, क्योंकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।<sup>26</sup>लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि दाग़ में बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धंसा हुआ नज़र नहीं आता और उस का रंग सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह मरीज़ को सात दिन तक अलाहिदगी में रखे।<sup>27</sup>अगर वह सातवें दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई है तो वह उसे नापाक क्रार दे। क्योंकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है।<sup>28</sup>लेकिन अगर दाग़ फैला हुआ नज़र नहीं आता और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमन्द जिल्द के रंग की मानिन्द हो गया है तो इस का मतलब

है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख्म का निशान है जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक करार दे।

<sup>29</sup>अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में निशान नज़र आए <sup>30</sup>तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर वह धंसी हुई नज़र आए और उस के बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए सोने की मानिन्द और बारीक हों तो इमाम मरीज़ को नापाक करार दे। इस का मतलब है कि ऐसी वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर लग गई है जो ख़ारिश पैदा करती है। <sup>31</sup>लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती अगरचे उस के बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। <sup>32</sup>सातवें दिन इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर वह फैली हुई नज़र नहीं आती और उस के बालों का रंग चमकदार सोने की मानिन्द नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धंसी हुई भी दिखाई नहीं देती, <sup>33</sup>तो मरीज़ अपने बाल मुंडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे। <sup>34</sup>सातवें दिन वह उस का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली और वह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती तो इमाम उसे पाक करार दे। वह अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। <sup>35</sup>लेकिन अगर इस के बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना शुरू हो जाए <sup>36</sup>तो इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह जगह वाक़ई फैली हुई नज़र आए तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के बालों का रंग चमकते सोने की मानिन्द हो या न हो। <sup>37</sup>लेकिन अगर उस के ख़याल में मुतअस्सिरा जगह फैली हुई नज़र नहीं आती बल्कि उस में से काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इस का मतलब है कि

मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम उसे पाक करार दे।

<sup>38</sup>अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाएँ <sup>39</sup>तो इमाम उन का मुआइना करे। अगर उन का सफ़ेद रंग हल्का सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक है।

<sup>40-41</sup>अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़ या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है। <sup>42</sup>लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुर्खी-माइल सफ़ेद दाग़ हो तो इस का मतलब है कि वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। <sup>43</sup>इमाम उस का मुआइना करे। अगर गंजी जगह पर सुर्खी-माइल सफ़ेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की मानिन्द नज़र आए <sup>44</sup>तो मरीज़ को वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक करार दे।

### नापाक मरीज़ का सुलूक

<sup>45</sup>वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े पहने। उस के बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे, 'नापाक, नापाक।' <sup>46</sup>जिस वक़्त तक वबाई जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस दौरान ख़ैमागाह के बाहर जा कर तन्हाई में रहे।

### फफूँदी से निपटने का तरीक़ा

<sup>47</sup>हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी लिबास पर फफूँदी लग गई है, <sup>48</sup>या कि फफूँदी ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी चमड़े या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है। <sup>49</sup>अगर फफूँदी का रंग हरा या लाल सा हो तो वह फैलने वाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि उसे इमाम को दिखाया जाए। <sup>50</sup>इमाम उस का मुआइना करके उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। <sup>51</sup>सातवें दिन वह दुबारा उस का मुआइना करे। अगर फफूँदी फैल गई हो तो



इस का मतलब है कि वह नुक्सानदेह है। मुतअस्सिरा चीज़ नापाक है।<sup>52</sup> इमाम उसे जला दे, क्योंकि यह फफूँदी नुक्सानदेह है। लाज़िम है कि उसे जला दिया जाए।<sup>53</sup> लेकिन अगर इन सात दिनों के बाद फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती<sup>54</sup> तो इमाम हुकम दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए। फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे।<sup>55</sup> इस के बाद वह दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई नज़र नहीं आती लेकिन उस का रंग वैसे का वैसा है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी मुतअस्सिरा चीज़ के सामने वाले हिस्से या पिछले हिस्से में लगी हो।<sup>56</sup> लेकिन अगर मालूम हो जाए कि फफूँदी का रंग माँद पड़ गया है तो इमाम कपड़े या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़ कर निकाल दे।<sup>57</sup> तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इस का मतलब है कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम है।<sup>58</sup> लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद गाइब हो जाए तो उसे एक और दफ़ा धोना है। फिर मुतअस्सिरा चीज़ पाक होगी।

<sup>59</sup> इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह ऊन या कतान के किसी लिबास को लग गई हो, चाहे ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की किसी चीज़ को लग गई हो। इन ही उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या नापाक।”

### वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शिफ़ा पर कुर्बानी

**14** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “अगर कोई शख्स जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पाए और उसे पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के पास लाया जाए <sup>3</sup> जो खैमागाह के बाहर जा कर उस का मुआइना करे। अगर वह देखे कि मरीज़ की सेहत वाक़ई बहाल हो

गई है <sup>4</sup> तो इमाम उस के लिए दो ज़िन्दा और पाक परिन्दे, देवदार की लकड़ी, क्रिमिज़ी रंग का धागा और जूफ़ा मंगवाए। <sup>5</sup> इमाम के हुकम पर परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बर्तन के ऊपर ज़बह किया जाए। <sup>6</sup> इमाम ज़िन्दा परिन्दे को देवदार की लकड़ी, क्रिमिज़ी रंग के धागे और जूफ़ा के साथ ज़बह किए गए परिन्दे के उस खून में डुबो दे जो मिट्टी के बर्तन के पानी में आ गया है। <sup>7</sup> वह पानी से मिलाया हुआ खून सात बार पाक होने वाले शख्स पर छिड़क कर उसे पाक करार दे, फिर ज़िन्दा परिन्दे को खुले मैदान में छोड़ दे। <sup>8</sup> जो अपने आप को पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने कपड़े धोए, अपने तमाम बाल मुंडवाए और नहा ले। इस के बाद वह पाक है। अब वह खैमागाह में दाखिल हो सकता है अगरचे वह मज़ीद सात दिन अपने डेरे में नहीं जा सकता। <sup>9</sup> सातवें दिन वह दुबारा अपने सर के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अब्रू और बाक़ी तमाम बाल मुंडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले। तब वह पाक है।

<sup>10</sup> आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर तेल ले। <sup>11</sup> फिर जिस इमाम ने उसे पाक करार दिया वह उसे इन कुर्बानियों समेत मुलाक़ात के खैमे के दरवाज़े पर रब को पेश करे। <sup>12</sup> भेड़ का एक नर बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल कुसूर की कुर्बानी के लिए है। इमाम उन्हें हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। <sup>13</sup> फिर वह भेड़ के इस बच्चे को खैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की कुर्बानियाँ और भस्म होने वाली कुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। गुनाह की कुर्बानियों की तरह कुसूर की यह कुर्बानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुकद्दस है। <sup>14</sup> इमाम खून में से कुछ ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने

हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाए।<sup>15</sup> अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ ले कर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले।<sup>16</sup> अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ वाली उंगली इस तेल में डुबो कर वह उसे सात बार रब के सामने छिड़के।<sup>17</sup> वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह कुसूर की कुर्बानी का खून लगा चुका है।<sup>18</sup> इमाम अपनी हथेली पर का बाक्री तेल पाक होने वाले के सर पर डाल कर रब के सामने उस का कप्रफ़ारा दे।

<sup>19</sup> इस के बाद इमाम गुनाह की कुर्बानी चढ़ा कर पाक होने वाले का कप्रफ़ारा दे। आखिर में वह भस्म होने वाली कुर्बानी का जानवर ज़बह करे।<sup>20</sup> वह उसे ग़ल्ला की नज़र के साथ कुर्बानगाह पर चढ़ा कर उस का कप्रफ़ारा दे। तब वह पाक है।

<sup>21</sup> अगर शिफ़ायाब शख्स गुर्बत के बाइस यह कुर्बानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह कुसूर की कुर्बानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर बच्चा ले आए। काफ़ी है कि कप्रफ़ारा देने के लिए यही रब के सामने हिलाया जाए। साथ साथ ग़ल्ला की नज़र के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिला कर पेश किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल।<sup>22</sup> इस के इलावा वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक को गुनाह की कुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए।<sup>23</sup> आठवें दिन वह उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास और रब के सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ़ हो जाए।<sup>24</sup> इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर तेल समेत ले कर हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए।<sup>25</sup> वह कुसूर की कुर्बानी के लिए भेड़ के बच्चे को ज़बह करे और उस के खून में से कुछ ले कर पाक

होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाए।<sup>26</sup> अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले<sup>27</sup> और अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ वाली उंगली इस तेल में डुबो कर उसे सात बार रब के सामने छिड़क दे।<sup>28</sup> वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह कुसूर की कुर्बानी का खून लगा चुका है।<sup>29</sup> अपनी हथेली पर का बाक्री तेल वह पाक होने वाले के सर पर डाल दे ताकि रब के सामने उस का कप्रफ़ारा दे।<sup>30</sup> इस के बाद वह शिफ़ायाब शख्स की गुन्जाइश के मुताबिक़ दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए,<sup>31</sup> एक को गुनाह की कुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए। साथ ही वह ग़ल्ला की नज़र पेश करे। यूँ इमाम रब के सामने उस का कप्रफ़ारा देता है।<sup>32</sup> यह उसूल ऐसे शख्स के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पा गया है लेकिन अपनी गुर्बत के बाइस पाक हो जाने के लिए पूरी कुर्बानी पेश नहीं कर सकता।”

### घरों में फफूँदी

<sup>33</sup> रब ने मूसा और हारून से कहा,<sup>34</sup> “जब तुम मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होंगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो वहाँ ऐसे मकान होंगे जिन में मैं ने फफूँदी फैलने दी है।<sup>35</sup> ऐसे घर का मालिक जा कर इमाम को बताए कि मैं ने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।<sup>36</sup> तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआइना करने से पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए। वर्ना अगर घर को नापाक करार दिया जाए तो सामान को भी नापाक करार दिया जाएगा। इस के बाद इमाम अन्दर जा कर मकान का मुआइना करे।<sup>37</sup> वह दीवारों के साथ लगी हुई फफूँदी का

मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगहें हरी या लाल सी हों और दीवार के अन्दर धंसी हुई नज़र आएँ<sup>38</sup> तो फिर इमाम घर से निकल कर सात दिन के लिए ताला लगाए।<sup>39</sup> सातवें दिन वह वापस आ कर मकान का मुआइना करे। अगर फफूँदी फैली हुई नज़र आए<sup>40</sup> तो वह हुक्म दे कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकाल कर आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।<sup>41</sup> नीज़ वह हुक्म दे कि अन्दर की दीवारों को कुरेदा जाए और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।<sup>42</sup> फिर लोग नए पत्थर लगा कर घर को नए गारे से पलस्तर करें।<sup>43</sup> लेकिन अगर इस के बावजूद फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए<sup>44</sup> तो इमाम आ कर दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह देखे कि फफूँदी घर में फैल गई है तो इस का मतलब है कि फफूँदी नुक्सानदेह है, इस लिए घर नापाक है।<sup>45</sup> लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया जाए और सब कुछ यानी उस के पत्थर, लकड़ी और पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।

<sup>46</sup> अगर इमाम ने किसी घर का मुआइना करके ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में दाखिल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>47</sup> जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले।<sup>48</sup> लेकिन अगर घर को नए सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम आ कर उस का दुबारा मुआइना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा नहीं निकली तो इस का मतलब है कि फफूँदी खत्म हो गई है। वह उसे पाक करार दे।<sup>49</sup> उसे गुनाह से पाक-साफ़ कराने के लिए वह दो परिन्दे, देवदार की लकड़ी, किर्मिज़ी रंग का धागा और जूफ़ा ले ले।<sup>50</sup> वह परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बर्तन के ऊपर ज़बह करे।<sup>51</sup> इस के बाद वह देवदार की लकड़ी, जूफ़ा, किर्मिज़ी रंग का धागा और ज़िन्दा परिन्दा ले कर उस ताज़ा पानी में डुबो

दे जिस के साथ ज़बह किए हुए परिन्दे का खून मिलाया गया है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क दे।<sup>52</sup> इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-साफ़ करता है।<sup>53</sup> आखिर में वह ज़िन्दा परिन्दे को आबादी के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यँ वह घर का कफ़्रारा देगा, और वह पाक-साफ़ हो जाएगा।

<sup>54-56</sup> लाज़िम है कि हर क्रिस्म की वबाई बीमारी से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है, चाहे वह वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों (मसलन खारिश, सूजन, पपड़ी या सफ़ेद दाग), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी हो।<sup>57</sup> इन उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि कोई शख्स या चीज़ पाक है या नापाक।<sup>58</sup>

### मर्दों की नापाकी

**15** रब ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> "इस्राईलियों को बताना कि अगर किसी मर्द को जरयान का मर्ज़ हो तो वह खारिज होने वाले माए के सबब से नापाक है, <sup>3</sup> चाहे माए बहता रहता हो या रुक गया हो। <sup>4</sup> जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता या बैठता है वह नापाक है। <sup>5-6</sup> जो भी उस के लेटने की जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>7</sup> इसी तरह जो भी ऐसे मरीज़ को छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>8</sup> अगर मरीज़ किसी पाक शख्स पर थूके तो यही कुछ करना है और वह शख्स शाम तक नापाक रहेगा। <sup>9</sup> जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर सवार होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ जाता है नापाक है। <sup>10</sup> जो भी ऐसी चीज़ छुए या उसे उठा कर ले जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>11</sup> जिस किसी को भी मरीज़ अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>12</sup> मिट्टी का जो बर्तन

ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़ दिया जाए। लकड़ी का जो बर्तन वह छुए उसे खूब धोया जाए।

<sup>13</sup>जिसे इस मर्ज़ से शिफ़ा मिली है वह सात दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद वह ताज़ा पानी से अपने कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह पाक हो जाएगा। <sup>14</sup>आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले कर मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने इमाम को दे। <sup>15</sup>इमाम उन में से एक को गुनाह की कुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर चढ़ाए। यूँ वह रब के सामने उस का कफ़़ारा देगा।

<sup>16</sup>अगर किसी मर्द का नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>17</sup>हर कपड़ा या चमड़ा जिस से नुत्फ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। <sup>18</sup>अगर मर्द और औरत के हमबिसतर होने पर नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक रहेंगे।

### औरतों की नापाकी

<sup>19</sup>माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक नापाक है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>20</sup>इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। <sup>21-23</sup>जो भी उस के लेटने की जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>24</sup>अगर मर्द औरत से हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगाने के बाइस सात दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह लेटता है वह नापाक हो जाएगा।

<sup>25</sup>अगर किसी औरत को माहवारी के दिन छोड़ कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून आए या ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त तक नापाक रहेगी जब तक

ख़ून रुक न जाए। <sup>26</sup>जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। <sup>27</sup>जो भी ऐसी चीज़ को छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>28</sup>ख़ून के रुक जाने पर औरत मज़ीद सात दिन इन्तिज़ार करे। फिर वह पाक होगी। <sup>29</sup>आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले कर मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास आए। <sup>30</sup>इमाम उन में से एक को गुनाह की कुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए चढ़ाए। यूँ वह रब के सामने उस की नापाकी का कफ़़ारा देगा।

<sup>31</sup>लाज़िम है कि इस्राईलियों को ऐसी चीज़ों से दूर रखा जाए जिन से वह नापाक हो जाएँ। वर्ना मेरा वह मक़्िदिस जो उन के दरमियान है उन से नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो जाएंगे।

<sup>32</sup>लाज़िम है कि इस किस्म के मुआमलों से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इस में वह मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और वह जो नुत्फ़ा ख़ारिज होने के बाइस नापाक है। <sup>33</sup>इस में वह औरत भी शामिल है जिस के माहवारी के अय्याम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से हमबिसतर हो जाता है।”

### यौम-ए-कफ़़ारा

**16** जब हारून के दो बेटे रब के क़रीब आ कर हलाक हुए तो इस के बाद रब मूसा से हमकलाम हुआ। <sup>2</sup>उस ने कहा, “अपने भाई हारून को बताना कि वह सिर्फ़ मुक़र्ररा वक़्त पर पर्दे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल हो कर अह्द के सन्दूक के ढकने के सामने खड़ा हो जाए, वर्ना वह मर जाएगा। क्यूँकि मैं ख़ुद उस ढकने के ऊपर बादल की सूत में ज़ाहिर होता हूँ। <sup>3</sup>और जब भी वह दाखिल हो तो गुनाह की कुर्बानी के लिए एक जवान बैल और भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए एक मेंढा पेश करे। <sup>4</sup>पहले वह नहा कर इमाम के कतान के

मुकद्दस कपड़े पहन ले यानी ज़ेरजामा, उस के नीचे पाजामा, फिर कमरबन्द और पगड़ी। 5इसाईल की जमाअत हारून को गुनाह की कुर्बानी के लिए दो बकरे और भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए एक मेंढा दे।

6पहले हारून अपने और अपने घराने के लिए जवान बैल को गुनाह की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाए। 7फिर वह दोनों बकरों को मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर रब के सामने ले आए। 8वहाँ वह कुरआ डाल कर एक को रब के लिए चुने और दूसरे को अज़ाज़ेल के लिए। 9जो बकरा रब के लिए है उसे वह गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश करे। 10दूसरा बकरा जो कुरए के ज़रीए अज़ाज़ेल के लिए चुना गया उसे ज़िन्दा हालत में रब के सामने खड़ा किया जाए ताकि वह जमाअत का कफ़ारा दे। वहाँ से उसे रेगिस्तान में अज़ाज़ेल के पास भेजा जाए।

11लेकिन पहले हारून जवान बैल को गुनाह की कुर्बानी के तौर पर चढ़ा कर अपना और अपने घराने का कफ़ारा दे। उसे ज़बह करने के बाद 12वह बखूर की कुर्बानगाह से जलते हुए कोएलों से भरा हुआ बर्तन ले कर अपनी दोनों मुट्टियाँ बारीक खुशबूदार बखूर से भर ले और मुकद्दसतरीन कमरे में दाखिल हो जाए। 13वहाँ वह रब के हुज़ूर बखूर को जलते हुए कोएलों पर डाल दे। इस से पैदा होने वाला धुआँ अहद के सन्दूक का ढकना छुपा देगा ताकि हारून मर न जाए। 14अब वह जवान बैल के खून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से ढकने के सामने वाले हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उंगली से सात बार उस के सामने ज़मीन पर छिड़के। 15इस के बाद वह उस बकरे को ज़बह करे जो क़ौम के लिए गुनाह की कुर्बानी है। वह उस का खून मुकद्दसतरीन कमरे में ले आए और उसे बैल के खून की तरह अहद के सन्दूक के ढकने पर और सात बार उस के सामने ज़मीन पर छिड़के। 16यूँ वह मुकद्दसतरीन कमरे का कफ़ारा देगा

जो इसाईलियों की नापाकियों और तमाम गुनाहों से मुतअस्सिर होता रहता है। इस से वह मुलाक्रात के पूरे खैमे का भी कफ़ारा देगा जो खैमागाह के दरमियान होने के बाइस इसाईलियों की नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17जितना वक़्त हारून अपना, अपने घराने का और इसाईल की पूरी जमाअत का कफ़ारा देने के लिए मुकद्दसतरीन कमरे में रहेगा इस दौरान किसी दूसरे को मुलाक्रात के खैमे में ठहरने की इजाज़त नहीं है। 18फिर वह मुकद्दसतरीन कमरे से निकल कर खैमे में रब के सामने पड़ी कुर्बानगाह का कफ़ारा दे। वह बैल और बकरे के खून में से कुछ ले कर उसे कुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए। 19कुछ खून वह अपनी उंगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यूँ वह उसे इसाईलियों की नापाकियों से पाक करके मख्सूस-ओ-मुकद्दस करेगा।

20मुकद्दसतरीन कमरे, मुलाक्रात के खैमे और कुर्बानगाह का कफ़ारा देने के बाद हारून ज़िन्दा बकरे को सामने लाए। 21वह अपने दोनों हाथ उस के सर पर रखे और इसाईलियों के तमाम कुसूर यानी उन के तमाम जराइम और गुनाहों का इक्रार करके उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर वह उसे रेगिस्तान में भेज दे। इस के लिए वह बकरे को एक आदमी के सपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मादारी दी गई है। 22बकरा अपने आप पर उन का तमाम कुसूर उठा कर किसी वीरान जगह में ले जाएगा। वहाँ साथ वाला आदमी उसे छोड़ आए।

23इस के बाद हारून मुलाक्रात के खैमे में जाए और कतान के वह कपड़े जो उस ने मुकद्दसतरीन कमरे में दाखिल होने से पेशतर पहन लिए थे उतार कर वहीं छोड़ दे। 24वह मुकद्दस जगह पर नहा कर अपनी खिदमत के आम कपड़े पहन ले। फिर वह बाहर आ कर अपने और अपनी क़ौम के लिए भस्म

होने वाली कुर्बानी पेश करे ताकि अपना और अपनी क्रौम का कफ़रा दे। <sup>25</sup>इस के इलावा वह गुनाह की कुर्बानी की चर्बी कुर्बानगाह पर जला दे।

<sup>26</sup>जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को रेगिस्तान में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। इस के बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

<sup>27</sup>जिस बैल और बकरे को गुनाह की कुर्बानी के लिए पेश किया गया और जिन का खून कफ़रा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम है कि उन की खालें, गोशत और गोबर ख़ैमागाह के बाहर जला दिया जाए। <sup>28</sup>यह चीज़ें जलाने वाला बाद में अपने कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

<sup>29</sup>लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन इस्राईली और उन के दरमियान रहने वाले परदेसी अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ाइम रहे। <sup>30</sup>इस दिन तुम्हारा कफ़रा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया जाए। तब तुम रब के सामने अपने तमाम गुनाहों से पाक ठहरोगे। <sup>31</sup>पूरा दिन आराम करो और अपनी जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

<sup>32</sup>इस दिन इमाम-ए-आज़म तुम्हारा कफ़रा दे, वह इमाम जिसे उस के बाप की जगह मसह किया गया और इखतियार दिया गया है। वह कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन कर <sup>33</sup>मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक्रात के ख़ैमे, कुर्बानगाह, इमामों और जमाअत के तमाम लोगों का कफ़रा दे। <sup>34</sup>लाज़िम है कि साल में एक दफ़ा इस्राईलियों के तमाम गुनाहों का कफ़रा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ाइम रहे।”

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

## कुर्बानी चढ़ाने का मक़ाम

**17** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“हारून, उस के बेटों और तमाम इस्राईलियों को हिदायत देना <sup>3-4</sup>कि जो भी इस्राईली अपनी गाय या भेड़-बकरी मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब को कुर्बानी के तौर पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के अन्दर या बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे वह खून बहाने का कुसूरवार ठहरेगा। उस ने खून बहाया है, और लाज़िम है कि उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए। <sup>5</sup>इस हिदायत का मक़सद यह है कि इस्राईली अब से अपनी कुर्बानियाँ खुले मैदान में ज़बह न करें बल्कि रब को पेश करें। वह अपने जानवरों को मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास ला कर उन्हें रब को सलामती की कुर्बानी के तौर पर पेश करें। <sup>6</sup>इमाम उन का खून मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर की कुर्बानगाह पर छिड़के और उन की चर्बी उस पर जला दे। ऐसी कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है। <sup>7</sup>अब से इस्राईली अपनी कुर्बानियाँ उन बकरों के देवताओं को पेश न करें जिन की पैरवी करके उन्होंने ज़िना किया है। यह उन के लिए और उन के बाद आने वाली नस्लों के लिए एक दाइमी उसूल है।

<sup>8</sup>लाज़िम है कि हर इस्राईली और तुम्हारे दरमियान रहने वाला परदेसी अपनी भस्म होने वाली कुर्बानी या कोई और कुर्बानी <sup>9</sup>मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ला कर रब को पेश करे। वर्ना उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाएगा।

## खून खाना मना है

<sup>10</sup>खून खाना बिलकुल मना है। जो भी इस्राईली या तुम्हारे दरमियान रहने वाला परदेसी खून खाए मैं उस के खिलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की क्रौम में से मिटा डालूँगा। <sup>11</sup>क्यूँकि हर मख्लूक के खून में उस की जान है। मैं ने उसे तुम्हें दे दिया है ताकि

वह कुर्बानगाह पर तुम्हारा कफ़ारा दे। क्योंकि खून ही उस जान के ज़रीए जो उस में है तुम्हारा कफ़ारा देता है।<sup>12</sup> इस लिए मैं कहता हूँ कि न कोई इस्राईली न कोई परदेसी खून खाए।

<sup>13</sup> अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी किसी जानवर या परिन्दे का शिकार करके पकड़े जिसे खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के बाद उस का पूरा खून ज़मीन पर बहने दे और खून पर मिट्टी डाले।<sup>14</sup> क्योंकि हर मख़लूक का खून उस की जान है। इस लिए मैं ने इस्राईलियों को कहा है कि किसी भी मख़लूक का खून न खाओ। हर मख़लूक का खून उस की जान है, और जो भी उसे खाए उसे क्रौम में से मिटा देना है।

<sup>15</sup> अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी ऐसे जानवर का गोश्त खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गया या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो तो वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>16</sup> जो ऐसा नहीं करता उसे अपने कुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।”

### नाजाइज़ जिन्सी ताल्लुकात

**18** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>”इस्राईलियों को बताना कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।<sup>3</sup> मिस्रियों की तरह ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन में तुम रहते थे। मुल्क-ए-कनआन के लोगों की तरह भी ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन के पास मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। उन के रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना।<sup>4</sup> मेरे ही अहकाम पर अमल करो और मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।<sup>5</sup> मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलना, क्योंकि जो यूँ करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

<sup>6</sup> तुम में से कोई भी अपनी क़रीबी रिश्तेदार से हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

<sup>7</sup> अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है, इस लिए उस से हमबिसतर न होना।

<sup>8</sup> अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

<sup>9</sup> अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह तेरे बाप या तेरी माँ की बेटा हो, चाहे वह तेरे ही घर में या कहीं और पैदा हुई हो।

<sup>10</sup> अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

<sup>11</sup> अपने बाप की बीवी की बेटा से हमबिसतर न होना। वह तेरी बहन है।

<sup>12</sup> अपनी फूफी से हमबिसतर न होना। वह तेरे बाप की क़रीबी रिश्तेदार है।

<sup>13</sup> अपनी खाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी माँ की क़रीबी रिश्तेदार है।

<sup>14</sup> अपने बाप के भाई की बीवी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप के भाई की बेहुरमती हो जाएगी। उस की बीवी तेरी चची है।

<sup>15</sup> अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे बेटे की बीवी है।

<sup>16</sup> अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे भाई की बेहुरमती हो जाएगी।

<sup>17</sup> अगर तेरा जिन्सी ताल्लुक किसी औरत से हो तो उस की बेटा, पोती या नवासी से हमबिसतर होना मना है, क्योंकि वह उस की क़रीबी रिश्तेदार हैं। ऐसा करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

<sup>18</sup> अपनी बीवी के जीते जी उस की बहन से शादी न करना।

<sup>19</sup> किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

<sup>20</sup> किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न होना, वर्ना तू अपने आप को नापाक करेगा।

<sup>21</sup> अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को कुर्बानी के तौर पर पेश करके जला देना

मना है। ऐसी हरकत से तू अपने खुदा के नाम को दाग लगाएगा। मैं रब हूँ।

<sup>22</sup>मर्द दूसरे मर्द के साथ जिन्सी ताल्लुक्रात न रखे। ऐसी हरकत क्राबिल-ए-घिन है।

<sup>23</sup>किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक्रात न रखना, वर्ना तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना मना है। यह बड़ी शर्मनाक हरकत है।

<sup>24</sup>ऐसी हरकतों से अपने आप को नापाक न करना। क्योंकि जो क्रौम में तुम्हारे आगे मुल्क से निकालूंगा वह इसी तरह नापाक होती रहीं। <sup>25</sup>मुल्क खुद भी नापाक हुआ। इस लिए मैं ने उसे उस के कुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में उस ने अपने बाशिन्दों को उगल दिया। <sup>26</sup>लेकिन तुम मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ चलो। न देसी और न परदेसी ऐसी कोई घिनौनी हरकत करें। <sup>27</sup>क्योंकि यह तमाम क्राबिल-ए-घिन बातें उन से हुई जो तुम से पहले इस मुल्क में रहते थे। यूँ मुल्क नापाक हुआ। <sup>28</sup>लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा जिस तरह उस ने तुम से पहले मौजूद क्रौमों को उगल दिया। <sup>29</sup>जो भी मज़क़ूरा घिनौनी हरकतों में से एक करे उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए। <sup>30</sup>मेरे अहकाम के मुताबिक़ चलते रहो और ऐसे क्राबिल-ए-घिन रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने से पहले राइज थे। इन से अपने आप को नापाक न करना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

### मुक़द्दस क्रौम के लिए हिदायात

**19** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों की पूरी जमाअत को बताना कि मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा कुदूस हूँ।

<sup>3</sup>तुम में से हर एक अपने माँ-बाप की इज़ज़त करे। हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>4</sup>न बुतों की तरफ़ रुजू

करना, न अपने लिए देवता ढालना। मैं ही रब तुम्हारा खुदा हूँ।

<sup>5</sup>जब तुम रब को सलामती की कुर्बानी पेश करते हो तो उसे यूँ चढ़ाओ कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। <sup>6</sup>उस का गोशत उसी दिन या अगले दिन खाया जाए। जो भी तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। <sup>7</sup>अगर कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए कि यह कुर्बानी नापाक है और रब को पसन्द नहीं है। <sup>8</sup>ऐसे शख्स को अपने कुसूर की सज़ा उठानी पड़ेगी, क्योंकि उस ने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत ख़त्म की है जो रब के लिए मख्सूस की गई थी। उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए।

<sup>9</sup>कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। <sup>10</sup>अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठा कर न ले जाना। उन्हें ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

<sup>11</sup>चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को धोका न देना।

<sup>12</sup>मेरे नाम की क़सम खा कर धोका न देना, वर्ना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।

<sup>13</sup>एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे अगली सुबह तक रोके न रखना।

<sup>14</sup>बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई चीज़ रखना जिस से वह ठोकर खाए। इस में भी अपने खुदा का खौफ़ मानना। मैं रब हूँ।

<sup>15</sup>अदालत में किसी की हक़तल्फ़ी न करना। फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न करना, चाहे वह ग़रीब या



असर-ओ-रसूख वाला हो। इन्साफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।

16 अपनी क्रौम में इधर उधर फिरते हुए किसी पर बुह्तान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिस से किसी की जान खतरे में पड़ जाए। मैं रब हूँ।

17 दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर किसी की सरज़निश करनी है तो रू-ब-रू करना, वर्ना तू उस के सबब से कुसूरवार ठहरेगा।

18 इन्तिक्राम न लेना। अपनी क्रौम के किसी शख्स पर देर तक तेरा गुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है। मैं रब हूँ।

19 मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख्तलिफ़ क्रिस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने खेत में दो क्रिस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न पहनना जो दो मुख्तलिफ़ क्रिस्म के धागों का बुना हुआ हो।

20 अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिस की मंगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें सज़ा-ए-मौत न दी जाए, क्योंकि उसे अब तक आज़ाद नहीं किया गया। 21 कुसूरवार आदमी मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब को कुसूर की कुर्बानी के तौर पर पेश किया जाए। 22 इमाम इस कुर्बानी से रब के सामने उस के गुनाह का कफ़रारा दे। यूँ उस का गुनाह मुआफ़ किया जाएगा। 23 जब मुल्क-ए-कनआन में दाखिल होने के बाद तुम फलदार दरख्त लगाओगे तो पहले तीन साल उन का फल न खाना बल्कि उसे मम्मू<sup>a</sup> समझना। 24 चौथे साल उन का तमाम फल खुशी के मुकद्दस नज़राने के तौर पर रब के लिए मख्सूस किया जाए। 25 पाँचवें साल

तुम उन का फल खा सकते हो। यूँ तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

26 ऐसा गोशत न खाना जिस में खून हो। फ़ाल या शुगून न निकालना।

27 अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न अपनी दाढ़ी को तराशना। 28 अपने आप को मुर्दों के सबब से काट कर ज़ख्मी न करना, न अपनी जिल्द पर नुक़्श गुदवाना। मैं रब हूँ।

29 अपनी बेटी को कस्बी न बनाना, वर्ना उस की मुकद्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क जिनाकारी के बाइस हरामकारी से भर जाएगा।

30 हफ़्ते के दिन आराम करना और मेरे मक्दिस का एहतिराम करना। मैं रब हूँ।

31 ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुर्दों से राबिता करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रुजू करना, वर्ना तुम उन से नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

32 बूढ़े लोगों के सामने उठ कर खड़ा हो जाना, बुजुर्गों की इज़ज़त करना और अपने खुदा का एहतिराम करना। मैं रब हूँ।

33 जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान रहता है उसे न दबाना। 34 उस के साथ ऐसा सुलूक कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस तरह तू अपने आप से मुहब्बत रखता है उसी तरह उस से भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम खुद मिस्र में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

35 नाइन्साफ़ी न करना। न अदालत में, न लम्बाई नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी चीज़ की मिक्ददार नापते वक़्त। 36 सहीह तराजू, सहीह बाट और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ।

37 मेरी तमाम हिदायात और तमाम अहकाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।"

<sup>a</sup>लफ़ज़ी तर्जुमा : नामख़तून।

### जराइम की सज़ाएँ

**20** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों को बताना कि तुम में से जो भी अपने बच्चे को मलिक देवता को कुर्बानी के तौर पर पेश करे उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। इस में कोई फ़र्क नहीं कि वह इस्राईली है या परदेसी। जमाअत के लोग उसे संगसार करें। <sup>3</sup>मैं खुद ऐसे शख्स के खिलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। क्योंकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उस ने मेरे मक्दिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग लगाया है। <sup>4</sup>अगर जमाअत के लोग अपनी आँखें बन्द करके ऐसे शख्स की हरकतें नज़रअन्दाज़ करें और उसे सज़ा-ए-मौत न दें <sup>5</sup>तो फिर मैं खुद ऐसे शख्स और उस के घराने के खिलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा। मैं उसे और उन तमाम लोगों को क़ौम में से मिटा डालूँगा जिन्होंने उस के पीछे लग कर मलिक देवता को सिज्दा करने से ज़िना किया है।

<sup>6</sup>जो शख्स मुर्दों से राबिता करने और ग़ैबदानी करने वालों की तरफ़ रुजू करता है मैं उस के खिलाफ़ हो जाऊँगा। उन की पैरवी करने से वह ज़िना करता है। मैं उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। <sup>7</sup>अपने आप को मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस रखो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>8</sup>मेरी हिदायात मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ जो तुम्हें मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ।

<sup>9</sup>जिस ने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह अपनी मौत का खुद ज़िम्मादार है।

<sup>10</sup>अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना किया है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है।

<sup>11</sup>जो मर्द अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हुआ है उस ने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार हैं।

<sup>12</sup>अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। जो कुछ उन्होंने ने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार हैं।

<sup>13</sup>अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिन्सी ताल्लुकात रखे तो दोनों को इस घिनौनी हरकत के बाइस सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार हैं।

<sup>14</sup>अगर कोई आदमी अपनी बीवी के इलावा उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसी ख़बीस बात न रहे।

<sup>15</sup>जो मर्द किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुकात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। <sup>16</sup>जो औरत किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुकात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार हैं।

<sup>17</sup>जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उस ने शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटी हो या माँ की। उन्हें इस्राईली क़ौम की नज़रों से मिटाया जाए। ऐसे शख्स ने अपनी बहन की बेहुरमती की है। इस लिए उसे खुद अपने कुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।

<sup>18</sup>अगर कोई मर्द माहवारी के अय्याम में किसी औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उन की क़ौम में से मिटाना है। क्योंकि दोनों ने औरत के खून के मम्बा से पर्दा उठाया है।

<sup>19</sup>अपनी खाला या फूफी से हमबिसतर न होना। क्योंकि जो ऐसा करता है वह अपनी क़रीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने कुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।

<sup>20</sup>जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है उस ने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों को अपने कुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21जिस ने अपनी भाबी से शादी की है उस ने एक नजिस हरकत की है। उस ने अपने भाई की बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।

22मेरी तमाम हिदायात और अहकाम को मानो और उन पर अमल करो। वर्ना जिस मुल्क में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा। 23उन क़ौमों के रस्म-ओ-रिवाज के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन्हें मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब से उन से घिन आने लगी कि वह यह सब कुछ करते थे। 24लेकिन तुम से मैं ने कहा, 'तुम ही उन की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिस में कसत का दूध और शहद है।' मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जिस ने तुम को दीगर क़ौमों में से चुन कर अलग कर दिया है। 25इस लिए लाज़िम है कि तुम ज़मीन पर चलने वाले जानवरों और परिन्दों में पाक और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आप को नापाक जानवर खाने से क़ाबिल-ए-घिन न बनाना, चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते हैं, चाहे हवा में उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक करार दिया है। 26तुम्हें मेरे लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस होना है, क्योंकि मैं कुदूस हूँ, और मैं ने तुम्हें दीगर क़ौमों में से चुन कर अपने लिए अलग कर लिया है।

27तुम में से जो मुर्दों से राबिता या ग़ैबदानी करता है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है, ख़्वाह औरत हो या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार हैं।"

### इमामों के लिए हिदायात

**21** रब ने मूसा से कहा, "हारून के बेटों को जो इमाम हैं बता देना कि इमाम अपने आप को किसी इस्राईली की लाश के क़रीब जाने से नापाक न करे 2सिवाए अपने क़रीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटा, भाई 3और जो ग़ैरशादीशुदा बहन उस के घर में रहती है। 4वह अपनी क़ौम में

किसी और के बाइस अपने आप को नापाक न करे, वर्ना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी।

5इमाम अपने सर को न मुंडवाएँ। वह न अपनी दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आप को ज़रखी करें।

6वह अपने ख़ुदा के लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस रहें और अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ न लगाएँ। चूँकि वह रब को जलने वाली कुर्बानियाँ यानी अपने ख़ुदा की रोटी पेश करते हैं इस लिए लाज़िम है कि वह मुक़द्दस रहें। 7इमाम ज़िनाकार औरत, मन्दिर की कस्बी या तलाक़याफ़्ता औरत से शादी न करें, क्योंकि वह अपने रब के लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 8इमाम को मुक़द्दस समझना, क्योंकि वह तेरे ख़ुदा की रोटी को कुर्बानगाह पर चढ़ाता है। वह तेरे लिए मुक़द्दस ठहरे क्योंकि मैं रब कुदूस हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस करता हूँ।

9किसी इमाम की जो बेटा ज़िनाकारी से अपनी मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप की मुक़द्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे जला दिया जाए।

10इमाम-ए-आज़म के सर पर मसह का तेल उंडेला गया है और उसे इमाम-ए-आज़म के मुक़द्दस कपड़े पहनने का इख़तियार दिया गया है। इस लिए वह रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न दे, न कभी अपने कपड़ों को फाड़े। 11वह किसी लाश के क़रीब न जाए, चाहे वह उस के बाप या माँ की लाश क्यों न हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। 12जब तक कोई लाश उस के घर में पड़ी रहे वह मक़िदिस को छोड़ कर अपने घर न जाए, वर्ना वह मक़िदिस को नापाक करेगा। क्योंकि उसे उस के ख़ुदा के तेल से मख़सूस किया गया है। मैं रब हूँ। 13इमाम-ए-आज़म को सिर्फ़ कुंवारी से शादी की इजाज़त है। 14वह बेवा, तलाक़याफ़्ता औरत, मन्दिर की कस्बी या ज़िनाकार औरत से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने क़बीले की कुंवारी से, 15वर्ना उस की औलाद मख़सूस-ओ-मुक़द्दस नहीं होगी। क्योंकि मैं रब हूँ जो

उसे अपने लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ।”

16रब ने मूसा से यह भी कहा, 17“हारून को बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिस के जिस्म में नुक्स हो मेरे हुज़ूर आ कर अपने खुदा की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अटल है। 18क्यूँकि कोई भी माज़ूर मेरे हुज़ूर न आए, न अंधा, न लंगड़ा, न वह जिस की नाक चिरी हुई हो या जिस के किसी अज़ु में कमी बेशी हो, 19न वह जिस का पाँओ या हाथ टूटा हुआ हो, 20न कुबड़ा, न बौना, न वह जिस की आँख में नुक्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या जिस के खुस्ये कुचले हुए हों। 21हारून इमाम की कोई भी औलाद जिस के जिस्म में नुक्स हो मेरे हुज़ूर आ कर रब को जलने वाली कुर्बानियाँ पेश न करे। चूँकि उस में नुक्स है इस लिए वह मेरे हुज़ूर आ कर अपने खुदा की रोटी न चढ़ाए। 22उसे अल्लाह की मुकद्दस बल्कि मुकद्दसतरीन कुर्बानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23लेकिन चूँकि उस में नुक्स है इस लिए वह मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के पर्दे के करीब न जाए, न कुर्बानिगाह के पास आए। वर्ना वह मेरी मुकद्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्यूँकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ।”

24मूसा ने यह हिदायात हारून, उस के बेटों और तमाम इस्राईलियों को दीं।

### कुर्बानी का गोशत खाने की हिदायात

**22** रब ने मूसा से कहा, 2“हारून और उस के बेटों को बताना कि इस्राईलियों की उन कुर्बानियों का एहतिराम करो जो तुम ने मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस की हैं, वर्ना तुम मेरे नाम को दाग लगाओगे। मैं रब हूँ। 3जो इमाम नापाक होने के बावुजूद उन कुर्बानियों के पास आ जाए जो इस्राईलियों ने मेरे लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस की हैं उसे मेरे

सामने से मिटाना है। यह उसूल आने वाली नस्लों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4हारून की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुकद्दस कुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिस का नुत्फ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5वह नापाक रेंगने वाले जानवर या नापाक शख्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, ख्वाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यूँ न हुआ हो। 6जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इस के इलावा लाज़िम है कि वह मुकद्दस कुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7सूरज के गुरूब होने पर वह पाक होगा और मुकद्दस कुर्बानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्यूँकि वह उस की रोज़ी हैं। 8इमाम ऐसे जानवरों का गोशत न खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वर्ना वह कुसूरवार बन जाएंगे और मुकद्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ।

10सिर्फ़ इमाम के खानदान के अफ़राद मुकद्दस कुर्बानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है। 11लेकिन इमाम का गुलाम या लौंडी उस में से खा सकते हैं, चाहे उन्हें खरीदा गया हो या वह उस के घर में पैदा हुए हों। 12अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुकद्दस कुर्बानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याफ़ता हो और उस के बच्चे न हों। जब वह अपने बाप

के घर लौट कर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो कुर्बानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के खानदान का फ़र्द नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14जिस शख्स ने नादानिस्ता तौर पर मुकद्दस कुर्बानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15इमाम रब को पेश की हुई कुर्बानियों की मुकद्दस हालत यूँ खत्म न करें 16कि वह दूसरे इस्राईलियों को यह मुकद्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उन को बड़ा कुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ।”

### जानवरों की कुर्बानियों के बारे में हिदायात

17रब ने मूसा से कहा, 18“हारून, उस के बेटों और इस्राईलियों को बताना कि अगर तुम में से कोई इस्राईली या परदेसी रब को भस्म होने वाली कुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली खुशी से कर रहा हो। 19इस के लिए लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बकरा पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा। 20कुर्बानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न करना जिस में नुक्स हो, वर्ना तुम उस के बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे। 21अगर कोई रब को सलामती की कुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली खुशी से कर रहा हो। इस के लिए लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया जाएगा। 22रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो अंधे हों, जिन के आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिन को रसौली हो या जिन्हें

वबाई जिल्दी बीमारी लग गई हो। रब को उन्हें जलने वाली कुर्बानी के तौर पर कुर्बानगाह पर पेश न करना। 23लेकिन जिस गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी अजू में कमी बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह है कि पेश करने वाला उसे वैसे ही दिली खुशी से चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत मान कर पेश करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा। 24रब को ऐसा जानवर पेश न करना जिस के खुस्ये कुचले, तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों को इस तरह खसी न बनाना, 25न ऐसे जानवर किसी ग़ैरमुल्की से खरीद कर अपने खुदा की रोटी के तौर पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे, क्योंकि उन में खराबी और नुक्स है।”

26रब ने मूसा से यह भी कहा, 27“जब किसी गाय, भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो लाज़िम है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के पास रहे। आठवें दिन से पहले रब उसे जलने वाली कुर्बानी के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28किसी गाय, भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ समेत एक ही दिन ज़बह न करना। 29जब तुम रब को सलामती की कोई कुर्बानी चढ़ाना चाहते हो तो उसे यूँ पेश करना कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। 30अगली सुबह तक कुछ बचा न रहे बल्कि उसे उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।

31मेरे अहक़ाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ। 32मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम है कि मुझे इस्राईलियों के दरमियान कुद्दूस माना जाए। मैं रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करता हूँ। 33मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा खुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

**23** रब ने मूसा से कहा, 2“इस्राईलियों को बताना कि यह मेरी, रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुकद्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

### सबत का दिन

३हफ़ते में छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ काम न करना। यह दिन रब के लिए मख़्सूस सबत है।

### फ़सल की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

४यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

५फ़सल की ईद पहले महीने के चौथवें दिन शुरू होती है। उस दिन सूरज के गुरुब होने पर रब की खुशी मनाई जाए। ६अगले दिन रब की याद में बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन तक तुम्हारी रोटी में खमीर न हो। ७इन सात दिनों के पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें। ८इन सात दिनों में रोज़ाना रब को जलने वाली कुर्बानी पेश करो। सातवें दिन भी मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें।”

### पहले पूले की ईद

९रब ने मूसा से कहा, १०”इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा और वहाँ अनाज की फ़सल काटोगे तो तुम्हें इमाम को पहला पूला देना है। ११इत्वार को इमाम यह पूला रब के सामने हिलाए ताकि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। १२उस दिन भेड़ का एक यकसाला बेऐब बच्चा भी रब को पेश करना। उसे कुर्बानगाह पर भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर चढ़ाना। १३साथ ही ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल से मिलाया गया ३ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना। जलने वाली यह कुर्बानी रब को पसन्द है। इस के इलावा मै की नज़र के लिए एक लिटर मै भी पेश करना। १४पहले यह सब कुछ करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज से खाने की इजाज़त होगी, ख़्वाह वह भुना

हुआ हो, ख़्वाह कच्चा या रोटी की सूरत में पकाया गया हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

### हफ़्तों की ईद यानी पन्तिकुस्त

१५जिस दिन तुम ने अनाज का पूला पेश किया उस दिन से पूरे सात हफ़ते गिनो। १६पचासवें दिन यानी सातवें इत्वार को रब को नए अनाज की कुर्बानी चढ़ाना। १७हर घराने की तरफ़ से रब को हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर दो रोटियाँ पेश की जाएँ। हर रोटी के लिए ३ किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। उन में खमीर डाल कर पकाना है। यह फ़सल की पहली पैदावार की कुर्बानी हैं। १८इन रोटियों के साथ एक जवान बैल, दो मेंढे और भेड़ के सात बेऐब और यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें रब के हुज़ूर भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर चढ़ाना। इस के इलावा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश करनी है। जलने वाली इस कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है। १९फिर गुनाह की कुर्बानी के लिए एक बकरा और सलामती की कुर्बानी के लिए दो यकसाला भेड़ के बच्चे चढ़ाओ। २०इमाम भेड़ के यह दो बच्चे मज़क़ूर रोटियों समेत हिलाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह रब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं और कुर्बानियों में से इमाम का हिस्सा हैं। २१उसी दिन लोगों को मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे, और इसे हर जगह मानना है।

२२कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

### नए साल की ईद

23रब ने मूसा से कहा, 24“इसाईलियों को बताना कि सातवें महीने का पहला दिन आराम का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो जिस पर याद दिलाने के लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25कोई भी काम न करना। रब को जलने वाली कुर्बानी पेश करना।”

### कफ़ारा का दिन

26रब ने मूसा से कहा, 27“सातवें महीने का दसवाँ दिन कफ़ारा का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो। अपनी जान को दुख देना और रब को जलने वाली कुर्बानी पेश करना। 28उस दिन काम न करना, क्योंकि यह कफ़ारा का दिन है, जब रब तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारा कफ़ारा दिया जाता है। 29जो उस दिन अपनी जान को दुख नहीं देता उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए। 30जो उस दिन काम करता है उसे मैं उस की क्रौम में से निकाल कर हलाक करूँगा। 31कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद तक क्राइम रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32यह दिन आराम का खास दिन है जिस में तुम्हें अपनी जान को दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन की शाम से ले कर अगली शाम तक मनाना।”

### झोंपड़ियों की ईद

33रब ने मूसा से कहा, 34“इसाईलियों को बताना कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद शुरू होती है। इस का दौरानिया सात दिन है। 35पहले दिन मुकद्दस इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न करना। 36इन सात दिनों के दौरान रब को जलने वाली कुर्बानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुकद्दस इजतिमा हो। रब को जलने वाली कुर्बानी पेश करो। इस खास इजतिमा के दिन भी काम नहीं करना है।

37यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुकद्दस इजतिमा करना है ताकि रब को रोज़मर्रा

की मतलूबा जलने वाली कुर्बानियाँ और मै की नज़रें पेश की जाएँ यानी भस्म होने वाली कुर्बानियाँ, ग़ल्ला की नज़रें, ज़बह की कुर्बानियाँ और मै की नज़रें। 38यह कुर्बानियाँ उन कुर्बानियों के इलावा हैं जो सबत के दिन चढ़ाई जाती हैं और जो तुम ने हदिफे के तौर पर या मन्नत मान कर या अपनी दिली खुशी से पेश की हैं।

39चुनाँचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फ़सल की कटाई के इख़तिताम पर रब की यह ईद यानी झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन मनाना। पहला और आखिरी दिन आराम के दिन हैं। 40पहले दिन अपने लिए दरख़्तों के बेहतरीन फल, खजूर की डालियाँ और घने दरख़्तों और सफ़ेदा की शाखें तोड़ना। सात दिन तक रब अपने खुदा के सामने खुशी मनाओ। 41हर साल सातवें महीने में रब की खुशी में यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक क्राइम रहे। 42ईद के हफ़्ते के दौरान झोंपड़ियों में रहना। तमाम मुल्क में आबाद इसाईली ऐसा करें। 43फिर तुम्हारी औलाद जानेगी कि इसाईलियों को मिस्र से निकालते वक़्त मैं ने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

44मूसा ने इसाईलियों को रब की ईदों के बारे में यह बातें बताईं।

### रब के सामने शमादान और रोटियाँ

**24** रब ने मूसा से कहा, 2“इसाईलियों को हुक्म दे कि वह तेरे पास कूटे हुए जैतून का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें। 3हारून उन्हें मुसलसल, शाम से ले कर सुबह तक रब के हुज़ूर सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह मुकद्दसतरीन कमरे के पर्दे के सामने पड़े हैं, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे अहद का सन्दूक है। यह उसूल अबद तक क्राइम रहे। 4वह ख़ालिस सोने के शमादान पर लगे

चरागों की देख-भाल यूँ करे कि यह हमेशा रब के सामने जलते रहें।

<sup>5</sup>बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटि के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। <sup>6</sup>उन्हें दो क्रतारों में रब के सामने खालिस सोने की मेज़ पर रखना। <sup>7</sup>हर क्रतार पर खालिस लुबान डालना। यह लुबान रोटि के लिए यादगारी की कुर्बानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है। <sup>8</sup>हर हफ्ते को रब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी तरतीब से मेज़ पर रखनी हैं। यह इस्राईलियों के लिए अबदी अह्द की लाज़िमी शर्त है। <sup>9</sup>मेज़ की रोटियाँ हारून और उस के बेटों का हिस्सा हैं, और वह उन्हें मुकद्दस जगह पर खाएँ, क्योंकि वह जलने वाली कुर्बानियों का मुकद्दसतरीन हिस्सा हैं। यह अबद तक उन का हक़ रहेगा।”

### अल्लाह की तौहीन, ख़ूरेज़ी और ज़ख्मी करने की सज़ाएँ

<sup>10-11</sup>ख़ैमागाह में एक आदमी था जिस का बाप मिस्री और माँ इस्राईली थी। माँ का नाम सलूमीत था। वह दिव्री की बेटि और दान के क़बीले की थी। एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह में किसी इस्राईली से झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते उस ने रब के नाम पर कुफ़्र बक कर उस पर लानत भेजी। यह सुन कर लोग उसे मूसा के पास ले आए। <sup>12</sup>वहाँ उन्होंने उसे पहरें में बिठा कर रब की हिदायत का इन्तिज़ार किया।

<sup>13</sup>तब रब ने मूसा से कहा, <sup>14</sup>“लानत करने वाले को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ। जिन्होंने उस की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने हाथ उस के सर पर रखें। फिर पूरी जमाअत उसे संगसार करे। <sup>15</sup>इस्राईलियों से कहना कि जो भी अपने खुदा पर लानत भेजे उसे अपने कुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। <sup>16</sup>जो भी रब के नाम पर कुफ़्र बके उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे संगसार करे। जिस ने

रब के नाम पर कुफ़्र बका हो उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत देनी है, ख़वाह देसी हो या परदेसी।

<sup>17</sup>जिस ने किसी को मार डाला है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। <sup>18</sup>जिस ने किसी के जानवर को मार डाला है वह उस का मुआवज़ा दे। जान के बदले जान दी जाए। <sup>19</sup>अगर किसी ने किसी को ज़ख्मी कर दिया है तो वही कुछ उस के साथ किया जाए जो उस ने दूसरे के साथ किया है। <sup>20</sup>अगर दूसरे की कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए। अगर दूसरे की आँख ज़ाए हो जाए तो उस की आँख ज़ाए कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो उस का वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी ज़ख्म उस ने दूसरे को पहुँचाया वही ज़ख्म उसे पहुँचाया जाए। <sup>21</sup>जिस ने किसी जानवर को मार डाला है वह उस का मुआवज़ा दे, लेकिन जिस ने किसी इन्सान को मार दिया है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। <sup>22</sup>देसी और परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही क़ानून हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

<sup>23</sup>फिर मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और उन्होंने ने रब पर लानत भेजने वाले को ख़ैमागाह से बाहर ले जा कर उसे संगसार किया। उन्होंने ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

### ज़मीन के लिए सबत का साल

**25** रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो लाज़िम है कि रब की ताज़ीम में तुम्हें एक साल आराम करे। <sup>3</sup>छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना, अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना और उन की फ़सलें जमा करना। <sup>4</sup>लेकिन सातवाँ साल ज़मीन के लिए आराम का साल है, रब की ताज़ीम में सबत का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना, न अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना। <sup>5</sup>जो अनाज खुद-ब-



खुद उगता है उस की कटाई न करना और जो अंगूर उस साल लगते हैं उन को तोड़ कर जमा न करना, क्योंकि ज़मीन को एक साल के लिए आराम करना है।<sup>6</sup> अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम के साल में पैदा करेगी उस से तुम अपनी रोज़ाना की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे गुलाम और लौंडियाँ, तेरे मज़दूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहने वाले परदेसी, तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहने वाले जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा करती है वह खाया जा सकता है।

### बहाली का साल

<sup>8</sup>सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक और काम करना है।<sup>9</sup> पचासवें साल के सातवें महीने के दसवें दिन यानी कफ़रारा के दिन अपने मुल्क की हर जगह नरसिंगा बजाना।<sup>10</sup> पचासवाँ साल मख़सूस-ओ-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान करो कि तमाम बाशिन्दों को आज़ाद कर दिया जाए। यह बहाली का साल हो जिस में हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए और हर गुलाम को आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के पास वापस जा सके।<sup>11</sup> यह पचासवाँ साल बहाली का साल हो, इस लिए न अपने खेतों में बीज बोना, न खुद-ब-खुद उगने वाले अनाज की कटाई करना, और न अंगूर तोड़ कर जमा करना।<sup>12</sup> क्योंकि यह बहाली का साल है जो तुम्हारे लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस है। रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ।<sup>13</sup> बहाली के साल में हर शख़्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।

<sup>14</sup> चुनौचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई को ज़मीन बेचते या उस से ख़रीदते हो तो उस से नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना।<sup>15</sup> ज़मीन की क्रीमत इस हिसाब से मुकर्रर की जाए कि वह अगले बहाली के साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी।

<sup>16</sup> अगर बहुत साल रह गए हों तो उस की क्रीमत ज़्यादा होगी, और अगर कम साल रह गए हों तो उस की क्रीमत कम होगी। क्योंकि उन फ़सलों की तादाद बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर सकती है।

<sup>17</sup> अपने हमवतन से नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना बल्कि रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

<sup>18</sup> मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अहकाम को मान कर उन के मुताबिक़ चलना। तब तुम अपने मुल्क में मख़फ़ूज़ रहोगे।<sup>19</sup> ज़मीन अपनी पूरी पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे और मख़फ़ूज़ रहोगे।<sup>20</sup> हो सकता है कोई पूछे, 'हम सातवें साल में क्या खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं काटेंगे?'<sup>21</sup> जवाब यह है कि मैं छठे साल में ज़मीन को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन साल के लिए काफ़ी होगी।<sup>22</sup> जब तुम आठवें साल बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छठे साल की इतनी पैदावार बाक़ी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

### मौरूसी ज़मीन के हुक्क़

<sup>23</sup> कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए, क्योंकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो।<sup>24</sup> मुल्क में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

<sup>25</sup> अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मजबूर हो जाए तो लाज़िम है कि उस का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद ले।<sup>26</sup> हो सकता है कि ऐसे शख़्स का कोई क़रीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह खुद कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस

खरीद सकता है। <sup>27</sup>इस सूरत में वह हिसाब करे कि खरीदने वाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुकसान खरीदने वाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। <sup>28</sup>लेकिन अगर उस के पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक खरीदने वाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौरूसी मालिक को वापस दिया जाएगा।

<sup>29</sup>अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस खरीदने का हक़ सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। <sup>30</sup>अगर पहला मालिक उसे पहले साल के अन्दर अन्दर न खरीदे तो वह हमेशा के लिए खरीदने वाले की मौरूसी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

<sup>31</sup>लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिस की फ़सील न हो वह देहात में शुमार किया जाता है। उस के मौरूसी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस खरीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

<sup>32</sup>लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त खरीद सकते हैं जो उन के लिए मुक़र्रर किए हुए शहरों में हैं। <sup>33</sup>अगर ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न खरीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्योंकि लावी के जो घर उन के मुक़र्ररा शहरों में होते हैं वह इस्राईलियों में उन की मौरूसी मिलकियत हैं। <sup>34</sup>लेकिन जो ज़मीनें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़र्रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उन की दाइमी मिलकियत हैं।

### गरीबों के लिए क़र्ज़ा

<sup>35</sup>अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद

कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए ज़िन्दगी गुज़ार सके। <sup>36</sup>उस से किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। <sup>37</sup>अगर वह तेरा क़र्ज़दार हो तो उस से सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त उस से नफ़ा न लेना। <sup>38</sup>मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। मैं तुम्हें इस लिए मिस्र से निकाल लाया कि तुम्हें मुल्क-ए-कनआन दूँ और तुम्हारा खुदा हूँ।

### इस्राईली गुलामों के हुक्क

<sup>39</sup>अगर तेरा कोई इस्राईली भाई ग़रीब हो कर अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले तो उस से गुलाम का सा काम न कराना। <sup>40</sup>उस के साथ मज़दूर या ग़ैरशहरी का सा सुलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। <sup>41</sup>फिर वह और उस के बाल-बच्चे आज़ाद हो कर अपने रिश्तेदारों और मौरूसी ज़मीन के पास वापस जाएँ। <sup>42</sup>चूँकि इस्राईली मेरे खादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया इस लिए उन्हें गुलामी में न बेचा जाए। <sup>43</sup>ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना।

<sup>44</sup>तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए गुलाम और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। <sup>45</sup>जो परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें भी तुम खरीद सकते हो। उन में वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिलकियत बन कर <sup>46</sup>तुम्हारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे गुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

<sup>47</sup>अगर तेरे मुल्क में रहने वाला कोई परदेसी या ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या ग़ैरशहरी या उस के

खानदान के किसी फ़र्द को बेच डाले <sup>48</sup>तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी ख़रीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, <sup>49</sup>चचा, ताया, चचा या ताया का बेटा या कोई और क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद सकता है। वह खुद भी अपनी आज़ादी ख़रीद सकता है अगर उस के पास पैसे काफ़ी हों। <sup>50</sup>इस सूरत में वह अपने मालिक से मिल कर वह साल गिने जो उस के ख़रीदने से ले कर अगले बहाली के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस क़ीमत पर मन्बी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए दिए जाते हैं। <sup>51-52</sup>जितने साल बाक़ी रह गए हैं उन के मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। <sup>53</sup>उस के साथ साल-ब-साल मज़दूर का सा सुलूक किया जाए। उस का मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। <sup>54</sup>अगर वह इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद न हो जाए तो उसे और उस के बच्चों को हर हालत में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है, <sup>55</sup>क्योंकि इस्राईली मेरे ही खादिम हैं। वह मेरे ही खादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

### फ़रमाँबरदारी का अञ्च

**26** अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़मूस किए हुए सतून खड़े करना, न सिज्दा करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिन में देवता की तस्वीर कन्दा की गई हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>2</sup>सबत का दिन मनाना और मेरे मक्बिदस की ताज़ीम करना। मैं रब हूँ।

<sup>3</sup>अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे अहक़ाम मान कर उन पर अमल करो <sup>4</sup>तो मैं वक़्त पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। <sup>5</sup>कस्रत के बाइस अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते वक़्त तक जारी

रहेगी और अंगूर की फ़सल उस वक़्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में मट्फूज़ रहोगे।

<sup>6</sup>मैं मुल्क को अम्न-ओ-अमान बख़्शूँगा। तुम आराम से लेट जाओगे, क्योंकि किसी ख़तरे से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तलवार की क़त्ल-ओ-ग़ारत से बचा रहेगा। <sup>7</sup>तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ कर उन का ताक्कुब करोगे, और वह तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे। <sup>8</sup>तुम्हारे पाँच आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उन के दस हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तलवार से मारे जाएंगे।

<sup>9</sup>मेरी नज़र-ए-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना अहद क़ाइम रखूँगा। <sup>10</sup>एक साल इतनी फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की खातिर पुराने अनाज को फैंक देना पड़ेगा। <sup>11</sup>मैं तुम्हारे दरमियान अपना मस्कन क़ाइम करूँगा और तुम से घिन नहीं खाऊँगा। <sup>12</sup>मैं तुम में फिर्रूँगा, और तुम मेरी क़ौम होगे।

<sup>13</sup>मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि तुम्हारी गुलामी की हालत ख़त्म हो जाए। मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद और सीधे हो कर चल सकते हो।

### फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

<sup>14</sup>लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम अहक़ाम पर नहीं चलोगे, <sup>15</sup>अगर तुम मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अहक़ाम से घिन खाओगे और उन पर अमल न करके मेरा अहद तोड़ोगे <sup>16</sup>तो मैं जवाब में तुम पर अचानक दहशत तारी कर दूँगा। जिस्म को

खत्म करने वाली बीमारियों और बुखार से तुम्हारी आँखें ज़ाए हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी। जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ाइनदा, क्योंकि दुश्मन उस की फ़सल खा जाएगा। 17 मैं तुम्हारे खिलाफ़ हो जाऊँगा, इस लिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ से शिकस्त खाओगे। तुम से नफ़रत रखने वाले तुम पर हुकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा ताक़्क़ुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।

18 अगर तुम इस के बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 19 मैं तुम्हारा सख़्त गुरूर खाक में मिला दूँगा। तुम्हारे ऊपर आसमान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन पीतल जैसी होगी। 20 जितनी भी मेहनत करोगे वह बेफ़ाइनदा होगी, क्योंकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं पकेँगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।

21 अगर तुम फिर भी मेरी मुखालफ़त करोगे और मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें इस से भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 22 मैं तुम्हारे खिलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बर्बाद कर देंगे। आख़िर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि तुम्हारी सड़के वीरान हो जाएँगी।

23 अगर तुम फिर भी मेरी तर्बियत क़बूल न करो बल्कि मेरे मुखालिफ़ रहो 24 तो मैं खुद तुम्हारे खिलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25 मैं तुम पर तलवार चला कर इस का बदला लूँगा कि तुम ने मेरे अहद को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों में भाग कर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दरमियान वबाई बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा। 26 अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और वह उसे बड़ी एहतियात से

तोल तोल कर तक्रसीम करेंगी। तुम खा कर भी भूके रहोगे।

27 अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे मुखालिफ़ रहोगे 28 तो मेरा गुस्सा भड़केगा और मैं तुम्हारे खिलाफ़ हो कर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29 तुम मुसीबत के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोशत खाओगे। 30 मैं तुम्हारी ऊँची जगहों की कुर्बानगाहें और तुम्हारी बख़ूर की कुर्बानगाहें बर्बाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और तुम से घिन खाऊँगा। 31 मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात में बदल कर तुम्हारे मन्दिरों को बर्बाद करूँगा। तुम्हारी कुर्बानियों की खुशबू मुझे पसन्द नहीं आएगी। 32 मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यूँ करूँगा कि जो दुश्मन उस में आबाद हो जाएँगे उन के रोंगटे खड़े हो जाएँगे। 33 मैं तुम्हें मुख्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएँगे। 34 उस वक़्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल मना सकेगी जिन से वह महरूम रही है। 35 उन तमाम दिनों में जब वह बर्बाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।

36 तुम में से जो बच कर अपने दुश्मनों के ममालिक में रहेंगे उन के दिलों पर मैं दशत तारी करूँगा। वह हवा के झोंकों से गिरने वाले पत्ते की आवाज़ से चौंक कर भाग जाएँगे। वह फ़रार होंगे गोया कोई हाथ में तलवार लिए उन का ताक़्क़ुब कर रहा हो। और वह गिर कर मर जाएँगे हालाँकि कोई उन का पीछा नहीं कर रहा होगा। 37 वह एक दूसरे से टकरा कर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार ले कर उन के पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चुनाँचे तुम अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38 तुम दीगर क़ौमों में मुन्तशिर हो

कर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हड़प कर लेगी।

<sup>39</sup>तुम में से बाक़ी लोग अपने और अपने बापदादा के कुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में गल सड़ जाएंगे। <sup>40</sup>लेकिन एक वक़्त आएगा कि वह अपने और अपने बापदादा का कुसूर मान लेंगे। वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई और वह मुखालफ़त तस्लीम करेंगे <sup>41</sup>जिस के सबब से मैं उन के खिलाफ़ हुआ और उन्हें उन के दुश्मनों के मुल्क में धकेल दिया था। पहले उन का ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर हुआ था, लेकिन अब उन का दिल आजिज़ हो जाएगा और वह अपने कुसूर की क़ीमत अदा करेंगे। <sup>42</sup>फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अहद, इस्हाक़ के साथ अपना अहद और याक़ूब के साथ अपना अहद याद करूँगा। मैं मुल्क-ए-कनआन भी याद करूँगा। <sup>43</sup>लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उन की ग़ैरमौजूदगी में वीरान हो कर आराम के साल मनाए। यूँ इस्राईली अपने कुसूर के नतीजे भुगतेंगे, इस सबब से कि उन्होंने मेरे अहक़ाम रद्द किए और मेरी हिदायात से घिन खाई। <sup>44</sup>इस के बावजूद भी मैं उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़ कर रद्द नहीं करूँगा, न यहाँ तक उन से घिन खाऊँगा कि वह बिलकुल तबाह हो जाएँ। क्योंकि मैं उन के साथ अपना अहद नहीं तोड़ने का। मैं रब उन का खुदा हूँ। <sup>45</sup>मैं उन की खातिर उन के बापदादा के साथ बंधा हुआ अहद याद करूँगा, उन लोगों के साथ अहद जिन्हें मैं दूसरी क़ौमों के देखते देखते मिस्र से निकाल लाया ताकि उन का खुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

<sup>46</sup>रब ने मूसा को इस्राईलियों के लिए यह तमाम हिदायात और अहक़ाम सीना पहाड़ पर दिए।

### मख़सूस की हुई चीज़ों की वापसी

**27** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों को बताना कि अगर किसी ने

मन्नत मान कर किसी को रब के लिए मख़सूस किया हो तो वह उसे ज़ैल की रक़म दे कर आज़ाद कर सकता है (मुस्तामल सिक्के मख़दिस के सिक्कों के बराबर हों) : <sup>3</sup>उस आदमी के लिए जिस की उम्र 20 और 60 साल के दरमियान है चाँदी के 50 सिक्के, <sup>4</sup>इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, <sup>5</sup>उस लड़के के लिए जिस की उम्र 5 और 20 साल के दरमियान हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 10 सिक्के, <sup>6</sup>एक माह से ले कर 5 साल तक के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, <sup>7</sup>साठ साल से बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।

<sup>8</sup>अगर मन्नत मानने वाला मुकर्ररा रक़म अदा न कर सके तो वह मख़सूस किए हुए शख्स को इमाम के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रक़म मुकर्रर करे जो मन्नत मानने वाला अदा कर सके।

<sup>9</sup>अगर किसी ने मन्नत मान कर ऐसा जानवर मख़सूस किया जो रब की कुर्बानियों के लिए इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाता है। <sup>10</sup>वह उसे बदल नहीं सकता। न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाते हैं।

<sup>11</sup>अगर किसी ने मन्नत मान कर कोई नापाक जानवर मख़सूस किया जो रब की कुर्बानियों के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उस को इमाम के पास ले आए। <sup>12</sup>इमाम उस की रक़म उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुकर्रर करे। इस मुकर्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। <sup>13</sup>अगर मन्नत मानने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे

तो वह मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

14 अगर कोई अपना घर रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके उस की रक़म मुकर्रर करे। इस मुकर्ररा क्रीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 15 अगर घर को मख्सूस करने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुकर्ररा रक़म जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

16 अगर कोई अपनी मौरूसी ज़मीन में से कुछ रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस करे तो उस की क्रीमत उस बीज की मिक्कदार के मुताबिक़ मुकर्रर की जाए जो उस में बोना होता है। जिस खेत में 135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क्रीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17 शर्त यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मख्सूस करे। फिर उस की यही क्रीमत मुकर्रर की जाए। 18 अगर ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद मख्सूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क्रीमत मुकर्रर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी कम उस की क्रीमत होगी। 19 अगर मख्सूस करने वाला अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे। 20 अगर मख्सूस करने वाला अपनी ज़मीन को रब से वापस ख़रीदे बग़ैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस ख़रीदने का हक़ ख़त्म हो जाएगा। 21 अगले बहाली के साल यह ज़मीन मख्सूस-ओ-मुकद्दस रहेगी और रब की दाइमी मिलकियत हो जाएगी। चुनाँचे वह इमाम की मिलकियत होगी।

22 अगर कोई अपना मौरूसी खेत नहीं बल्कि अपना ख़रीदा हुआ खेत रब के लिए मख्सूस करे 23 तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले सालों का लिहाज़ करके उस की क्रीमत मुकर्रर करे। खेत का मालिक

उसी दिन उस के पैसे अदा करे। यह पैसे रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस होंगे। 24 बहाली के साल में यह खेत उस शख्स के पास वापस आएगा जिस ने उसे बेचा था।

25 वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मक्क़िदिस के सिक्कों के बराबर हों। उस के चाँदी के सिक्कों का वज़न 11 ग्राम है।

26 लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब के लिए मख्सूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से रब के लिए मख्सूस है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27 अगर उस ने कोई नापाक जानवर मख्सूस किया हो तो वह उसे मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए वापस ख़रीद सकता है। अगर वह उसे वापस न ख़रीदे तो वह मुकर्ररा क्रीमत के लिए बेचा जाए।

28 लेकिन अगर किसी ने अपनी मिलकियत में से कुछ ग़ैरमशरूत तौर पर रब के लिए मख्सूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं ख़रीदा जा सकता, ख़वाह वह इन्सान, जानवर या ज़मीन हो। जो इस तरह मख्सूस किया गया हो वह रब के लिए निहायत मुकद्दस है। 29 इसी तरह जिस शख्स को तबाही के लिए मख्सूस किया गया है उस का फ़िद्या नहीं दिया जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

30 हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस है। 31 अगर कोई अपनी फ़सल का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इस के लिए उस की मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ़ीसद दे। 32 इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुज़रेगा। 33 यह जानवर चुनने से पहले उन का मुआइना न किया जाए कि कौन से जानवर अच्छे या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवें हिस्से के किसी जानवर के बदले कोई

और जानवर दिया जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों जानवर रब के लिए मखमूस-ओ-मुकद्दस होंगे। और उन्हें वापस खरीदा नहीं जा सकता।”

<sup>34</sup>यह वह अहकाम हैं जो रब ने सीना पहाड़ पर मूसा को इस्राईलियों के लिए दिए।

---

# गिनती

---

## इसाईलियों की पहली मर्दुमशुमारी

**1** इसाईलियों को मिस्र से निकले हुए एक साल से ज़्यादा अर्सा गुज़र गया था। अब तक वह दशत-ए-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने के पहले दिन रब मुलाक्रात के ख़ैमे में मूसा से हमकलाम हुआ। उस ने कहा,  
2“तू और हारून तमाम इसाईलियों की मर्दुमशुमारी कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना 3जो कम अज़ कम बीस साल के और जंग लड़ने के क़ाबिल हों। 4इस में हर क़बीले के एक ख़ानदान का सरपरस्त तुम्हारी मदद करे। 5यह उन के नाम हैं :

रूबिन के क़बीले से इलीसूर बिन शदियूर,  
6शमाऊन के क़बीले से सलूमीएल बिन सूरीशद्दी,

7यहूदाह के क़बीले से नह्सोन बिन अम्मीनदाब,

8इश्कार के क़बीले से नतनीएल बिन जुग़ार,

9ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,

10यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले से इलीसमा बिन अम्मीहूद,

यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जमलीएल बिन फ़दाह्सूर,

11बिनयमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदाऊनी,

12दान के क़बीले से अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी,

13आशर के क़बीले से फ़जईएल बिन अक्रान,

14जद के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,

15नफ़ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन एनान।”

16यही मर्द जमाअत से इस काम के लिए बुलाए गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंभों के सरपरस्त थे। 17इन की मदद से मूसा और हारून ने 18उसी दिन पूरी जमाअत को इकट्ठा किया। हर इसाईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तरतीब उन के कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक़ थी।

19सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने हुक़म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की मर्दुमशुमारी की। नतीजा यह निकला :

20-21रूबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,

22-23शमाऊन के क़बीले के 59,300 मर्द,

24-25जद के क़बीले के 45,650 मर्द,

26-27यहूदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,

28-29इश्कार के क़बीले के 54,400 मर्द,

30-31ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,



32-33 यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले के 40,500 मर्द,

34-35 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के 32,200 मर्द,

36-37 बिनयमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,

38-39 दान के क़बीले के 62,700 मर्द,

40-41 आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,

42-43 नफ़ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।

44 मूसा, हारून और क़बीलों के बारह राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना।  
45-46 उन की पूरी तादाद 6,03,550 थी।

47 लेकिन लावियों की मर्दुमशुमारी न हुई, 48 क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, 49 "इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी में लावियों को शामिल न करना। 50 इस के बजाए उन्हें शरीअत की सुकूनतगाह और उस का सारा सामान सँभालने की ज़िम्मादारी देना। वह सफ़र करते वक़्त यह ख़ैमा और उस का सारा सामान उठा कर ले जाएँ, उस की खिदमत के लिए हाज़िर रहें और रुकते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से घेरे रखें। 51 रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें और रुकते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई और उस के क़रीब आए तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी। 52 बाक़ी इस्राईली ख़ैमागाह में अपने अपने दस्ते के मुताबिक़ और अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाएँ। 53 लेकिन लावी अपने ख़ैमों से शरीअत की सुकूनतगाह को घेर लें ताकि मेरा ग़ज़ब किसी ग़लत शख्स के नफ़्दीक़ आने से इस्राईलियों की जमाअत पर नाज़िल न हो जाए। यूँ लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह को सँभालना है।"

54 इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

### ख़ैमागाह में क़बीलों की तरतीब

2 रब ने मूसा और हारून से कहा 2कि इस्राईली अपने ख़ैमे कुछ फ़ासिले पर मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक

अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने के निशान के साथ ख़ैमाज़न हो।

3 इन हिदायात के मुताबिक़ मक्दि़स के मशरि़क़ में यहूदाह का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, यहूदाह का क़बीला जिस का कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था, 4 और जिस के लश्कर के 74,600 फ़ौजी थे। 5 दूसरे, इश्कार का क़बीला जिस का कमाँडर नतनीएल बिन जुगार था, 6 और जिस के लश्कर के 54,400 फ़ौजी थे। 7 तीसरे, ज़बूलून का क़बीला जिस का कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था 8 और जिस के लश्कर के 57,400 फ़ौजी थे। 9 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,86,400 थी। रवाना होते वक़्त यह आगे चलते थे।

10 मक्दि़स के जुनूब में रूबिन का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, रूबिन का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था, 11 और जिस के 46,500 फ़ौजी थे। 12 दूसरे, शमाऊन का क़बीला जिस का कमाँडर सलूमीएल बिन सूरीशद्दी था, 13 और जिस के 59,300 फ़ौजी थे। 14 तीसरे, जद का क़बीला जिस का कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था, 15 और जिस के 45,650 फ़ौजी थे। 16 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,51,450 थी। रवाना होते वक़्त यह मशरि़की क़बीलों के पीछे चलते थे।

17 इन जुनूबी क़बीलों के बाद लावी मुलाक़ात का ख़ैमा उठा कर क़बीलों के ऐन बीच में चलते थे। क़बीले उस तरतीब से रवाना होते थे जिस तरतीब से वह अपने ख़ैमे लगाते थे। हर क़बीला अपने अलम के पीछे चलता था।

18 मक्दि़स के मगरिब में इफ़्राईम का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, इफ़्राईम का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था, 19 और जिस के 40,500 फ़ौजी थे। 20 दूसरे, मनस्सी का

क्रबीला जिस का कमाँडर जमलीएल बिन फ़दाह्सूर था, <sup>21</sup>और जिस के 32,200 फ़ौजी थे। <sup>22</sup>तीसरे, बिनयमीन का क्रबीला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था, <sup>23</sup>और जिस के 35,400 फ़ौजी थे। <sup>24</sup>तीनों क्रबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी क्रबीलों के पीछे चलते थे।

<sup>25</sup>मक्दि़स के शिमाल में दान का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, दान का क्रबीला जिस का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशदी था, <sup>26</sup>और जिस के 62,700 फ़ौजी थे। <sup>27</sup>दूसरे, आशर का क्रबीला जिस का कमाँडर फ़जईएल बिन अक्रान था, <sup>28</sup>और जिस के 41,500 फ़ौजी थे। <sup>29</sup>तीसरे, नफ़्ताली का क्रबीला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था, <sup>30</sup>और जिस के 53,400 फ़ौजी थे। <sup>31</sup>तीनों क्रबीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आख़िर में अपना अलम उठा कर रवाना होते थे।

<sup>32</sup>पूरी ख़ैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी। <sup>33</sup>सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्योंकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उन की भर्ती न की जाए।

<sup>34</sup>यूँ इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उन के मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे लगाते थे और उन के मुताबिक़ ही अपने कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

### हारून के बेटे

**3** यह हारून और मूसा के खानदान का बयान है। उस वक़्त का ज़िक़्र है जब रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से बात की। <sup>2</sup>हारून के चार बेटे थे। बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलीअज़र और इतमर। <sup>3</sup>यह इमाम थे जिन को मसह करके इस ख़िदमत

का इख़तियार दिया गया था। <sup>4</sup>लेकिन नदब और अबीहू उस वक़्त मर गए जब उन्होंने ने दशत-ए-सीना में रब के हुज़ूर नाजाइज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद थे इस लिए हारून के जीते जी सिर्फ़ इलीअज़र और इतमर इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।

### लावियों की मक्दि़स में ज़िम्मादारी

<sup>5</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>6</sup>“लावी के क्रबीले को ला कर हारून की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी दे। <sup>7</sup>उन्हें उस के लिए और पूरी जमाअत के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमात सँभालना है। <sup>8</sup>वह मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम इस्राईलियों के लिए मक्दि़स के फ़राइज़ अदा करें। <sup>9</sup>तमाम इस्राईलियों में से सिर्फ़ लावियों को हारून और उस के बेटों की ख़िदमत के लिए मुकर्रर कर। <sup>10</sup>लेकिन सिर्फ़ हारून और उस के बेटों को इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में से उन की ज़िम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ा-ए-मीत दी जाएगी।”

<sup>11</sup>रब ने मूसा से यह भी कहा, <sup>12</sup>“मैं ने इस्राईलियों में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इस्राईली पहलौठों के इवज़ मेरे लिए मख़सूस हैं, <sup>13</sup>क्योंकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैं ने मिस्र में तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैं ने इस्राईल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूस किया, ख़्वाह वह इन्सान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।”

### लावियों की मर्दुमशुमारी

<sup>14</sup>रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा, <sup>15</sup>“लावियों को गिन कर उन के आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे को गिनना है जो एक माह या इस से ज़ाइद का है।” <sup>16</sup>मूसा ने ऐसा ही किया।

17लावी के तीन बेटे जैसॉन, क्रिहात और मिरारी थे। 18जैसॉन के दो कुंभे उस के बेटों लिब्नी और सिमई के नाम रखते थे। 19क्रिहात के चार कुंभे उस के बेटों अग्राम, इज़हार, हब्रून और उज़्ज़ीएल के नाम रखते थे। 20मिरारी के दो कुंभे उस के बेटों महली और मूशी के नाम रखते थे। गरज़ लावी के क़बीले के कुंभे उस के पोतों के नाम रखते थे।

21जैसॉन के दो कुंभों बनाम लिब्नी और सिमई 22के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे। 23उन्हें अपने ख़ैमे मगरिब में मक्दिस के पीछे लगाने थे। 24उन का राहनुमा इलियासफ़्र बिन लाएल था, 25और वह ख़ैमे को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 26ख़ैमे और कुर्बानगाह की चारदीवारी के पर्दे, चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी खिदमत उन की ज़िम्मादारी थी।

27क्रिहात के चार कुंभों बनाम अग्राम, इज़हार, हब्रून और उज़्ज़ीएल 28के 8,600 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे और जिन को मक्दिस की खिदमत करनी थी। 29उन्हें अपने डेरे मक्दिस के जुनूब में डालने थे। 30उन का राहनुमा इलीसफ़्रन बिन उज़्ज़ीएल था, 31और वह यह चीज़ें सँभालते थे : अहद का सन्दूक, मेज़, शमादान, कुर्बानगाहें, वह बर्तन और साज़-ओ-सामान जो मक्दिस में इस्तेमाल होता था और मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी खिदमत उन की ज़िम्मादारी थी। 32हारून इमाम का बेटा इलीअज़र लावियों के तमाम राहनुमाओं पर मुकर्र था। वह उन तमाम लोगों का इंचार्ज था जो मक्दिस की देख-भाल करते थे।

33मिरारी के दो कुंभों बनाम महली और मूशी 34के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे। 35उन का राहनुमा सूरीएल बिन अबीख़ैल था। उन्हें अपने डेरे मक्दिस के शिमाल में डालने थे, 36और वह यह चीज़ें

सँभालते थे : ख़ैमे के तख़्ते, उस के शहतीर, खम्बे, पाए और इस तरह का सारा सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी खिदमत उन की ज़िम्मादारी थी। 37वह चारदीवारी के खम्बे, पाए, मेखें और रस्से भी सँभालते थे।

38मूसा, हारून और उन के बेटों को अपने डेरे मशरिक़ में मक्दिस के सामने डालने थे। उन की ज़िम्मादारी मक्दिस में बनी इस्राईल के लिए खिदमत करना थी। उन के इलावा जो भी मक्दिस में दाख़िल होने की कोशिश करता उसे सज़ा-ए-मौत देनी थी।

39उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे 22,000 थी। रब के कहने पर मूसा और हारून ने उन्हें कुंभों के मुताबिक़ गिन कर रजिस्टर में दर्ज किया।

### लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के इवज़ी हैं

40रब ने मूसा से कहा, "तमाम इस्राईली पहलौठों को गिनना जो एक माह या इस से ज़ाइद के हैं और उन के नाम रजिस्टर में दर्ज करना। 41उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे लिए मख़सूस करना। इसी तरह इस्राईलियों के मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए मख़सूस करना। मैं रब हूँ।" 42मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने उसे हुक्म दिया। उस ने तमाम इस्राईली पहलौठे 43जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे गिन लिए। उन की कुल तादाद 22,273 थी।

44रब ने मूसा से कहा, 45"मुझे तमाम इस्राईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश करना। इसी तरह मुझे इस्राईलियों के मवेशियों की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी मेरे ही हैं। मैं रब हूँ। 46लावियों की निस्बत बाक़ी इस्राईलियों के 273 पहलौठे ज़यादा हैं। उन में से 47हर एक के इवज़ चाँदी के पाँच सिक्के ले जो मक्दिस के वज़न के मुताबिक़

हों (फ़ी सिक्का तक़रीबन 11 ग्राम)। <sup>48</sup>यह पैसे हारून और उस के बेटों को देना।”

<sup>49</sup>मूसा ने ऐसा ही किया। <sup>50</sup>यूँ उस ने चाँदी के 1,365 सिक्के (तक़रीबन 16 किलोग्राम) जमा करके <sup>51</sup>हारून और उस के बेटों को दिए, जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

### क्रिहातियों की ज़िम्मादारियाँ

**4** रब ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup>“लावी के क़बीले में से क्रिहातियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। <sup>3</sup>उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में खिदमत करने के लिए आ सकते हैं। <sup>4</sup>क्रिहातियों की खिदमत मुक़द्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।

<sup>5</sup>जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हारून और उस के बेटे दाख़िल हो कर मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा उतारें और उसे शरीअत के सन्दूक पर डाल दें। <sup>6</sup>इस पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़ और आख़िर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इस के बाद वह सन्दूक को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

<sup>7</sup>वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। <sup>8</sup>हारून और उस के बेटे इन तमाम चीज़ों पर क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा बिछा कर आख़िर में उन के ऊपर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें। इस के बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

<sup>9</sup>वह शमादान और उस के सामान पर यानी उस के चरागा, बत्ती कतरने की क़ैचियों, जलते कोएले के छोटे बर्तनों और तेल के बर्तनों पर नीले रंग का कपड़ा रखें। <sup>10</sup>यह सब कुछ वह

तख़स की खालों के ग़िलाफ़ में लपेटें और उसे उठा कर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

<sup>11</sup>वह बख़ूर जलाने की सोने की कुर्बानगाह पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछा कर उस पर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और फिर उसे उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ। <sup>12</sup>वह सारा सामान जो मुक़द्दस कमरे में इस्तेमाल होता है ले कर नीले रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें और उसे उठा कर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

<sup>13</sup>फिर वह जानवरों को जलाने की कुर्बानगाह को राख से साफ़ करके उस पर अर्ग़वानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। <sup>14</sup>उस पर वह कुर्बानगाह की खिदमत के लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काओ के कटोरे, जलते हुए कोएले के बर्तन, बेलचे और काँटे। इस सामान पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डाल कर कुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

<sup>15</sup>सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ उठा कर ले जाना क्रिहातियों की ज़िम्मादारी है। लेकिन लाज़िम है कि पहले हारून और उस के बेटे यह तमाम मुक़द्दस चीज़ें ढाँपें। क्रिहाती इन में से कोई भी चीज़ न छुएँ वरना मर जाएंगे।

<sup>16</sup>हारून इमाम का बेटा इलीअज़र पूरे मुक़द्दस ख़ैमे और उस के सामान का इंचार्ज हो। इस में चरागों का तेल, बख़ूर, ग़ल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल भी शामिल है।”

<sup>17</sup>रब ने मूसा और हारून से कहा, <sup>18</sup>“ख़बरदार रहो कि क्रिहात के कुंबे लावी के क़बीले में से मिटने न जाएँ। <sup>19</sup>चुनाँचे जब वह मुक़द्दसतरीन चीज़ों के पास आएँ तो हारून और उस के बेटे हर एक को उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठा कर ले जाना है ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें। <sup>20</sup>क्रिहाती एक लम्हे के लिए भी मुक़द्दस चीज़ें देखने के लिए अन्दर न जाएँ, वरना वह मर जाएंगे।”

### जैसोनियों की ज़िम्मादारियाँ

21 फिर रब ने मूसा से कहा, 22 "जैसोन की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना। 23 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और मुलाक्रात के ख़ैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं। 24 वह यह चीज़ें उठा कर ले जाने के ज़िम्मादार हैं : 25 मुलाक्रात का ख़ैमा, उस की छत, छत पर रखी हुई तख़स की खाल की पोशिश, ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 26 ख़ैमे और कुर्बानगाह की चारदीवारी के पर्दे, चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा, उस के रस्से और उसे लगाने का बाक़ी सामान। वह उन तमाम कामों के ज़िम्मादार हैं जो इन चीज़ों से मुन्सलिक हैं। 27 जैसोनियों की पूरी खिदमत हारून और उस के बेटों की हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठा कर ले जाएँ। 28 यह सब मुलाक्रात के ख़ैमे में जैसोनियों की ज़िम्मादारियाँ हैं। इस काम में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर है।"

### मिरारियों की ज़िम्मादारियाँ

29 रब ने कहा, "मिरारी की औलाद की मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक़ करना। 30 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और मुलाक्रात के ख़ैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं। 31 वह मुलाक्रात के ख़ैमे की यह चीज़ें उठा कर ले जाने के ज़िम्मादार हैं : दीवार के तख़ते, शहतीर, खम्बे और पाए, 32 फिर ख़ैमे की चारदीवारी के खम्बे, पाए, मेखें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक को तफ़सील से बताना कि वह क्या क्या उठा कर ले जाए। 33 यह सब कुछ मिरारियों की मुलाक्रात के ख़ैमे में ज़िम्मादारियों में शामिल है। इस काम

में हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर हो।"

### लावियों की मर्दुमशुमारी

34 मूसा, हारून और जमाअत के राहनुमाओं ने किहातियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की। 35-37 उन्होंने ने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से ले कर 50 साल के थे और जो मुलाक्रात के ख़ैमे में खिदमत कर सकते थे। उन की कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था। 38-41 फिर जैसोनियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। खिदमत के लाइक़ मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 42-45 फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। खिदमत के लाइक़ मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 46-48 लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाक्रात के ख़ैमे में खिदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठा कर ले जाना था।

49 मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक को उस की अपनी अपनी ज़िम्मादारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठा कर ले जाना है। यूँ उन की मर्दुमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई जो उस ने मूसा की मारिफ़त दिया था।

### नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

5 रब ने मूसा से कहा, 2 "इसाईलियों को हुक्म दे कि हर उस शख़्स को ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिस को वबाई जिल्दी बीमारी है, जिस के ज़ख़मों से माए

निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है।<sup>3</sup> ख्वाह मर्द हो या औरत, सब को खैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह खैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।”<sup>4</sup> इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक इस तरह के तमाम लोगों को खैमागाह से बाहर कर दिया।

### गलत काम का मुआवज़ा

<sup>5</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>6</sup>“इस्राईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से गलत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और कुसूरवार है, ख्वाह मर्द हो या औरत।<sup>7</sup> लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम करे और उस का पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख्स का नुक़सान पूरा करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़यादा दे।<sup>8</sup> लेकिन अगर वह शख्स जिस का कुसूर किया गया था मर चुका हो और उस का कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के इलावा मिलेगा जो कुसूरवार अपने कफ़्रारा के लिए देगा।<sup>9-10</sup> नीज़ इमाम को इस्राईलियों की कुर्बानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।”

### ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

<sup>11</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>12</sup>“इस्राईलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटक कर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और <sup>13</sup>किसी और से हमबिसतर हो कर नापाक हो जाए। उस के शौहर ने उसे नहीं देखा, क्योंकि यह पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इस का कोई गवाह है। <sup>14</sup>अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक

हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक्रीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी कुसूरवार है कि नहीं <sup>15</sup>तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए कुर्बानी के तौर पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्योंकि गल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिस का मक्दसद है कि पोशीदा कुसूर ज़ाहिर हो जाए। <sup>16</sup>इमाम औरत को करीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे। <sup>17</sup>वह मिट्टी का बर्तन मुक़द्दस पानी से भर कर उस में मक्दिस के फ़र्श की कुछ खाक डाले। <sup>18</sup>फिर वह औरत को रब को पेश करके उस के बाल खुलवाए और उस के हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बर्तन हो जो लानत का बाइस है।

<sup>19</sup>फिर वह औरत को क्रसम खिला कर कहे, ‘अगर कोई और आदमी आप से हमबिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो। <sup>20</sup>लेकिन अगर आप भटक कर अपने शौहर से बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर हो कर नापाक हो गई हैं <sup>21</sup>तो रब आप को आप की क्रौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ और आप का पेट फूल जाए। <sup>22</sup>जब लानत का यह पानी आप के पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ और आप का पेट फूल जाए।’ इस पर औरत कहे, ‘आमीन, ऐसा ही हो।’

<sup>23</sup>फिर इमाम यह लानत लिख कर कागज़ को बर्तन के पानी में यूँ धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें पानी में घुल जाएँ। <sup>24</sup>बाद में वह औरत को यह पानी पिलाए ताकि वह उस के जिस्म में जा कर उसे लानत पहुँचाए। <sup>25</sup>लेकिन पहले इमाम उस के हाथों में से ग़ैरत की कुर्बानी ले कर उसे गल्ला की नज़र के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर कुर्बानगाह के पास ले आए। <sup>26</sup>उस पर वह मुट्टी भर

यादगारी की कुर्बानी के तौर पर जलाए। इस के बाद वह औरत को पानी पिलाए।<sup>27</sup> अगर वह अपने शौहर से बेवफ़ा थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उस का पेट फूल जाएगा और वह अपनी क्रौम के सामने लानती ठहरेगी।<sup>28</sup> लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने के क़ाबिल रहेगी।

<sup>29-30</sup> चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर ग़ैरत खाए और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो। बीवी को कुर्बानिगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम यह सब कुछ करे।<sup>31</sup> इस सूत में शौहर बेक़ूसूर ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाक़ई ज़िना किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।”

### जो अपने आप को मख़सूस करते हैं

**6** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों को हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या औरत मन्नत मान कर अपने आप को एक मुकर्ररा वक़्त के लिए रब के लिए मख़सूस करे <sup>3</sup>तो वह मैं या कोई और नशाआवर चीज़ न पिए। न वह अंगूर या किसी और चीज़ का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह अंगूर या किशमिश न खाए। <sup>4</sup>जब तक वह मख़सूस है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए, यहाँ तक कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए। <sup>5</sup>जब तक वह अपनी मन्नत के मुताबिक़ मख़सूस है वह अपने बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उस ने अपने आप को रब के लिए मख़सूस किया है उतनी देर तक वह मुक़द्दस है। इस लिए वह अपने बाल बढ़ने दे। <sup>6</sup>जब तक वह मख़सूस है वह किसी लाश के क़रीब न जाए, <sup>7</sup>चाहे वह उस के बाप, माँ, भाई या बहन की लाश क्यूँ न हो। क्यूँकि इस से वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस की मख़सूसियत लम्बे बालों की सूत में नज़र

आती है। <sup>8</sup>वह अपनी मख़सूसियत के दौरान रब के लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस है।

<sup>9</sup>अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़सूस शख्स उस के क़रीब हो तो उस के मख़सूस बाल नापाक हो जाएंगे। ऐसी सूत में लाज़िम है कि वह अपने आप को पाक-साफ़ करके सातवें दिन अपने सर को मुंडवाए। <sup>10</sup>आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आए और इमाम को दे। <sup>11</sup>इमाम इन में से एक को गुनाह की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे को भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर। यूँ वह उस के लिए कफ़़ारा देगा जो लाश के क़रीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा मख़सूस करे <sup>12</sup>और अपने आप को मुकर्ररा वक़्त के लिए दुबारा रब के लिए मख़सूस करे। वह कुसूर की कुर्बानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने दिन उस ने पहले मख़सूसियत की हालत में गुज़ारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्यूँकि वह मख़सूसियत की हालत में नापाक हो गया था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

<sup>13</sup>शरीअत के मुताबिक़ जब मख़सूस शख्स का मुकर्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाया जाए। <sup>14</sup>वहाँ वह रब को भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर बच्चा, गुनाह की कुर्बानी के लिए एक बेऐब यकसाला भेड़ और सलामती की कुर्बानी के लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे। <sup>15</sup>इस के इलावा वह एक टोकरी में बेख़मीरी रोटियाँ जिन में बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और बेख़मीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिका़ !ल्ला की नज़र और मैं की नज़र के साथ <sup>16</sup>रब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह की कुर्बानी और भस्म होने वाली कुर्बानी रब के हुज़ूर चढ़ाए। <sup>17</sup>फिर वह मेंढे को बेख़मीरी रोटियों के साथ सलामती की कुर्बानी के तौर पर पेश करे। इमाम !ल्ला की नज़र और मैं की

नज़र भी चढ़ाए।<sup>18</sup> इस दौरान मख्सूस शख्स मुलाक्रात के ख़ैमे पर अपने मख्सूस किए गए सर को मुंडवा कर तमाम बाल सलामती की कुर्बानी की आग में फैंके।

<sup>19</sup> फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकरी में से दोनों क्रिस्मों की एक एक रोटी ले कर मख्सूस शख्स के हाथों पर रखे।<sup>20</sup> इस के बाद वह यह चीज़ें वापस ले कर उन्हें हिलाने की कुर्बानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुकद्दस कुर्बानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की कुर्बानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। कुर्बानी के इखतिताम पर मख्सूस किए हुए शख्स को मै पीने की इजाज़त है।

<sup>21</sup> जो अपने आप को रब के लिए मख्सूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक़ तमाम कुर्बानियाँ पेश करे। अगर गुन्जाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात पूरी करे।”

### इमाम की बरकत

<sup>22</sup> रब ने मूसा से कहा, <sup>23</sup> “हारून और उस के बेटों को बता देना कि वह इस्राइलियों को यूँ बरकत दें,

<sup>24</sup> ‘रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।

<sup>25</sup> रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।

<sup>26</sup> रब की नज़र-ए-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्शे।’

<sup>27</sup> यूँ वह मेरा नाम ले कर इस्राइलियों को बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।”

### मक्दि़स की मख्सूसियत के हदिए

**7** जिस दिन मक्दि़स मुकम्मल हुआ उसी दिन मूसा ने उसे मख्सूस-ओ-मुकद्दस किया। इस के लिए उस ने ख़ैमे, उस के तमाम

सामान, कुर्बानगाह और उस के तमाम सामान पर तेल छिड़का।<sup>23</sup> फिर क़बीलों के बारह सरदार मक्दि़स के लिए हदिए ले कर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्होंने ने मर्दुमशुमारी के वक़्त मूसा की मदद की थी। उन्होंने ने छत वाली छ: बैल गाड़ियाँ और बारह बैल ख़ैमे के सामने रब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ़ से एक बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।

<sup>4</sup> रब ने मूसा से कहा, <sup>5</sup> “यह तोहफ़े क़बूल करके मुलाक्रात के ख़ैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उन की खिदमत की ज़रूरत के मुताबिक़ तक्सीम करना।” <sup>6</sup> चुनौचे मूसा ने बैल गाड़ियाँ और बैल लावियों को दे दिए। <sup>7</sup> उस ने दो बैल गाड़ियाँ चार बैलों समेत जैसोनियों को <sup>8</sup> और चार बैल गाड़ियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हारून इमाम के बेटे इतमर के तहत खिदमत करते थे। <sup>9</sup> लेकिन मूसा ने किहातियों को न बैल गाड़ियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो मुकद्दस चीज़ें उन के सपुर्द थीं वह उन को कंधों पर उठा कर ले जानी थीं।

<sup>10</sup> बारह सरदार कुर्बानगाह की मख्सूसियत के मौक़े पर भी हदिए ले आए। उन्होंने अपने हदिए कुर्बानगाह के सामने पेश किए। <sup>11</sup> रब ने मूसा से कहा, “सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने हदिए पेश करें।” <sup>12</sup> पहले दिन यहूदाह के सरदार नह्सोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उस के हदिए यह थे : <sup>13</sup> चाँदी का थाल जिस का वज़न डेढ़ किलोग्राम था और छिड़काओ का चाँदी का कटोरा जिस का वज़न 800 ग्राम था। दोनों गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे हुए थे। <sup>14</sup> इन के इलावा नह्सोन ने यह चीज़ें पेश कीं : सोने का प्याला जिस का वज़न 110 ग्राम था और जो बख़ूर से भरा हुआ था, <sup>15</sup> एक जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए भेड़ का



एक यकसाला बच्चा, <sup>16</sup>गुनाह की कुर्बानी के लिए एक बकरा <sup>17</sup>और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।

<sup>18-23</sup>अगले ग्यारह दिन बाक्री सरदार भी यही हृदिएं मक्खिन के पास ले आए। दूसरे दिन इश्कार के सरदार नतनीएल बिन जुगार की बारी थी, <sup>24-29</sup>तीसरे दिन ज़बूलून के सरदार इलियाब बिन हेलोन की, <sup>30-47</sup>चौथे दिन रूबिन के सरदार इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमाऊन के सरदार सलूमीएल बिन सूरीशद्दी की, छठे दिन जद के सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की, <sup>48-53</sup>सातवें दिन इफ़्राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहूद की, <sup>54-71</sup>आठवें दिन मनस्सी के सरदार जमलीएल बिन फ़दाहसूर की, नवें दिन बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदाऊनी की, दसवें दिन दान के सरदार अखीअज़र बिन अम्मीशद्दी की, <sup>72-83</sup>ग्यारहवें दिन आशर के सरदार फ़जईएल बिन अक्रान की और बारहवें दिन नफ़्ताली के सरदार अखीरा बिन एनान की बारी थी।

<sup>84</sup>इस्राईल के इन सरदारों ने मिल कर कुर्बानगाह की मख्सूसियत के लिए चाँदी के 12 थाल, छिड़काओ के चाँदी के 12 कटोरे और सोने के 12 प्याले पेश किए। <sup>85</sup>हर थाल का वज़न डेढ़ किलोग्राम और छिड़काओ के हर कटोरे का वज़न 800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक्ररीबन 28 किलोग्राम था। <sup>86</sup>बखूर से भरे हुए सोने के प्यालों का कुल वज़न तक्ररीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी प्याला 110 ग्राम)। <sup>87</sup>सरदारों ने मिल कर भस्म होने वाली कुर्बानी के लिए 12 जवान बैल, 12 मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उन की गल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की कुर्बानी के लिए उन्होंने ने 12 बकरे पेश किए <sup>88</sup>और सलामती की कुर्बानी के लिए 24 बैल, 60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला

बच्चे। इन तमाम जानवरों को कुर्बानगाह की मख्सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।

<sup>89</sup>जब मूसा मुलाक्रात के ख़ैमे में रब के साथ बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब की आवाज़ अहद के सन्दूक के ढकने पर से यानी दो करूबी फ़रिशतों के दरमियान से सुनता था।

### शमादान पर चराग़

**8** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“हारून को बताना, ‘तुझे सात चराग़ों को शमादान पर यूँ रखना है कि वह शमादान का सामने वाला हिस्सा रौशन करें।’”

<sup>3</sup>हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उस ने चराग़ों को रख दिया ताकि वह सामने वाला हिस्सा रौशन करें। <sup>4</sup>शमादान पाए से ले कर ऊपर की कलियों तक सोने के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया जो रब ने उसे दिखाया था।

### लावियों की मख्सूसियत

<sup>5</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>6</sup>“लावियों को दीगर इस्राईलियों से अलग करके पाक-साफ़ करना। <sup>7</sup>इस के लिए गुनाह से पाक करने वाला पानी उन पर छिड़क कर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुंडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यूँ वह पाक-साफ़ हो जाएंगे। <sup>8</sup>फिर वह एक जवान बैल चुनें और साथ की गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू खुद भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की कुर्बानी के लिए होगा।

<sup>9</sup>इस के बाद लावियों को मुलाक्रात के ख़ैमे के सामने खड़ा करके इस्राईल की पूरी जमाअत को वहाँ जमा करना। <sup>10</sup>जब लावी रब के सामने खड़े हों तो बाक्री इस्राईली उन के सरों पर अपने हाथ रखें। <sup>11</sup>फिर हारून

लावियों को रब के सामने पेश करे। उन्हें इस्राइलियों की तरफ से हिलाई हुई कुर्बानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की खिदमत कर सकें।<sup>12</sup> फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की कुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर चढ़ाओ ताकि लावियों का कफ़ारा दिया जाए।

<sup>13</sup> लावियों को इस तरीके से हारून और उस के बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई कुर्बानी के तौर पर पेश करना है।<sup>14</sup> उन्हें बाकी इस्राइलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे।<sup>15</sup> इस के बाद ही वह मुलाक्रात के खैमे में आ कर खिदमत करें, क्योंकि अब वह खिदमत करने के लाइक हैं। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई कुर्बानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है<sup>16</sup> कि लावी इस्राइलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैं ने उन्हें इस्राइलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है।<sup>17</sup> क्योंकि इस्राइल में हर पहलौठा मेरा है, ख्वाह वह इन्सान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैं ने मिस्रियों के पहलौठों को मार दिया मैं ने इस्राइल के पहलौठों को अपने लिए मख्सूस-ओ-मुक़द्दस किया।<sup>18</sup> इस सिलसिले में मैं ने लावियों को इस्राइलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले कर<sup>19</sup> उन्हें हारून और उस के बेटों को दिया है। वह मुलाक्रात के खैमे में इस्राइलियों की खिदमत करें और उन के लिए कफ़ारा का इन्तिज़ाम क्राइम रखें ताकि जब इस्राइली मक़िदस के करीब आएँ तो उन को वबा से मारा न जाए।”

<sup>20</sup> मूसा, हारून और इस्राइलियों की पूरी जमाअत ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया।<sup>21</sup> लावियों ने अपने आप को गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हारून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई कुर्बानी के तौर पर पेश किया और उन का कफ़ारा दिया

ताकि वह पाक हो जाएँ।<sup>22</sup> इस के बाद लावी मुलाक्रात के खैमे में आए ताकि हारून और उस के बेटों के तहत खिदमत करें। यूँ सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

<sup>23</sup> रब ने मूसा से यह भी कहा,<sup>24</sup> “लावी 25 साल की उम्र में मुलाक्रात के खैमे में अपनी खिदमत शुरू करें<sup>25</sup> और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ।<sup>26</sup> इस के बाद वह मुलाक्रात के खैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते हैं, लेकिन खुद खिदमत नहीं कर सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उन की अपनी अपनी जिम्मादारियों देनी हैं।”

### रेगिस्तान में ईद-ए-फ़सह

**9** इस्राइलियों को मिस्र से निकले एक साल हो गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब ने दश-ए-सीना में मूसा से बात की।

<sup>2</sup> “लाज़िम है कि इस्राइली ईद-ए-फ़सह को मुकर्ररा वक़्त पर मनाएँ,<sup>3</sup> यानी इस महीने के चौधवें दिन, सूरज के ग़रूब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वाइद के मुताबिक़ मनाना।”<sup>4</sup> चुनाँचे मूसा ने इस्राइलियों से कहा कि वह ईद-ए-फ़सह मनाएँ,<sup>5</sup> और उन्होंने ने ऐसा ही किया। उन्होंने ने ईद-ए-फ़सह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के ग़रूब होने के ऐन बाद मनाया। उन्होंने ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

<sup>6</sup> लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्योंकि उन्होंने ने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईद-ए-फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून के पास आ कर<sup>7</sup> कहने लगे, “हम ने लाश छू ली है, इस लिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईद-ए-फ़सह को मनाने से क्यूँ रोका जाए? हम भी मुकर्ररा वक़्त पर बाकी इस्राइलियों के साथ रब की कुर्बानी पेश करना चाहते हैं।”<sup>8</sup> मूसा ने जवाब दिया, “यहाँ

मेरे इन्तिज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।”

१२ रब ने मूसा से कहा, १० “इस्राईलियों को बता देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईद-ए-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी दूरदराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो भी वह ईद मना सकता है। ११ ऐसा शख्स उसे ऐन एक माह के बाद मना कर लेले के साथ बेखमीरी रोटी और कड़वा साग-पात खाए। १२ खाने में से कुछ भी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनाने वाला ईद-ए-फ़सह के पूरे फ़राइज़ अदा करे। १३ लेकिन जो पाक होने और सफ़र न करने के बावजूद भी ईद-ए-फ़सह को न मनाए उसे उस की क्रौम में से मिटाया जाए, क्योंकि उस ने मुकर्ररा वक़्त पर रब को कुर्बानी पेश नहीं की। उस शख्स को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा। १४ अगर कोई परदेसी तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईद-ए-फ़सह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि वह पूरे फ़राइज़ अदा करे। परदेसी और देसी के लिए ईद-ए-फ़सह मनाने के फ़राइज़ एक जैसे हैं।”

### मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

१५ जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा किया गया उस दिन बादल आ कर उस पर छा गया। रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र आया। १६ इस के बाद यही सूरत-ए-हाल रही कि बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत में नज़र आता। १७ जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता इस्राईली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इस्राईली अपने डेरे डालते। १८ इस्राईली रब के हुक्म पर रवाना होते और उस के हुक्म पर डेरे डालते। जब तक बादल मक्दि़स पर छाया रहता उस वक़्त तक वह वहीं ठहरते। १९ कभी कभी बादल बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इस्राईली रब का

हुक्म मान कर रवाना न होते। २० कभी कभी बादल सिर्फ़ दो चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। २१ कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से ले कर सुबह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुबह के वक़्त उठता तो इस्राईली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। २२ जब तक बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक इस्राईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इस से ज़्यादा अर्सा मक्दि़स पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इस्राईली भी रवाना हो जाते। २३ वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उस के हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

**10** रब ने मूसा से कहा, २४ “चाँदी के दो बिगुल घड़ कर बनवा ले। उन्हें जमाअत को जमा करने और क़बीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। २५ जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आ कर तेरे सामने जमा हो जाए। २६ लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुर्बों के बुजुर्ग तेरे सामने जमा हो जाएँ। २७ अगर उन की आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक्दि़स के मशरिफ़ में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। २८ फिर जब उन की आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक्दि़स के जुनूब में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। जब उन की आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। २९ इस के मुकाबले में जब उन की आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमाअत जमा हो जाए।

३० बिगुल बजाने की ज़िम्मादारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आने वाली नस्लों के लिए दाइमी उसूल हो। ३१ उन की आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी

देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा खुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

<sup>10</sup>इसी तरह उन की आवाज़ मक्दिस में खुशी के मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुक़र्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होने वाली कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा खुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

### सीना पहाड़ से रवानगी

<sup>11</sup>इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल से ज़ाइद अर्सा हो चुका था। दूसरे साल के बीसवें दिन बादल मुलाक्रात के ख़ैमे पर से उठा। <sup>12</sup>फिर इस्राईली मुक़र्ररा तरतीब के मुताबिक़ दशत-ए-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

<sup>13</sup>उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफ़त मुक़र्रर की थी। <sup>14</sup>पहले यहूदाह के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नह्सोन बिन अम्मीनदाब था। <sup>15</sup>साथ चलने वाले क़बीले इश्कार का कमाँडर नतनीएल बिन जुग़ार था। <sup>16</sup>ज़बूलून का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था। <sup>17</sup>इस के बाद मुलाक्रात का ख़ैमा उतारा गया। जैसोनी और मिरारी उसे उठा कर चल दिए। <sup>18</sup>इन लावियों के बाद रूबिन के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। <sup>19</sup>साथ चलने वाले क़बीले शमाऊन का कमाँडर सलूमीएल बिन सूरीशद्दी था। <sup>20</sup>जद का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था। <sup>21</sup>फिर लावियों में से क्रिहाती मक्दिस का सामान उठा कर रवाना हुए। लाज़िम

था कि उन के अगली मन्ज़िल पर पहुँचने तक मुलाक्रात का ख़ैमा लगा दिया गया हो। <sup>22</sup>इस के बाद इफ़्राईम के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उन का कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था। <sup>23</sup>इफ़्राईम के साथ चलने वाले क़बीले मनस्सी का कमाँडर जमलीएल बिन फ़दाह्सूर था। <sup>24</sup>बिनयमीन का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था। <sup>25</sup>आखिर में दान के तीन दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उन का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी था। <sup>26</sup>दान के साथ चलने वाले क़बीले आशर का कमाँडर फ़जईएल बिन अक्रान था। <sup>27</sup>नफ़ताली का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था। <sup>28</sup>इस्राईली इसी तरतीब से रवाना हुए।

### मूसा होबाब को साथ चलने पर मजबूर करता है

<sup>29</sup>मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यित्रो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिस का वादा रब ने हम से किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान करेंगे, क्योंकि रब ने इस्राईल पर एहसान करने का वादा किया है।” <sup>30</sup>लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।” <sup>31</sup>मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्योंकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डैरे डाल सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं।” <sup>32</sup>अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आप को उस एहसान में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

### अहद के सन्दूक का सफ़र

<sup>33</sup>चुनाँचे उन्होंने ने रब के पहाड़ से रवाना हो कर तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब

का अहद का सन्दूक उन के आगे आगे चला ताकि उन के लिए आराम करने की जगह मालूम करे। <sup>34</sup>जब कभी वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक्रत उन के ऊपर रहता। <sup>35</sup>सन्दूक के रवाना होते वक्रत मूसा कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएँ। तुझ से नफ़रत करने वाले तेरे सामने से फ़रार हो जाएँ।” <sup>36</sup>और जब भी वह रुक जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब, इस्राईल के हज़ारों खानदानों के पास वापस आ।”

### तबएरा में रब की आग

**11** एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने लगे। जब यह शिकायतें रब तक पहुँचीं तो उसे गुस्सा आया और उस की आग उन के दरमियान भड़क उठी। जलते जलते उस ने ख़ैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया। <sup>2</sup>लोग मदद के लिए मूसा के पास आ कर चिल्लाने लगे तो उस ने रब से दुआ की, और आग बुझ गई। <sup>3</sup>उस मक़ाम का नाम तबएरा यानी जलना पड़ गया, क्योंकि रब की आग उन के दरमियान जल उठी थी।

### मूसा 70 राहनुमा चुनता है

<sup>4</sup>इस्राईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर रहे थे वह गोशत खाने की शदीद आर्जू करने लगे। तब इस्राईली भी रो पड़े और कहने लगे, “कौन हमें गोशत खिलाएगा? <sup>5</sup>मिस्र में हम मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीरे, तरबूज़, गन्दने, प्याज़ और लहसन कितने अच्छे थे! <sup>6</sup>लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता रहता है।”

<sup>7</sup>मन धनिए के दानों की मानिन्द था, और उस का रंग गूगल के गूँद की मानिन्द था। <sup>8-9</sup>रात के वक्रत वह ख़ैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था। सुबह के वक्रत लोग इधर उधर घूमते फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में पीस कर या उखली में

कूट कर उबालते या रोटी बनाते थे। उस का ज़ाइक्रा ऐसी रोटी का सा था जिस में ज़ैतून का तेल डाला गया हो।

<sup>10</sup>तमाम खानदान अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर रोने लगे तो रब को शदीद गुस्सा आया। उन का शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा। <sup>11</sup>उस ने रब से पूछा, “तू ने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यों किया? मैं ने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि तू ने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल दिया? <sup>12</sup>क्या मैं ने हामिला हो कर इस पूरी क्रौम को जन्म दिया कि तू मुझ से कहता है, ‘इसे उस तरह उठा कर ले चलना जिस तरह आया शीरख़वार बच्चे को उठा कर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिस का वादा मैं ने क्रसम खा कर इन के बापदादा से किया है।’ <sup>13</sup>ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोशत मुहय्या करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोशत दो। <sup>14</sup>मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा भारी है। <sup>15</sup>अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।”

<sup>16</sup>जवाब में रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास इस्राईल के 70 बुजुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिन के बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुजुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाक्रात के ख़ैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, <sup>17</sup>तो मैं उतर कर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक्रत मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैं ने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क्रौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इस में अकेला नहीं रहेगा। <sup>18</sup>लोगों को बताना, ‘अपने आप को मख्सूस-ओ-मुक़द्दस करो, क्योंकि कल तुम गोशत खाओगे। रब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें

गोशत खिलाएगा, मिस्र में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोशत मुहय्या करेगा और तुम उसे खाओगे।<sup>19</sup> तुम उसे न सिर्फ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज़्यादा अर्से तक।<sup>20</sup> तुम एक पूरा महीना ख़ूब गोशत खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उस से घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुम ने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद्द किया और रोते रोते उस के सामने कहा कि हम क्यूँ मिस्र से निकले।”

<sup>21</sup>लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “अगर क़ौम के पैदल चलने वाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोशत मुहय्या करेगा? <sup>22</sup>क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मित्रदार में ज़बह किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर समुन्दर की तमाम मछलियाँ उन के लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफ़ी होंगी?”

<sup>23</sup>रब ने कहा, “क्या रब का इखतियार कम है? अब तू खुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि नहीं।”

<sup>24</sup>चुनाँचे मूसा ने वहाँ से निकल कर लोगों को रब की यह बातें बताई। उस ने उन के बुजुर्गों में से 70 को चुन कर उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द खड़ा कर दिया।<sup>25</sup> तब रब बादल में उतर कर मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उस ने मूसा पर नाज़िल किया था उस में से उस ने कुछ ले कर उन 70 बुजुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

<sup>26</sup>अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुजुर्गों में से दो ख़ैमागाह में रह गए थे। उन के नाम इल्दाद और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाक़ात के ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इस के बावजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह ख़ैमागाह में नबुव्वत करने लगे।<sup>27</sup> एक नौजवान भाग कर मूसा के

पास आया और कहा, “इल्दाद और मेदाद ख़ैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।”

<sup>28</sup>यशुअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार था बोल उठा, “मूसा मेरे आक्रा, उन्हें रोक दें!”<sup>29</sup> लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “क्या तू मेरी खातिर ग़ैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!”<sup>30</sup> फिर मूसा और इस्राईल के बुजुर्ग ख़ैमागाह में वापस आए।

<sup>31</sup>तब रब की तरफ से ज़ोरदार हवा चलने लगी जिस ने समुन्दर को पार करने वाले बटेरों के गोल धकेल कर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैंक दिए। उन के गोल तीन फुट ऊँचे और ख़ैमागाह के चारों तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे।<sup>32</sup> उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग निकल कर बटेरों जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्होंने ने उन का गोशत ख़ैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह ख़ुश्क हो जाए।

<sup>33</sup>लेकिन गोशत के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उस ने उन में सरख्त वबा फैलने दी।<sup>34</sup> चुनाँचे मक़ाम का नाम क़ब्रोत-हत्तावा यानी ‘लालच की क़ब्रें’ रखा गया, क्यूँकि वहाँ उन्होंने ने उन लोगों को दफ़न किया जो गोशत के लालच में आ गए थे।

<sup>35</sup>इस के बाद इस्राईली क़ब्रोत-हत्तावा से रवाना हो कर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह ख़ैमाज़न हुए।

### मरियम और हारून की मुखालफ़त

**12** एक दिन मरियम और हारून मूसा के खिलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि उस ने कूश की एक औरत से शादी की थी।<sup>2</sup> उन्होंने ने पूछा, “क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता है? क्या उस ने हम

से भी बात नहीं की?" रब ने उन की यह बातें सुनीं।

<sup>3</sup>लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था। <sup>4</sup>अचानक रब मूसा, हारून और मरियम से मुखातिब हुआ, "तुम तीनों बाहर निकल कर मुलाक्रात के खैमे के पास आओ।"

तीनों वहाँ पहुँचे। <sup>5</sup>तब रब बादल के सतून में उतर कर मुलाक्रात के खैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उस ने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए। <sup>6</sup>उस ने कहा, "मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आप को रोया में उस पर ज़ाहिर करता हूँ या ख़्वाब में उस से मुखातिब होता हूँ। <sup>7</sup>लेकिन मेरे खादिम मूसा की और बात है। उसे मैं ने अपने पूरे घराने पर मुकर्रर किया है। <sup>8</sup>उस से मैं रू-ब-रू हमकलाम होता हूँ। उस से मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह रब की सूत देखता है। तो फिर तुम मेरे खादिम के खिलाफ़ बातें करने से क्यों न डरे?"

<sup>9</sup>रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला गया। <sup>10</sup>जब बादल का सतून खैमे से दूर हुआ तो मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद थी। वह कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़ मुड़ा तो उस की हालत देखी <sup>11</sup>और मूसा से कहा, "मेरे आक्रा, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा न दें जो हमारी हमाक्रत के बाइस सरज़द हुआ है। <sup>12</sup>मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे की मानिन्द है जो मुर्दा पैदा हुआ हो, जिस के जिस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।"

<sup>13</sup>तब मूसा ने पुकार कर रब से कहा, "ऐ अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शिफ़ा दे।" <sup>14</sup>रब ने जवाब में मूसा से कहा, "अगर मरियम का बाप उस के मुँह पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़्ते तक शर्म महसूस न करती? उसे एक

हफ़्ते के लिए खैमागाह के बाहर बन्द रख। इस के बाद उसे वापस लाया जा सकता है।"

<sup>15</sup>चुनाँचे मरियम को एक हफ़्ते के लिए खैमागाह के बाहर बन्द रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया गया। <sup>16</sup>जब वह वापस आई तो इस्राईली हसीरात से रवाना हो कर फ़ारान के रेगिस्तान में खैमाज़न हुए।

### मुल्क-ए-कनआन में इस्राईली जासूस

**13** फिर रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>"कुछ आदमी मुल्क-ए-कनआन का जाइज़ा लेने के लिए भेज दे, क्योंकि मैं उसे इस्राईलियों को देने को हूँ। हर क़बीले में से एक राहनुमा को चुन कर भेज दे।"

<sup>3</sup>मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दश-ए-फ़ारान से भेजा। सब इस्राईली राहनुमा थे। <sup>4</sup>उन के नाम यह हैं :

रूबिन के क़बीले से सम्मूअ बिन ज़क्कूर,  
<sup>5</sup>शमाऊन के क़बीले से साफ़त बिन होरी,  
<sup>6</sup>यहूदाह के क़बीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,  
<sup>7</sup>इश्कार के क़बीले से इजाल बिन यूसुफ़,  
<sup>8</sup>इफ़्राईम के क़बीले से होसेअ बिन नून,  
<sup>9</sup>बिनयमीन के क़बीले से फ़ल्ली बिन रफू,  
<sup>10</sup>ज़बूलून के क़बीले से ज़दीएल बिन सोदी,  
<sup>11</sup>यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जिदी बिन सूसी,

<sup>12</sup>दान के क़बीले से अम्मीएल बिन जमल्ली,

<sup>13</sup>आशर के क़बीले से सतूर बिन मीकाएल,  
<sup>14</sup>नफ़्ताली के क़बीले से नख़्बी बिन वुप्सी,  
<sup>15</sup>जद के क़बीले से जियूएल बिन माकी।

<sup>16</sup>मूसा ने इन ही बारह आदमियों को मुल्क का जाइज़ा लेने के लिए भेजा। उस ने होसेअ का नाम यशूअ यानी 'रब नजात है' में बदल दिया।

<sup>17</sup>उन्हें रुख़सत करने से पहले उस ने कहा, "दश-ए-नजब से गुज़र कर पहाड़ी इलाक़े तक पहुँचो। <sup>18</sup>मालूम करो कि यह किस तरह

का मुल्क है और उस के बाशिन्दे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं या कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़्यादा? <sup>19</sup>जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस क्रिस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उन की चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? <sup>20</sup>मुल्क की ज़मीन ज़रखेज़ है या बंजर? उस में दरख़्त हैं कि नहीं? और जुरअत करके मुल्क का कुछ फल चुन कर ले आओ।" उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

<sup>21</sup>चुनौचे इन आदमियों ने सफ़र करके दशत-ए-सीन से रहोब तक मुल्क का जाइज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के क़रीब है। <sup>22</sup>वह दशत-ए-नजब से गुज़र कर हब्रून पहुँचे जहाँ अनाक़ के बेटे अख़ीमान, सीसी और तल्मी रहते थे। (हब्रून को मिस्र के शहर जुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)। <sup>23</sup>जब वह वादी-ए-इस्काल तक पहुँचे तो उन्होंने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अन्जीर लाठी पर लटकाए और उसे उठा कर चल पड़े। <sup>24</sup>उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इस्राईलियों ने वहाँ से काट लिया इस्काल यानी गुच्छा रखा गया।

<sup>25</sup>चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए। <sup>26</sup>वह मूसा, हारून और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास आए जो दशत-ए-फ़ारान में क़ादिस की जगह पर इन्तिज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्होंने ने सब कुछ बताया जो उन्होंने ने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो ले कर आए थे। <sup>27</sup>उन्होंने ने मूसा को रिपोर्ट दी, "हम उस मुल्क में गए जहाँ आप ने हमें भेजा था। वाक़ई उस मुल्क में दूध और शहद की कसत है। यहाँ हमारे पास उस के कुछ फल भी हैं। <sup>28</sup>लेकिन उस के बाशिन्दे ताक़तवर हैं। उन के शहरों की फ़सीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हम ने वहाँ अनाक़ की औलाद भी देखी। <sup>29</sup>अमालीक़ी दशत-ए-नजब में रहते हैं जबकि

हित्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाक़े में आबाद हैं। कनआनी साहिली इलाक़े और दरया-ए-यर्दन के किनारे किनारे बसते हैं।"

<sup>30</sup>कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उस ने कहा, "आएँ, हम मुल्क में दाख़िल हो जाएँ और उस पर क़ब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम यकीनन यह करने के क़ाबिल हैं।" <sup>31</sup>लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उस के साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, "हम उन लोगों पर हम्ला नहीं कर सकते, क्योंकि वह हम से ताक़तवर हैं।" <sup>32</sup>उन्होंने ने इस्राईलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में ग़लत अफ़वाहें फैलाई जिस की तफ़्तीश उन्होंने की थी। उन्होंने ने कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उस का जाइज़ा लें वह अपने बाशिन्दों को हड़प कर लेता है। जो भी उस में रहता है निहायत दराज़क़द है। <sup>33</sup>हम ने वहाँ देओक़ामत अफ़राद भी देखे। (अनाक़ के बेटे देओक़ामत के अफ़राद की औलाद थे)। उन के सामने हम अपने आप को टिड्डी जैसा मद्सूस कर रहे थे, और हम उन की नज़र में ऐसे थे भी।"

### लोग कनआन में दाख़िल नहीं होना चाहते

**14** उस रात तमाम लोग चीखें मार मार कर रोते रहे। <sup>2</sup>सब मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमाअत ने उन से कहा, "काश हम मिस्र या इस रेगिस्तान में मर गए होते! <sup>3</sup>रब हमें क्यूँ उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या इस लिए कि दुश्मन हमें तलवार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिस्र वापस जाएँ?" <sup>4</sup>उन्होंने ने एक दूसरे से कहा, "आओ, हम राहनुमा चुन कर मिस्र वापस चले जाएँ।"

<sup>5</sup>तब मूसा और हारून पूरी जमाअत के सामने मुँह के बल गिरे। <sup>6</sup>लेकिन यशूअ बिन



नून और कालिब बिन यफुन्ना बाक्री दस जासूसों से फ़र्क़ थे। परेशानी के आलम में उन्होंने अपने कपड़े फाड़ कर 7पूरी जमाअत से कहा, "जिस मुल्क में से हम गुज़रे और जिस की तफ़्तीश हम ने की वह निहायत ही अच्छा है। 8अगर रब हम से खुश है तो वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिस में दूध और शहद की कस्रत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क देगा। 9रब से बग़ावत मत करना। उस मुल्क के रहने वालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएंगे। उन की पनाह उन से जाती रही है जबकि रब हमारे साथ है। चुनाँचे उन से मत डरें।"

10यह सुन कर पूरी जमाअत उन्हें संगसार करने के लिए तय्यार हुई। लेकिन अचानक रब का जलाल मुलाक़ात के ख़ैमे पर ज़ाहिर हुआ, और तमाम इस्राईलियों ने उसे देखा। 11रब ने मूसा से कहा, "यह लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेंगे? वह कब तक मुझ पर ईमान रखने से इन्कार करेंगे अगरचे मैं ने उन के दरमियान इतने मोज़िज़े किए हैं? 12मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उन की जगह मैं तुझे से एक क़ौम बनाऊँगा जो उन से बड़ी और ताक़तवर होगी।"

13लेकिन मूसा ने रब से कहा, "फिर मिस्री यह सुन लेंगे! क्योंकि तू ने अपनी कुदरत से इन लोगों को मिस्र से निकाल कर यहाँ तक पहुँचाया है। 14मिस्री यह बात कनआन के बाशिन्दों को बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब इस क़ौम के साथ है, कि तुझे रू-ब-रू देखा जाता है, कि तेरा बादल उन के ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात को आग के सतून में इन के आगे आगे चलता है। 15अगर तू एक दम इस पूरी क़ौम को तबाह कर डाले तो बाक्री क़ौमें यह सुन कर कहेंगी, 16'रब इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा उस ने उन से क़सम खा कर किया

था। इसी लिए उस ने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर दिया।' 17ऐ रब, अब अपनी कुदरत यूँ ज़ाहिर कर जिस तरह तू ने फ़रमाया है। क्योंकि तू ने कहा, 18'रब तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उन की औलाद को भी तीसरी और चौथी पुशत तक सज़ा के नताइज भुगतने पड़ेंगे।' 19इन लोगों का क़ूसूर अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिस्र से निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।"

20रब ने जवाब दिया, "तेरे कहने पर मैं ने उन्हें मुआफ़ कर दिया है। 21इस के बावजूद मेरी हयात की क़सम और मेरे जलाल की क़सम जो पूरी दुनिया को मामूर करता है, 22इन लोगों में से कोई भी उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा। उन्होंने ने मेरा जलाल और मेरे मोज़िज़े देखे हैं जो मैं ने मिस्र और रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्होंने ने दस दफ़ा मुझे आजमाया और मेरी न सुनी। 23उन में से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था। जिस ने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी उसे नहीं देखेगा। 24सिफ़ मेरा खादिम कालिब मुख्तलिफ़ है। उस की रूह फ़र्क़ है। वह पूरे दिल से मेरी पैरवी करता है, इस लिए मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस में उस ने सफ़र किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी। 25लेकिन फ़िलहाल अमालीक़ी और कनआनी उस की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनाँचे कल मुड़ कर वापस चलो। रेगिस्तान में बहर-ए-कुलज़ुम की तरफ़ रवाना हो जाओ।"

26रब ने मूसा और हारून से कहा, 27"यह शरीर जमाअत कब तक मेरे खिलाफ़ बुड़बुड़ाती रहेगी? उन के गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं। 28इस लिए उन्हें बताओ, 'रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं

तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुम ने मेरे सामने कहा है।<sup>29</sup> तुम इस रेगिस्तान में मर कर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इस से ज़ाइद का है, जो मर्दुमशुमारी में गिना गया और जो मेरे खिलाफ़ बुड़बुड़ाया।<sup>30</sup> गो मैं ने हाथ उठा कर क्रसम खाई थी कि मैं तुझे उस में बसाऊँगा तुम में से कोई भी उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून दाखिल होंगे।<sup>31</sup> तुम ने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन ही को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुम ने रद्द किया है।<sup>32</sup> लेकिन तुम खुद दाखिल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी।<sup>33</sup> तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे। उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुम में से आखिरी शख्स मर न गया हो।<sup>34</sup> तुम ने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जाइज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इस का क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुखालफ़त करता हूँ।<sup>35</sup> मैं, रब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमाअत के साथ करूँगा जिस ने मिल कर मेरी मुखालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएंगे, यहीं मर जाएंगे।”

<sup>36-37</sup> जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जाइज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलक वबा से मार डाला, क्योंकि उन के ग़लत अफ़्वाहें फैलाने से पूरी जमाअत बुड़बुड़ाने लगी थी।<sup>38</sup> सिर्फ़ यशूअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना ज़िन्दा रहे।

<sup>39</sup> जब मूसा ने रब की यह बातें इस्राईलियों को बताई तो वह ख़ूब मातम करने लगे।<sup>40</sup> अगली सुबह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाक़े के लिए रवाना हुए कि हम से ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं

और उस जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिस का ज़िक्र रब ने किया है।

<sup>41</sup> लेकिन मूसा ने कहा, “तुम क्यों रब की खिलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे।<sup>42</sup> वहाँ न जाओ, क्योंकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे,<sup>43</sup> क्योंकि वहाँ अमालीक़ी और कनआनी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुम ने अपना मुँह रब से फेर लिया है इस लिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेगा।”

<sup>44</sup> तो भी वह अपने गुरूर में ज़ुरअत करके ऊँचे पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और न अहद के सन्दूक ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा।<sup>45</sup> फिर उस पहाड़ी इलाक़े में रहने वाले अमालीक़ी और कनआनी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुर्मा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

### कनआन में कुर्बानियाँ पेश करने का तरीक़ा

**15** रब ने मूसा से कहा,<sup>2</sup> “इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा<sup>3-4</sup> तो जलने वाली कुर्बानियाँ यँ पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से ऐसी कुर्बानी पेश करना चाहो जिस की खुशबू रब को पसन्द हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर ज़ैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि यह भस्म होने वाली कुर्बानी, मन्नत की कुर्बानी, दिली खुशी की कुर्बानी या किसी ईद की कुर्बानी हो।

<sup>5</sup> हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश करना।<sup>6</sup> जब मेंढा कुर्बान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो।<sup>7</sup> सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की

जाए। ऐसी कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द आएगी।

<sup>8</sup>अगर तू रब को भस्म होने वाली कुर्बानी, मन्नत की कुर्बानी या सलामती की कुर्बानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे <sup>9</sup>तो उसके साथ साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। <sup>10</sup>दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है। <sup>11</sup>लाज़िम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढ़ाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

<sup>12</sup>अगर एक से ज़ाइद जानवरों को कुर्बान करना है तो हर एक के लिए मुकर्ररा गल्ला और मै की नज़रें भी साथ ही पेश की जाएँ।

<sup>13</sup>लाज़िम है कि हर देसी इस्राइली जलने वाली कुर्बानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उन की खुशबू रब को पसन्द आएगी। <sup>14</sup>यह भी लाज़िम है कि इस्राइल में आरिज़ी या मुस्तक्रिल तौर पर रहने वाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी कुर्बानियाँ चढ़ाएँ। फिर उन की खुशबू रब को पसन्द आएगी। <sup>15</sup>मुल्क-ए-कनआन में रहने वाले तमाम लोगों के लिए पाबन्दियाँ एक जैसी हैं, ख़्वाह वह देसी हों या परदेसी, क्योंकि रब की नज़र में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए दाइमी उसूल है। <sup>16</sup>तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहने वाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।”

### फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की कुर्बानी

<sup>17</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>18</sup>“इस्राइलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जिस में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ <sup>19</sup>और वहाँ की पैदावार खाओगे तो पहले उस का एक हिस्सा उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर रब को पेश करना। <sup>20</sup>फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बना कर उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने

की जगह की तरफ़ से रब के लिए उठाने वाली कुर्बानी होगी। <sup>21</sup>अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से यह कुर्बानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक लागू रहे।

### नादानिस्ता गुनाहों के लिए कुर्बानियाँ

<sup>22</sup>हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुम से ग़लती हुई है और तुम ने उन अहकाम पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है <sup>23</sup>या जो वह आने वाली नस्लों को देगा। <sup>24</sup>अगर जमाअत इस बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी तौर पर उस से ग़लती हुई तो फिर पूरी जमाअत एक जवान बैल भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह मुकर्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी पेश करे। इस की खुशबू रब को पसन्द होगी। इस के इलावा जमाअत गुनाह की कुर्बानी के लिए एक बकरा पेश करे। <sup>25</sup>इमाम इस्राइल की पूरी जमाअत का कफ़फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि उन का गुनाह ग़ैरइरादी था और उन्होंने रब को भस्म होने वाली कुर्बानी और गुनाह की कुर्बानी पेश की है। <sup>26</sup>इस्राइलियों की पूरी जमाअत को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि गुनाह ग़ैरइरादी था।

<sup>27</sup>अगर सिर्फ़ एक शख्स से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो गुनाह की कुर्बानी के लिए वह एक यकसाला बकरी पेश करे। <sup>28</sup>इमाम रब के सामने उस शख्स का कफ़फ़ारा दे। जब कफ़फ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। <sup>29</sup>यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर उस से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इस्राइली को करना होता है।

### दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ा-ए-मौत

<sup>30</sup>लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझ कर गुनाह करता है तो ऐसा शख्स रब की इहानत करता है, इस लिए लाज़िम है कि उसे

उस की क्रौम में से मिटाया जाए।<sup>31</sup> उस ने रब का कलाम हकीर जान कर उस के अह्काम तोड़ डाले हैं, इस लिए उसे ज़रूर क्रौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का ज़िम्मादार है।”

<sup>32</sup>जब इस्राईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़्ते के दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था।<sup>33</sup> जिन्होंने उसे पकड़ा था वह उसे मूसा, हारून और पूरी जमाअत के पास ले आए।<sup>34</sup> चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उस के साथ क्या किया जाए इस लिए उन्होंने उसे गिरफ़्तार कर लिया।

<sup>35</sup>फिर रब ने मूसा से कहा, “इस आदमी को ज़रूर सज़ा-ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर संगसार करे।”<sup>36</sup> चुनाँचे जमाअत ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर संगसार किया, जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

### अह्काम की याद दिलाने वाले फुन्दने

<sup>37</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>38</sup>“इस्राईलियों को बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नस्लें अपने लिबास के किनारों पर फुन्दने लगाएँ। हर फुन्दना एक किर्मिज़ी डोरी से लिबास के साथ लगा हो।<sup>39</sup> इन फुन्दनों को देख कर तुम्हें रब के तमाम अह्काम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और आँखों की ग़लत ख़्वाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि ज़िनाकारी से दूर रहोगे।<sup>40</sup> फिर तुम मेरे अह्काम को याद करके उन पर अमल करोगे और अपने खुदा के सामने मख्सूस-ओ-मुकद्दस रहोगे।<sup>41</sup> मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि तुम्हारा खुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

### क्रोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

# 16

<sup>1-2</sup>एक दिन क्रोरह बिन इज़हार मूसा के खिलाफ़ उठा। वह लावी

के क़बीले का क्रिहाती था। उस के साथ रूबिन के क़बीले के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन पलत। उन के साथ 250 और आदमी भी थे जो जमाअत के सरदार और असर-ओ-रसूख वाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे।<sup>3</sup> वह मिल कर मूसा और हारून के पास आ कर कहने लगे, “आप हम से ज़ियादती कर रहे हैं। पूरी जमाअत मख्सूस-ओ-मुकद्दस है, और रब उस के दरमियान है। तो फिर आप अपने आप को क्यूँ रब की जमाअत से बढ़ कर समझते हैं?”

<sup>4</sup>यह सुन कर मूसा मुँह के बल गिरा।<sup>5</sup> फिर उस ने क्रोरह और उस के तमाम साथियों से कहा, “कल सुबह रब ज़ाहिर करेगा कि कौन उस का बन्दा और कौन मख्सूस-ओ-मुकद्दस है। उसी को वह अपने पास आने देगा।<sup>6</sup> ऐ क्रोरह, कल अपने तमाम साथियों के साथ बख़ूरदान ले कर रब के सामने उन में अंगारे और बख़ूर डालो। जिस आदमी को रब चुनेगा वह मख्सूस-ओ-मुकद्दस होगा। अब तुम लावी खुद ज़ियादती कर रहे हो।”

<sup>8</sup>मूसा ने क्रोरह से बात जारी रखी, “ऐ लावी की औलाद, सुनो! <sup>9</sup>क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इस्राईली जमाअत के बाक़ी लोगों से अलग करके अपने क़रीब ले आया ताकि तुम रब के मक्द्दिस में और जमाअत के सामने खड़े हो कर उन की खिदमत करो? <sup>10</sup>वह तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने क़रीब लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का उह्दा भी अपनाना चाहते हो।<sup>11</sup> अपने साथियों से मिल कर तू ने हारून की नहीं बल्कि रब की मुखालफ़त की है। क्यूँकि हारून कौन है कि तुम उस के खिलाफ़ बुड़बुड़ाओ?”

<sup>12</sup>फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्होंने ने कहा, “हम नहीं आएँगे।<sup>13</sup> आप हमें एक ऐसे मुल्क से निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की

कस्रत है ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफ़ी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुक्मत भी करना चाहते हैं? 14न आप ने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिस में दूध और शहद की कस्रत है, न हमें खेतों और अंगूर के बागों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।”

15तब मूसा निहायत गुस्से हुआ। उस ने रब से कहा, “उन की कुर्बानी को क्रबूल न कर। मैं ने एक गधा तक उन से नहीं लिया, न मैं ने उन में से किसी से बुरा सुलूक किया है।”

16क्रोरह से उस ने कहा, “कल तुम और तुम्हारे साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून भी आएगा। 17हर एक अपना बखूरदान ले कर उसे रब को पेश करे।” 18चुनाँचे हर आदमी ने अपना बखूरदान ले कर उस में अंगारे और बखूर डाल दिया। फिर सब मूसा और हारून के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए। 19क्रोरह ने पूरी जमाअत को दरवाज़े पर मूसा और हारून के मुकाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमाअत पर रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 20रब ने मूसा और हारून से कहा, 21“इस जमाअत से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” 22मूसा और हारून मुँह के बल गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का खुदा है। क्या तेरा गज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब से पूरी जमाअत पर आन पड़ेगा?”

23तब रब ने मूसा से कहा, 24“जमाअत को बता दे कि क्रोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो जाओ।” 25मूसा उठ कर दातन और अबीराम के पास गया, और इस्राईल के बुजुर्ग उस के पीछे चले। 26उस ने जमाअत को आगाह किया, “इन शरीरों के ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उन के पास है उसे न छुओ, वरना तुम भी उन के साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के बाइस

हलाक होंगे।” 27तब बाक़ी लोग क्रोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने ख़ैमों से निकल कर बाहर खड़े थे। 28मूसा ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की मज़ीं पूरी कर रहा हूँ। 29अगर यह लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब ने मुझे नहीं भेजा। 30लेकिन अगर रब ऐसा काम करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना मुँह खोल कर उन्हें और उन का पूरा माल हड़प कर ले और उन्हें जीते जी दफ़ना दे तो इस का मतलब होगा कि इन आदमियों ने रब को हक़ीर जाना है।”

31यह बात कहते ही उन के नीचे की ज़मीन फट गई। 32उस ने अपना मुँह खोल कर उन्हें, उन के खानदानों को, क्रोरह के तमाम लोगों को और उन का सारा सामान हड़प कर लिया। 33वह अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते जी दफ़न हो गए। ज़मीन उन के ऊपर वापस आ गई। यूँ उन्हें जमाअत से निकाला गया और वह हलाक हो गए। 34उन की चीखें सुन कर उन के इर्दगिर्द खड़े तमाम इस्राईली भाग उठे, क्योंकि उन्होंने ने सोचा, “ऐसा न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।”

35उसी लम्हे रब की तरफ़ से आग उतर आई और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बखूर पेश कर रहे थे। 36रब ने मूसा से कहा, 37“हारून इमाम के बेटे इलीअज़र को इत्तिला दे कि वह बखूरदानों को राख में से निकाल कर रखे। उन के अंगारे वह दूर फेंके। बखूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब वह मख्सूस-ओ-मुकद्दस हैं। 38लोग उन आदमियों के यह बखूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जाँ-ब-हक़ हो गए। वह उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाएँ और उन्हें जलने वाली कुर्बानियों की कुर्बानिगाह पर चढ़ाएँ। क्योंकि वह रब को पेश किए गए हैं,

इस लिए वह मख्सूस-ओ-मुकद्दस हैं। यूँ वह इस्राईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

<sup>39</sup>चुनाँचे इलीअज़र इमाम ने पीतल के यह बखूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाईं और उन्हें कुर्बानगाह पर चढ़ा दिया। <sup>40</sup>हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक्खसद यह था कि बखूरदान इस्राईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़ हारून की औलाद ही को रब के सामने आ कर बखूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उस का हाल क्रोरह और उस के साथियों का सा होगा।

<sup>41</sup>अगले दिन इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा और हारून के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्होंने ने कहा, “आप ने रब की क्रौम को मार डाला है।” <sup>42</sup>लेकिन जब वह मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए और मुलाक्रात के ख़ैमे का रुख़ किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब का जलाल ज़ाहिर हुआ। <sup>43</sup>फिर मूसा और हारून मुलाक्रात के ख़ैमे के सामने आए, <sup>44</sup>और रब ने मूसा से कहा, <sup>45</sup>“इस जमाअत से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुन कर दोनों मुँह के बल गिरे। <sup>46</sup>मूसा ने हारून से कहा, “अपना बखूरदान ले कर उस में कुर्बानगाह के अंगारे और बखूर डालें। फिर भाग कर जमाअत के पास चले जाएँ ताकि उन का कफ़्रारा दें। जल्दी करें, क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

<sup>47</sup>हारून ने ऐसा ही किया। वह दौड़ कर जमाअत के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हारून ने रब को बखूर पेश करके उन का कफ़्रारा दिया। <sup>48</sup>वह ज़िन्दों और मुदों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा रुक गई। <sup>49</sup>तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इस में वह शामिल नहीं हैं जो क्रोरह के सबब से मर गए थे।

<sup>50</sup>जब वबा रुक गई तो हारून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

**हारून की लाठी से कौंपलें निकलती हैं**  
**17** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों से बात करके उन से 12 लाठियाँ मंगवा ले, हर क़बीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उस के मालिक का नाम लिखना। <sup>3</sup>लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना, क्योंकि हर क़बीले के सरदार के लिए एक लाठी होगी। <sup>4</sup>फिर उन को मुलाक्रात के ख़ैमे में अहद के सन्दूक के सामने रख जहाँ मेरी तुम से मुलाक्रात होती है। <sup>5</sup>जिस आदमी को मैं ने चुन लिया है उस की लाठी से कौंपलें फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे खिलाफ़ इस्राईलियों की बुड़बुड़ाहट खत्म कर दूँगा।”

<sup>6</sup>चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हारून की लाठी भी शामिल थी। <sup>7</sup>मूसा ने उन्हें मुलाक्रात के ख़ैमे में अहद के सन्दूक के सामने रखा। <sup>8</sup>अगले दिन जब वह मुलाक्रात के ख़ैमे में दाखिल हुआ तो उस ने देखा कि लावी के क़बीले के सरदार हारून की लाठी से न सिर्फ़ कौंपलें फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे हैं।

<sup>9</sup>मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर ला कर इस्राईलियों के पास ले आया, और उन्होंने ने उन का मुआइना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली। <sup>10</sup>रब ने मूसा से कहा, “हारून की लाठी अहद के सन्दूक के सामने रख दे। यह बागी इस्राईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुड़बुड़ाना बन्द करें, वर्ना हलाक हो जाएंगे।”

<sup>11</sup>मूसा ने ऐसा ही किया। <sup>12</sup>लेकिन इस्राईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब हलाक हो जाएंगे। <sup>13</sup>जो भी रब के मक्खिदिस के

क़रीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?"

### इमामों और लावियों की ज़िम्मादारियाँ

**18** रब ने हारून से कहा, "मक्बिदस तेरी, तेरे बेटों और लावी के क़बीले की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तुम कुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की खिदमत सिर्फ़ तेरी और तेरे बेटों की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तू और तेरे बेटे कुसूरवार ठहरेंगे।<sup>2</sup> अपने क़बीले लावी के बाक़ी आदमियों को भी मेरे क़रीब आने दे। वह तेरे साथ मिल कर यूँ हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की खिदमत करें जब तुम ख़ैमे के सामने अपनी ज़िम्मादारियाँ निभाओगे।<sup>3</sup> तेरी खिदमत और ख़ैमे में खिदमत उन की ज़िम्मादारी है। लेकिन वह ख़ैमे के मख़सूस-ओ-मुक़द्दस सामान और कुर्बानगाह के क़रीब न जाएँ, वर्ना न सिर्फ़ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा।<sup>4</sup> यूँ वह तेरे साथ मिल कर मुलाक़ात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।<sup>5</sup> सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक्बिदस और कुर्बानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा ग़ज़ब दुबारा इस्राईलियों पर न भड़के।<sup>6</sup> मैं ही ने इस्राईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुन कर तुझे तोहफ़े के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मख़सूस हैं ताकि ख़ैमे में खिदमत करें।<sup>7</sup> लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम की खिदमत सरअन्जाम दें। मैं तुम्हें इमाम का उहदा तोहफ़े के तौर पर देता हूँ। कोई और कुर्बानगाह और मुक़द्दस चीज़ों के नज़दीक न आए, वर्ना उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।"

### इमामों का हिस्सा

<sup>8</sup> रब ने हारून से कहा, "मैं ने खुद मुक़र्रर किया है कि तमाम उठाने वाली कुर्बानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक कुर्बानियों में से

तेरा और तेरी औलाद का हिस्सा हैं।<sup>9</sup> तुम्हें मुक़द्दसतरीन कुर्बानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, ख़्वाह वह मुझे ग़ल्ला की नज़रें, गुनाह की कुर्बानियाँ या कुसूर की कुर्बानियाँ पेश करें।<sup>10</sup> उसे मुक़द्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। ख़याल रख कि वह मख़सूस-ओ-मुक़द्दस है।

<sup>11</sup> मैं ने मुक़र्रर किया है कि तमाम हिलाने वाली कुर्बानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़र्द उसे खा सकता है। शर्त यह है कि वह पाक हो।<sup>12</sup> जब लोग रब को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ।<sup>13</sup> फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक फ़र्द उसे खा सकता है।<sup>14</sup> इस्राईल में जो भी चीज़ रब के लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस की गई है वह तेरी होगी।<sup>15</sup> हर इन्सान और हर हैवान का जो पहलौठा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इन्सान और हर नापाक जानवर के पहलौठे का फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाए।

<sup>16</sup> जब वह एक माह के हैं तो उन के इवज़ चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक्बिदस के बाटों के मुताबिक़ 11 ग्राम हो)।<sup>17</sup> लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िद्या यानी मुआवज़ा न देना। वह मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। उन का ख़ून कुर्बानगाह पर छिड़क देना और उन की चर्बी जला देना। ऐसी कुर्बानी रब को पसन्द होगी।<sup>18</sup> उन का गोशत वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलाने वाली कुर्बानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए हैं।

<sup>19</sup> मुक़द्दस कुर्बानियों में से तमाम उठाने वाली कुर्बानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का

हिस्सा हैं। मैं ने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नमक का दाइमी अहद है जो मैं ने तेरे और तेरी औलाद के साथ काइम किया है।”

### लावियों का हिस्सा

20रब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इस्राईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इस्राईलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इस्राईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उन की विरासत है, जो उन्हें मुलाक्रात के ख़ैमे में खिदमत करने के बदले में मिलती है। 22अब से इस्राईली मुलाक्रात के ख़ैमे के क़रीब न आएँ, वरना उन्हें अपनी खता का नतीजा बर्दाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे। 23सिर्फ़ लावी मुलाक्रात के ख़ैमे में खिदमत करें। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो वही कुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दाइमी उसूल है। उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी। 24क्योंकि मैं ने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इस्राईली मुझे उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैं ने उन के बारे में कहा कि उन्हें बाक़ी इस्राईलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

### लावियों का दसवाँ हिस्सा

25रब ने मूसा से कहा, 26“लावियों को बताना कि तुम्हें इस्राईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इस का दसवाँ हिस्सा रब को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करो। 27तुम्हारी यह कुर्बानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुर्बानी के बराबर करार दी जाएगी। 28इस तरह तुम भी रब को इस्राईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठाने वाली कुर्बानी पेश करोगे। रब के लिए यह कुर्बानी हारून इमाम को देना। 29जो

भी तुम्हें मिला है उस में से सब से अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा रब को देना। 30जब तुम इस का सब से अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुर्बानी के बराबर करार दिया जाएगा। 31तुम अपने घरानों समेत इस का बाक़ी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह मुलाक्रात के ख़ैमे में तुम्हारी खिदमत का अन्न है। 32अगर तुम ने पहले इस का बेहतरीन हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई कुसूर नहीं होगा। फिर इस्राईलियों की मख़सूस-ओ-मुक़द्दस कुर्बानियाँ तुम से नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

### सुर्ख गाय की राख

19 रब ने मूसा और हारून से कहा, 2“इस्राईलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख रंग की जवान गाय ले कर आएँ। उस में नुक्स न हो और उस पर कभी जूआ न रखा गया हो। 3तुम उसे इलीअज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए। 4फिर इलीअज़र इमाम अपनी उंगली से उस के खून से कुछ ले कर मुलाक्रात के ख़ैमे के सामने वाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोशत, खून और अंतड़ियों का गोबर भी जलाया जाए। 6फिर वह देवदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा और क्रिमिज़ी रंग का धागा ले कर उसे जलती हुई गाय पर फेंके। 7इस के बाद वह अपने कपड़ों को धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धो कर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इस्राईल की



जमाअत उसे नापाकी दूर करने का पानी तय्यार करने के लिए महफूज़ रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा। <sup>10</sup>जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इस्राईलियों और उन के दरमियान रहने वाले परदेसियों के लिए दाइमी उसूल हो।

### लाश छूने से पाक हो जाने का तरीका

<sup>11</sup>जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। <sup>12</sup>तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़क कर पाक-साफ़ हो जाए। इस के बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आप को यूँ पाक न करे तो नापाक रहेगा। <sup>13</sup>जो भी लाश छू कर अपने आप को यूँ पाक नहीं करता वह रब के मक्दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इस्राईल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इस लिए वह नापाक रहेगा।

<sup>14</sup>अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त उस में मौजूद हो या दाखिल हो जाए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। <sup>15</sup>हर खुला बर्तन जो ढकने से बन्द न किया गया हो वह भी नापाक होगा। <sup>16</sup>इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, ख्वाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इन्सान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

<sup>17</sup>नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख रंग की गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बर्तन में डाल कर ताज़ा पानी में मिलाना। <sup>18</sup>फिर कोई पाक आदमी कुछ ज़ूफ़ा ले और उसे उस पानी में डुबो कर मरे हुए शख्स के खैमे, उस के सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उस के मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख्स पर भी छिड़के जिस ने तबई या ग़ैरतबई

मौत मरे हुए शख्स को, किसी इन्सान की हड्डी को या कोई क़ब्र छूई हो। <sup>19</sup>पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

<sup>20</sup>लेकिन जो नापाक शख्स अपने आप को पाक नहीं करता उसे जमाअत में से मिटाना है, क्योंकि उस ने रब का मक्दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इस लिए वह नापाक रहा है। <sup>21</sup>यह उन के लिए दाइमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिस ने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। <sup>22</sup>और नापाक शख्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

### चटान से पानी

**20** पहले महीने में इस्राईल की पूरी जमाअत दशत-ए-सीन में पहुँच कर क़ादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

<sup>2</sup>क़ादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इस लिए लोग मूसा और हारून के मुकाबले में जमा हुए। <sup>3</sup>वह मूसा से यह कह कर झगड़ने लगे, “काश हम अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते! <sup>4</sup>आप रब की जमाअत को क्यूँ इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इस लिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? <sup>5</sup>आप हमें मिस्र से निकाल कर उस नाखुशगवार जगह पर क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अन्जीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

<sup>6</sup>मूसा और हारून लोगों को छोड़ कर मुलाक़ात के खैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब का जलाल उन पर

ज़ाहिर हुआ। 7रब ने मूसा से कहा, 8“अहद के सन्दूक के सामने पड़ी लाठी पकड़ कर हारून के साथ जमाअत को इकट्ठा कर। उन के सामने चटान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यूँ तू चटान में से जमाअत के लिए पानी निकाल कर उन्हें उन के मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।”

9मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने अहद के सन्दूक के सामने पड़ी लाठी उठाई 10और हारून के साथ जमाअत को चटान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने उन से कहा, “ए बग़ावत करने वालो, सुनो! क्या हम इस चटान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?” 11उस ने लाठी को उठा कर चटान को दो मर्तबा मारा तो बहुत सा पानी फूट निकला। जमाअत और उन के मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।

12लेकिन रब ने मूसा और हारून से कहा, “तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी कुदूसियत को इस्राईलियों के सामने क़ाइम रखते। इस लिए तुम उस जमाअत को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”

13यह वाक़िआ मरीबा यानी ‘झगड़ना’ के पानी पर हुआ। वहाँ इस्राईलियों ने रब से झगड़ा किया, और वहाँ उस ने उन पर ज़ाहिर किया कि वह कुदूस है।

### अदोम इस्राईल को गुज़रने नहीं देता

14क्रादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इत्तिला भेजी, “आप के भाई इस्राईल की तरफ़ से एक गुज़ारिश है। आप को उन तमाम मुसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं। 15हमारे बापदादा मिस्र गए थे और वहाँ हम बहुत अर्से तक रहे। मिस्रियों ने हमारे बापदादा और हम से बुरा सुलूक किया। 16लेकिन जब हम ने चिल्ला कर रब से मिन्नत की तो उस ने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेज कर हमें मिस्र से निकाल लाया। अब हम यहाँ क़ादिस शहर में हैं जो आप की सरहद पर है। 17मेहरबानी करके हमें अपने मुल्क में से

गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग़ में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आप के मुल्क में से गुज़रते हुए हम उस से न दाईं और न बाईं तरफ़ हटेंगे।”

18लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से न गुज़रना, वर्ना हम निकल कर आप से लड़ेंगे।” 19इस्राईल ने दुबारा ख़बर भेजी, “हम शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे दे कर खरीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।”

20लेकिन अदोमियों ने दुबारा इन्कार किया। साथ ही उन्होंने ने उन के साथ लड़ने के लिए एक बड़ी और ताक़तवर फ़ौज भेजी।

21चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी इस लिए इस्राईली मुड़ कर दूसरे रास्ते से चले गए।

### हारून की वफ़ात

22इस्राईल की पूरी जमाअत क़ादिस से रवाना हो कर होर पहाड़ के पास पहुँची। 23यह पहाड़ अदोम की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब ने मूसा और हारून से कहा, 24“हारून अब कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा जो मैं इस्राईलियों को दूँगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की खिलाफ़रज़ी की। 25हारून और उस के बेटे इलीअज़र को ले कर होर पहाड़ पर चढ़ जा। 26हारून के कपड़े उतार कर उस के बेटे इलीअज़र को पहना देना। फिर हारून कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

27मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा। तीनों पूरी जमाअत के देखते देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए। 28मूसा ने हारून के कपड़े उतरवा कर उस के बेटे इलीअज़र को पहना दिए। फिर हारून वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलीअज़र नीचे उतर

गए। <sup>29</sup>जब पूरी जमाअत को मालूम हुआ कि हारून इन्तिक्राल कर गया है तो सब ने 30 दिन तक उस के लिए मातम किया।

### कनआनी मुल्क-ए-अराद पर फ़तह

**21** दशत-ए-नजब के कनआनी मुल्क अराद के बादशाह को खबर मिली कि इस्राईली अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उस ने उन पर हम्ला किया और कई एक को पकड़ कर कैद कर लिया। <sup>2</sup>तब इस्राईलियों ने रब के सामने मन्नत मान कर कहा, “अगर तू हमें उन पर फ़तह देगा तो हम उन्हें उन के शहरों समेत तबाह कर देंगे।” <sup>3</sup>रब ने उन की सुनी और कनआनियों पर फ़तह बख़शी। इस्राईलियों ने उन्हें उन के शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इस लिए उस जगह का नाम हुर्मा यानी तबाही पड़ गया।

### पीतल का साँप

<sup>4</sup>होर पहाड़ से रवाना हो कर वह बहर-ए-कुल्जुम की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो गए। <sup>5</sup>वह रब और मूसा के खिलाफ़ बातें करने लगे, “आप हमें मिस्र से निकाल कर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क्रिस्म की खुराक से घिन आती है।”

<sup>6</sup>तब रब ने उन के दरमियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिन के काटने से बहुत से लोग मर गए। <sup>7</sup>फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने ने कहा, “हम ने रब और आप के खिलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब हम से साँप दूर कर दे।”

मूसा ने उन के लिए दुआ की <sup>8</sup>तो रब ने मूसा से कहा, “एक साँप बना कर उसे खम्बे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देख कर बच जाएगा।” <sup>9</sup>चुनाँचे मूसा ने पीतल का

एक साँप बनाया और खम्बा खड़ा करके साँप को उस से लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।

### मोआब की तरफ़ सफ़र

<sup>10</sup>इस्राईली रवाना हुए और ओबोत में अपने ख़ैमे लगाए। <sup>11</sup>फिर वहाँ से कूच करके अय्ये-अबारीम में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक् की तरफ़ मोआब के सामने है। <sup>12</sup>वहाँ से रवाना हो कर वह वादी-ए-ज़िरद में ख़ैमाज़न हुए। <sup>13</sup>जब वादी-ए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरया-ए-अर्नोन के परले यानी जुनूबी किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह दरया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाक़े से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के दरमियान की सरहद है। <sup>14</sup>इस का ज़िक्र किताब ‘रब की जंगों’ में भी है,

“वाहेब जो सूफ़ा में है, दरया-ए-अर्नोन की वादियों <sup>15</sup>और वादियों का वह ढलान जो आर शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर वाक़े है।”

<sup>16</sup>वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को इकट्ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।” <sup>17</sup>उस वक़्त इस्राईलियों ने यह गीत गाया,

“ऐ कुएँ, फूट निकल! उस के बारे में गीत गाओ,

<sup>18</sup>उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा, जिसे क़ौम के राहनुमाओं ने असा-ए-शाही और अपनी लाठियों से खोदा।”

फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, <sup>19</sup>मत्तना से नहलीएल को और नहलीएल से बामात को। <sup>20</sup>बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़ की चोटी से वादी-ए-यर्दन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन ख़ूब नज़र आता है।

### सीहोन और ओज की शिकस्त

21 इस्राईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को इत्तिला भेजी, 22 "हमें अपने मुल्क में से गुजरने दें। हम सीधे सीधे गुजर जाएंगे। न हम कोई खेत या अंगूर का बाग छेड़ेंगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे। हम आप के मुल्क में से सीधे गुजरते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।" 23 लेकिन सीहोन ने उन्हें गुजरने न दिया बल्कि अपनी फ़ौज जमा करके इस्राईल से लड़ने के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँच कर उस ने इस्राईलियों से जंग की। 24 लेकिन इस्राईलियों ने उसे क्रतल किया और दरया-ए-अर्नोन से ले कर दरया-ए-यब्बोक तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इस से आगे न जा सके क्योंकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की हिसारबन्दी कर रखी थी। 25 इस्राईली तमाम अमोरी शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में रहने लगे। उन में हस्बोन और उस के इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल थीं।

26 हस्बोन अमोरी बादशाह सीहोन का दार-उल-हुकूमत था। उस ने मोआब के पिछले बादशाह से लड़ कर उस से यह इलाक़ा दरया-ए-अर्नोन तक छीन लिया था। 27 उस वाकिए का ज़िक्र शाइरी में यूँ किया गया है,

"हस्बोन के पास आ कर उसे अज़ सर-ए-नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज़ सर-ए-नौ क़ाइम करो।

28 हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला भड़का। उस ने मोआब के शहर आर को जला दिया, अर्नोन की बुलन्दियों के मालिकों को भस्म किया।

29 ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! ऐ कमोस देवता की क़ौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों को मफ़रूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह सीहोन की क़ैदी बना दिया है।

30 लेकिन जब हम ने अमोरियों पर तीर चलाए तो हस्बोन का इलाक़ा दीबोन तक

बर्बाद हुआ। हम ने नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिस का इलाक़ा मीदबा तक है।"

31 यूँ इस्राईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ। 32 वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे। इस्राईलियों ने याज़ेर और उस के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा किया और वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33 इस के बाद वह मुड़ कर बसन की तरफ़ बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज ले कर उन से लड़ने के लिए शहर इद्रई आया। 34 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, "ओज से न डरना। मैं उसे, उस की तमाम फ़ौज और उस का मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वही सुलुक कर जो तू ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिस का दार-उल-हुकूमत हस्बोन था।" 35 इस्राईलियों ने ओज, उस के बेटों और तमाम फ़ौज को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्होंने ने बसन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया।

### बलक़ बलआम को इस्राईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

**22** इस के बाद इस्राईली मोआब के मैदानों में पहुँच कर दरया-ए-यर्दन के मशरिकी किनारे पर यरीहू के आमने-सामने ख़ैमाज़न हुए।

2 मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर को मालूम हुआ कि इस्राईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ किया है। 3 मोआबियों ने यह भी देखा कि इस्राईली बहुत ज़्यादा हैं, इस लिए उन पर दहशत छा गई। 4 उन्होंने ने मिदियानियों के बुजुर्गों से बात की, "अब यह हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाक़ा चट कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर जाता है।"

5तब बलक़ ने अपने क़ासिद फ़तोर शहर को भेजे जो दरया-ए-फ़ुरात पर वाक़े था और जहाँ बलआम बिन बओर अपने वतन में रहता था। क़ासिद उसे बुलाने के लिए उस के पास पहुँचे और उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया, “एक क़ौम मिस्र से निकल आई है जो रू-ए-ज़मीन पर छा कर मेरे क़रीब ही आबाद हुई है। 6इस लिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें, क्योंकि वह मुझे से ज़्यादा ताक़तवर हैं। फिर शायद मैं उन्हें शिकस्त दे कर मुल्क से भगा सकूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती है।”

7यह पैग़ाम ले कर मोआब और मिदियान के बुज़ुर्ग़ रवाना हुए। उन के पास इनआम के पैसे थे। बलआम के पास पहुँच कर उन्होंने उसे बलक़ का पैग़ाम सुनाया। 8बलआम ने कहा, “रात यहाँ गुज़ारें। कल मैं आप को बता दूँगा कि रब इस के बारे में क्या फ़रमाता है।” चुनाँचे मोआबी सरदार उस के पास ठहर गए।

9रात के वक़्त अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर हुआ। उस ने पूछा, “यह आदमी कौन है जो तेरे पास आए हैं?” 10बलआम ने जवाब दिया, “मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मुझे पैग़ाम भेजा है, 11‘जो क़ौम मिस्र से निकल आई है वह रू-ए-ज़मीन पर छा गई है। इस लिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत भेजें। फिर शायद मैं उन से लड़ कर उन्हें भगा देने में कामयाब हो जाऊँ।’” 12रब ने बलआम से कहा, “उन के साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन पर मेरी बरकत है।”

13अगली सुबह बलआम जाग उठा तो उस ने बलक़ के सरदारों से कहा, “अपने वतन वापस चले जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे आप के साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।” 14चुनाँचे मोआबी सरदार खाली हाथ बलक़ के पास वापस आए। उन्होंने कहा, “बलआम हमारे

साथ आने से इन्कार करता है।” 15तब बलक़ ने और सरदार भेजे जो पहले वालों की निस्बत तादाद और उद्दे के लिहाज़ से ज़्यादा थे। 16वह बलआम के पास जा कर कहने लगे, “बलक़ बिन सफ़ोर कहते हैं कि कोई भी बात आप को मेरे पास आने से न रोके, 17क्योंकि मैं आप को बड़ा इनआम दूँगा। आप जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तय्यार हूँ। आएँ तो सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।”

18लेकिन बलआम ने जवाब दिया, “अगर बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भर कर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने खुदा के फ़रमान की खिलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़्वाह बात छोटी हो या बड़ी। 19आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ बताता है।”

20उस रात अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर हुआ और कहा, “चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए हैं इस लिए उन के साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना जो मैं तुझे बताऊँगा।”

### बलआम की गधी

21सुबह को बलआम ने उठ कर अपनी गधी पर ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा। 22लेकिन अल्लाह निहायत गुस्से हुआ कि वह जा रहा है, इस लिए उस का फ़रिश्ता उस का मुकाबला करने के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बलआम अपनी गधी पर सवार था और उस के दो नौकर उस के साथ चल रहे थे। 23जब गधी ने देखा कि रब का फ़रिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते से हट कर खेत में चलने लगी। बलआम उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।

24फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दरमियान से गुज़रने लगे। रास्ता तंग था, क्योंकि वह दोनों तरफ़ बाग़ों की चारदीवारी से बन्द था। अब

रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा हुआ। <sup>25</sup>गधी यह देख कर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बलआम का पाँओ कुचला गया। उस ने उसे दुबारा मारा।

<sup>26</sup>रब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी मर्तबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की कोई गुन्जाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं तरफ़। <sup>27</sup>जब गधी ने रब का फ़रिश्ता देखा तो वह लेट गई। बलआम को गुस्सा आ गया, और उस ने उसे अपनी लाठी से खूब मारा।

<sup>28</sup>तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उस ने बलआम से कहा, “मैं ने आप से क्या ग़लत सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे हैं?” <sup>29</sup>बलआम ने जवाब दिया, “तू ने मुझे बेचुकूफ़ बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर देता!” <sup>30</sup>गधी ने बलआम से कहा, “क्या मैं आप की गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने की आदत थी?” उस ने कहा, “नहीं।”

<sup>31</sup>फिर रब ने बलआम की आँखें खोलीं और उस ने रब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बलआम ने मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया। <sup>32</sup>रब के फ़रिश्ते ने पूछा, “तू ने तीन बार अपनी गधी को क्यों पीटा? मैं तेरे मुक्काबले में आया हूँ, क्यों कि जिस तरफ़ तू बढ़ रहा है उस का अन्जाम बुरा है। <sup>33</sup>गधी तीन मर्तबा मुझे देख कर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।”

<sup>34</sup>बलआम ने रब के फ़रिश्ते से कहा, “मैं ने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुक्काबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।” <sup>35</sup>रब के फ़रिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो

मैं तुझे बताऊँगा।” चुनौचे बलआम ने बलक़ के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।

<sup>36</sup>जब बलक़ को खबर मिली कि बलआम आ रहा है तो वह उस से मिलने के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े है। <sup>37</sup>उस ने बलआम से कहा, “क्या मैं ने आप को इत्तिला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप क्यों नहीं आए? क्या आप ने सोचा कि मैं आप को मुनासिब इनआम नहीं दे पाऊँगा?” <sup>38</sup>बलआम ने जवाब दिया, “बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”

<sup>39</sup>फिर बलआम बलक़ के साथ क्रियत-हुसात गया। <sup>40</sup>वहाँ बलक़ ने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ कुर्बान करके उन के गोश्त में से बलआम और उस के साथ वाले सरदारों को दे दिया। <sup>41</sup>अगली सुबह बलक़ बलआम को साथ ले कर एक ऊँची जगह पर चढ़ गया जिस का नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इस्राईली खैमागाह का किनारा नज़र आता था।

### बलआम की पहली बरकत

**23** बलआम ने कहा, “यहाँ मेरे लिए सात कुर्बानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तय्यार कर रखें।” <sup>2</sup>बलक़ ने ऐसा ही किया, और दोनों ने मिल कर हर कुर्बानगाह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। <sup>3</sup>फिर बलआम ने बलक़ से कहा, “यहाँ अपनी कुर्बानी के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासिले पर जाता हूँ, शायद रब मुझ से मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करे मैं आप को बता दूँगा।”

यह कह कर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया जो हरियाली से बिलकुल महरूम था। <sup>4</sup>वहाँ अल्लाह बलआम से मिला। बलआम ने कहा, “मैं ने सात कुर्बानगाहें तय्यार करके हर कुर्बानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुर्बान

किया है।" 5तब रब ने उसे बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।" 6बलआम बलक़ के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी कुर्बानी के पास खड़ा था। 7बलआम बोल उठा,

"बलक़ मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिफ़ी पहाड़ों से बुला कर कहा, 'आओ, याक़ूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ, इस्राईल को बददुआ दो।'

8मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?

9मैं उन्हें चटानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों से उन का मुशाहदा करता हूँ। वाक़ई यह एक ऐसी क्रौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आप को दूसरी क्रौमों से मुन्ताज़ समझती है।

10कौन याक़ूब की औलाद को गिन सकता है जो गर्द की मानिन्द बेशुमार है। कौन इस्राईलियों का चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब करे कि मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अन्जाम उन के अन्जाम जैसा अच्छा हो।"

11बलक़ ने बलआम से कहा, "आप ने मेरे साथ क्या किया है? मैं आप को अपने दुश्मनों पर लानत भेजने के लिए लाया और आप ने उन्हें अच्छी-खासी बरकत दी है।" 12बलआम ने जवाब दिया, "क्या लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब ने बताने को कहा है?"

### बलआम की दूसरी बरकत

13फिर बलक़ ने उस से कहा, "आएँ, हम एक और जगह जाएँ जहाँ से आप इस्राईली क्रौम को देख सकेंगे, गो उन की ख़ैमागाह का सिर्फ़ किनारा ही नज़र आएगा। आप सब को नहीं देख सकेंगे। वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।" 14यह कह कर वह उस के साथ

पिसगा की चोटी पर चढ़ कर पहरदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उस ने सात कुर्बानगाहें बना कर हर एक पर एक बैल और एक मेंढा कुर्बान किया। 15बलआम ने बलक़ से कहा, "यहाँ अपनी कुर्बानगाह के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासिले पर जा कर रब से मिलूँगा।"

16रब बलआम से मिला। उस ने उसे बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना दे।" 17वह वापस चला गया। बलक़ अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी कुर्बानी के पास खड़ा था। उस ने उस से पूछा, "रब ने क्या कहा?" 18बलआम ने कहा, "ऐ बलक़, उठो और सुनो। ऐ सफ़ोर के बेटे, मेरी बात पर ग़ौर करो।

19अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह इन्सान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20मुझे बरकत देने को कहा गया है। उस ने बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।

21याक़ूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती, इस्राईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब उस का खुदा उस के साथ है, और क्रौम बादशाह की खुशी में नारे लगाती है।

22अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की ताक़त हासिल है।

23याक़ूब के घराने के खिलाफ़ जादूगरी नाकाम है, इस्राईल के खिलाफ़ ग़ैबदानी बेफ़ाइदा है। अब याक़ूब के घराने से कहा जाएगा, 'अल्लाह ने कैसा काम किया है!'

24इस्राईली क्रौम शेरनी की तरह उठती और शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब तक वह मारे हुए लोगों का खून न पी ले वह नहीं लेटता।"

<sup>25</sup>यह सुन कर बलक़ ने कहा, “अगर आप उन पर लानत भेजने से इन्कार करें, कम अज़ कम उन्हें बरकत तो न दें।” <sup>26</sup>बलआम ने जवाब दिया, “क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि जो कुछ भी रब कहेगा मैं वही करूँगा?”

### बलआम की तीसरी बरकत

<sup>27</sup>तब बलक़ ने बलआम से कहा, “आएँ, मैं आप को एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर लानत भेजें।” <sup>28</sup>वह उस के साथ फ़गूर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की चोटी से यर्दन की वादी का जुनूबी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया। <sup>29</sup>बलआम ने उस से कहा, “मेरे लिए यहाँ सात कुर्बानगाहें बना कर सात बैल और सात मेंढे तय्यार कर रखें।” <sup>30</sup>बलक़ ने ऐसा ही किया। उस ने हर एक कुर्बानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुर्बान किया।

**24** अब बलआम को उस बात का पूरा यक़ीन हो गया कि रब को पसन्द है कि मैं इस्राईलियों को बरकत दूँ। इस लिए उस ने इस मर्तबा पहले की तरह जादूगरी का तरीक़ा इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया <sup>2</sup>जहाँ इस्राईल अपने अपने क़बीलों की तरतीब से ख़ैमाज़न था। यह देख कर अल्लाह का रूह उस पर नाज़िल हुआ, <sup>3</sup>और वह बोल उठा,

“बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस के पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है,

<sup>4</sup>उस का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, क़ादिर-ए-मुतलक़ की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिर कर पोशीदा बातें देखता है।

<sup>5</sup>ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इस्राईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

<sup>6</sup>वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिन्द, नहर के किनारे लगे बाग़ों की मानिन्द, रब के

लगाए हुए ऊद के दरख़्तों की मानिन्द, पानी के किनारे लगे देवदार के दरख़्तों की मानिन्द हैं।

<sup>7</sup>उन की बाल्टियों से पानी छलकता रहेगा, उन के बीज को कसत का पानी मिलेगा। उन का बादशाह अजाज से ज़्यादा ताक़तवर होगा, और उन की सल्तनत सरफ़राज़ होगी।

<sup>8</sup>अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की सी ताक़त हासिल है। वह मुख़ालिफ़ क़ौमों को हड़प करके उन की हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चला कर उन्हें मार डालते हैं।

<sup>9</sup>इस्राईल शेरबबर या शेरनी की मानिन्द है। जब वह दबक कर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की जुरअत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।”

<sup>10</sup>यह सुन कर बलक़ आपे से बाहर हुआ। उस ने ताली बजा कर अपनी हिक़ारत का इज़हार किया और कहा, “मैं ने तुझे इस लिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तू ने उन्हें तीनों बार बरकत ही दी है। <sup>11</sup>अब दफ़ा हो जा! अपने घर वापस भाग जा! मैं ने कहा था कि बड़ा इनआम दूँगा। लेकिन रब ने तुझे इनआम पाने से रोक दिया है।”

<sup>12</sup>बलआम ने जवाब दिया, “क्या मैं ने उन लोगों को जिन्हें आप ने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं बताया था <sup>13</sup>कि अगर बलक़ अपने महल को चाँदी और सोने से भर कर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की खिलाफ़रज़ी नहीं कर सकती, ख़्वाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। <sup>14</sup>अब मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं आप को बता देता हूँ कि आखिरकार यह क़ौम आप की क़ौम के साथ क्या कुछ करेगी।”



**बलआम की चौथी बरकत**

15वह बोल उठा,

“बलआम बिन बओर का पैगाम सुनो, उस का पैगाम जो साफ़ साफ़ देखता है,

16उस का पैगाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और अल्लाह तआला की मर्ज़ी को जानता है, जो क्रादिर-ए-मुतलक़ की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिर कर पोशीदा बातें देखता है।

17जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक़्त नहीं है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह क़रीब नहीं है। याक़ूब के घराने से सितारा निकलेगा, और इस्राईल से असा-ए-शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।

18अदोम उस के क़ब्ज़े में आएगा, उस का दुश्मन सर्ईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इस्राईल की ताक़त बढ़ती जाएगी।

19याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो शहर के बचे हुआँ को हलाक कर देगा।”

**बलआम के आखिरी पैगाम**

20फिर बलआम ने अमालीक़ को देखा और कहा,

“अमालीक़ क़ौमों में अव्वल था, लेकिन आखिरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”

21फिर उस ने क़ीनियों को देखा और कहा, “तेरी सुकूनतगाह मुस्तहक़म है, तेरा चटान में बना घोंसला मज़बूत है।

22लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे गिरिफ़्तार करेगा।”

23एक और दफ़ा उस ने बात की,

“हाय, कौन ज़िन्दा रह सकता है जब अल्लाह यूँ करेगा?

24कितीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह खुद भी हलाक हो जाएँगे।”

25फिर बलआम उठ कर अपने घर वापस चला गया। बलक़ भी वहाँ से चला गया।

**मोआब इस्राईलियों की आजमाइश करता है**

**25** जब इस्राईली शिक्तीम में रह रहे थे तो इस्राईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाकारी करने लगे। 2यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने देवताओं को कुर्बानियाँ पेश करते वक़्त इस्राईलियों को शरीक होने की दावत देने लगीं। इस्राईली दावत क़बूल करके कुर्बानियों से खाने और देवताओं को सिज्दा करने लगे। 3इस तरीक़े से इस्राईली मोआबी देवता बनाम बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने लगे, और रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4उस ने मूसा से कहा, “इस क़ौम के तमाम राहनुमाओं को सज़ा-ए-मौत दे कर सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वर्ना रब का इस्राईलियों पर से ग़ज़ब नहीं टलेगा।” 5चुनौचे मूसा ने इस्राईल के क़ाज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि तुम में से हर एक अपने उन आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़ग़ूर देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”

6मूसा और इस्राईल की पूरी जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा हो कर रोने लगे। इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था। 7यह देख कर हारून का पोता फ़ीन्हास बिन इलीअज़र जमाअत से निकला और नेज़ा पकड़ कर 8उस इस्राईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने ख़ैमे में दाखिल हुआ तो फ़ीन्हास ने उन के पीछे पीछे जा कर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीन्हास के इस अमल से वह रुक गई। 9तो भी 24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10रब ने मूसा से कहा, 11“हारून के पोते फ़ीन्हास बिन इलीअज़र ने इस्राईलियों पर मेरा

गुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपना कर वह इस्राईल में दीगर माबूदों की पूजा को बर्दाश्त न कर सका। इस लिए मेरी ग़ैरत ने इस्राईलियों को नेस्त-ओ-नाबूद नहीं किया।<sup>12</sup>लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उस के साथ सलामती का अह्द क़ाइम करता हूँ।<sup>13</sup>इस अह्द के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक इमाम का उह्दा हासिल रहेगा, क्योंकि अपने खुदा की खातिर ग़ैरत खा कर उस ने इस्राईलियों का कफ़रा दिया।”

<sup>14</sup>जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार दिया गया उस का नाम जिम्नी बिन सलू था, और वह शमाऊन के क़बीले के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।<sup>15</sup>मिदियानी औरत का नाम कज़बी था, और वह सूर की बेटी थी जो मिदियानियों के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

<sup>16</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>17</sup>“मिदियानियों को दुश्मन करार दे कर उन्हें मार डालना।<sup>18</sup>क्योंकि उन्होंने ने अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का सा सुलूक किया, उन्होंने ने तुम्हें बाल-फ़गूर की पूजा करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी सरदार की बेटी कज़बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते वक़्त मार दिया गया बहकाया।”

### दूसरी मर्दुमशुमारी

**26** वबा के बाद रब ने मूसा और हारून के बेटे इलीअज़र से कहा,  
<sup>2</sup>“पूरी इस्राईली जमाअत की मर्दुमशुमारी उन के आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों को गिनना जो 20 साल या इस से ज़ाइद के हैं और जो जंग लड़ने के क़ाबिल हैं।”

<sup>3-4</sup>मूसा और इलीअज़र ने इस्राईलियों को बताया कि रब ने उन्हें क्या हुकम दिया है। चुनाँचे उन्होंने ने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने, लेकिन दरया-ए-यर्दन के

मशरिक़ी किनारे पर मर्दुमशुमारी की। यह वह इस्राईली आदमी थे जो मिस्र से निकले थे।

<sup>5-7</sup>इस्राईल के पहलौठे रूबिन के क़बीले के 43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंभे हनूकी, फ़ल्लुवी, हस्रोनी और कर्मी रूबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी से निकले हुए थे।<sup>8</sup>रूबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप था<sup>9</sup>जिस के बेटे नमूएल, दातन और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमाअत ने चुना था और जिन्होंने ने क्रोरह के गुरोह समेत मूसा और हारून से झगड़ते हुए खुद रब से झगड़ा किया।<sup>10</sup>उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोल कर उन्हें क्रोरह समेत हड़प कर लिया था। उस के 250 साथी भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यूँ वह सब इस्राईल के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए थे।<sup>11</sup>लेकिन क्रोरह की पूरी नस्ल मिटाई नहीं गई थी।

<sup>12-14</sup>शमाऊन के क़बीले के 22,200 मर्द थे। क़बीले के पाँच कुंभे नमूएली, यमीनी, यक्कीनी, ज़ारही और साऊली शमाऊन के बेटों नमूएल, यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

<sup>15-18</sup>जद के क़बीले के 40,500 मर्द थे। क़बीले के सात कुंभे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूद और अरेली से निकले हुए थे।

<sup>19-22</sup>यहूदाह के क़बीले के 76,500 मर्द थे। यहूदाह के दो बेटे एर और ओनान मिस्र आने से पहले कनआन में मर गए थे। क़बीले के तीन कुंभे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहूदाह के बेटों सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हस्रोन और हमूल से दो कुंभे हस्रोनी और हमूली निकले हुए थे।<sup>23-25</sup>इश्कार के क़बीले के 64,300 मर्द थे। क़बीले के चार कुंभे तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और

सिम्रोनी इश्कार के बेटों तोला, फुव्वा, यसूब और सिम्रोन से निकले हुए थे।

26-27 ज़बूलून के क़बीले के 60,500 मर्द थे। क़बीले के तीन कुंभे सरदी, ऐलोनी और यहलीएली ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलीएल से निकले हुए थे।

28 यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़्राईम के अलग अलग क़बीले बने।

29-34 मनस्सी के क़बीले के 52,700 मर्द थे। क़बीले के आठ कुंभे मकीरी, जिलिआदी, ईअज़री, खलक़ी, असीएली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि जिलिआदी मकीर के बेटे जिलिआद से निकले हुए थे। बाक़ी कुंभे जिलिआद के छः बेटों ईअज़र, खलक़, असीएल, सिकम, समीदा और हिफ़र से निकले हुए थे।

हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिलाफ़िहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नूआह, हुज्लाह, मिक्वाह और तिर्ज़ा थीं।

35-37 इफ़्राईम के क़बीले के 32,500 मर्द थे। क़बीले के चार कुंभे सूतलही, बकरी, तहनी और ईरानी थे। पहले तीन कुंभे इफ़्राईम के बेटों सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

38-41 बिनयमीन के क़बीले के 45,600 मर्द थे। क़बीले के सात कुंभे बालाई, अशबेली, अखीरामी, सूफ़ामी, हूफ़ामी, अर्दी और नामानी थे। पहले पाँच कुंभे बिनयमीन के बेटों बाला, अशबेल, अखीराम, सूफ़ाम और हूफ़ाम से जबकि अर्दी और नामानी बाला के बेटों से निकले हुए थे।

42-43 दान के क़बीले के 64,400 मर्द थे। सब दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इस लिए सूहामी कहलाते थे।

44-47 आशर के क़बीले के 53,400 मर्द थे। क़बीले के पाँच कुंभे यिमनी, इस्वी, बरीई, हिबरी और मल्कीएली थे। पहले तीन कुंभे

आशर के बेटों यिमना, इस्वी और बरीआ से जबकि बाक़ी बरीआ के बेटों हिबर और मल्कीएल से निकले हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48-50 नफ़ताली के क़बीले के 45,400 मर्द थे। क़बीले के चार कुंभे यहसीएली, जूनी, यिसरी और सिल्लीमी नफ़ताली के बेटों यहसीएल, जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51 इस्राईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52 रब ने मूसा से कहा, 53 "जब मुल्क-ए-कनआन को तक्सीम किया जाएगा तो ज़मीन इन की तादाद के मुताबिक़ देना है। 54 बड़े क़बीलों को छोटे की निस्बत ज़्यादा ज़मीन दी जाए। हर क़बीले का इलाक़ा उस की तादाद से मुताबिक़त रखे। 55-56 कुरआ डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर क़बीले को कहां ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर क़बीले के इलाक़े का रक़बा इस पर मब्नी हो कि क़बीले के कितने अफ़राद हैं।"

57 लावी के क़बीले के तीन कुंभे जैसोनी, क्रिहाती और मिरारी लावी के बेटों जैसोन, क्रिहात और मिरारी से निकले हुए थे। 58 इस के इलावा लिब्नी, हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंभे थे। क्रिहात अम्राम का बाप था। 59 अम्राम ने लावी औरत यूकबिद से शादी की जो मिस्र में पैदा हुई थी। उन के दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए। 60 हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर थे। 61 लेकिन नदब और अबीहू रब को बख़ूर की नाजाइज़ कुर्बानी पेश करने के बाइस मर गए। 62 लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी। इन में वह सब शामिल थे जो एक माह या इस से ज़ाद के थे। उन्हें दूसरे इस्राईलियों से अलग गिना गया, क्योंकि उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

<sup>63</sup>यूँ मूसा और इलीअज़र ने मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने लेकिन दरया-ए-यर्दन के मशरिक्की किनारे पर इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी की। <sup>64</sup>लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग दशत-ए-सीन में मूसा और हारून की पहली मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं। <sup>65</sup>रब ने कहा था कि वह सब के सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून जिन्दा रहे।

### सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

**27** सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ महलाह, नूआह, हुज्लाह, मिल्लाह और तिर्ज़ा थीं। सिलाफ़िहाद यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कुंभे का था। उस का पूरा नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ था। <sup>2</sup>सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक्रात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आ कर मूसा, इलीअज़र इमाम और पूरी जमाअत के सामने खड़ी हुईं। उन्होंने ने कहा, <sup>3</sup>“हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह क्रोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने ज़ाती गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उस का कोई बेटा नहीं था। <sup>4</sup>क्या यह ठीक है कि हमारे खानदान में बेटा न होने के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नाम-ओ-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।”

<sup>5</sup>मूसा ने उन का मुआमला रब के सामने पेश किया <sup>6</sup>तो रब ने उस से कहा, <sup>7</sup>“जो बात सिलाफ़िहाद की बेटियाँ कर रही हैं वह दुरुस्त है। उन्हें ज़रूर उन के बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरसा मिल जाए। <sup>8</sup>इस्राईलियों को भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिस का

बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास मिल जाए। <sup>9</sup>अगर उस की बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। <sup>10</sup>अगर उस के भाई भी न हों तो उस के बाप के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। <sup>11</sup>अगर यह भी न हों तो उस के सब से क़रीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह उस की ज़ाती मिलकियत होगी। यह उसूल इस्राईलियों के लिए क़ानूनी हैसियत रखता है। वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया है।”

### यशूअ को मूसा का जानशीन मुकर्रर किया जाता है

<sup>12</sup>फिर रब ने मूसा से कहा, “अबारीम के पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़ कर उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इस्राईलियों को दूँगा। <sup>13</sup>उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई हारून की तरह कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा, <sup>14</sup>क्योंकि तुम दोनों ने दशत-ए-सीन में मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। उस वक़्त जब पूरी जमाअत ने मरीबा में मेरे ख़िलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तू ने चटान से पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने मेरी कुहूसियत क़ाइम न रखी।” (मरीबा दशत-ए-सीन के क़ादिस में चश्मा है।)

<sup>15</sup>मूसा ने रब से कहा, <sup>16</sup>“ऐ रब, तमाम जानों के खुदा, जमाअत पर किसी आदमी को मुकर्रर कर <sup>17</sup>जो उन के आगे आगे जंग के लिए निकले और उन के आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वर्ना रब की जमाअत उन भेड़ों की मानिन्द होगी जिन का कोई चरवाहा न हो।”

<sup>18</sup>जवाब में रब ने मूसा से कहा, “यशूअ बिन नून को चुन ले जिस में मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख। <sup>19</sup>उसे इलीअज़र इमाम और पूरी जमाअत के सामने खड़ा करके उन के रू-ब-रू ही उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी दे। <sup>20</sup>अपने इखतियार में से कुछ

उसे दे ताकि इस्राईल की पूरी जमाअत उस की इताअत करे। 21रब की मर्ज़ी जानने के लिए वह इलीअज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलीअज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशूअ और इस्राईल की पूरी जमाअत ख़ैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।”

22मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने यशूअ को चुन कर इलीअज़र और पूरी जमाअत के सामने खड़ा किया। 23फिर उस ने उस पर अपने हाथ रख कर उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपी जिस तरह रब ने उसे बताया था।

### रोज़मर्रा की कुर्बानियाँ

**28** रब ने मूसा से कहा, 2”इस्राईलियों को बताना, खयाल रखो कि तुम मुक़र्ररा औक्रात पर मुझे जलने वाली कुर्बानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी हैं और इन की खुशबू मुझे पसन्द है। 3रब को जलने वाली यह कुर्बानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो एकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे तौर पर जला देना। 4एक को सुबह के वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद। 5भेड़ के बच्चे के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर ज़ैतून के कूट कर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो। 6यह रोज़मर्रा की कुर्बानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस जलने वाली कुर्बानी की खुशबू रब को पसन्द है। 7-8साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर पर कुर्बानगाह पर डाली जाए। सुबह और शाम की यह कुर्बानियाँ दोनों ही इस तरीक़े से पेश की जाएँ।

### सबत यानी हफ़्ते की कुर्बानी

9सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और ग़ल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। ग़ल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए। 10भस्म होने वाली यह कुर्बानी हर हफ़्ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की कुर्बानियों के इलावा है।

### हर माह के पहले दिन की कुर्बानी

11हर माह के शुरू में रब को भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात एकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों। 12हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश करना जिस के लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 13और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होने वाली यह कुर्बानियाँ रब को पसन्द हैं। 14इन कुर्बानियों के साथ मै की नज़र भी कुर्बानगाह पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह कुर्बानी साल में हर महीने के पहले दिन के मौक़े पर पेश करनी है। 15इस कुर्बानी और रोज़मर्रा की कुर्बानियों के इलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश करना।

### फ़सह की कुर्बानियाँ

16पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद मनाई जाए। 17अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह ईद शुरू होती है जिस के दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेखमीरी रोटी खानी है। 18पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 19रब के हुज़ूर भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़

के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बगैर नुक्स के हों।<sup>20</sup>हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम<sup>21</sup> और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।<sup>22</sup>गुनाह की कुर्बानी के तौर पर एक बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए।<sup>23-24</sup>इन तमाम कुर्बानियों को ईद के दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होने वाली कुर्बानियों के इलावा हैं। इस खुराक की खुशबू रब को पसन्द है।<sup>25</sup>सातवें दिन काम न करना बल्कि मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

### फ़सल की कटाई की ईद की कुर्बानियाँ

<sup>26</sup>फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब तुम रब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार पेश करते हो तो काम न करना बल्कि मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।<sup>27-29</sup>उस दिन दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे कुर्बानगाह पर पूरे तौर पर जला देना। इस के साथ गल्ला और मै की वही नज़रें पेश करना जो फ़सह की ईद पर भी पेश की जाती हैं।<sup>30</sup>इस के इलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाना।

<sup>31</sup>यह तमाम कुर्बानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होने वाली कुर्बानियों और उन के साथ वाली गल्ला और मै की नज़रों के इलावा हैं। वह बेऐब हों।

### नए साल की ईद की कुर्बानियाँ

**29** सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन नरसिंगे फूँके जाएँ।<sup>2</sup>रब को भस्म होने वाली कुर्बानी पेश की जाए जिस की खुशबू उसे

पसन्द हो यानी एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक्स के बगैर हों।<sup>3</sup>हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम<sup>4</sup> और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।<sup>5</sup>एक बकरा भी गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए।<sup>6</sup>यह कुर्बानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की कुर्बानियों और उन के साथ की गल्ला और मै की नज़रों के इलावा हैं। इन की खुशबू रब को पसन्द है।

### कफ़ारा के दिन की कुर्बानियाँ

<sup>7</sup>सातवें महीने के दसवें दिन मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी जान को दुख देना।<sup>8-11</sup>रब को वही कुर्बानियाँ पेश करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़र्क़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए। ऐसी कुर्बानियाँ रब को पसन्द हैं।

### झोंपड़ियों की ईद की कुर्बानियाँ

<sup>12</sup>सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम में ईद मनाना।<sup>13</sup>ईद के पहले दिन रब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करना। इन की खुशबू उसे पसन्द है। सब नुक्स के बगैर हों।<sup>14</sup>हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल से मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम<sup>15</sup> और भेड़ के हर

बच्चों के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।<sup>16</sup>इस के इलावा एक बकरा भी गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पेश करना। यह कुर्बानियाँ रोज़ाना की भस्म होने वाली कुर्बानियों और उन के साथ वाली गल्ला और मै की नज़रों के इलावा हैं।<sup>17-34</sup>ईद के बाकी छः दिन यही कुर्बानियाँ पेश करनी हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छठे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह की कुर्बानी के लिए बकरा और मामूल की रोज़ाना की कुर्बानियाँ भी पेश करना।<sup>35</sup>ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।<sup>36</sup>रब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के साथ यकसाला बच्चे भस्म होने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करना। इन की खुशबू रब को पसन्द है। सब नुक्स के बग़ैर हों।<sup>37-38</sup>साथ ही वह तमाम कुर्बानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की जाती हैं।<sup>39</sup>यह सब वही कुर्बानियाँ हैं जो तुम्हें रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम कुर्बानियों के इलावा हैं जो तुम दिली खुशी से या मन्नत मान कर देते हो, चाहे वह भस्म होने वाली, गल्ला की, मै की या सलामती की कुर्बानियाँ क्यूँ न हों।”

<sup>40</sup>मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात इस्राईलियों को बता दीं।

### मन्नत मानने के क्रवाइद

**30** फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा, “रब फ़रमाता है,

<sup>2</sup>अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से पहँज़ करने की क़सम खाए तो वह अपनी बात पर क़ाइम रह कर उसे पूरा करे।

<sup>3</sup>अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से पहँज़ करने की क़सम खाए <sup>4</sup>तो लाज़िम है कि वह अपनी

मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का बाप उस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे।<sup>5</sup>लेकिन अगर उस का बाप यह सुन कर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्यूँकि उस के बाप ने उसे मना किया है।

<sup>6</sup>हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पहँज़ करने की क़सम खाई, चाहे उस ने दानिस्ता तौर पर या बेसोचे-समझे ऐसा किया। इस के बाद उस औरत ने शादी कर ली।<sup>7</sup>शादीशुदा हालत में भी लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का शौहर इस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे।<sup>8</sup>लेकिन अगर उस का शौहर यह सुन कर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा।<sup>9</sup>अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पहँज़ करने की क़सम खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।

<sup>10</sup>अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पहँज़ करने की क़सम खाई <sup>11</sup>तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का शौहर उस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे।<sup>12</sup>लेकिन अगर उस का शौहर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख है। वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्यूँकि उस के शौहर ने उसे मना किया है।<sup>13</sup>चाहे बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से पहँज़ करने की क़सम खाई हो, उस के शौहर को उस की तस्दीक़ या उसे मन्सूख करने का इख़तियार है।<sup>14</sup>अगर उस ने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में सुन लिया और अगले दिन तक एतिराज़ न किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी

हर बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतिराज़ न करने से अपनी बीवी की बात की तस्दीक की है। <sup>15</sup>अगर वह इस के बाद यह मन्नत या क्रसम मन्सूख करे तो उसे इस कुसूर के नताइज़ भुगतने पड़ेंगे।”

<sup>16</sup>रब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी औरतों की मन्नतों या क्रसमों के उसूल हैं जो शैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो शादीशुदा हैं।

### मिदियानियों से जंग

**31** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“मिदियानियों से इस्राईलियों का बदला ले। इस के बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

<sup>3</sup>चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से कहा, “हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लेस करो ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला लें। <sup>4</sup>हर क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।”

<sup>5</sup>चुनाँचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए। <sup>6</sup>तब मूसा ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उस ने इलीअज़र इमाम के बेटे फ़ीन्हास को भी उन के साथ भेजा जिस के पास मक्ब्रिदिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगुल थे। <sup>7</sup>उन्होंने रब के हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। <sup>8</sup>इन में मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रक़म, सूर, हूर और रबा थे। बलआम बिन बओर को भी जान से मार दिया गया।

<sup>9</sup>इस्राईलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को गिरिफ़्तार करके उन के तमाम गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और माल लूट लिया। <sup>10</sup>उन्होंने उन की तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जला कर राख कर दिया। <sup>11-12</sup>फिर वह तमाम लूटा हुआ माल क़ैदियों

और जानवरों समेत मूसा, इलीअज़र इमाम और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास ले आए जो ख़ैमागाह में इन्तिज़ार कर रहे थे। अभी तक वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक्की किनारे पर यरीह के सामने ठहरे हुए थे। <sup>13</sup>मूसा, इलीअज़र और जमाअत के तमाम सरदार उन का इस्तिक्बाल करने के लिए ख़ैमागाह से निकले।

<sup>14</sup>उन्हें देख कर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुकरर अफ़सरान पर गुस्सा आया। <sup>15</sup>उस ने कहा, “आप ने तमाम औरतों को क्यूँ बचाए रखा? <sup>16</sup>उन ही ने बलआम के मश्वरे पर फ़रग़ूर में इस्राईलियों को रब से दूर कर दिया था। उन ही के सबब से रब की वबा उस के लोगों में फैल गई। <sup>17</sup>चुनाँचे अब तमाम लड़कों को जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना जो कुंवारियाँ नहीं हैं। <sup>18</sup>लेकिन तमाम कुंवारियों को बचाए रखना। <sup>19</sup>जिस ने भी किसी को मार दिया या किसी लाश को छुआ है वह सात दिन तक ख़ैमागाह के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आप को अपने क़ैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना। <sup>20</sup>हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”

<sup>21</sup>फिर इलीअज़र इमाम ने जंग से वापस आने वाले मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब ने मूसा को दी उस के मुताबिक़ <sup>22-23</sup>जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए। उस में सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ। <sup>24</sup>सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ़ हो कर ख़ैमागाह में दाखिल हो सकते हो।”



### लूटे हुए माल की तक्सीम

25 रब ने मूसा से कहा, 26 "तमाम क़ैदियों और लूटे हुए जानवरों को गिन। इस में इलीअज़र इमाम और क़बाइली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें। 27 सारा माल दो बराबर के हिस्सों में तक्सीम करना, एक हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाक़ी जमाअत के लिए हो। 28 फ़ौजियों के हिस्से के पाँच पाँच सौ क़ैदियों में से एक एक निकाल कर रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों में से एक एक निकाल कर रब को देना। 29 उन्हें इलीअज़र इमाम को देना ताकि वह उन्हें रब को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश करे। 30 बाक़ी जमाअत के हिस्से के पचास पचास क़ैदियों में से एक एक निकाल कर रब को देना, इसी तरह पचास पचास बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक एक निकाल कर रब को देना। उन्हें उन लावियों को देना जो रब के मक्दिदस को सँभालते हैं।"

31 मूसा और इलीअज़र ने ऐसा ही किया। 32-34 उन्होंने ने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ, 72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने। 35 इन के इलावा 32,000 क़ैदी कुंवारियाँ भी थीं। 36-40 फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे और 16,000 क़ैदी कुंवारियाँ। इन में से उन्होंने ने 675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और 32 लड़कियाँ रब को दीं। 41 मूसा ने रब का यह हिस्सा इलीअज़र इमाम को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था। 42-47 बाक़ी जमाअत को भी लूटे हुए माल का आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास क़ैदियों और जानवरों में से एक एक निकाल कर उन लावियों को दे दिया जो रब का मक्दिदस सँभालते थे। उस ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

48 फिर वह अप्रसर मूसा के पास आए जो लश्कर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों पर मुकर्रर थे। 49 उन्होंने ने उस से कहा, "आप के खादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन पर वह मुकर्रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक भी कम नहीं हुआ। 50 इस लिए हम रब को सोने का तमाम ज़ेवर कुर्बान करना चाहते हैं जो हमें फ़ल्ह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ूबन्द, कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ हम रब को पेश करना चाहते हैं ताकि रब के सामने हमारा कफ़ारा हो जाए।"

51 मूसा और इलीअज़र इमाम ने सोने की तमाम चीज़ें उन से ले लीं। 52 जो चीज़ें उन्होंने ने अप्रसरान के लूटे हुए माल में से रब को उठाने वाली कुर्बानी के तौर पर पेश कीं उन का पूरा वज़न तक्रीबन 190 किलोग्राम था। 53 सिर्फ़ अप्रसरान ने ऐसा किया। बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल अपने लिए रख लिया। 54 मूसा और इलीअज़र अप्रसरान का यह सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले आए ताकि वह रब को उस की क्रौम की याद दिलाता रहे।

### दरया-ए-यर्दन के मशरिक्की किनारे पर आबाद क़बीले

**32** रूबिन और जद के क़बीलों के पास बहुत से मवेशी थे। जब उन्होंने ने देखा कि याज़ेर और जिलिआद का इलाक़ा मवेशी पालने के लिए अच्छा है 2 तो उन्होंने ने मूसा, इलीअज़र इमाम और जमाअत के राहनुमाओं के पास आ कर कहा, 3-4 "जिस इलाक़े को रब ने इस्राईल की जमाअत के आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात, दीबोन, याज़ेर, निम्रा, हस्बोन, इलीआली, सबाम, नबू और बऊन जो इस में शामिल हैं हमारे काम आएँगे, क्यूँकि आप के खादिमों के पास मवेशी हैं। 5 अगर आप की नज़र-ए-करम हम पर हो तो हमें यह इलाक़ा दिया जाए। यह हमारी

मिलकियत बन जाए और हमें दरया-ए-यर्दन को पार करने पर मजबूर न किया जाए।”

6मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से कहा, “क्या तुम यहाँ पीछे रह कर अपने भाइयों को छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे निकलेंगे? 7इस वक़्त जब इस्राईली दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क में दाखिल होने वाले हैं जो रब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यों उन की हौसलाशिकनी कर रहे हो? 8तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैं ने उन्हें क़ादिस-बर्नीअ से मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेजा। 9इस्काल की वादी में पहुँच कर मुल्क की तफ़्तीश करने के बाद उन्होंने इस्राईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि वह उस मुल्क में दाखिल न हों जो रब ने उन्हें दिया था। 10उस दिन रब ने गुस्से में आ कर क्रसम खाई, 11‘उन आदमियों में से जो मिस्स से निकल आए हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस का वादा मैं ने क्रसम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था। क्योंकि उन्होंने ने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी न की। सिर्फ़ वह जिन की उम्र उस वक़्त 20 साल से कम है दाखिल होंगे। 12बुजुर्गों में से सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी और यशूअ बिन नून मुल्क में दाखिल होंगे, इस लिए कि उन्होंने ने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।’ 13उस वक़्त रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना पड़ा, जब तक कि वह तमाम नस्त खत्म न हो गई जिस ने उस के नज़दीक ग़लत काम किया था। 14अब तुम गुनाहगारों की औलाद अपने बापदादा की जगह खड़े हो कर रब का इस्राईल पर गुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो। 15अगर तुम उस की पैरवी से हटोगे तो वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा, और तुम इन की हलाकत का बाइस बनोगे।”

16इस के बाद रूबिन और जद के अफ़राद दुबारा मूसा के पास आए और कहा, “हम

यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े और अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना चाहते हैं। 17इस के बाद हम मुसल्लह हो कर इस्राईलियों के आगे आगे चलेंगे और हर एक को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के अन्दर मुल्क के मुखालिफ़ बाशिन्दों से मटफ़ूज़ रहेंगे। 18हम उस वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे जब तक हर इस्राईली को उस की मौरूसी ज़मीन न मिल जाए। 19दूसरे, हम खुद उन के साथ दरया-ए-यर्दन के मगरिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे, क्योंकि हमें अपनी मौरूसी ज़मीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक्की किनारे पर मिल चुकी है।”

20यह सुन कर मूसा ने कहा, “अगर तुम ऐसा ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के लिए तय्यार हो जाओ 21और सब हथियार बांध कर रब के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करो। उस वक़्त तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम दुश्मनों को अपने आगे से निकाल न दिया हो। 22फिर जब मुल्क पर रब का क़ब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट सकोगे। तब तुम ने रब और अपने हमवतन भाइयों के लिए अपने फ़राइज़ अदा कर दिए होंगे, और यह इलाक़ा रब के सामने तुम्हारा मौरूसी हक़ होगा। 23लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही का गुनाह करोगे। यक़ीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी। 24अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।”

25जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा, “हम आप के खादिम हैं, हम अपने आक्रा के हुक्म के मुताबिक़ ही करेंगे। 26हमारे बाल-बच्चे और मवेशी यहीं जिलिआद के शहरों में रहेंगे। 27लेकिन आप के खादिम मुसल्लह हो कर दरया को पार करेंगे और रब के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही

करेंगे जैसा हमारे आक्रा ने हमें हुक्म दिया है।”

<sup>28</sup>तब मूसा ने इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन नून और क़बाइली कुंभों के सरपरस्तों को हिदायत दी, <sup>29</sup>“लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह हो कर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलिआद का इलाक़ा दो। <sup>30</sup>लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्क-ए-कनआन ही में तुम्हारे साथ मौरूसी ज़मीन मिले।”

<sup>31</sup>जद और रूबिन के अफ़राद ने इसरार किया, “आप के खादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा है। <sup>32</sup>हम मुसल्लह हो कर रब के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करेंगे और कनआन के मुल्क में दाखिल होंगे, अगरचे हमारी मौरूसी ज़मीन यर्दन के मशरिकी किनारे पर होगी।”

<sup>33</sup>तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के आधे क़बीले को यह इलाक़ा दिया। उस में वह पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुकूमत करते थे। इन शिकस्तखुर्दा ममालिक के देहातों समेत तमाम शहर उन के हवाले किए गए।

<sup>34</sup>जद के क़बीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर, <sup>35</sup>अतरात-शोफ़ान, याज़ेर, युगबहा, <sup>36</sup>बैत-निम्ना और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया। उन्होंने ने उन की फ़सीलें बनाई और अपने मवेशियों के लिए बाड़े भी। <sup>37</sup>रूबिन के क़बीले ने हस्बोन, इलीआली, क्रियताइम, <sup>38</sup>नबू, बाल-मऊन और सिब्माह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्योंकि उन्होंने ने उन शहरों को नए नाम दिए जो उन्होंने ने दुबारा तामीर किए।

<sup>39</sup>मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलिआद जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस के तमाम अमोरी बाशिन्दों को

निकाल दिया। <sup>40</sup>चुनाँचे मूसा ने मकीरियों को जिलिआद की सरज़मीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए। <sup>41</sup>मनस्सी के एक आदमी बनाम यार्ड ने उस इलाक़े में कुछ बस्तियों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें हव्वोत-यार्डर यानी ‘यार्डर की बस्तियाँ’ का नाम दिया। <sup>42</sup>इसी तरह उस क़बीले के एक और आदमी बनाम नूबह ने जा कर क़नात और उस के देहातों पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस ने शहर का नाम नूबह रखा।

### इस्राईल के सफ़र के मरहले

**33** ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ इस्राईली क़बीले अपने दस्तों के मुताबिक़ मूसा और हारून की राहनुमाई में मिस्र से निकल कर ख़ैमाज़न हुए थे। <sup>2</sup>रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह का नाम क़लमबन्द किया जहाँ उन्होंने ने अपने ख़ैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :

<sup>3</sup>पहले महीने के पंद्रहवें दिन इस्राईली रामसीस से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन वह बड़े इख़तियार के साथ तमाम मिस्रियों के देखते देखते चले गए। <sup>4</sup>मिस्री उस वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्योंकि रब ने पहलौठों को मार कर उन के देवताओं की अदालत की थी।

<sup>5</sup>रामसीस से इस्राईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्होंने ने पहली मर्तबा अपने डेरे लगाए। <sup>6</sup>वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाक़े है। <sup>7</sup>एताम से वह वापस मुड़ कर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बढ़े जो बाल-सफ़ोन के मशरिक़ में है। वह मिज्दाल के क़रीब ख़ैमाज़न हुए। <sup>8</sup>फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके समुन्दर में से गुज़र गए। इस के बाद वह तीन दिन एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए और वहाँ अपने ख़ैमे लगाए। <sup>9</sup>मारा से वह एलीम चले गए जहाँ 12 चश्मे और खज़ूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ ठहरने के बाद <sup>10</sup>वह बहर-ए-कुल्ज़ुम

के साहिल पर खैमाज़न हुए, <sup>11</sup>फिर दशत-ए-सीन में पहुँच गए।

<sup>12</sup>उन के अगले मरहले यह थे : दुफ़क्रा, <sup>13-37</sup>अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब न था, दशत-ए-सीना, क़ब्रोत-हत्तावा, हसीरात, रित्मा, रिम्मोन-फ़ारस, लिब्ना, रिस्सा, क़हीलाता, साफ़र पहाड़, हरदा, मक़हीलौत, तहत, तारह, मितक्रा, हश्मूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद, युत्बाता, अब्रूना, अस्पून-जाबर, दशत-ए-सीन में वाक़े क़ादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद पर वाक़े है।

<sup>38</sup>वहाँ रब ने हारून इमाम को हुक्म दिया कि वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह के पहले दिन फ़ौत हुआ। इस्राईलियों को मिस्र से निकले 40 साल गुज़र चुके थे। <sup>39</sup>उस वक़्त हारून 123 साल का था।

<sup>40</sup>उन दिनों में अराद के कनआनी बादशाह ने सुना कि इस्राईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह कनआन के जुनूब में हुक्मत करता था।

<sup>41-47</sup>होर पहाड़ से रवाना हो कर इस्राईली ज़ैल की जगहों पर ठहरे : ज़ल्मूना, फ़ूनोन, ओबोत, अय्ये-अबारीम जो मोआब के इलाक़े में था, दीबोन-जद, अल्मून-दिब्बलाताइम और नबू के क़रीब वाक़े अबारीम का पहाड़ी इलाक़ा। <sup>48</sup>वहाँ से उन्हीं ने यर्दन की वादी में उतर कर मोआब के मैदानी इलाक़े में अपने डेरे लगाए। अब वह दरया-ए-यर्दन के मशरिफ़ी किनारे पर यरीहू शहर के सामने थे। <sup>49</sup>उन के ख़ैमे बैत-यसीमोत से ले कर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

### तमाम कनआनी बाशिन्दों को निकालने का हुक्म

<sup>50</sup>वहाँ रब ने मूसा से कहा, <sup>51</sup>“इस्राईलियों को बताना कि जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क-ए-कनआन में दाखिल होगे

<sup>52</sup>तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिन्दों को निकाल दो। उन के तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो और उन की ऊँची जगहों के मन्दिरों को तबाह करो। <sup>53</sup>मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाओ, क्योंकि मैं ने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ़ से तुम्हारी मौरूसी मिलकियत है। <sup>54</sup>मुल्क को मुख्तलिफ़ क़बीलों और ख़ानदानों में कुरआ डाल कर तक्सीम करना। हर ख़ानदान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ानदान को निस्वतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे ख़ानदान को निस्वतन कम ज़मीन। <sup>55</sup>लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिन्दों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में खार और तुम्हारे पहलूओं में काँटे बन कर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिस में तुम आबाद होगे। <sup>56</sup>फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उन के साथ करना चाहता हूँ।”

### मुल्क-ए-कनआन की सरहदें

**34** रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा तो उस की सरहदें यह होंगी :

<sup>3</sup>उस की जुनूबी सरहद दशत-ए-सीन में अदोम की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिफ़ में वह बहीरा-ए-मुर्दार के जुनूबी साहिल से शुरू होगी, फिर इन जगहों से हो कर मगरिब की तरफ़ गुज़रेगी : <sup>4</sup>दर्द-ए-अक़ब्बीम के जुनूब में से, दशत-ए-सीन में से, क़ादिस-बर्नीअ के जुनूब में से हसर-अद्दार और अज़मून में से। <sup>5</sup>वहाँ से वह मुड़ कर मिस्र की सरहद पर वाक़े वादी-ए-मिस्र के साथ साथ बहीरा-ए-रूम तक पहुँचेगी। <sup>6</sup>उस की मगरिबी सरहद बहीरा-ए-रूम का साहिल होगा। <sup>7</sup>उस की शिमाली सरहद बहीरा-ए-रूम से ले कर इन जगहों से हो कर मशरिफ़ की तरफ़ गुज़रेगी : होर पहाड़, <sup>8</sup>लबो-हमात, सिदाद, <sup>9</sup>ज़िफ़ून और हसर-ए-नान। हसर-

एनान शिमाली सरहद का सब से मशरिकी मक़ाम होगा। <sup>10</sup>उस की मशरिकी सरहद शिमाल में हसर-एनान से शुरू होगी। फिर वह इन जगहों से हो कर जुनूब की तरफ गुज़रेगी : सिफ़ाम, <sup>11</sup>रिब्ला जो ऐन के मशरिक में है और किन्नरत यानी गलील की झील के मशरिक में वाक़े पहाड़ी इलाक़ा। <sup>12</sup>इस के बाद वह दरया-ए-यर्दन के किनारे किनारे गुज़रती हुई बहीरा-ए-मुर्दार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की सरहदें होंगी।”

<sup>13</sup>मूसा ने इस्राईलियों से कहा, “यह वही मुल्क है जिसे तुम्हें कुरआ डाल कर तक्सीम करना है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाक़ी साढ़े नौ क़बीलों को देना है। <sup>14</sup>क्यूँकि अढ़ाई क़बीलों के खानदानों को उन की मीरास मिल चुकी है यानी रूबिन और ज़द के पूरे क़बीले और मनस्सी के आधे क़बीले को। <sup>15</sup>उन्हें यहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिक में यरीहू के सामने ज़मीन मिल चुकी है।”

### मुल्क तक्सीम करने के ज़िम्मादार आदमी

<sup>16</sup>रब ने मूसा से कहा, <sup>17</sup>“इलीअज़र इमाम और यशूअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तक्सीम करें। <sup>18</sup>हर क़बीले के एक एक राहनुमा को भी चुनना ताकि वह तक्सीम करने में मदद करे। जिन को तुम्हें चुनना है उन के नाम यह हैं :

<sup>19</sup>यहूदाह के क़बीले का कालिब बिन यफुन्ना,

<sup>20</sup>शमाऊन के क़बीले का समूएल बिन अम्मीहूद,

<sup>21</sup>बिनयमीन के क़बीले का इलीदाद बिन किस्लोन,

<sup>22</sup>दान के क़बीले का बुक्की बिन युगली,

<sup>23</sup>मनस्सी के क़बीले का हन्नीएल बिन अफूद,

<sup>24</sup>इफ़्राईम के क़बीले का क़मूएल बिन सिप्रतान,

<sup>25</sup>ज़बूलून के क़बीले का इलीसफ़न बिन फ़र्नाक,

<sup>26</sup>इश्कार के क़बीले का फ़ल्टीएल बिन अज़ज़ान,

<sup>27</sup>आशर के क़बीले का अखीहूद बिन शलूमी,

<sup>28</sup>नफ़्ताली के क़बीले का फ़िदाहेल बिन अम्मीहूद।”

<sup>29</sup>रब ने इन ही आदमियों को मुल्क को इस्राईलियों में तक्सीम करने की ज़िम्मादारी दी।

### लावियों के लिए शहर

**35** इस्राईली अब तक मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिकी किनारे पर यरीहू के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से कहा,

<sup>2</sup>“इस्राईलियों को बता दे कि वह लावियों को अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन भी मिले। <sup>3</sup>फिर लावियों के पास रहने के लिए शहर और अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन होगी। <sup>4</sup>चराने के लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ़ का फ़ासिला फ़सीलों से 1,500 फ़ुट हो। <sup>5</sup>चराने की यह ज़मीन मुरब्बा शक्ल की होगी जिस के हर पहलू का फ़ासिला 3,000 फ़ुट हो। शहर इस मुरब्बा शक्ल के बीच में हो। यह रकबा शहर के बाशिन्दों के लिए हो ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

### ग़ैरइरादी ख़ैरेज़ी के लिए पनाह के शहर

<sup>6-7</sup>लावियों को कुल 48 शहर देना। इन में से छः पनाह के शहर मुक़रर करना। उन में ऐसे लोग पनाह ले सकेंगे जिन के हाथों ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। <sup>8</sup>हर क़बीला लावियों को अपने इलाक़े के रक़बे के मुताबिक़ शहर दे। जिस क़बीले का इलाक़ा बड़ा है उसे लावियों को ज़्यादा शहर देने हैं

जबकि जिस कबीले का इलाका छोटा है वह लावियों को कम शहर दे।”

9 फिर रब ने मूसा से कहा, 10 “इस्राईलियों को बताना कि दरया-ए-यर्डन को पार करने के बाद 11 कुछ पनाह के शहर मुकर्रर करना। उन में वह शख्स पनाह ले सकेगा जिस के हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 12 वहाँ वह इन्तिक्राम लेने वाले से पनाह ले सकेगा और जमाअत की अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा। 13 इस के लिए छः शहर चुन लो। 14 तीन दरया-ए-यर्डन के मशरिफ़ में और तीन मुल्क-ए-कनआन में हों। 15 यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे वह इस्राईली, परदेसी या उन के दरमियान रहने वाला गैरशहरी हो। जिस से भी गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।

16-18 अगर किसी ने किसी को जान-बूझ कर लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार डाला हो वह क्रातिल है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। 19 मक्कूल का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार दे। 20-21 क्योंकि जो नफ़रत या दुश्मनी के बाइस जान-बूझ कर किसी को यूँ धक्का दे, उस पर कोई चीज़ फेंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह क्रातिल है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है।

22 लेकिन वह क्रातिल नहीं है जिस से दुश्मनी के बाइस नहीं बल्कि इत्तिफ़ाक़ से और गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उस ने उसे धक्का दिया, कोई चीज़ उस पर फेंक दी 23 या कोई पत्थर उस पर गिरने दिया। 24 अगर ऐसा हुआ तो लाज़िम है कि जमाअत इन हिदायात के मुताबिक़ उस के और इन्तिक्राम लेने वाले के दरमियान फ़ैसला करे। 25 अगर मुल्ज़िम बेकुसूर है तो जमाअत उस की हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले जाए जिस में उस ने पनाह ली है। वहाँ वह मुक़द्दस तेल से मसह किए गए

इमाम-ए-आज़म की मौत तक रहे। 26 लेकिन अगर यह शख्स इस से पहले पनाह के शहर से निकले तो वह मत्फूज़ नहीं होगा। 27 अगर उस का इन्तिक्राम लेने वाले से सामना हो जाए तो इन्तिक्राम लेने वाले को उसे मार डालने की इजाज़त होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेकुसूर रहेगा। 28 पनाह लेने वाला इमाम-ए-आज़म की वफ़ात तक पनाह के शहर में रहे। इस के बाद ही वह अपने घर वापस जा सकता है। 29 यह उसूल दाइमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।

30 जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम लगाया गया हो उसे सिर्फ़ इस सूत में सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

31 क्रातिल को ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना। ख़्वाह वह इस से बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ा-ए-मौत देना। 32 उस शख्स से भी पैसे क़बूल न करना जिस से गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाज़त नहीं कि वह पैसे दे कर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है कि वह इस के लिए इमाम-ए-आज़म की वफ़ात का इन्तिज़ार करे।

33 जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उस में क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह खून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख्स के खून बहने से बहाल हो जाती है जिस ने यह खून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ क्रातिल की मौत से ही कफ़़ारा दिया जा सकता है। 34 उस मुल्क को नापाक न करना जिस में तुम आबाद हो और जिस में मैं सुकूनत करता हूँ। क्योंकि मैं रब हूँ जो इस्राईलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

**एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन शादी  
से दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल  
नहीं हो सकती**

**36** एक दिन ज़िलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंभे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों के सरपरस्त थे।<sup>2</sup> उन्होंने ने कहा, “रब ने आप को हुक्म दिया था कि आप कुरआ डाल कर मुल्क को इस्राईलियों में तक्सीम करें। उस वक़्त उस ने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है।<sup>3</sup> अगर वह इस्राईल के किसी और क़बीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उस से महरूम हो जाएंगे। फिर हमारा क़बाइली इलाक़ा छोटा हो जाएगा।<sup>4</sup> और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को वापस चली जाएगी जिस में इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।”

<sup>5</sup>मूसा ने रब के हुक्म पर इस्राईलियों को बताया, “ज़िलिआद के मर्द हक़-ब-जानिब हैं।<sup>6</sup> इस लिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से

शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह उन के अपने क़बीले का हो।<sup>7</sup> इस तरह एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा इलाक़ा उसी के पास रहे।

<sup>8</sup>जो भी बेटा मीरास में ज़मीन पाती है उस के लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन क़बीले के पास ही रहे।<sup>9</sup> एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुन्तक़िल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा मौरूसी इलाक़ा उसी के पास रहे।”

<sup>10-11</sup>सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिर्जा, हुज्ज़ाह, मिल्काह और नूआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्होंने ने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की।<sup>12</sup> चूँकि वह भी मनस्सी के क़बीले के थे इस लिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

<sup>13</sup>रब ने यह अहक़ाम और हिदायत इस्राईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिकी किनारे पर यरीहू के सामने ख़ैमाज़न थे।

---

# इस्तिस्ना

---

## मूसा इस्राईलियों से मुखातिब होता है

**1** इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा ने तमाम इस्राईलियों से कहीं जब वह दरया-ए-यर्दन के मशरिकी किनारे पर बयाबान में थे। वह यर्दन की वादी में सूफ़ के करीब थे। एक तरफ़ फ़ारान शहर था और दूसरी तरफ़ तोफ़ल, लाबन, हसीरात और दीज़हब के शहर थे।<sup>2</sup> अगर अदोम के पहाड़ी इलाक़े से हो कर जाएँ तो होरिब यानी सीना पहाड़ से क्रादिस-बर्नीअ तक का सफ़र 11 दिन में तै किया जा सकता है।

<sup>3</sup> इस्राईलियों को मिस्र से निकले 40 साल हो गए थे। इस साल के ग्यारहवें माह के पहले दिन मूसा ने उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने उसे उन्हें बताने को कहा था।<sup>4</sup> उस वक़्त वह अमोरियों के बादशाह सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिस का दार-उल-हुकूमत हस्बोन था। बसन के बादशाह ओज पर भी फ़्तह हासिल हो चुकी थी जिस की हुकूमत के मर्कज़ अस्तारात और इद्रई थे।

<sup>5</sup> वहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिकी किनारे पर जो मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह की शरीअत की तश्रीह करने लगा। उस ने कहा,

<sup>6</sup> जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास थे तो रब हमारे खुदा ने हम से कहा, “तुम

काफ़ी देर से यहाँ ठहरे हुए हो।<sup>7</sup> अब इस जगह को छोड़ कर आगे मुल्क-ए-कनआन की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े और उन के पड़ोस की क़ौमों के पास जाओ जो यर्दन के मैदानी इलाक़े में आबाद हैं। पहाड़ी इलाक़े में, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े में, जुनूब के दशत-ए-नजब में, साहिली इलाक़े में, मुल्क-ए-कनआन में और लुबनान में दरया-ए-फ़ुरात तक चले जाओ।<sup>8</sup> मैं ने तुम्हें यह मुल्क दे दिया है। अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लो। क्योंकि रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें और तुम्हारी औलाद को दूँगा।”

## राहनुमा मुकर्रर किए गए

<sup>9</sup> उस वक़्त मैं ने तुम से कहा, “मैं अकेला तुम्हारी राहनुमाई करने की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता।<sup>10</sup> रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हारी तादाद इतनी बढ़ा दी है कि आज तुम आसमान के सितारों की मानिन्द बेशुमार हो।<sup>11</sup> और रब तुम्हारे बापदादा का खुदा करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हज़ार गुना बढ़ जाए। वह तुम्हें वह बरकत दे जिस का वादा उस ने किया है।<sup>12</sup> लेकिन मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने और झगड़ों को निपटाने



की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता।<sup>13</sup> इस लिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे दानिशमन्द और समझदार आदमी चुन लो जिन की लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर मुक़र्रर करूँगा।”

<sup>14</sup>यह बात तुम्हें पसन्द आई।<sup>15</sup> तुम ने अपने में से ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमन्द थे और जिन की लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैं ने उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों पर मुक़र्रर किया। यूँ वह क़बीलों के निगहबान बन गए।<sup>16</sup> उस वक़्त मैं ने उन क़ाज़ियों से कहा, “अदालत करते वक़्त हर एक की बात ग़ौर से सुन कर ग़ैरजानिबदार फ़ैसले करना, चाहे दो इस्राईली फ़रीक़ एक दूसरे से झगड़ा कर रहे हों या मुआमला किसी इस्राईली और परदेसी के दरमियान हो।<sup>17</sup> अदालत करते वक़्त जानिबदारी न करना। छोटे और बड़े की बात सुन कर दोनों के साथ एक जैसा सुलूक करना। किसी से मत डरना, क्योंकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत करने की ज़िम्मादारी दी है। अगर किसी मुआमले में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उस का फ़ैसला करूँगा।”<sup>18</sup> उस वक़्त मैं ने तुम्हें सब कुछ बताया जो तुम्हें करना था।

### मुल्क-ए-कनआन में जासूस

<sup>19</sup> हम ने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा था। हम होरिब से रवाना हो कर अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते हम उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र गए जिसे तुम ने देख लिया है। आख़िरकार हम क़ादिस-बर्नीअ पहुँच गए।<sup>20</sup> वहाँ मैं ने तुम से कहा, “तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच गए हो जो रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है।<sup>21</sup> देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया है। अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर ले जिस तरह रब तेरे बापदादा के

ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत डरना और बेदिल न हो जाना!”

<sup>22</sup>लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा, “क्यूँ न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें जो मुल्क के हालात दरयाफ़्त करें और वापस आ कर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इत्तिला दें जिन के पास हम पहुँचेंगे।”<sup>23</sup> यह बात मुझे पसन्द आई। मैं ने इस काम के लिए हर क़बीले के एक आदमी को चुन कर भेज दिया।<sup>24</sup> जब यह बारह आदमी पहाड़ी इलाक़े में जा कर वादी-ए-इस्काल में पहुँचे तो उस की तफ़्तीश की।<sup>25</sup> फिर वह मुल्क का कुछ फल ले कर लौट आए और हमें मुल्क के बारे में इत्तिला दे कर कहा, “जो मुल्क रब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है वह अच्छा है।”

<sup>26</sup>लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकशी करके रब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना।<sup>27</sup> तुम ने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, “रब हम से नफ़रत रखता है। वह हमें मिस्र से निकाल लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक करवाए।<sup>28</sup> हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, ‘वहाँ के लोग हम से ताक़तवर और दराज़क़द हैं। उन के बड़े बड़े शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। वहाँ हम ने अनाक़ की औलाद भी देखी जो देओक़ामत हैं’।”

<sup>29</sup> मैं ने कहा, “न घबराओ और न उन से ख़ौफ़ खाओ।<sup>30</sup> रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे आगे आगे चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम ख़ुद देख चुके हो कि वह किस तरह मिस्र<sup>31</sup> और रेगिस्तान में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा। तू ख़ुद गवाह है कि बयाबान में पूरे सफ़र के दौरान रब तुझे यूँ उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते तुम यहाँ तक पहुँच गए।”<sup>32</sup> इस के बावजूद तुम ने रब अपने ख़ुदा पर भरोसा न रखा।<sup>33</sup> तुम ने यह बात नज़रअन्दाज़ की कि वह सफ़र के

दौरान रात के वक्रत आग और दिन के वक्रत बादल की सूरत में तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए खैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता दिखाए।

<sup>34</sup>जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे गुस्सा आया और उस ने क्रसम खा कर कहा, <sup>35</sup>“इस शरीर नस्ल का एक मर्द भी उस अच्छे मुल्क को नहीं देखेगा अगरचे मैं ने क्रसम खा कर तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें दूँगा। <sup>36</sup>सिर्फ कालिब बिन यफुन्ना उसे देखेगा। मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा जिस में उस ने सफ़र किया है, क्योंकि उस ने पूरे तौर पर रब की पैरवी की।”

<sup>37</sup>तुम्हारी वजह से रब मुझ से भी नाराज़ हुआ और कहा, “तू भी उस में दाखिल नहीं होगा। <sup>38</sup>लेकिन तेरा मददगार यशूअ बिन नून दाखिल होगा। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर, क्योंकि वह मुल्क पर क़ब्ज़ा करने में इस्राईल की राहनुमाई करेगा।” <sup>39</sup>तुम से रब ने कहा, “तुम्हारे बच्चे जो अभी अच्छे और बुरे में इम्तियाज़ नहीं कर सकते, वही मुल्क में दाखिल होंगे, वही बच्चे जिन के बारे में तुम ने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्क-ए-कनआन में छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क दूँगा, और वह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे। <sup>40</sup>लेकिन तुम खुद आगे न बढ़ो। पीछे मुड़ कर दुबारा रेगिस्तान में बहर-ए-कुल्जुम की तरफ़ सफ़र करो।”

<sup>41</sup>तब तुम ने कहा, “हम ने रब का गुनाह किया है। अब हम मुल्क में जा कर लड़ेंगे, जिस तरह रब हमारे खुदा ने हमें हुक्म दिया है।” चुनाँचे यह सोचते हुए कि उस पहाड़ी इलाक़े पर हम्ला करना आसान होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। <sup>42</sup>लेकिन रब ने मुझ से कहा, “उन्हें बताना कि वहाँ जंग करने के लिए न जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे।”

<sup>43</sup>मैं ने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुम ने मेरी न सुनी। तुम ने सरकशी करके रब का हुक्म न माना बल्कि मग़रूर हो कर पहाड़ी इलाक़े

में दाखिल हुए। <sup>44</sup>वहाँ के अमोरी बाशिन्दे तुम्हारा सामना करने निकले। वह शहद की मक्खियों के गोल की तरह तुम पर टूट पड़े और तुम्हारा ताक़ुकुब करके तुम्हें सईर से हुर्मा तक मारते गए।

<sup>45</sup>तब तुम वापस आ कर रब के सामने ज़ार-ओ-क़तार रोने लगे। लेकिन उस ने तवज्जुह न दी बल्कि तुम्हें नज़रअन्दाज़ किया। <sup>46</sup>इस के बाद तुम बहुत दिनों तक क़ादिस-बर्नीअ में रहे।

### रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

**2** फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था हम पीछे मुड़ कर रेगिस्तान में बहर-ए-कुल्जुम की तरफ़ सफ़र करने लगे। काफ़ी देर तक हम सईर यानी अदोम के पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिरते रहे।

<sup>2</sup>एक दिन रब ने मुझ से कहा, <sup>3</sup>“तुम बहुत देर से इस पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिर रहे हो। अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। <sup>4</sup>क़ौम को बताना, अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क में से गुज़रोगे जहाँ तुम्हारे भाई एसौ की औलाद आबाद है। वह तुम से डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात से गुज़रना। <sup>5</sup>उन के साथ जंग न छेड़ना, क्योंकि मैं तुम्हें उन के मुल्क का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं दूँगा। मैं ने सईर का पहाड़ी इलाक़ा एसौ और उस की औलाद को दिया है। <sup>6</sup>लाज़िम है कि तुम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात पैसे दे कर खरीदो।”

<sup>7</sup>जो भी काम तू ने किया है रब ने उस पर बरकत दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के दौरान उस ने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों के दौरान रब तेरा खुदा तेरे साथ था, और तेरी तमाम ज़रूरियात पूरी होती रहीं।

<sup>8</sup>चुनाँचे हम सईर को छोड़ कर जहाँ हमारे भाई एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे निकले। हम ने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात और अस्पून-जाबर के शहरों से

बहीरा-ए-मुर्दार तक पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ बढ़ने लगे।<sup>9</sup> वहाँ रब ने मुझ से कहा, “मोआब के बाशिन्दों की मुखालफ़त न करना और न उन के साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैं ने आर शहर को लूत की औलाद को दिया है।”

<sup>10</sup>पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक्र की औलाद की तरह ताक्रतवर, दराज़क्रद और तादाद में ज़्यादा थे।<sup>11</sup> अनाक्र की औलाद की तरह वह रफ़ाइयों में शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते थे।

<sup>12</sup>इसी तरह क्रदीम ज़माने में होरी सर्ईर में आबाद थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल दिया था। जिस तरह इस्राईलियों ने बाद में उस मुल्क में किया जो रब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उन की जगह आबाद हुए थे।

<sup>13</sup>रब ने कहा, “अब जा कर वादी-ए-ज़िरद को उबूर करो।” हम ने ऐसा ही किया।<sup>14</sup> हमें क्रादिस-बर्नीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक्रत जंग करने के क्राबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने क्रसम खा कर कहा था।<sup>15</sup> रब की मुखालफ़त के बाइस आखिरकार ख़ैमागाह में उस नस्ल का एक मर्द भी न रहा।<sup>16</sup> जब वह सब मर गए थे<sup>17</sup> तब रब ने मुझ से कहा, <sup>18</sup>“आज तुम्हें आर शहर से हो कर मोआब के इलाक़े में से गुज़रना है।<sup>19</sup> फिर तुम अम्मोनियों के इलाक़े तक पहुँचोगे। उन की भी मुखालफ़त न करना, और न उन के साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैं ने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।”

<sup>20</sup>हक्रीक़त में अम्मोनियों का मुल्क भी रफ़ाइयों का मुल्क समझा जाता था जो क्रदीम ज़माने में वहाँ आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे,<sup>21</sup> और वह देओक्रामत थे,

ताक्रतवर और तादाद में ज़्यादा। वह अनाक्र की औलाद जैसे दराज़क्रद थे। जब अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफ़ाइयों को उन के आगे आगे तबाह कर दिया। चुनाँचे अम्मोनी बढ़ते बढ़ते उन्हें निकालते गए और उन की जगह आबाद हुए,<sup>22</sup> बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने एसौ की औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया था जब वह सर्ईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उन की जगह आबाद हुए।<sup>23</sup> इसी तरह एक और क्रदीम क्रौम बनाम अक्वी को भी उस के मुल्क से निकाला गया। अक्वी गज़ज़ा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़तूरी कफ़तूर यानी क्रेते से आए तो उन्होंने ने उन्हें तबाह कर दिया और उन की जगह आबाद हो गए।

### सीहोन बादशाह से जंग

<sup>24</sup>रब ने मूसा से कहा, “अब जा कर वादी-ए-अनोन को उबूर करो। यूँ समझो कि मैं हस्बोन के अमोरी बादशाह सीहोन को उस के मुल्क समेत तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो और उस के साथ जंग करने का मौक़ा ढूँडो।<sup>25</sup> इसी दिन से मैं तमाम क्रौमों में तुम्हारे बारे में दृशत और ख़ौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी ख़बर सुन कर ख़ौफ़ के मारे थरथराएँगी और काँपेंगी।”

<sup>26</sup>मैं ने दशत-ए-क्रदीमात से हस्बोन के बादशाह सीहोन के पास क्रासिद भेजे। मेरा पैगाम नफ़रत और मुखालफ़त से ख़ाली था। वह यह था,<sup>27</sup> “हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और उस से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटेंगे।<sup>28</sup> हम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे। हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें,<sup>29</sup> जिस तरह सर्ईर के बाशिन्दों एसौ की औलाद और आर के रहने वाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्योंकि हमारी मन्ज़िल

दरया-ए-यर्दन के मगरिब में है, वह मुल्क जो रब हमारा खुदा हमें देने वाला है।”

<sup>30</sup>लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुजरने न दिया, क्योंकि रब तुम्हारे खुदा ने उसे बेलचक और हमारी बात से इन्कार करने पर आमादा कर दिया था ताकि सीहोन हमारे क्राबू में आ जाए। और बाद में ऐसा ही हुआ। <sup>31</sup>रब ने मुझ से कहा, “यूँ समझ ले कि मैं सीहोन और उस के मुल्क को तेरे हवाले करने लगा हूँ। अब निकल कर उस पर कब्ज़ा करना शुरू करो।”

<sup>32</sup>जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज ले कर हमारा मुकाबला करने के लिए यहज़ आया <sup>33</sup>तो रब हमारे खुदा ने हमें पूरी फ़त्ह बख़्शी। हम ने सीहोन, उस के बेटों और पूरी क़ौम को शिकस्त दी। <sup>34</sup>उस वक़्त हम ने उस के तमाम शहरों पर कब्ज़ा कर लिया और उन के तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला। कोई भी न बचा। <sup>35</sup>हम ने सिर्फ़ मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

<sup>36</sup>वादी-ए-अर्नोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से ले कर जिलिआद तक हर शहर को शिकस्त माननी पड़ी। इस में वह शहर भी शामिल था जो वादी-ए-अर्नोन में था। रब हमारे खुदा ने उन सब को हमारे हवाले कर दिया। <sup>37</sup>लेकिन तुम ने अम्मोनियों का मुल्क छोड़ दिया और न दरया-ए-यब्बोक़ के इर्दगिर्द के इलाक़े, न उस के पहाड़ी इलाक़े के शहरों को छोड़ा, क्योंकि रब हमारे खुदा ने ऐसा करने से तुम्हें मना किया था।

### बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

**3** इस के बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़ बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज के साथ निकल कर हमारा मुकाबला करने के लिए इद्रई आया। <sup>2</sup>रब ने मुझ से कहा, “उस से मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और उस का मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वह कुछ

कर जो तू ने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो हस्बोन में हुकूमत करता था।”

<sup>3</sup>ऐसा ही हुआ। रब हमारे खुदा की मदद से हम ने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क़ौम को शिकस्त दी। हम ने सब को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। <sup>4</sup>उसी वक़्त हम ने उस के तमाम शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। हम ने कुल 60 शहरों पर यानी अर्जूब के सारे इलाक़े पर कब्ज़ा किया जिस पर ओज की हुकूमत थी। <sup>5</sup>इन तमाम शहरों की हिफ़ाज़त ऊँची ऊँची फ़सीलों और कुंडे वाले दरवाज़ों से की गई थी। देहात में बहुत सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिन की फ़सीलें नहीं थीं। <sup>6</sup>हम ने उन के साथ वह कुछ किया जो हम ने हस्बोन के बादशाह सीहोन के इलाक़े के साथ किया था। हम ने सब कुछ रब के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। <sup>7</sup>हम ने सिर्फ़ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

<sup>8</sup>यूँ हम ने उस वक़्त अमोरियों के इन दो बादशाहों से दरया-ए-यर्दन का मशरिक्की इलाक़ा वादी-ए-अर्नोन से ले कर हर्मून पहाड़ तक छीन लिया। <sup>9</sup>(सैदा के बाशिन्दे हर्मून को सिर्यून कहते हैं जबकि अमोरियों ने उस का नाम सनीर रखा)। <sup>10</sup>हम ने ओज बादशाह के पूरे इलाक़े पर कब्ज़ा कर लिया। इस में मैदान-ए-मुर्तफ़ा के तमाम शहर शामिल थे, नीज़ सल्का और इद्रई तक जिलिआद और बसन के पूरे इलाक़े।

<sup>11</sup>बादशाह ओज देओक़ामत क़बीले रफ़ाई का आखिरी मर्द था। उस का लोहे का ताबूत 13 से ज़ाइद फ़ुट लम्बा और छः फ़ुट चौड़ा था और आज तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता है।

### यर्दन के मशरिक् में मुल्क की तक्सीम

<sup>12</sup>जब हम ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक्की इलाक़े पर कब्ज़ा किया तो मैं ने रूबिन और

जद के क़बीलों को उस का जुनूबी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस इलाक़े की जुनूबी सरहद दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इस में जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े का आधा हिस्सा भी शामिल है।<sup>13</sup>जिलिआद का शिमाली हिस्सा और बसन का मुल्क मैं ने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया।

(बसन में अर्जूब का इलाक़ा है जहाँ पहले ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफ़ाइयों यानी देओक़ामत अफ़राद का मुल्क कहलाता था।<sup>14</sup>मनस्सी के क़बीले के एक आदमी बनाम यार्ईर ने अर्जूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद तक क़ब्ज़ा कर लिया था। उस ने इस इलाक़े की बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-यार्ईर यानी यार्ईर की बस्तियाँ चलता है।)

<sup>15</sup>मैं ने जिलिआद का शिमाली हिस्सा मनस्सी के कुबे मकीर को दिया <sup>16</sup>लेकिन जिलिआद का जुनूबी हिस्सा रूबिन और जद के क़बीलों को दिया। इस हिस्से की एक सरहद जुनूब में वादी-ए-अर्नोन के बीच में से गुज़रती है जबकि दूसरी सरहद दरया-ए-यब्बोक़ है जिस के पार अम्मोनियों की हुकूमत है। <sup>17</sup>उस की मगरिबी सरहद दरया-ए-यर्दन है यानी किन्नरत (गलील) की झील से ले कर बहीरा-ए-मुदर तक जो पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

<sup>18</sup>उस वक़्त मैं ने रूबिन, जद और मनस्सी के क़बीलों से कहा, “रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें मीरास में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारे तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह हो कर तुम्हारे इस्त्राईली भाइयों के आगे आगे दरया-ए-यर्दन को पार करें। <sup>19</sup>सिर्फ़ तुम्हारी औरतें और बच्चे पीछे रह कर उन शहरों में इन्तिज़ार कर सकते हैं जो मैं ने तुम्हारे लिए मुकर्रर किए हैं। तुम अपने मवेशियों को भी पीछे छोड़ सकते हो, क्योंकि

मुझे पता है कि तुम्हारे बहुत ज़्यादा जानवर हैं। <sup>20</sup>अपने भाइयों के साथ चलते हुए उन की मदद करते रहो। जब रब तुम्हारा ख़ुदा उन्हें दरया-ए-यर्दन के मगरिब में वाक़े मुल्क देगा और वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून से वहाँ आबाद हो जाएंगे तब तुम अपने मुल्क में वापस जा सकते हो।”

### मूसा को यर्दन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

<sup>21</sup>साथ साथ मैं ने यशूअ से कहा, “तू ने अपनी आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे ख़ुदा ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से किया। वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ करेगा जिस के मुल्क पर तू दरया को पार करके हम्ला करेगा। <sup>22</sup>उन से न डरो। तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे लिए जंग करेगा।”

<sup>23</sup>उस वक़्त मैं ने रब से इल्तिजा करके कहा, <sup>24</sup>“ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को अपनी अज़मत और कुदरत दिखाने लगा है। क्या आसमान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं! <sup>25</sup>मेहरबानी करके मुझे भी दरया-ए-यर्दन को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी इलाक़े को लुबनान तक देखने की इजाज़त दे।”

<sup>26</sup>लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझ से नाराज़ था। उस ने मेरी न सुनी बल्कि कहा, “बस कर! आइन्दा मेरे साथ इस का ज़िक़्र न करना। <sup>27</sup>पिसगा की चोटी पर चढ़ कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ से ग़ौर से देख, क्योंकि तू ख़ुद दरया-ए-यर्दन को उबूर नहीं करेगा। <sup>28</sup>अपनी जगह यशूअ को मुकर्रर कर। उस की हौसलाअफ़ज़ाई कर और उसे मज़बूत कर, क्योंकि वही इस क़ौम को दरया-ए-यर्दन के मगरिब में ले जाएगा और क़बीलों में उस मुल्क को तक्सीम करेगा जिसे तू पहाड़ से देखेगा।”

<sup>29</sup>चुनाँचे हम बैत-फ़गूर के क़रीब वादी में ठहरे।

### फ़रमाँबरदारी की अशद़ ज़रूरत

**4** ऐ इस्राईल, अब वह तमाम अहकाम ध्यान से सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता हूँ। उन पर अमल करो ताकि तुम ज़िन्दा रहो और जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो रब तुम्हारे बापदादा का खुदा तुम्हें देने वाला है। <sup>2</sup>जो अहकाम मैं तुम्हें सिखाता हूँ उन में न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उन से कोई बात निकालो। रब अपने खुदा के तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैं ने तुम्हें दिए हैं। <sup>3</sup>तुम ने खुद देखा है कि रब ने बाल-फ़गूर से क्या कुछ किया। वहाँ रब तेरे खुदा ने हर एक को हलाक कर डाला जिस ने फ़गूर के बाल देवता की पूजा की। <sup>4</sup>लेकिन तुम में से जितने रब अपने खुदा के साथ लिपटे रहे वह सब आज तक ज़िन्दा हैं।

<sup>5</sup>मैं ने तुम्हें तमाम अहकाम यूँ सिखा दिए हैं जिस तरह रब मेरे खुदा ने मुझे बताया। क्योंकि लाज़िम है कि तुम उस मुल्क में इन के ताबे रहो जिस पर तुम क़ब्ज़ा करने वाले हो। <sup>6</sup>इन्हें मानो और इन पर अमल करो तो दूसरी क़ौमों को तुम्हारी दानिशमन्दी और समझ नज़र आएगी। फिर वह इन तमाम अहकाम के बारे में सुन कर कहेंगी, “वाह, यह अज़ीम क़ौम कैसी दानिशमन्द और समझदार है!” <sup>7</sup>कौन सी अज़ीम क़ौम के माबूद इतने क़रीब हैं जितना हमारा खुदा हमारे क़रीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते हैं तो रब हमारा खुदा मौजूद होता है। <sup>8</sup>कौन सी अज़ीम क़ौम के पास ऐसे मुन्सिफ़ाना अहकाम और हिदायात हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत सुना कर पेश कर रहा हूँ?

<sup>9</sup>लेकिन खबरदार, एहतियात करना और वह तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं। वह उम्र भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि उन्हें अपने बच्चों और पोते-पोतियों को

भी बताते रहना। <sup>10</sup>वह दिन याद कर जब तू होरिब यानी सीना पहाड़ पर रब अपने खुदा के सामने हाज़िर था और उस ने मुझे बताया, “क़ौम को यहाँ मेरे पास जमा कर ताकि मैं उन से बात करूँ और वह उम्र भर मेरा ख़ौफ़ मानें और अपने बच्चों को मेरी बातें सिखाते रहें।”

<sup>11</sup>उस वक़्त तुम क़रीब आ कर पहाड़ के दामन में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग आसमान तक भड़क रही थी जबकि काले बादलों और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया। <sup>12</sup>फिर रब आग में से तुम से हमकलाम हुआ। तुम ने उस की बातें सुनीं लेकिन उस की कोई शक़्ल न देखी। सिर्फ़ उस की आवाज़ सुनाई दी। <sup>13</sup>उस ने तुम्हारे लिए अपने अहद यानी उन 10 अहकाम का एलान किया और हुक्म दिया कि इन पर अमल करो। फिर उस ने उन्हें पत्थर की दो तख्तियों पर लिख दिया। <sup>14</sup>रब ने मुझे हिदायत की, “उन्हें वह तमाम अहकाम सिखा जिन के मुताबिक़ उन्हें चलना होगा जब वह दरया-ए-यर्डन को पार करके कनआन पर क़ब्ज़ा करेंगे।”

### बुतपरस्ती के बारे में आगाही

<sup>15</sup>जब रब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुम से हमकलाम हुआ तो तुम ने उस की कोई शक़्ल न देखी। चुनाँचे खबरदार रहो <sup>16</sup>कि तुम ग़लत काम करके अपने लिए किसी भी शक़्ल का बुत न बनाओ। न मर्द, औरत, <sup>17</sup>ज़मीन पर चलने वाले जानवर, परिन्दे, <sup>18</sup>रेंगने वाले जानवर या मछली का बुत बनाओ। <sup>19</sup>जब तू आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर आसमान का पूरा लश्कर देखे तो सूरज, चाँद और सितारों की परस्तिश और खिदमत करने की आजमाइश में न पड़ना। रब तेरे खुदा ने इन चीज़ों को बाक़ी तमाम क़ौमों को अता किया है, <sup>20</sup>लेकिन तुम्हें उस ने मिस्र के भड़कते भट्टे से निकाला है ताकि तुम उस की अपनी क़ौम

और उस की मीरास बन जाओ। और आज ऐसा ही हुआ है।

<sup>21</sup>तुम्हारे सबब से रब ने मुझ से नाराज़ हो कर क्रसम खाई कि तू दरया-ए-यर्दन को पार करके उस अच्छे मुल्क में दाखिल नहीं होगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देने वाला है। <sup>22</sup>मैं यहीं इसी मुल्क में मर जाऊँगा और दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करूँगा। लेकिन तुम दरया को पार करके उस बेहतरीन मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। <sup>23</sup>हर सूत में वह अहद याद रखना जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे साथ बांधा है। अपने लिए किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना। यह रब का हुक्म है, <sup>24</sup>क्योंकि रब तेरा खुदा भस्म कर देने वाली आग है, वह ग़यूर खुदा है।

<sup>25</sup>तुम मुल्क में जा कर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे और पोते-नवासे उस में पैदा हो जाएंगे। जब इस तरह बहुत वक्रत गुज़र जाएगा तो खतरा है कि तुम ग़लत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ। ऐसा कभी न करना। यह रब तुम्हारे खुदा की नज़र में बुरा है और उसे गुस्सा दिलाएगा। <sup>26</sup>आज आसमान और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम ऐसा करो तो जल्दी से उस मुल्क में से मिट जाओगे जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे। <sup>27</sup>रब तुम्हें मुल्क से निकाल कर मुख्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद बचे रहेंगे। <sup>28</sup>वहाँ तुम इन्सान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुतों की खिदमत करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूँघ सकते हैं।

<sup>29</sup>वहीं तू रब अपने खुदा को तलाश करेगा, और अगर उसे पूरे दिल-ओ-जान से ढूँढ़े तो वह तुझे मिल भी जाएगा। <sup>30</sup>जब तू इस तक्लीफ़ में मुब्तला होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर आखिरकार रब अपने खुदा की तरफ़ रुजू करके उस की सुनेगा।

<sup>31</sup>क्योंकि रब तेरा खुदा रहीम खुदा है। वह तुझे न तर्क करेगा और न बर्बाद करेगा। वह उस अहद को नहीं भूलेगा जो उस ने क्रसम खा कर तेरे बापदादा से बांधा था।

### रब ही हमारा खुदा है

<sup>32</sup>दुनिया में इन्सान की तख़लीक़ से ले कर आज तक माज़ी की तफ़तीश कर। आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इस से पहले कभी इस तरह का मौजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी ने इस से पहले इस क्रिस्म के अज़ीम काम की खबर सुनी है? <sup>33</sup>तू ने आग में से बोलती हुई अल्लाह की आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और क़ौम के साथ ऐसा हुआ है? <sup>34</sup>क्या किसी और माबूद ने कभी जुरअत की है कि रब की तरह पूरी क़ौम को एक मुल्क से निकाल कर अपनी मिलकियत बनाया हो? उस ने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उस ने तुम्हारे देखते देखते मिस्रियों को आज़माया, उन्हें बड़े मौजिज़े दिखाए, उन के साथ जंग की, अपनी बड़ी कुदरत और इख्तियार का इज़हार किया और हौलनाक कामों से उन पर ग़ालिब आ गया।

<sup>35</sup>तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान ले कि रब खुदा है। उस के सिवा कोई और नहीं है। <sup>36</sup>उस ने तुझे नसीहत देने के लिए आसमान से अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उस ने तुझे अपनी अज़ीम आग दिखाई जिस में से तू ने उस की बातें सुनीं। <sup>37</sup>उसे तेरे बापदादा से प्यार था, और उस ने तुझे जो उन की औलाद हैं चुन लिया। इस लिए वह खुद हाज़िर हो कर अपनी अज़ीम कुदरत से तुझे मिस्र से निकाल लाया। <sup>38</sup>उस ने तेरे आगे से तुझ से ज़्यादा बड़ी और ताक़तवर क़ौमों निकाल दीं ताकि तुझे उन का मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा है।

<sup>39</sup>चुनाँचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब आसमान और ज़मीन का खुदा है।

कोई और माबूद नहीं है। <sup>40</sup>उस के अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद कामयाब होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

### यर्दन के मशरिक्क में पनाह के शहर

<sup>41</sup>यह कह कर मूसा ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक्क में पनाह के तीन शहर चुन लिए। <sup>42</sup>उन में वह शरख्स पनाह ले सकता था जिस ने दुश्मनी की बिना पर नहीं बल्कि गैरइरादी तौर पर किसी को जान से मार दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे बदले में क़ल्ल नहीं किया जा सकता था। <sup>43</sup>इस के लिए रूबिन के क़बीले के लिए मैदान-ए-मुर्तफ़ा का शहर बसर, जद के क़बीले के लिए जिलिआद का शहर रामात और मनस्सी के क़बीले के लिए बसन का शहर जौलान चुना गया।

### शरीअत का पेशलफ़ज़

<sup>44</sup>दर्ज-ए-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने इस्राईलियों को पेश की। <sup>45</sup>मूसा ने यह अह्काम और हिदायात उस वक़्त पेश कीं जब वह मिस्र से निकल कर <sup>46</sup>दरया-ए-यर्दन के मशरिक्की किनारे पर थे। बैत-फ़गूर उन के मुक्काबिल था, और वह अमोरी बादशाह सीहोन के मुल्क में ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश हस्बोन में थी और उसे इस्राईलियों से शिकस्त हुई थी जब वह मूसा की राहनुमाई में मिस्र से निकल आए थे। <sup>47</sup>उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उन्होंने ने बसन के मुल्क पर भी फ़न्ह पाई थी जिस का बादशाह ओज था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाक़ा उन के हाथ में आ गया था। यह इलाक़ा दरया-ए-यर्दन के मशरिक्क में था। <sup>48</sup>उस की जुनुबी सरहद दरया-ए-अर्नोन के किनारे पर वाक़े शहर अरोईर थी जबकि उस की शिमाली सरहद सिर्यून यानी हर्मून पहाड़ थी। <sup>49</sup>दरया-ए-यर्दन का पूरा मशरिक्की किनारा पिसगा के

पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक़े बहीरा-ए-मुदर तक उस में शामिल था।

### दस अह्काम

**5** मूसा ने तमाम इस्राईलियों को जमा करके कहा,

ऐ इस्राईल, ध्यान से वह हिदायात और अह्काम सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। <sup>2</sup>रब हमारे ख़ुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ अह्द बांधा। <sup>3</sup>उस ने यह अह्द हमारे बापदादा के साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बांधा है, जो आज इस जगह पर ज़िन्दा हैं। <sup>4</sup>रब पहाड़ पर आग में से रू-ब-रू हो कर तुम से हमकलाम हुआ। <sup>5</sup>उस वक़्त मैं तुम्हारे और रब के दरमियान खड़ा हुआ ताकि तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्योंकि तुम आग से डरते थे और इस लिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब ने कहा,

<sup>6</sup>"मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र की गुलामी से निकाल लाया। <sup>7</sup>मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

<sup>8</sup>अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। <sup>9</sup>न बुतों की परस्तिश, न उन की खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। <sup>10</sup>लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे अह्काम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

<sup>11</sup>रब अपने ख़ुदा का नाम बेमव्रसद या ग़लत मव्रसद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

<sup>12</sup>सबत के दिन का खयाल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हो, उसी तरह जिस तरह रब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। <sup>13</sup>हफ़्ते के पहले छः दिन अपना



काम-काज कर, <sup>14</sup>लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई और मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। तेरे नौकर और तेरी नौकरानी को तेरी तरह आराम का मौका मिलना है। <sup>15</sup>याद रखना कि तू मिस्र में गुलाम था और कि रब तेरा खुदा ही तुझे बड़ी कुदरत और इखतियार से वहाँ से निकाल लाया। इस लिए उस ने तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन मनाना।

<sup>16</sup>अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देने वाला है खुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

<sup>17</sup>क्रल्ल न करना।

<sup>18</sup>ज़िना न करना।

<sup>19</sup>चोरी न करना।

<sup>20</sup>अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।

<sup>21</sup>अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना। न उस के घर का, न उस की ज़मीन का, न उस के नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

<sup>22</sup>रब ने तुम सब को यह अह्काम दिए जब तुम सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुम ने आग, बादल और गहरे अंधेरे में से उस की ज़ोरदार आवाज़ सुनी। यही कुछ उस ने कहा और बस। फिर उस ने उन्हें पत्थर की दो तख्तियों पर लिख कर मुझे दे दिया।

### लोग रब से डरते हैं

<sup>23</sup>जब तुम ने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो

तुम्हारे क़बीलों के राहुनुमा और बुजुर्ग मेरे पास आए। <sup>24</sup>उन्होंने कहा, “रब हमारे खुदा ने हम पर अपना जलाल और अज़मत ज़ाहिर की है। आज हम ने आग में से उस की आवाज़ सुनी है। हम ने देख लिया है कि जब अल्लाह इन्सान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए। <sup>25</sup>लेकिन अब हम क्यों अपनी जान खतरे में डालें? अगर हम मज़ीद रब अपने खुदा की आवाज़ सुनें तो यह बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और हम अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। <sup>26</sup>क्यूँकि फ़ानी इन्सानों में से कौन हमारी तरह ज़िन्दा खुदा को आग में से बातें करते हुए सुन कर ज़िन्दा रहा है? कोई भी नहीं! <sup>27</sup>आप ही क़रीब जा कर उन तमाम बातों को सुनें जो रब हमारा खुदा हमें बताना चाहता है। फिर लौट कर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और उन पर अमल करेंगे।”

<sup>28</sup>जब रब ने यह सुना तो उस ने मुझ से कहा, “मैं ने इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक कहते हैं। <sup>29</sup>काश उन की सोच हमेशा ऐसी ही हो! काश वह हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अह्काम पर अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और उन की औलाद हमेशा कामयाब रहेंगे। <sup>30</sup>जा, उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ। <sup>31</sup>लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे तमाम क़वानीन और अह्काम दे दूँ। उन को लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उन के मुताबिक़ चलें जो मैं उन्हें दूँगा।”

<sup>32</sup>चुनाँचे एहतियात से उन अह्काम पर अमल करो जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें दिए हैं। उन से न दाईं तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। <sup>33</sup>हमेशा उस राह पर चलते रहो जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें बताई है। फिर तुम कामयाब होगे और उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे।

### सब से बड़ा हुक्म

**6** यह वह तमाम अह्काम हैं जो रब तुम्हारे खुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा। उस मुल्क में इन पर अमल करना जिस में तुम जाने वाले हो ताकि उस पर कब्ज़ा करो। 2उम्र भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे रब अपने खुदा का खौफ़ मानें और उस के उन तमाम अह्काम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ। तब तू देर तक जीता रहेगा। 3ऐ इस्राईल, यह मेरी बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर! फिर रब तेरे खुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू कामयाब रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में खूब बढ़ती जाएगी जिस में दूध और शहद की कसत है।

4सुन ऐ इस्राईल! रब हमारा खुदा एक ही रब है। 5रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताक़त से प्यार करना। 6जो अह्काम मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नज़्श कर। 7उन्हें अपने बच्चों के ज़हननशीन करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों ख़्वाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 8उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने बाजूओं और माथे पर लगा। 9उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10रब तेरे खुदा का वादा पूरा होगा जो उस ने क्रसम खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के साथ किया कि मैं तुझे कनआन में ले जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उस में हैं वह तू ने खुद नहीं बनाए। 11जो मकान उस में हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं जो तू ने उन में नहीं रखीं। जो कुएँ उस में हैं उन को तू ने नहीं खोदा। जो अंगूर और ज़ैतून के बाग़ उस में हैं उन्हें तू ने नहीं लगाया। यह हकीक़त याद रख। जब तू उस मुल्क में कसत का खाना खा कर सेर हो जाएगा 12तो खबरदार! रब को न भूलना जो तुझे मिस्र की गुलामी से निकाल लाया।

13रब अपने खुदा का खौफ़ मानना। सिर्फ़ उसी की इबादत करना और उसी का नाम ले कर क्रसम खाना। 14दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इस में तमाम पड़ोसी अक्वाम के देवता भी शामिल हैं। 15वर्ना रब तेरे खुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल हो कर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्योंकि वह ग़यूर खुदा है और तेरे दरमियान ही रहता है।

16रब अपने खुदा को उस तरह न आज़माना जिस तरह तुम ने मस्सा में किया था। 17ध्यान से रब अपने खुदा के अह्काम के मुताबिक़ चलो, उन तमाम हिदायात और क़वानीन पर जो उस ने तुझे दिए हैं। 18जो कुछ रब की नज़र में दुरुस्त और अच्छा है वह कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू जा कर उस अच्छे मुल्क पर कब्ज़ा करेगा जिस का वादा रब ने तेरे बापदादा से क्रसम खा कर किया था। 19तब रब की बात पूरी हो जाएगी कि तू अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल देगा।

20आने वाले दिनों में तेरे बच्चे पूछेंगे, “रब हमारे खुदा ने आप को इन तमाम अह्काम पर अमल करने को क्यों कहा?” 21फिर उन्हें जवाब देना, “हम मिस्र के बादशाह फ़िरऔन के गुलाम थे, लेकिन रब हमें बड़ी कुदरत का इज़हार करके मिस्र से निकाल लाया। 22हमारे देखते देखते उस ने बड़े बड़े निशान और मोज़िज़े किए और मिस्र, फ़िरऔन और उस के पूरे घराने पर हौलनाक मुसीबतें भेजीं। 23उस वक़्त वह हमें वहाँ से निकाल लाया ताकि हमें ले कर वह मुल्क दे जिस का वादा उस ने क्रसम खा कर हमारे बापदादा के साथ किया था। 24रब हमारे खुदा ही ने हमें कहा कि इन तमाम अह्काम के मुताबिक़ चलो और रब अपने खुदा का खौफ़ मानो। क्योंकि अगर हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब और ज़िन्दा रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा है। 25अगर हम रब अपने खुदा के हुज़ूर रह कर एहतियात से उन तमाम बातों पर अमल करेंगे

जो उस ने हमें करने को कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़ करार देगा।”

### दूसरी कनआनी क्रौमों को निकालना है

**7** रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू जा कर कब्ज़ा करेगा। वह तेरे सामने से बहुत सी क्रौमों भगा देगा। गो यह सात क्रौमों यानी हिन्ती, जिर्जसी, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्जी, हिच्वी और यबूसी तादाद और ताक़त के लिहाज़ से तुझ से बड़ी होंगी २तो भी रब तेरा खुदा उन्हें तेरे हवाले करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त देगा तो उन सब को उस के लिए मख्सूस करके हलाक कर देना है। न उन के साथ अहद बांधना और न उन पर रहम करना। ३उन में से किसी से शादी न करना। न अपनी बेटियों का रिश्ता उन के बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता उन की बेटियों से करना। ४वर्ना वह तुम्हारे बच्चों को मेरी पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उन के देवताओं की खिदमत करेंगे। तब रब का इज़ाब तुम पर नाज़िल हो कर जल्दी से तुम्हें हलाक कर देगा। ५इस लिए उन की कुर्बानिगाहें ढा देना। जिन पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना, उन के यसीरत देवी के खम्बे काट डालना और उन के बुत जला देना।

६क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस है। उस ने दुनिया की तमाम क्रौमों में से तुझे चुन कर अपनी क्रौम और खास मिलकियत बनाया। ७रब ने क्यों तुम्हारे साथ ताल्लुक क़ाइम किया और तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह से कि तुम तादाद में दीगर क्रौमों की निस्बत ज़्यादा थे? हरगिज़ नहीं! तुम तो बहुत कम थे। ८बल्कि वजह यह थी कि रब ने तुम्हें प्यार किया और वह वादा पूरा किया जो उस ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा के साथ किया था। इसी लिए वह फ़िद्या दे कर तुम्हें बड़ी कुदरत से मिस्र की गुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ से

बचा लाया। ९चुनाँचे जान ले कि सिर्फ़ रब तेरा खुदा ही खुदा है। वह वफ़ादार खुदा है। जो उस से मुहब्बत रखते और उस के अहकाम पर अमल करते हैं उन के साथ वह अपना अहद क़ाइम रखेगा और उन पर हज़ार पुशतों तक मेहरबानी करेगा। १०लेकिन उस से नफ़रत करने वालों को वह उन के रू-ब-रू मुनासिब सज़ा दे कर बर्बाद करेगा। हाँ, जो उस से नफ़रत करते हैं, उन के रू-ब-रू वह मुनासिब सज़ा देगा और झिजकेगा नहीं।

११चुनाँचे ध्यान से उन तमाम अहकाम पर अमल कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू उन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे। १२अगर तू उन पर तवज्जुह दे और एहतियात से उन पर चले तो फिर रब तेरा खुदा तेरे साथ अपना अहद क़ाइम रखेगा और तुझ पर मेहरबानी करेगा, बिलकुल उस वादे के मुताबिक़ जो उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया था। १३वह तुझे प्यार करेगा और तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो तुझे देने का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया था। तुझे बहुत औलाद बख़्शने के इलावा वह तेरे खेतों को बरकत देगा, और तुझे कसत का अनाज, अंगूर और ज़ैतून हासिल होगा। वह तेरे रेवड़ों को भी बरकत देगा, और तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की तादाद बढ़ती जाएगी। १४तुझे दीगर तमाम क्रौमों की निस्बत कहीं ज़्यादा बरकत मिलेगी। न तुझ में और न तेरे मवेशियों में बाँझपन पाया जाएगा। १५रब हर बीमारी को तुझ से दूर रखेगा। वह तुझ में वह खतरनाक वबाएँ फैलने नहीं देगा जिन से तू मिस्र में वाकिफ़ हुआ बल्कि उन्हें उन में फैलाएगा जो तुझ से नफ़रत रखते हैं।

१६जो भी क्रौमों रब तेरा खुदा तेरे हाथ में कर देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम की निगाह से न देखना, न उन के देवताओं की खिदमत करना, वर्ना तू फंस जाएगा।

17गो तेरा दिल कहे, "यह क्रौमें हम से ताक़तवर हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते हैं?" 18तो भी उन से न डर। वही कुछ ज़हन में रख जो रब तेरे खुदा ने फिरऔन और पूरे मिस्र के साथ किया। 19क्योंकि तू ने अपनी आँखों से रब अपने खुदा की वह बड़ी आजमाने वाली मुसीबतें और मोजिज़े, उस का वह अज़ीम इखतियार और कुदरत देखी जिस से वह तुझे वहाँ से निकाल लाया। वही कुछ रब तेरा खुदा उन क्रौमों के साथ भी करेगा जिन से तू इस वक़्त डरता है। 20न सिर्फ़ यह बल्कि रब तेरा खुदा उन के दरमियान ज़म्बूर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ जो पहले हम्लों से बच कर छुप गए हैं। 21उन से दहशत न खा, क्योंकि रब तेरा खुदा तेरे दरमियान है। वह अज़ीम खुदा है जिस से सब खौफ़ खाते हैं। 22वह रफ़ता रफ़ता उन क्रौमों को तेरे आगे से भगा देगा। तू उन्हें एक दम ख़त्म नहीं कर सकेगा, वरना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़ कर तुझे नुक़सान पहुँचाएँगे।

23रब तेरा खुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह उन में इतनी सख़्त अफ़्रा-तफ़्री पैदा करेगा कि वह बर्बाद हो जाएंगे। 24वह उन के बादशाहों को भी तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू उन का नाम-ओ-निशान मिटा देगा। कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन सब को बर्बाद कर देगा।

25उन के देवताओं के मुजस्समे जला देना। जो चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उस का लालच न करना। उसे न लेना वरना तू फंस जाएगा। क्योंकि इन चीज़ों से रब तेरे खुदा को घिन आती है। 26इस तरह की मकरूह चीज़ अपने घर में न लाना, वरना तुझे भी उस के साथ अलग करके बर्बाद किया जाएगा। तेरे दिल में उस से शदीद नफ़रत और घिन हो, क्योंकि उसे पूरे तौर पर बर्बाद करने के लिए मख़्सूस किया गया है।

## रब को न भूलना

8 एहतियात से उन तमाम अहक़ाम पर अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। क्योंकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में बढ़ोगे और जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे जिस का वादा रब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर किया था।

2वह पूरा वक़्त याद रख जब रब तेरा खुदा रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता रहा ताकि तुझे आजिज़ करके आजमाए और मालूम करे कि क्या तू उस के अहक़ाम पर चलेगा कि नहीं। 3उस ने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर तुझे मन खिलाया जिस से न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। क्योंकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि इन्सान की ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।

4इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न घिसे न फटे, न तेरे पाँओ सूजे। 5चुनौचे दिल में जान ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तर्बियत करता है उसी तरह रब हमारा खुदा हमारी तर्बियत करता है।

6रब अपने खुदा के अहक़ाम पर अमल करके उस की राहों पर चल और उस का खौफ़ मान। 7क्योंकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिस में नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट निकलते हैं। 8उस की पैदावार अनाज, जौ, अंगूर, अन्जीर, अनार, ज़ैतून और शहद है। 9उस में रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उस के पत्थरों में लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से ताँबा हासिल कर सकेगा।

10जब तू कसत का खाना खा कर सेर हो जाएगा तो फिर रब अपने खुदा की तम्जीद करना जिस ने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है। 11खबरदार, रब अपने खुदा को न भूल और उस के उन अहक़ाम पर अमल करने से गुरेज़

न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ।<sup>12</sup> क्योंकि जब तू कसत का खाना खा कर सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बना कर उन में रहेगा<sup>13</sup> और तेरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक्री तमाम माल में इज़ाफ़ा होगा<sup>14</sup> तो कहीं तू मगरूर हो कर रब अपने खुदा को भूल न जाए जो तुझे मिस्र की गुलामी से निकाल लाया।<sup>15</sup> जब तू उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिस में ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महरूम उस इलाक़े में वही सख्त पत्थर में से पानी निकाल लाया।<sup>16</sup> रेगिस्तान में वही तुझे मन खिलाता रहा, जिस से तेरे बापदादा वाक्रिफ़ न थे। इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके आजमाता रहा ताकि आखिरकार तू कामयाब हो जाए।

<sup>17</sup> जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह न कहना कि मैं ने अपनी ही कुव्वत और ताक़त से यह सब कुछ हासिल किया है।<sup>18</sup> बल्कि रब अपने खुदा को याद करना जिस ने तुझे दौलत हासिल करने की क़ाबिलियत दी है। क्योंकि वह आज भी उसी अहद पर क़ाइम है जो उस ने तेरे बापदादा से किया था।

<sup>19</sup> रब अपने खुदा को न भूलना, और न दीगर माबूदों के पीछे पड़ कर उन्हें सिज्दा और उन की खिदमत करना। वर्ना मैं खुद गवाह हूँ कि तुम यक्रीनन हलाक हो जाओगे।<sup>20</sup> अगर तुम रब अपने खुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन क़ौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुम से पहले इस मुल्क में रहती थीं।

### मुल्क मिलने का सबब इस्राईल की रास्ती नहीं है

**9** सुन ऐ इस्राईल! आज तू दरया-ए-यर्दन को पार करने वाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी क़ौमों को भगा देगा जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं और जिन के शानदार शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं।<sup>2</sup> वहाँ अनाक्री बसते हैं जो ताक़तवर और दराज़क़द

हैं। तू खुद जानता है कि उन के बारे में कहा जाता है, "कौन अनाक्रियों का सामना कर सकता है?"<sup>3</sup> लेकिन आज जान ले कि रब तेरा खुदा तेरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देने वाली आग की तरह हलाक करेगा। वह तेरे आगे आगे उन पर क़ाबू पाएगा, और तू उन्हें निकाल कर जल्दी मिटा देगा, जिस तरह रब ने वादा किया है।

<sup>4</sup> जब रब तेरा खुदा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा तो तू यह न कहना, "मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी लिए रब मुझे लाइक़ समझ कर यहाँ लाया और यह मुल्क मीरास में दे दिया है।" यह बात हरगिज़ दुरुस्त नहीं है। रब उन क़ौमों को उन की ग़लत हरकतों की वजह से तेरे सामने से निकाल देगा।<sup>5</sup> तू अपनी रास्तबाज़ी और दियानतदारी की बिना पर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब उन्हें उन की शरीर हरकतों के बाइस तेरे सामने से निकाल देगा। दूसरे, जो वादा उस ने तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के साथ क़सम खा कर किया था उसे पूरा होना है।

<sup>6</sup> चुनाँचे जान ले कि रब तेरा खुदा तुझे तेरी रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा। हकीक़त तो यह है कि तू हटधर्म क़ौम है।

### सोने का बछड़ा

<sup>7</sup> याद रख और कभी न भूल कि तू ने रेगिस्तान में रब अपने खुदा को किस तरह नाराज़ किया। मिस्र से निकलते वक़्त से लेकर यहाँ पहुँचने तक तुम रब से सरकश रहे हो। श्वासकर होरिब यानी सीना के दामन में तुम ने रब को इतना गुस्सा दिलाया कि वह तुम्हें हलाक करने को था।<sup>8</sup> उस वक़्त मैं पहाड़ पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ यानी उस अहद की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो रब ने तुम्हारे साथ बांधा था। कुछ खाए पिए बग़ैर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

<sup>10-11</sup> जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब तुम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उस ने

अपनी उंगली से दोनों तख्तियों पर लिख कर मुझे दिया।<sup>12</sup> उस ने मुझ से कहा, “फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी क्रौम जिसे तू मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अह्काम से हट गए हैं। उन्हीं ने अपने लिए बुत ढाल लिया है।<sup>13</sup> मैं ने जान लिया है कि यह क्रौम कितनी ज़िद्दी है।<sup>14</sup> अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उन का नाम-ओ-निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उन की जगह मैं तुझ से एक क्रौम बना लूँगा जो उन से बड़ी और ताकतवर होगी।”

<sup>15</sup> मैं मुड़ कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क रहा था। मेरे हाथों में अह्द की दोनों तख्तियाँ थीं।<sup>16</sup> तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुम ने रब अपने खुदा का गुनाह किया है। तुम ने अपने लिए बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से रब की मुकर्ररा राह से हट गए थे।

<sup>17</sup> तब मैं ने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख्तियों को ज़मीन पर पटख कर टुकड़े टुकड़े कर दिया।<sup>18</sup> एक और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा। मैं ने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्योंकि जो कुछ तुम ने किया था वह रब को निहायत बुरा लगा, इस लिए वह गज़बनाक हो गया था।<sup>19</sup> वह तुम से इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यूँ लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस बार भी उस ने मेरी सुन ली।<sup>20</sup> मैं ने हारून के लिए भी दुआ की, क्योंकि रब उस से भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

<sup>21</sup> जो बछड़ा तुम ने गुनाह करके बनाया था उसे मैं ने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे कुचल दिया और पीस पीस कर पाउडर बना दिया। यह पाउडर मैं ने उस चश्मे में फैंक दिया जो पहाड़ पर से बह रहा था।

<sup>22</sup> तुम ने रब को तबएरा, मस्सा और क़ब्रोट-हत्तावा में भी गुस्सा दिलाया।<sup>23</sup> क़ादिस-

बर्नीअ में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेज कर कहा था, “जाओ, उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो मैं ने तुम्हें दे दिया है।” लेकिन तुम ने सरकश हो कर रब अपने खुदा के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की। तुम ने उस पर एतिमाद न किया, न उस की सुनी।<sup>24</sup> जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा रब के साथ रवय्या बाणियाना ही रहा है।

<sup>25</sup> मैं 40 दिन और रात रब के सामने ज़मीन पर मुँह के बल रहा, क्योंकि रब ने कहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा।<sup>26</sup> मैं ने उस से मिन्नत करके कहा, “ऐ रब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपनी क्रौम को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिलकियत है जिसे तू ने फ़िद्या दे कर अपनी अज़ीम कुदरत से बचाया और बड़े इखतियार के साथ मिस्र से निकाल लाया।<sup>27</sup> अपने खादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याकूब को याद कर, और इस क्रौम की ज़िद, शरीर हरकतों और गुनाह पर तवज्जुह न दे।<sup>28</sup> वर्ना मिस्री कहेंगे, ‘रब उन्हें उस मुल्क में लाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा उस ने किया था, बल्कि वह उन से नफ़रत करता था। हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले आया।’<sup>29</sup> वह तो तेरी क्रौम हैं, तेरी मिलकियत जिसे तू अपनी अज़ीम कुदरत और इखतियार से मिस्र से निकाल लाया।”

### मूसा को नई तख्तियाँ मिलती हैं

**10** उस वक़्त रब ने मुझ से कहा, “पत्थर की दो और तख्तियाँ तराशना जो पहली तख्तियों की मानिन्द हों। उन्हें ले कर मेरे पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का सन्दूक भी बनाना।<sup>2</sup> फिर मैं इन तख्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं उन तख्तियों पर लिख चुका था जो तू ने तोड़ डालीं। तुम्हें उन्हें सन्दूक में मट्फ़ूज़ रखना है।”

<sup>3</sup> मैं ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक बनवाया और दो तख्तियाँ तराशीं जो पहली

तख्तियों की मानिन्द थीं। फिर मैं दोनों तख्तियों ले कर पहाड़ पर चढ़ गया। 4रब ने उन तख्तियों पर दुबारा वह दस अह्काम लिख दिए जो वह पहली तख्तियों पर लिख चुका था। (उन ही अह्काम का एलान उस ने पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम उस के दामन में जमा थे।) फिर उस ने यह तख्तियों मेरे सपुर्द कीं। 5मैं लौट कर उतरा और तख्तियों को उस सन्दूक में रखा जो मैं ने बनाया था। वहाँ वह अब तक हैं। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने हुक्म दिया था।

### इमामों और लावियों की खिदमत

6(इस के बाद इस्राईली बनी-याक़ान के कुओं से रवाना हो कर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत हुआ। उसे दफ़न करने के बाद उस का बेटा इलीअज़र उस की जगह इमाम बना। 7फिर वह आगे सफ़र करते करते जुदजूदा, फिर युत्बाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।

8उन दिनों में रब ने लावी के क़बीले को अलग करके उसे रब के अह्द के सन्दूक को उठा कर ले जाने, रब के हुज़ूर खिदमत करने और उस के नाम से बरकत देने की ज़िम्मादारी दी। आज तक यह उन की ज़िम्मादारी रही है। 9इस वजह से लावियों को दीगर क़बीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली। रब तेरा खुदा खुद उन की मीरास है। उस ने खुद उन्हें यह फ़रमाया है।)

10जब मैं ने दूसरी मर्तबा 40 दिन और रात पहाड़ पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे हलाक न करने पर आमामादा हुआ। 11उस ने कहा, "जा, क़ौम की राहनुमाई कर ताकि वह जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था।"

### रब का ख़ौफ़

12ऐ इस्राईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा खुदा तुझ से क्या तकाज़ा करता है? सिर्फ़

यह कि तू उस का ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर चले, उसे प्यार करे, अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की खिदमत करे 13और उस के तमाम अह्काम पर अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए दे रहा हूँ।

14पूरा आसमान, ज़मीन और जो कुछ उस पर है, सब का मालिक रब तेरा खुदा है। 15तो भी उस ने तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़क़त का इज़हार करके उन से मुहब्बत की। और उस ने तुम्हें चुन कर दूसरी तमाम क़ौमों पर तर्जीह दी जैसा कि आज ज़ाहिर है। 16खतना उस की क़ौम का निशान है, लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि बातिनी भी हो। आइन्दा अड़ न जाओ।

17क्यूँकि रब तुम्हारा खुदा खुदाओं का खुदा और रबबों का रब है। वह अज़ीम और ज़ोर-आवर खुदा है जिस से सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं करता और रिश्तत नहीं लेता। 18वह यतीमों और बेवाओं का इन्साफ़ करता है। वह परदेसी से प्यार करता और उसे खुराक और पोशाक मुहय्या करता है। 19तुम भी उन के साथ मुहब्बत से पेश आओ, क्यूँकि तुम भी मिस्र में परदेसी थे।

20रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मान और उस की खिदमत कर। उस से लिपटा रह और उसी के नाम की क़सम खा। 21वही तेरा फ़ख़र है। वह तेरा खुदा है जिस ने वह तमाम अज़ीम और डराउने काम किए जो तू ने खुद देखे। 22जब तेरे बापदादा मिस्र गए थे तो 70 अफ़राद थे। और अब रब तेरे खुदा ने तुझे सितारों की मानिन्द बेशुमार बना दिया है।

### रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

**11** रब अपने खुदा से प्यार कर और हमेशा उस के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार। 2आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि तुम ही ने रब अपने खुदा से तर्बियत पाई। तुम ने उस की अज़मत, बड़े इख़तियार और कुदरत को देखा, 3और

तुम उन मोजिज़ों के गवाह हो जो उस ने मिस्र के बादशाह फ़िराओन और उस के पूरे मुल्क के सामने किए।<sup>4</sup> तुम ने देखा कि रब ने किस तरह मिस्री फ़ौज को उस के घोड़ों और रथों समेत बहर-ए-कुल्जुम में गर्क कर दिया जब वह तुम्हारा ताक़्तुब कर रहे थे। उस ने उन्हें यूँ तबाह किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।

<sup>5</sup> तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस तरह देख-भाल की।<sup>6</sup> तुम ने उस का इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ सुलूक देखा जो रूबिन के क़बीले के थे। उस दिन ज़मीन ने ख़ैमागाह के अन्दर मुँह खोल कर उन्हें उन के घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत हड़प कर लिया।

<sup>7</sup> तुम ने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम अज़ीम काम देखे हैं।<sup>8</sup> चुनाँचे उन तमाम अहक़ाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे।<sup>9</sup> अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस का वादा रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था और जिस में दूध और शहद की कस्रत है।

<sup>10</sup> क्यूँकि यह मुल्क मिस्र की मानिन्द नहीं है जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बो कर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती थी<sup>11</sup> जबकि जिस मुल्क पर तुम क़ब्ज़ा करोगे उस में पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है।<sup>12</sup> रब तेरा खुदा खुद उस मुल्क का खयाल रखता है। रब तेरे खुदा की आँखें साल के पहले दिन से ले कर आखिर तक मुतवातिर उस पर लगी रहती हैं।

<sup>13</sup> चुनाँचे उन अहक़ाम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने खुदा से प्यार करो और अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की

खिदमत करो।<sup>14</sup> फिर वह ख़रीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक़्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और ज़ैतून की फ़सलें पकेंगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा।<sup>15</sup> नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवड़ों के लिए घास मुहय्या करेगा, और तू खा कर सेर हो जाएगा।

<sup>16</sup> लेकिन खबरदार, कहीं तुम्हें वरग़ालाया न जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट जाओ और दीगर माबूदों को सिज्दा करके उन की खिदमत करो।<sup>17</sup> वर्ना रब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें दे रहा है।

<sup>18</sup> चुनाँचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक़्श कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ।<sup>19</sup> उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और हमेशा उन के बारे में बात करो, ख़्वाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो।<sup>20</sup> उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख<sup>21</sup> ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान क़ाइम है तुम और तुम्हारी औलाद उस मुल्क में जीते रहें जिस का वादा रब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया था।

<sup>22</sup> एहतियात से उन अहक़ाम की पैरवी करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने खुदा से प्यार करो, उस के तमाम अहक़ाम पर अमल करो और उस के साथ लिपटे रहो।<sup>23</sup> फिर वह तुम्हारे आगे आगे यह तमाम क़ौमों निकाल देगा और तुम ऐसी क़ौमों की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुम से बड़ी और ताक़तवर हैं।<sup>24</sup> तुम जहाँ भी क़दम रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, जुनुबी रेगिस्तान से ले कर लुबनान तक, दरया-ए-फ़ुरात से बहीरा-ए-रूम तक।<sup>25</sup> कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ रब तुम्हारा खुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी



दहशत और खौफ़ पैदा कर देगा।<sup>26</sup> आज तुम खुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या उस की लानत पाना चाहते हो? <sup>27</sup> अगर तुम रब अपने खुदा के उन अहकाम पर अमल करो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत देगा। <sup>28</sup> लेकिन अगर तुम उन के ताबे न रहो बल्कि मेरी पेशकरदा राह से हट कर दीगर माबूदों की पैरवी करो तो वह तुम पर लानत भेजेगा।

<sup>29</sup> जब रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़ कर बरकत का एलान करे और ऐबाल पहाड़ पर लानत का। <sup>30</sup> यह दो पहाड़ दरया-ए-यर्दन के मगरिब में उन कनआनियों के इलाक़े में वाक़े हैं जो वादी-ए-यर्दन में आबाद हैं। वह मगरिब की तरफ़ जिल्लाल शहर के सामने मोरिह के बलूत के दरख्तों के नज़दीक हैं। <sup>31</sup> अब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने वाले हो जो रब तुम्हारा खुदा तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे अपना कर उस में आबाद हो जाओगे <sup>32</sup> तो एहतियात से उन तमाम अहकाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

### मुल्क में रब के अहकाम

**12** ज़ैल में वह अहकाम और क़वा-  
नीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल करना होगा जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो रब तेरे बापदादा का खुदा तुझे दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उम्र भर उन के ताबे रहो।

### मुल्क में एक ही जगह पर मक़्दिस हो

<sup>2</sup> उन तमाम जगहों को बर्बाद करो जहाँ वह क़ौमों जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की पूजा करती हैं, ख़्वाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों या घने दरख्तों के साथ में क्यूँ न हों। <sup>3</sup> उन की कुर्बानिगाहों को ढा देना। जिन

पत्थरों की पूजा वह करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना। यसीरत देवी के खम्बे जला देना। उन के देवताओं के मुजस्समे काट डालना। गरज़ इन जगहों से उन का नाम-ओ-निशान मिट जाए।

<sup>4</sup> रब अपने खुदा की परस्तिश करने के लिए उन के तरीक़े न अपनाना। <sup>5</sup> रब तुम्हारा खुदा क़बीलों में से अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा। इबादत के लिए वहाँ जाया करो, <sup>6</sup> और वहाँ अपनी तमाम कुर्बानियाँ ला कर पेश करो, ख़्वाह वह भस्म होने वाली कुर्बानियाँ, ज़बह की कुर्बानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठाने वाली कुर्बानियाँ, मन्नत के हदिए, खुशी से पेश की गई कुर्बानियाँ या मवेशियों के पहलौठे क्यूँ न हों। <sup>7</sup> वहाँ रब अपने खुदा के हुज़ूर अपने घरानों समेत खाना खा कर उन कामयाबियों की खुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे खुदा की बरकत के बाइस हासिल हुई हैं।

<sup>8</sup> उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते आए हैं। आज तक हर कोई अपनी मज़ी के मुताबिक़ इबादत करता है, <sup>9</sup> क्यूँकि अब तक तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब तेरे खुदा से मीरास में मिलनी है। <sup>10</sup> लेकिन जल्द ही तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो रब तुम्हारा खुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक़्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे। <sup>11</sup> तब रब तुम्हारा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं बताऊँगा वहाँ ला कर पेश करना है, ख़्वाह वह भस्म होने वाली कुर्बानियाँ, ज़बह की कुर्बानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठाने वाली कुर्बानियाँ या मन्नत के खास हदिए क्यूँ न हों। <sup>12</sup> वहाँ रब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे गुलाम और लौंडियाँ खुशी मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को

भी अपनी खुशी में शरीक करो, क्योंकि उन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं होगी।

<sup>13</sup>खबरदार, अपनी भस्म होने वाली कुर्बानियाँ हर जगह पर पेश न करना <sup>14</sup>बल्कि सिर्फ उस जगह पर जो रब क़बीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यूँ मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

<sup>15</sup>लेकिन वह जानवर इस में शामिल नहीं हैं जो तू कुर्बानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के मुताबिक़ खा सकता है जो रब तेरे खुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। <sup>16</sup>लेकिन खून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

<sup>17</sup>जो भी चीज़ें रब के लिए मख्सूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिए, खुशी से पेश की गई कुर्बानियाँ और उठाने वाली कुर्बानियाँ। <sup>18</sup>यह चीज़ें सिर्फ़ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक्दि़स के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, गुलामों, लौंडियों और अपने क़बाइली इलाक़े के लावियों के साथ जमा हो कर खुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। <sup>19</sup>अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र भर पूरी करने की फ़िक्र रख।

<sup>20</sup>जब रब तेरा खुदा अपने वादे के मुताबिक़ तेरी सरहदें बढ़ा देगा और तू गोश्त खाने की ख्वाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोश्त खा सकेगा। <sup>21</sup>अगर तेरा घर उस मक्दि़स से दूर हो जिसे रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैं ने हुक्म दिया है। <sup>22</sup>ऐसा

गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। <sup>23</sup>अलबत्ता गोश्त के साथ खून न खाना, क्योंकि खून जानदार की जान है। उस की जान गोश्त के साथ न खाना। <sup>24</sup>खून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना। <sup>25</sup>उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्योंकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सहीह काम करेगा।

<sup>26</sup>लेकिन जो चीज़ें रब के लिए मख्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं या जो तू ने मन्नत मान कर उस के लिए मख्सूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मक्दि़स के लिए चुनेगा। <sup>27</sup>वहीं, रब अपने खुदा की कुर्बानगाह पर अपनी भस्म होने वाली कुर्बानियाँ गोश्त और खून समेत चढ़ा। ज़बह की कुर्बानियों का खून कुर्बानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उन का गोश्त तू खा सकता है।

<sup>28</sup>जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद खुशहाल रहेंगे, क्योंकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे खुदा की नज़र में अच्छा और दुरुस्त है।

<sup>29</sup>रब तेरा खुदा उन क़ौमों को मिटा देगा जिन की तरफ़ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उन के मुल्क से निकालता जाएगा और खुद उस में आबाद हो जाएगा। <sup>30</sup>लेकिन खबरदार, उन के खत्म होने के बाद भी उन के देवताओं के बारे में मालूमात हासिल न कर, वरना तू फंस जाएगा। मत कहना कि यह क़ौमों किस तरीक़े से अपने देवताओं की पूजा करती हैं? हम भी ऐसा ही करें। <sup>31</sup>ऐसा मत कर! यह क़ौमों ऐसे घिनौने तरीक़े से पूजा करती हैं जिन से रब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों को भी जला कर अपने देवताओं को पेश करते हैं।

<sup>32</sup>कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ उस के ताबे रह कर उस पर अमल करो। न किसी बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

### देवताओं की तरफ़ ले जाने वालॉ से सुलूक

**13** तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो अपने आप को नबी या ख्वाब देखने वाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी इलाही निशान या मौजिज़े का एलान करें<sup>2</sup> जो वाक़ई वुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, “आ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, हम उन की खिदमत करें जिन से तू अब तक वाक़िफ़ नहीं है।”<sup>3</sup> ऐसे लोगों की न सुन। इस से रब तुम्हारा खुदा तुम्हें आज़मा कर मालूम कर रहा है कि क्या तुम वाक़ई अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस से प्यार करते हो।<sup>4</sup> तुम्हें रब अपने खुदा की पैरवी करना और उसी का ख़ौफ़ मानना है। उस के अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस की खिदमत करो, उस के साथ लिपटे रहो।<sup>5</sup> ऐसे नबियों या ख्वाब देखने वालों को सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि वह तुझे रब तुम्हारे खुदा से बगावत करने पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिस ने फ़िद्या दे कर तुम्हें मिस्र की गुलामी से बचाया और वहाँ से निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना चाहते हैं जिसे रब तेरे खुदा ने तेरे लिए मुकर्रर किया है इस लिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ा-ए-मौत दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा देना।

<sup>6</sup>हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा या बेटी, तेरी बीवी या तेरा क़रीबी दोस्त तुझे चुपके से वरग़ालाने की कोशिश करे कि आ, हम जा कर दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं की जिन से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे।<sup>7</sup> ख्वाह इर्दगिर्द की या दूरदराज़ की क़ौमों के देवता हों, ख्वाह दुनिया के एक सिरे के या दूसरे सिरे के माबूद हों,<sup>8</sup> किसी सूत में अपनी रज़ामन्दी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह दे<sup>9</sup> बल्कि उसे सज़ा-ए-मौत दे। और उसे संगसार करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फेंके, फिर ही बाक़ी

तमाम लोग हिस्सा लें।<sup>10</sup> उसे ज़रूर पत्थरों से सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि उस ने तुझे रब तेरे खुदा से दूर करने की कोशिश की, उसी से जो तुझे मिस्र की गुलामी से निकाल लाया।<sup>11</sup> फिर तमाम इस्राईल यह सुन कर डर जाएगा और आइन्दा तेरे दरमियान ऐसी शरीर हरकत करने की जुरअत नहीं करेगा।

<sup>12</sup>जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए<sup>13</sup> कि शरीर लोग तेरे दरमियान से उभर आए हैं जो अपने शहर के बाशिनदों को यह कह कर ग़लत राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिन से तुम वाक़िफ़ नहीं हो।<sup>14</sup> लाज़िम है कि तू दरयाफ़्त करके इस की तफ़्तीश करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ है। अगर साबित हो जाए कि यह घिनौनी बात वाक़ई हुई है<sup>15</sup> तो फिर लाज़िम है कि तू शहर के तमाम बाशिनदों को हलाक करे। उसे रब के सपुर्द करके सरासर तबाह करना, न सिर्फ़ उस के लोग बल्कि उस के मवेशी भी।<sup>16</sup> शहर का पूरा माल-ए-ग़नीमत चौक में इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर को उस के माल समेत रब के लिए मख़्सूस करके जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए बल्कि उस के खंडरात हमेशा तक रहें।

<sup>17</sup>पूरा शहर रब के लिए मख़्सूस किया गया है, इस लिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास न पाई जाए। सिर्फ़ इस सूत में रब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से वादा किया है।<sup>18</sup> लेकिन यह सब कुछ इस पर मब्नी है कि तू रब अपने खुदा की सुने और उस के उन तमाम अहक़ाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुरुस्त है।

### पाक और नापाक जानवर

**14** तुम रब अपने खुदा के फ़र्ज़न्द हो। अपने आप को मुर्दों के सबब से न ज़रखी करो, न अपने सर के सामने वाले बाल मुंडवाओ। <sup>2</sup>क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस क्रौम है। दुनिया की तमाम क्रौमों में से रब ने तुझे ही चुन कर अपनी मिलकियत बना लिया है।

<sup>3</sup>कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

<sup>4</sup>तुम बैल, भेड़-बकरी, <sup>5</sup>हिरन, गज़ाल, मृग,<sup>a</sup> पहाड़ी बकरी, महात,<sup>b</sup> गज़ाल-ए-अफ्रीका<sup>c</sup> और पहाड़ी बकरी खा सकते हो। <sup>6</sup>जिन के खुर या पाँओ बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। <sup>7</sup>ऊँट, बिजजू या खरगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ चिरे हुए नहीं हैं। <sup>8</sup>सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। न उन का गोशत खाना, न उन की लाशों को छूना।

<sup>9</sup>पानी में रहने वाले जानवर खाने के लिए जाइज़ हैं अगर उन के पर और छिलके हों। <sup>10</sup>लेकिन जिन के पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

<sup>11</sup>तुम हर पाक परिन्दा खा सकते हो। <sup>12</sup>लेकिन ज़ैल के परिन्दे खाना मना है : उक्काब, ददियल गिद्ध, काला गिद्ध, <sup>13</sup>लाल चील, काली चील, हर क्रिस्म का गिद्ध, <sup>14</sup>हर क्रिस्म का कव्वा, <sup>15</sup>उक्काबी उल्लू, छोटे कान

वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क्रिस्म का बाज़, <sup>16</sup>छोटा उल्लू, चिंघाड़ने वाला उल्लू, सफ़ेद उल्लू, <sup>17</sup>दशती उल्लू, मिस्री गिद्ध, कूक, <sup>18</sup>लक्लक, हर क्रिस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़।<sup>d</sup>

<sup>19</sup>तमाम पर रखने वाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक हैं। उन्हें खाना मना है। <sup>20</sup>लेकिन तुम हर पाक परिन्दा खा सकते हो।

<sup>21</sup>जो जानवर खुद-ब-खुद मर जाए उसे न खाना। तू उसे अपनी आबादी में रहने वाले किसी परदेसी को दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह उसे खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस क्रौम है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना मना है।

### अपनी पैदावार का दसवाँ

#### हिस्सा मख्सूस करना

<sup>22</sup>लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग करे। <sup>23</sup>इस के लिए अपना अनाज, अंगूर का रस, ज़ैतून का तेल और मवेशी के पहलौठे रब अपने खुदा के हुज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह चीज़ें कुर्बान करके खा ताकि तू उग्र भर रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे।

<sup>24</sup>लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा वह तेरे घर से हद से ज़्यादा दूर हो और रब तेरे खुदा की बरकत के बाइस मज़क़ूरा

<sup>a</sup>यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ितरतन मुख्तलिफ़ होता है। इस के सींग खोखले, बेशाख और अनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

<sup>b</sup>महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिस के सींग चक्करदार होते हैं। addax।

<sup>c</sup>गज़ाल-ए-अफ्रीका। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लम्बे और हल्कादार सींगों की वजह से मुस्ताज़ है। oryx।

<sup>d</sup>याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

दसवाँ हिस्सा इतना ज़्यादा हो कि तू उसे मक्त्रिदस तक नहीं पहुँचा सकता।<sup>25</sup> इस सूरत में उसे बेच कर उस के पैसे उस जगह ले जा जो रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा।<sup>26</sup> वहाँ पहुँच कर उन पैसों से जो जी चाहे खरीदना, ख्वाह गाय-बैल, भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और चीज़ क्यूँ न हो। फिर अपने घराने के साथ मिल कर रब अपने खुदा के हुजूर यह चीज़ें खाना और खुशी मनाना।<sup>27</sup> ऐसे मौकों पर उन लावियों का खयाल रखना जो तेरे क़बाइली इलाक़े में रहते हैं, क्यूँकि उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

<sup>28</sup> हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा अपने शहरों में जमा करना।<sup>29</sup> उसे लावियों को देना जिन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं है, नीज़ अपने शहरों में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना। वह आएँ और खाना खा कर सेर हो जाएँ ताकि रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत दे।

### क़र्ज़दारों की बहाली का साल

**15** हर सात साल के बाद एक दूसरे के क़र्जे मुआफ़ कर देना।<sup>2</sup> उस वक़्त जिस ने भी किसी इस्राईली भाई को क़र्ज़ दिया है वह उसे मन्सूख़ करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने पर मज्बूर न करे, क्यूँकि रब की ताज़ीम में क़र्ज़ मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है।<sup>3</sup> इस साल में तू सिर्फ़ ग़ैरमुल्की क़र्ज़दारों को पैसे वापस करने पर मज्बूर कर सकता है। अपने इस्राईली भाई के तमाम क़र्ज़ मुआफ़ कर देना।

<sup>4</sup> तेरे दरमियान कोई भी ग़रीब नहीं होना चाहिए, क्यूँकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देने वाला है तो वह तुझे बहुत बरकत देगा।<sup>5</sup> लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की सुने और एहतियात से उस के उन तमाम अहक़ाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।<sup>6</sup> फिर रब तुम्हारा खुदा

तुझे अपने वादे के मुताबिक़ बरकत देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि बहुत सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ पर हुकूमत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत सी क़ौमों पर हुकूमत करेगा।

<sup>7</sup> जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तेरा खुदा तुझे देने वाला है तो अपने दरमियान रहने वाले ग़रीब भाई से सख़्त सुलूक न करना, न कंजूस होना।<sup>8</sup> खुले दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे उधार के तौर पर दे।<sup>9</sup> ख़बरदार, ऐसा मत सोच कि क़र्ज़ मुआफ़ करने का साल क़रीब है, इस लिए मैं उसे कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल में सोचते हुए ज़रूरतमन्द भाई को क़र्ज़ देने से इन्कार करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत करे तो तू कुसूरवार ठहरेगा।<sup>10</sup> उसे ज़रूर कुछ दे बल्कि खुशी से दे। फिर रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।<sup>11</sup> मुल्क में हमेशा ग़रीब और ज़रूरतमन्द लोग पाए जाएंगे, इस लिए मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से अपने ग़रीब और ज़रूरतमन्द भाइयों की मदद कर।

### गुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

<sup>12</sup> अगर कोई इस्राईली भाई या बहन अपने आप को बेच कर तेरा गुलाम बन जाए तो वह छः साल तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल उसे आज़ाद कर दिया जाए।<sup>13</sup> आज़ाद करते वक़्त उसे ख़ाली हाथ फ़ारिश न करना<sup>14</sup> बल्कि अपनी भेड़-बकरियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़र्याज़ी से कुछ दे, यानी उन चीज़ों में से जिन से रब तेरे खुदा ने तुझे बरकत दी है।<sup>15</sup> याद रख कि तू भी मिस्र में गुलाम था और कि रब तेरे खुदा ने फ़िद्या दे कर तुझे छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

<sup>16</sup> लेकिन मुमकिन है कि तेरा गुलाम तुझे छोड़ना न चाहे, क्यूँकि वह तुझ से और तेरे खानदान से मुहब्बत रखता है, और वह तेरे

पास रह कर खुशहाल है। <sup>17</sup>इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उस के कान की लौ चौखट के साथ लगा कर उसे सुताली यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर तेरा गुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही करना।

<sup>18</sup>अगर गुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे तो बुरा न मानना। आखिर अगर उस की जगह कोई और वही काम तनख्वाह के लिए करता तो तेरे अख़्वाजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना तो रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

### जानवरों के पहलौठे मख्सूस हैं

<sup>19</sup>अपनी गायों और भेड़-बकरियों के नर पहलौठे रब अपने खुदा के लिए मख्सूस करना। न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। <sup>20</sup>हर साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब अपने मक्दिंस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब अपने खुदा के हुज़ूर अपने पूरे खानदान समेत खाना।

<sup>21</sup>अगर ऐसे जानवर में कोई खराबी हो, वह अंधा या लंगड़ा हो या उस में कोई और नुक्स हो तो उसे रब अपने खुदा के लिए कुर्बान न करना। <sup>22</sup>ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और गज़ाल की मानिन्द हैं जिन्हें तू खा तो सकता है लेकिन कुर्बानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता। पाक और नापाक शख्स दोनों उसे खा सकते हैं। <sup>23</sup>लेकिन खून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

### फ़सह की ईद

**16** अबीब के महीने<sup>a</sup> में रब अपने खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना, क्योंकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिस्र से निकाल लाया। <sup>2</sup>उस जगह

जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। उसे कुर्बानी के लिए भेड़-बकरियाँ या गाय-बैल पेश करना। <sup>3</sup>गोशत के साथ बेखमीरी रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तू ने किया जब जल्दी जल्दी मिस्र से निकला। मुसीबत की यह रोटी इस लिए खा ताकि वह दिन तेरे जीते जी याद रहे जब तू मिस्र से रवाना हुआ। <sup>4</sup>लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के दौरान तेरे पूरे मुल्क में खमीर न पाया जाए।

जो कुर्बानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश करे उस का गोशत उसी वक़्त खा ले। अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रह जाए। <sup>5</sup>फ़सह की कुर्बानी किसी भी शहर में जो रब तेरा खुदा तुझे देगा न चढ़ाना <sup>6</sup>बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिस्र से निकलते वक़्त की तरह कुर्बानी के जानवर को सूरज डूबते वक़्त ज़बह कर। <sup>7</sup>फिर उसे भून कर उस जगह खाना जो रब तेरा खुदा चुनेगा। अगली सुबह अपने घर वापस चला जा। <sup>8</sup>ईद के पहले छः दिन बेखमीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब अपने खुदा की इबादत के लिए जमा हो जाना।

### फ़सल की कटाई की ईद

<sup>9</sup>जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो पहले दिन के सात हफ़्ते बाद <sup>10</sup>फ़सल की कटाई की ईद मनाना। रब अपने खुदा को उतना पेश कर जितना जी चाहे। वह उस बरकत के मुताबिक़ हो जो उस ने तुझे दी है। <sup>11</sup>इस के लिए भी उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ उस के हुज़ूर खुशी मना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे गुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में रहने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी खुशी में शरीक हों। <sup>12</sup>इन अटकाम पर

<sup>a</sup>मार्च ता अप्रैल।

ज़रूर अमल करना और मत भूलना कि तू मिस्र में गुलाम था।

### झोंपड़ियों की ईद

<sup>13</sup>अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिस का दौरानिया सात दिन हो। <sup>14</sup>ईद के मौक़े पर खुशी मनाना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे गुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में बसने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी खुशी में शरीक हों। <sup>15</sup>जो जगह रब तेरा खुदा मक्विदिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्योंकि रब तेरा खुदा तेरी तमाम फ़सलों और मेहनत को बरकत देगा, इस लिए ख़ूब खुशी मनाना।

<sup>16</sup>इस्त्राईल के तमाम मर्द साल में तीन मर्तबा उस मक्विदिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा खुदा चुनेगा यानी बेखमीरी रोटी की ईद, फ़सल की कटाई की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब के हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। <sup>17</sup>हर कोई उस बरकत के मुताबिक़ दे जो रब तेरे खुदा ने उसे दी है।

### क्राज़ी मुकर्रर करना

<sup>18</sup>अपने अपने क़बाइली इलाक़े में क्राज़ी और निगहबान मुकर्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो रब तेरा खुदा तुझे देगा। वह इन्साफ़ से लोगों की अदालत करें। <sup>19</sup>न किसी के हुक़ूक़ मारना, न जानिबदारी दिखाना। रिश्तत क़बूल न करना, क्योंकि रिश्तत दानिशमन्दों को अंधा कर देती और रास्तबाज़ की बातें पलट देती है। <sup>20</sup>सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्साफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे जो रब तेरा खुदा तुझे देगा।

### बुतपरस्ती की सज़ा

<sup>21</sup>जहाँ तू रब अपने खुदा के लिए कुर्बान-गाह बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी का खम्बा <sup>22</sup>और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना जिस की पूजा लोग करते हैं। रब तेरा खुदा इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

**17** रब अपने खुदा को नाक्रिस गाय-बैल या भेड़-बकरी पेश न करना, क्योंकि वह ऐसी कुर्बानी से नफ़रत रखता है।

<sup>2</sup>जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब तेरा खुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दरमियान कोई मर्द या औरत रब तेरे खुदा का अहद तोड़ कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे। <sup>3</sup>मसलन वह दीगर माबूदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लश्कर को सिज्दा करे, हालाँकि मैं ने यह मना किया है। <sup>4</sup>जब भी तुझे इस क्रिस्म की खबर मिले तो इस का पूरा खोज लगा। अगर बात दुरुस्त निकले और ऐसी धिनीनी हरकत वाक़ई इस्त्राईल में की गई हो <sup>5</sup>तो कुसूरवार को शहर के बाहर ले जा कर संगसार कर देना। <sup>6</sup>लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या तीन लोग गवाही दें कि उस ने ऐसा ही किया है। उसे सज़ा-ए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं। <sup>7</sup>पहले गवाह उस पर पत्थर फेंके, इस के बाद बाक़ी तमाम लोग उसे संगसार करें। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

### मक्विदिस में आलातरीन अदालत

<sup>8</sup>अगर तेरे शहर के क्राज़ियों के लिए किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस मक्विदिस में आ कर अपना मुआमला पेश कर जो रब तेरा खुदा चुनेगा, ख़वाह किसी को क़त्ल किया गया हो, उसे ज़ख़मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो। <sup>9</sup>लावी के क़बीले के इमामों और मक्विदिस में खिदमत करने वाले क्राज़ी को अपना मुक़द्दमा पेश कर, और वह फ़ैसला करें। <sup>10</sup>जो फ़ैसला

वह उस मक्दिस में करेंगे जो रब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर एहतियात से अमल कर। 11शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फ़ैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ उस से न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।

12जो मक्दिस में रब तेरे खुदा की खिदमत करने वाले क़ाज़ी या इमाम को हकीर जान कर उन की नहीं सुनता उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। यूँ तू इस्राईल से बुराई मिटा देगा। 13फिर तमाम लोग यह सुन कर डर जाएंगे और आइन्दा ऐसी गुस्ताख़ी करने की जुरअत नहीं करेंगे।

### बादशाह के बारे में उसूल

14तू जल्द ही उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे देने वाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू एक दिन कहे, "आओ हम इर्दगिर्द की तमाम क़ौमों की तरह बादशाह मुकर्रर करें जो हम पर हुकूमत करे।" 15अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख्स मुकर्रर कर जिसे रब तेरा खुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इस्राईली भाई हो। 16बादशाह बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें खरीदने के लिए मिस्र भेजे। क्योंकि रब ने तुझ से कहा है कि कभी वहाँ वापस न जाना। 17तेरा बादशाह ज़्यादा बीवियाँ भी न रखे, वर्ना उस का दिल रब से दूर हो जाएगा। और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी जमा न करे।

18तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल लिखवाए। 19यह किताब उस के पास मट्फूज़ रहे, और वह उम्र भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब अपने खुदा का ख़ौफ़

मानना सीखे। तब वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा, 20अपने आप को अपने इस्राईली भाइयों से ज़्यादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी शरीअत से हट कर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अर्से तक इस्राईल पर हुकूमत करेंगे।

### इमामों और लावियों का हिस्सा

**18** इस्राईल के हर क़बीले को मीरास में उस का अपना इलाक़ा मिलेगा सिवाए लावी के क़बीले के जिस में इमाम भी शामिल हैं। वह जलने वाली और दीगर कुर्बानियों में से अपना हिस्सा ले कर गुज़ारा करें। 2उन के पास दूसरों की तरह मौरूसी ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब खुद उन का मौरूसी हिस्सा होगा। यह उस ने वादा करके कहा है।

3जब भी किसी बैल या भेड़ को कुर्बान किया जाए तो इमामों को उस का शाना, जबड़े और ओझड़ी मिलने का हक़ है। 4अपनी फ़सलों का पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन। 5क्योंकि रब ने तेरे तमाम क़बीलों में से लावी के क़बीले को ही मक्दिस में रब के नाम में खिदमत करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उन की और उन की औलाद की ज़िम्मादारी रहेगी।

6कुछ लावी मक्दिस के पास नहीं बल्कि इस्राईल के मुख्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उन में से कोई उस जगह आना चाहे जो रब मक्दिस के लिए चुनेगा 7तो वह वहाँ के खिदमत करने वाले लावियों की तरह मक्दिस में रब अपने खुदा के नाम में खिदमत कर सकता है। 8उसे कुर्बानियों में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना है, ख्वाह उसे खानदानी मिलकियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।



### जादूगरी मना है

9जब तू उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहने वाली क्रौमों के घिनौने दस्तूर न अपनाना। 10तेरे दरमियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को कुर्बानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुगून निकाले या जादूगरी करे। 11इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना, क्रिस्मत का हाल बताना या मुर्दों की रूहों से राबिता करना सख्त मना है। 12जो भी ऐसा करे वह रब की नज़र में क़ाबिल-ए-घिन है। इन ही मकरूह दस्तूरों की वजह से रब तेरा खुदा तेरे आगे से उन क्रौमों को निकाल देगा। 13इस लिए लाज़िम है कि तू रब अपने खुदा के सामने बेकुसूर रहे।

### नबी का वादा

14जिन क्रौमों को तू निकालने वाला है वह उन की सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी करते हैं। लेकिन रब तेरे खुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।

15रब तेरा खुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना। 16क्यूँकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तू ने खुद रब अपने खुदा से दरख्वास्त की, “न मैं मज़ीद रब अपने खुदा की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता हूँ, वर्ना मर जाऊँगा।” 17तब रब ने मुझ से कहा, “जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। 18आइन्दा मैं उन में से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अल्फ़ाज़ उस के मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा। 19जब वह नबी मेरे नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उस की सुन। जो नहीं सुनेगा उस से मैं खुद जवाब तलब करूँगा। 20लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख़ हो कर मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैं ने उसे बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ा-ए-मौत

देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर देना है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।”

21शायद तेरे ज़हन में सवाल उभर आए कि हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम वाकई रब की तरफ़ से है या नहीं। 22जवाब यह है कि अगर नबी रब के नाम में कुछ कहे और वह पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब की तरफ़ से नहीं है बल्कि उस ने गुस्ताख़ी करके बात की है। इस सूरत में उस से मत डरना।

### पनाह के शहर

**19** रब तेरा खुदा उस मुल्क में आबाद क्रौमों को तबाह करेगा जो वह तुझे दे रहा है। जब तू उन्हें भगा कर उन के शहरों और घरों में आबाद हो जाएगा 2-3तो पूरे मुल्क को तीन हिस्सों में तक्सीम कर। हर हिस्से में एक मर्कज़ी शहर मुकर्रर कर। उन तक पहुँचाने वाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना। इन शहरों में हर वह शख्स पनाह ले सकता है जिस के हाथ से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है। 4वह ऐसे शहर में जा कर इन्तिक्राम लेने वालों से मफ़ूज़ रहेगा। शर्त यह है कि उस ने न क़सदन और न दुश्मनी के बाइस किसी को मार दिया हो।

5मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट रहे हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते से निकल कर उस के साथी को लग जाए और वह मर जाए। ऐसा शख्स फ़रार हो कर ऐसे शहर में पनाह ले सकता है ताकि बचा रहे। 6इस लिए ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का फ़ासिला ज़यादा न हो। क्यूँकि जब इन्तिक्राम लेने वाला उस का ताक्कुब करेगा तो खतरा है कि वह तैश में उसे पकड़ कर मार डाले, अगरचे भागने वाला बेकुसूर है। जो कुछ उस ने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर हुआ। 7इस लिए लाज़िम है कि तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

<sup>8</sup>बाद में रब तेरा खुदा तेरी सरहदें मज़ीद बढ़ा देगा, क्योंकि यही वादा उस ने क्रसम खा कर तेरे बापदादा से किया है। अपने वादे के मुताबिक वह तुझे पूरा मुल्क देगा, <sup>9</sup>अलबत्ता शर्त यह है कि तू एहतियात से उन तमाम अहकाम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। दूसरे अल्फ़ाज़ में शर्त यह है कि तू रब अपने खुदा को प्यार करे और हमेशा उस की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे और नतीजतन रब का वादा पूरा हो जाए तो लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर अलग कर ले। <sup>10</sup>वर्ना तेरे मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है बेकुसूर लोगों को जान से मारा जाएगा और तू खुद ज़िम्मादार ठहरेगा।

<sup>11</sup>लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हम्ला करके उसे मार डाले। अगर क्रातिल पनाह के किसी शहर में भाग कर पनाह ले <sup>12</sup>तो उस के शहर के बुजुर्ग इत्तिला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इन्तिकाम लेने वाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ा-ए-मौत मिले। <sup>13</sup>उस पर रहम मत करना। लाज़िम है कि तू इस्राईल में से बेकुसूर की मौत का दाग मिटाए ताकि तू खुशहाल रहे।

### ज़मीनों की हदें

<sup>14</sup>जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हदें आगे पीछे न करना जो तेरे बापदादा ने मुकर्रर कीं।

### अदालत में गवाह

<sup>15</sup>तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर कुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है। वर्ना तू उसे कुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

<sup>16</sup>अगर जिस पर इल्ज़ाम लगाया गया है इन्कार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है <sup>17</sup>तो दोनों मक्दिस में रब के हुज़ूर आ कर खिदमत करने वाले इमामों और क्राज़ियों को अपना मुआमला पेश करें। <sup>18</sup>क्राज़ी इस का खूब खोज लगाएँ। अगर बात दुरुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोल कर अपने भाई पर गलत इल्ज़ाम लगाया है <sup>19</sup>तो उस के साथ वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह रहा था। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। <sup>20</sup>फिर तमाम बाक़ी लोग यह सुन कर डर जाएंगे और आइन्दा तेरे दरमियान ऐसी गलत हरकत करने की जुरअत नहीं करेंगे। <sup>21</sup>कुसूरवार पर रहम न करना। उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँओ के बदले पाँओ।

### जंग के उसूल

**20** जब तू जंग के लिए निकल कर देखता है कि दुश्मन तादाद में ज़्यादा हैं और उन के पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब तेरा खुदा जो तुझे मिस्र से निकाल लाया अब भी तेरे साथ है। <sup>2</sup>जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए और फ़ौज से मुखातिब हो कर <sup>3</sup>कहे, “सुन ऐ इस्राईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे हो। उन के सबब से परेशान न हो। उन से न खौफ़ खाओ, न घबराओ, <sup>4</sup>क्योंकि रब तुम्हारा खुदा खुद तुम्हारे साथ जा कर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़त्ह बख़्शेगा।”

<sup>5</sup>फिर निगहबान फ़ौज से मुखातिब हों, “क्या यहाँ कोई है जिस ने हाल में अपना नया घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मख्सूस करने का मौक़ा न मिला? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को मख्सूस करके उस में बसने लगे। <sup>6</sup>क्या कोई है जिस ने अंगूर का बाग़ लगा कर इस वक़्त उस की पहली

फ़सल के इन्तिज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और बाग़ का फ़ाइदा उठाए। 7क्या कोई है जिस की मंगनी हुई है और जो इस वक्रत शादी के इन्तिज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर से शादी करे।”

8निगहबान कहें, “क्या कोई खौफ़ज़दा या परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।” 9इस के बाद फ़ौजियों पर अप्रसर मुकरर किए जाएँ।

10किसी शहर पर हम्ला करने से पहले उस के बाशिन्दों को हथियार डाल देने का मौक़ा देना। 11अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी खिदमत करें। 12लेकिन अगर वह हथियार डालने से इन्कार करें और जंग छिड़ जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13जब रब तेरा खुदा तुझे शहर पर फ़तह देगा तो उस के तमाम मर्दों को हलाक कर देना। 14तू तमाम माल-ए-गनीमत औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत रख सकता है। दुश्मन की जो चीज़ें रब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन सब को तू इस्तेमाल कर सकता है। 15यूँ उन शहरों से निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाक़े हैं जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उन के तमाम जानदारों को हलाक कर देना। 17उन्हें रब के सपुर्द करके मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इस में हित्ती, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्जी, हिक्वी और यबूसी शामिल हैं। 18अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें रब तुम्हारे खुदा का गुनाह करने पर उकसाएँगे। जो धिनीनी हरकतें वह अपने देवताओं की पूजा करते वक्रत करते हैं उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

19शहर का मुहासरा करते वक्रत इर्दगिर्द के फलदार दरख्तों को काट कर तबाह न कर देना ख्वाह बड़ी देर भी हो जाए, वर्ना तू उन का फल नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या दरख्त तेरे दुश्मन हैं जिन का मुहासरा करना है? हरगिज़ नहीं! 20उन दरख्तों की और बात है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काट कर मुहासरे के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक शहर शिकस्त न खाए।

### नामालूम क़त्ल का कफ़ारा

**21** जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम न हो कि किस ने उसे क़त्ल किया है 2तो पहले इर्दगिर्द के शहरों के बुज़ुर्ग और क़ाज़ी आ कर पता करें कि कौन सा शहर लाश के ज़यादा क़रीब है। 3फिर उस शहर के बुज़ुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। 4वह उसे एक ऐसी वादी में ले जाएँ जिस में न कभी हल चलाया गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे। वहीं बुज़ुर्ग जवान गाय की गर्दन तोड़ डालें।

5फिर लावी के क़बीले के इमाम क़रीब आएँ। क्योंकि रब तुम्हारे खुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि वह खिदमत करें, रब के नाम से बरकत दें और तमाम झगड़ों और हमलों का फ़ैसला करें। 6उन के देखते देखते शहर के बुज़ुर्ग अपने हाथ गाय की लाश के ऊपर धो लें। 7साथ साथ वह कहें, “हम ने इस शख्स को क़त्ल नहीं किया, न हम ने देखा कि किस ने यह किया। 8ऐ रब, अपनी क़ौम इस्राईल का यह कफ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तू ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इस्राईल को इस बेकुसूर के क़त्ल का कुसूरवार न ठहरा।” तब मक्तूल का कफ़ारा दिया जाएगा।

१० तू ऐसे बेकुसूर शख्स के क्रल्ल का दाग अपने दरमियान से मिटा देगा। क्योंकि तू ने वही कुछ किया होगा जो रब की नज़र में दुरुस्त है।

### जंगी क़ैदी औरत से शादी

१० हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग करे और रब तुम्हारा खुदा तुझे फ़ल्लह बख़्शे। जंगी क़ैदियों को जमा करते वक़्त ११ तुझे उन में से एक ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिस के साथ तेरा दिल लग जाता है। तू उस से शादी कर सकता है। १२ उसे अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर के बालों को मुंडवाए, अपने नाख़ून तराशे १३ और अपने वह कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे क़ैद किया गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदैनु के लिए मातम करे। फिर तू उस के पास जा कर उस के साथ शादी कर सकता है।

१४ अगर वह तुझे किसी वक़्त पसन्द न आए तो उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उस का जी चाहे। तुझे उसे बेचने या उस से लौंडी का सा सुलूक करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि तू ने उसे मज्बूर करके उस से शादी की है।

### पहलौठे के हुक़ूक़

१५ हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों। एक को वह प्यार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उस का बेटा सब से पहले पैदा हुआ। १६ जब बाप अपनी मिलकियत वसियत में तक्सीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सब से बड़े बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुन्तक़िल करने की इजाज़त नहीं जिसे वह प्यार करता है। १७ उसे तस्लीम करना है कि उस बीवी का बेटा सब से बड़ा है, जिस से वह मुहब्बत नहीं करता। नतीजतन उसे उस बेटे को दूसरे बेटों की निस्बत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्योंकि

वह अपने बाप की ताक़त का पहला इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

### सरकश बेटा

१८ हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म और सरकश हो। वह अपने वालिदैनु की इताअत नहीं करता और उन के तम्बीह करने और सज़ा देने पर भी उन की नहीं सुनता। १९ इस सूरत में वालिदैनु उसे पकड़ कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुजुर्ग जमा होते हैं। २० वह बुजुर्गों से कहें, "हमारा बेटा हटधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं करता बल्कि अय्याश और शराबी है।" २१ यह सुन कर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इस्राईल यह सुन कर डर जाएगा।

### सज़ा-ए-मौत पाने वाले को

#### उसी दिन दफ़नाना है

२२ जब तू किसी को सज़ा-ए-मौत दे कर उस की लाश किसी लकड़ी या दरख़त से लटकाता है २३ तो उसे अगली सुबह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्योंकि जिसे भी दरख़त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है। अगर उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को नापाक कर देगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

### मदद करने के लिए तय्यार रहना

**22** अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल या भेड़-बकरी भटकी हुई नज़र आए तो उसे नज़रअन्दाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस ले जाना। २ अगर मालिक का घर करीब न हो या तुझे मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने घर ला कर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक कि मालिक उसे ढूँडने न आए। फिर जानवर को उसे वापस कर देना।

अधी कुछ कर अगर तेरे हमवतन भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उस का गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए। उसे नज़रअन्दाज़ न करना।

4 अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रअन्दाज़ न करना। जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

### कुदरती इन्तिज़ाम के तहत रहना

5 औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना है। जो ऐसा करता है उस से रब तेरे ख़ुदा को घिन आती है।

6 अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में या ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिन्दा अपने बच्चों या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न पकड़ना। 7 तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन माँ को छोड़ देना ताकि तू खुशहाल और देर तक जीता रहे।

8 नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों तरफ़ दीवार बनाना। वर्ना तू उस शख्स की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।

9 अपने अंगूर के बाग़ में दो किस्म के बीज न बोना। वर्ना सब कुछ मक्खिंदस के लिए मख्सूस-ओ-मुक्दस होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुम ने अंगूर के इलावा लगाई बल्कि अंगूर भी।

10 बैल और गधे को जोड़ कर हल न चलाना।

11 ऐसे कपड़े न पहनना जिन में बनते वक़्त ऊन और कतान मिलाए गए हैं।

12 अपनी चादर के चारों कोनों पर फुन्दने लगाना।

### इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त

13 अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को पसन्द न करे 14 और फिर उस की बदनामी करके कहे, "इस औरत से शादी करने के बाद मुझे पता चला कि वह कुंवारी नहीं है" 15 तो जवाब में बीवी के वालिदैन शहर के दरवाज़े पर जमा होने वाले बुजुर्गों के पास सबूत<sup>a</sup> ले आएँ कि बेटी शादी से पहले कुंवारी थी। 16 बीवी का बाप बुजुर्गों से कहे, "मैं ने अपनी बेटी की शादी इस आदमी से की है, लेकिन यह उस से नफ़रत करता है। 17 अब इस ने उस की बदनामी करके कहा है, 'मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटी कुंवारी नहीं है।' लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी बेटी कुंवारी थी।" फिर वालिदैन शहर के बुजुर्गों को मज़क़ूरा कपड़ा दिखाएँ।

18 तब बुजुर्ग उस आदमी को पकड़ कर सज़ा दें, 19 क्योंकि उस ने एक इस्त्राईली कुंवारी की बदनामी की है। इस के इलावा उसे जुमाने के तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100 सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर के फ़राइज़ अदा करता रहे। वह उम्र भर उसे तलाक़ नहीं दे सकेगा।

20 लेकिन अगर आदमी की बात दुरुस्त निकले और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले कुंवारी थी 21 तो उसे बाप के घर लाया जाए। वहाँ शहर के आदमी उसे संगसार कर दें। क्योंकि अपने बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से उस ने इस्त्राईल में एक अहमक़ाना और बेदीन हरकत की है। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 22 अगर कोई आदमी किसी की बीवी के साथ ज़िना करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। यूँ तू इस्त्राईल से बुराई मिटा देगा।

23 अगर आबादी में किसी मर्द की मुलाक़ात किसी ऐसी कुंवारी से हो जिस की किसी और

<sup>a</sup>यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

के साथ मंगनी हुई है और वह उस के साथ हमबिसतर हो जाए <sup>24</sup>तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के पास ला कर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न पुकारा अगरचे उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उस ने किसी और की मंगेतर की इस्मतदरी की है। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

<sup>25</sup>लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी और की मंगेतर की इस्मतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ा-ए-मौत दी जाए। <sup>26</sup>लड़की को कोई सज़ा न देना, क्योंकि उस ने कुछ नहीं किया जो मौत के लाइक्र हो। ज़ियादती करने वाले की हरकत उस शख्स के बराबर है जिस ने किसी पर हम्ला करके उसे क़त्ल कर दिया है। <sup>27</sup>चूँकि उस ने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते, इस लिए अगरचे लड़की ने मदद के लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

<sup>28</sup>हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की इस्मतदरी करे जिस की मंगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें पकड़ा जाए <sup>29</sup>तो वह लड़की के बाप को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी करे, क्योंकि उस ने उस की इस्मतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

<sup>30</sup>अपने बाप की बीवी से शादी करना मना है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

### मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शराइत

**23** जब इस्राईली रब के मक्दिसे के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से खोजा बन गया है। <sup>2</sup>इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजाइज़ ताल्लुकात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की

औलाद भी दसवीं पुश्त तक उस में नहीं आ सकती।

<sup>3</sup>कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन क्रौमों की औलाद दसवीं पुश्त तक भी इस जमाअत में हाज़िर नहीं हो सकती, <sup>4</sup>क्योंकि जब तुम मिस्र से निकल आए तो वह रोटी और पानी ले कर तुम से मिलने न आए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने ने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जा कर बलआम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे। <sup>5</sup>लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने बलआम की न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी। क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तुझ से प्यार करता है। <sup>6</sup>उम्र भर कुछ न करना जिस से इन क्रौमों की सलामती और खुशहाली बढ़ जाए।

<sup>7</sup>लेकिन अदोमियों को मकरूह न समझना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिस्रियों को भी मकरूह न समझना, क्योंकि तू उन के मुल्क में परदेसी मेहमान था। <sup>8</sup>उन की तीसरी नस्ल के लोग रब के मुक़द्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

### ख़ैमागाह में नापाकी

<sup>9</sup>अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लश्करगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना। <sup>10</sup>मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतिलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लश्करगाह के बाहर जा कर शाम तक वहाँ ठहरे। <sup>11</sup>दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर लश्करगाह में वापस आ सकता है।

<sup>12</sup>अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लश्करगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर। <sup>13</sup>जब किसी को हाजत के लिए बैठना हो तो वह इस के लिए गढ़ा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इस लिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

<sup>14</sup>रब तेरा ख़ुदा तेरी लश्करगाह-में तेरे दरमियान ही घूमता फिरता है ताकि तू महफ़ूज़

रहे और दुश्मन तेरे सामने शिकस्त खाए। इस लिए लाज़िम है कि तेरी लश्करगाह उस के लिए मख्सूस-ओ-मुकद्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देख कर तुझ से दूर हो जाए।

### फ़रार हुए गुलामों की मदद करना

<sup>15</sup>अगर कोई गुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना। <sup>16</sup>वह तेरे साथ और तेरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसन्द आए। उसे न दबाना।

### मन्दिर में इस्मतफ़रोशी मना है

<sup>17</sup>किसी देवता की खिदमत में इस्मत-फ़रोशी करना हर इस्त्राईली औरत और मर्द के लिए मना है। <sup>18</sup>मन्नत मानते वक्रत न कस्बी का अज़्र, न कुत्ते के पैसे<sup>a</sup> रब के मक्ब्रिस में लाना, क्योंकि रब तेरे ख़ुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

### अपने हमवतनों से सूद न लेना

<sup>19</sup>अगर कोई इस्त्राईली भाई तुझ से कर्ज़ ले तो उस से सूद न लेना, ख़्वाह तू ने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो। <sup>20</sup>अपने इस्त्राईली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ़ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में रहेगा तो रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

### अपनी मन्नत पूरी करना

<sup>21</sup>जब तू रब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा ख़ुदा यक़ीनन तुझ से इस का मुतालबा करेगा। अगर तू उसे पूरा न करे तो कुसूरवार

ठहरेगा। <sup>22</sup>अगर तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो कुसूरवार नहीं ठहरेगा, <sup>23</sup>लेकिन अगर तू अपनी दिली ख़ुशी से रब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूरत में उसे पूरा कर।

### दूसरे के बाग़ में से गुज़रने का रवय्या

<sup>24</sup>किसी हमवतन के अंगूर के बाग़ में से गुज़रते वक्रत तुझे जितना जी चाहे उस के अंगूर खाने की इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बर्तन में फल जमा न करना। <sup>25</sup>इसी तरह किसी हमवतन के अनाज के खेत में से गुज़रते वक्रत तुझे अपने हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त है। लेकिन दरान्ती इस्तेमाल न करना।

### तलाक़ और दुबारा शादी

**24** हो सकता है कोई आदमी किसी औरत से शादी करे लेकिन बाद में उसे पसन्द न करे, क्योंकि उसे बीवी के बारे में किसी शर्मनाक बात का पता चल गया है। वह तलाक़नामा लिख कर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। <sup>2</sup>इस के बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द से हो जाती है, <sup>3</sup>और वह भी बाद में उसे पसन्द नहीं करता। वह भी तलाक़नामा लिख कर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। ख़्वाह दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या शौहर मर जाए, <sup>4</sup>औरत के पहले शौहर को उस से दुबारा शादी करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि वह औरत उस के लिए नापाक है। ऐसी हरकत रब की नज़र में क़ाबिल-ए-घिन है। उस मुल्क को यूँ गुनाहआलूदा न करना जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

<sup>a</sup>यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुत्ते के पैसे' से क्या मुराद है। ग़ालिबन इस के पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

### मज़ीद हिदायात

5 अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की हो तो तू उसे भर्ती करके जंग करने के लिए नहीं भेज सकता। तू उसे कोई भी ऐसी ज़िम्मादारी नहीं दे सकता, जिस से वह घर से दूर रहने पर मजबूर हो जाए। एक साल तक वह ऐसी ज़िम्मादारियों से बरी रहे ताकि घर में रह कर अपनी बीवी को खुश कर सके।

6 अगर कोई तुझे से उधार ले तो ज़मानत के तौर पर उस से न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी चक्की का पाट लेना, क्योंकि ऐसा करने से तू उस की जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिस से उस का गुज़ारा होता है।

7 अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिस ने अपने हमवतन को अगावा करके गुलाम बना लिया या बेच दिया है तो उसे सज़ा-ए-मौत देना है। यूँ तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

8 अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग जाए तो बड़ी एहतियात से लावी के क़बीले के इमामों की तमाम हिदायात पर अमल करना। जो भी हुक्म मैं ने उन्हें दिया उसे पूरा करना। 9 याद कर कि रब तेरे ख़ुदा ने मरियम के साथ क्या किया जब तुम मिस्र से निकल कर सफ़र कर रहे थे।

### ग़रीबों के हुक्क़

10 अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उस के घर में न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़ मिले 11 बल्कि बाहर ठहर कर इन्तिज़ार कर कि वह ख़ुद घर से ज़मानत की चीज़ निकाल कर तुझे दे। 12 अगर वह इतना ज़रूरतमन्द हो कि सिर्फ़ अपनी चादर दे सके तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न रहे। 13 उसे सूरज डूबने तक वापस करना ताकि क़र्ज़दार उस में लिपट कर सो सके। फिर वह तुझे बरकत देगा और रब तेरा ख़ुदा तेरा यह क़दम रास्त करार देगा।

14 ज़रूरतमन्द मज़दूर से ग़लत फ़ाइदा न उठाना, चाहे वह इस्राईली हो या परदेसी। 15 उसे रोज़ाना सूरज डूबने से पहले पहले उस की मज़दूरी दे देना, क्योंकि इस से उस का गुज़ारा होता है। कहीं वह रब के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू कुसूरवार ठहरे।

16 वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के सबब से सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उन के वालिदैन के जराइम के सबब से। अगर किसी को सज़ा-ए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उस ने ख़ुद किया है।

17 परदेसियों और यतीमों के हुक्क़ काइम रखना। उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर न लेना। 18 याद रख कि तू भी मिस्र में गुलाम था और कि रब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या दे कर तुझे वहाँ से छुड़ाया। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

19 अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला भूल कर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए वापस न जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए वहीं छोड़ देना ताकि रब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बरकत दे। 20 जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख़्तों को मार मार कर एक ही बार उन में से फल उतार। इस के बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 21 इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार बाग़ में से गुज़रना। इस के बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 22 याद रख कि तू ख़ुद मिस्र में गुलाम था। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

### कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

**25** अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ झगड़ा ख़ुद निपटा न सकें तो वह अपना मुआमला अदालत में पेश करें। क़ाज़ी फ़ैसला करे कि कौन बेकुसूर है और कौन मुजरिम। 2 अगर मुजरिम को कोड़े लगाने



की सज़ा देनी है तो उसे क्राज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लाइक है।<sup>3</sup>लेकिन उस को ज़्यादा से ज़्यादा 40 कोड़े लगाने हैं, वरना तेरे इस्आईली भाई की सर-ए-आम बेइज़ज़ती हो जाएगी।

### बैल का मुँह न बांधना

<sup>4</sup>जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उस का मुँह बांध कर न रखना।

### मरहूम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

<sup>5</sup>अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उस का सगा भाई साथ रहे तो उस का फ़र्ज़ है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के खानदान से हट कर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने देवर से।<sup>6</sup>पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यूँ उस का नाम क्राइम रहेगा।

<sup>7</sup>लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होने वाले बुजुर्गों के पास जाए और उन से कहे, “मेरा देवर मुझ से शादी करने से इन्कार करता है। वह अपना फ़र्ज़ अदा करने को तय्यार नहीं कि अपने भाई का नाम क्राइम रखे।”<sup>8</sup>फिर शहर के बुजुर्ग देवर को बुला कर उसे समझाएँ। अगर वह इस के बावजूद भी उस से शादी करने से इन्कार करे<sup>9</sup>तो उस की भाबी बुजुर्गों की मौजूदगी में उस के पास जा कर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उस के मुँह पर थूक कर कहे, “उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नस्ल क्राइम रखने को तय्यार नहीं।”<sup>10</sup>आइन्दा इस्आईल में देवर की नस्ल “नंगे पाँओ वाले की नस्ल” कहलाएगी।

### झगड़े में नाज़ेबा हरकतें

<sup>11</sup>अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की खातिर मुखालिफ़ के अजु-ए-तनासुल को पकड़ ले<sup>12</sup>तो लाज़िम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

### धोका न देना

<sup>13</sup>तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट रख, और धोका देने के लिए हल्के बाट साथ न रखना।<sup>14</sup>इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश करने का सहीह बर्तन रख, और धोका देने के लिए छोटा बर्तन साथ न रखना।<sup>15</sup>सहीह वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बर्तन इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब तेरा खुदा तुझे देगा।<sup>16</sup>क्यूँकि उसे हर धोकेबाज़ से घिन है।

### अमालीक्रियों को सज़ा देना

<sup>17</sup>याद रहे कि अमालीक्रियों ने तुझ से क्या कुछ किया जब तुम मिस्र से निकल कर सफ़र कर रहे थे।<sup>18</sup>जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हम्ला करके पीछे पीछे चलने वाले तमाम कमज़ोरों को जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते थे।<sup>19</sup>चुनौचे जब रब तेरा खुदा तुझे इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक्रियों को यूँ हलाक कर कि दुनिया में उन का नाम-ओ-निशान न रहे। यह बात मत भूलना।

### ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

**26** जब तू उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा<sup>2</sup>तो जो भी फ़सल तू

काटेगा उस के पहले फल में से कुछ टोकरे में रख कर उस जगह ले जा जो रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा।<sup>3</sup> वहाँ खिदमत करने वाले इमाम से कह, “आज मैं रब अपने खुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस मुल्क में पहुँच गया हूँ जिस का हमें देने का वादा रब ने कसम खा कर हमारे बापदादा से किया था।”

<sup>4</sup> तब इमाम तेरा टोकरा ले कर उसे रब तेरे खुदा की कुर्बानगाह के सामने रख दे।<sup>5</sup> फिर रब अपने खुदा के हुज़ूर कह, “मेरा बाप आवारा फिरने वाला अरामी था जो अपने लोगों को ले कर मिस्र में आबाद हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उन की तादाद कम थी, लेकिन होते होते वह बड़ी और ताक़तवर क्रौम बन गए।<sup>6</sup> लेकिन मिस्रियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक किया और हमें दबा कर सख़्त गुलामी में फंसा दिया।<sup>7</sup> फिर हम ने चिल्ला कर रब अपने बापदादा के खुदा से फ़र्याद की, और रब ने हमारी सुनी। उस ने हमारा दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी<sup>8</sup> और बड़े इख़्तियार और कुदरत का इज़हार करके हमें मिस्र से निकाल लाया। उस वक़्त उस ने मिस्रियों में दहशत फैला कर बड़े मोजिज़े दिखाए।<sup>9</sup> वह हमें यहाँ ले आया और यह मुल्क दिया जिस में दूध और शहद की कस्रत है।<sup>10</sup> ऐ रब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का पहला फल पेश करता हूँ जो तू ने हमें बख़शी है।”

अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने खुदा के सामने रख कर उसे सिज्दा करना।<sup>11</sup> खुशी मनाना कि रब मेरे खुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी चीज़ों से नवाज़ा है। इस खुशी में अपने दरमियान रहने वाले लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

### फ़सल का ज़रूरतमन्दों के लिए हिस्सा

<sup>12</sup> हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों का दसवाँ हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना ताकि वह तेरे शहरों में

खाना खा कर सेर हो जाएँ।<sup>13</sup> फिर रब अपने खुदा से कह, “मैं ने वैसा ही किया है जैसा तू ने मुझे हुक्म दिया। मैं ने अपने घर से तेरे लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्सा निकाल कर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को दिया है। मैं ने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन मुताबिक़ किया है और कुछ नहीं भूला।<sup>14</sup> मातम करते वक़्त मैं ने इस मख़सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्से से कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठा कर घर से बाहर लाते वक़्त नापाक नहीं था। मैं ने इस में से मुदों को भी कुछ पेश नहीं किया। मैं ने रब अपने खुदा की इताअत करके वह सब कुछ किया है जो तू ने मुझे करने को फ़रमाया था।<sup>15</sup> चुनौचे आसमान पर अपने मख़द्दिस से निगाह करके अपनी क्रौम इस्त्राईल को बरकत दे। उस मुल्क को भी बरकत दे जिस का वादा तू ने कसम खा कर हमारे बापदादा से किया और जो तू ने हमें बख़श भी दिया है, उस मुल्क को जिस में दूध और शहद की कस्रत है।”

### तुम रब की क्रौम हो

<sup>16</sup> आज रब तेरा खुदा फ़रमाता है कि इन अहक़ाम और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिल-ओ-जान से और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर।

<sup>17</sup> आज तू ने एलान किया है, “रब मेरा खुदा है। मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उस के अहक़ाम के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।”<sup>18</sup> और आज रब ने एलान किया है, “तू मेरी क्रौम और मेरी अपनी मिलकियत है जिस तरह मैं ने तुझ से वादा किया है। अब मेरे तमाम अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार।<sup>19</sup> जितनी भी क्रौम मैं ने ख़ल्क की हैं उन सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और तुझे तारीफ़, शोहरत और इज़ज़त अता करूँगा। तू रब अपने खुदा के लिए मख़सूस-ओ-मुक़द्दस क्रौम होगा जिस तरह मैं ने वादा किया है।”

**ऐबाल पहाड़ पर कुर्बानगाह बनाना है**

**27** फिर मूसा ने बुजुर्गों से मिल कर क्रौम से कहा, "तमाम हिदायात के ताबे रहो जो मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ।<sup>2</sup> जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क में दाखिल होगे जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े पत्थर खड़े करके उन पर सफेदी कर।<sup>3</sup> उन पर लफ़ज़-ब-लफ़ज़ पूरी शरीअत लिख। दरया को पार करने के बाद यही कुछ कर ताकि तू उस मुल्क में दाखिल हो जो रब तेरा खुदा तुझे देगा और जिस में दूध और शहद की कसत है। क्योंकि रब तेरे बापदादा के खुदा ने यह देने का तुझ से वादा किया है।<sup>4</sup> चुनोंचे यर्दन को पार करके पत्थरों को ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफेदी कर।

<sup>5</sup> वहाँ रब अपने खुदा के लिए कुर्बानगाह बनाना। जो पत्थर तू उस के लिए इस्तेमाल करे उन्हें लोहे के किसी औज़ार से न तराशना।<sup>6</sup> सिर्फ़ सालिम पत्थर इस्तेमाल कर। कुर्बानगाह पर रब अपने खुदा को भस्म होने वाली कुर्बानियाँ पेश कर।<sup>7</sup> सलामती की कुर्बानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब अपने खुदा के हुज़ूर खा कर खुशी मना।<sup>8</sup> वहाँ खड़े किए गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अल्फ़ाज़ साफ़ साफ़ लिखे जाएँ।"

**ऐबाल पहाड़ पर से लानत**

<sup>9</sup> फिर मूसा ने लावी के क़बीले के इमामों से मिल कर तमाम इस्राईलियों से कहा, "ऐ इस्राईल, ख़ामोशी से सुन। अब तू रब अपने खुदा की क्रौम बन गया है,<sup>10</sup> इस लिए उस का फ़रमाँबरदार रह और उस के उन अहक़ाम पर अमल कर जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।"

<sup>11</sup> उसी दिन मूसा ने इस्राईलियों को हुक्म दे कर कहा,<sup>12</sup> "दरया-ए-यर्दन को पार करने के बाद शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार, यूसुफ़ और बिनयमीन के क़बीले गरिज़ीम पहाड़ पर खड़े हो जाएँ। वहाँ वह बरकत के अल्फ़ाज़ बोलें।<sup>13</sup> बाक़ी क़बीले यानी रूबिन, जद,

आशर, ज़बूलून, दान और नफ़्ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े हो कर लानत के अल्फ़ाज़ बोलें।

<sup>14</sup> फिर लावी तमाम लोगों से मुखातिब हो कर ऊँची आवाज़ से कहें,

<sup>15</sup> 'उस पर लानत जो बुत तराश कर या ढाल कर चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के हाथों से बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।'

जवाब में सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>16</sup> फिर लावी कहें, 'उस पर लानत जो अपने बाप या माँ की तहक़ीर करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>17</sup> 'उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की हूदूद आगे पीछे करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>18</sup> 'उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई करके उसे ग़लत रास्ते पर ले जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>19</sup> 'उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं के हुकूक़ क़ाइम न रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>20</sup> 'उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हो जाए, क्योंकि वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>21</sup> 'उस पर लानत जो जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>22</sup> 'उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>23</sup> 'उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>24</sup> 'उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को क़त्ल कर दे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>25</sup> 'उस पर लानत जो पैसे ले कर किसी बेकूसूर शख्स को क़त्ल करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

<sup>26</sup> 'उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें क़ाइम न रखे, न इन पर अमल करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

### फ़रमाँबरदारी की बरकतें

**28** रब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की तमाम क़ौमों पर सरफ़राज़ करेगा। शर्त यह है कि तू उस की सुने और एहतियात से उस के उन तमाम अहक़ाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। <sup>2</sup>रब अपने ख़ुदा का फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत हासिल होगी। <sup>3</sup>रब तुझे शहर और देहात में बरकत देगा। <sup>4</sup>तेरी औलाद फले फूलेंगी, तेरी अच्छी-खासी फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चे तरक्की करेंगे। <sup>5</sup>तेरा टोकरा फल से भरा रहेगा, और आटा गूँधने का तेरा बर्तन आटे से ख़ाली नहीं होगा। <sup>6</sup>रब तुझे घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त बरकत देगा।

<sup>7</sup>जब तेरे दुश्मन तुझ पर हम्ला करेंगे तो वह रब की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिल कर तुझ पर हम्ला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुन्तशिर कर देगा।

<sup>8</sup>अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा। अनाज की कस्रत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे। रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो वह तुझे देने वाला है। <sup>9</sup>रब अपनी क़सम के मुताबिक़ तुझे अपनी मख़सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम बनाएगा अगर तू उस के अहक़ाम पर अमल करे और उस की राहों पर चले। <sup>10</sup>फिर दुनिया की तमाम क़ौमों तुझ से ख़ौफ़ खाएँगी, क्योंकि वह देखेंगी कि तू रब की क़ौम है और उस के नाम से कहलाता है।

<sup>11</sup>रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा और तुझे कस्रत की फ़सलें देगा।

यूँ वह तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिस का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया। <sup>12</sup>रब आसमान के ख़ज़ानों को खोल कर वक़्त पर तेरी ज़मीन पर बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत देगा। तू बहुत सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन किसी का भी क़र्ज़दार नहीं होगा। <sup>13</sup>रब तुझे क़ौमों की दुम नहीं बल्कि उन का सर बनाएगा। तू तरक्की करता जाएगा और ज़वाल का शिकार नहीं होगा। लेकिन शर्त यह है कि तू रब अपने ख़ुदा के वह अहक़ाम मान कर उन पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। <sup>14</sup>जो कुछ भी मैं ने तुझे करने को कहा है उस से किसी तरह भी हट कर ज़िन्दगी न गुज़ारना। न दीगर माबूदों की पैरवी करना, न उन की खिदमत करना।

### नाफ़रमानी की लानतें

<sup>15</sup>लेकिन अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने और उस के उन तमाम अहक़ाम पर अमल न करे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत तुझ पर आएगी। <sup>16</sup>शहर और देहात में तुझ पर लानत होगी। <sup>17</sup>तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे बर्तन पर लानत होगी। <sup>18</sup>तेरी औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत होगी। <sup>19</sup>घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त तुझ पर लानत होगी। <sup>20</sup>अगर तू ग़लत काम करके रब को छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर लानतें, परेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा। तब तेरा जल्दी से सत्यानास होगा, और तू हलाक हो जाएगा।

<sup>21</sup>रब तुझ में वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिन के सबब से तुझ में से कोई उस मुल्क में ज़िन्दा नहीं रहेगा जिस पर तू अभी क़ब्ज़ा करने वाला है। <sup>22</sup>रब तुझे मोहलक बीमारियों, बुखार और सूजन से मारेगा। झुलसाने वाली गर्मी, काल, पतरोग और फफूँदी तेरी फ़सलें ख़त्म करेगी। ऐसी मुसीबतों के बाइस तू तबाह

हो जाएगा। <sup>23</sup>तेरे ऊपर आसमान पीतल जैसा सख्त होगा जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिन्द होगी। <sup>24</sup>बारिश की जगह रब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क पर छा कर तुझे बर्बाद कर देगी।

<sup>25</sup>जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिल कर उन की तरफ़ बढ़ेगा तो भी उन से भाग कर चारों तरफ़ मुन्तशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। <sup>26</sup>परिन्दे और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएंगे, और उन्हें भगाने वाला कोई नहीं होगा। <sup>27</sup>रब तुझे उन ही फोड़ों से मारेगा जो मिस्त्रियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़ फैलेंगे जिन का इलाज नहीं है। <sup>28</sup>तू पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब तुझे अंधेपन और ज़हनी अब्तरी में मुब्तला कर देगा। <sup>29</sup>दोपहर के वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोल कर फिरेगा। जो कुछ भी तू करे उस में नाकाम रहेगा। रोज़-ब-रोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचाने वाला कोई नहीं होगा।

<sup>30</sup>तेरी मंगनी किसी औरत से होगी तो कोई और आ कर उस की इस्मतदारी करेगा। तू अपने लिए घर बनाएगा लेकिन उस में नहीं रहेगा। तू अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उस का फल नहीं खाएगा। <sup>31</sup>तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उस का गोशत नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझ से छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ाने वाला कोई नहीं होगा। <sup>32</sup>तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़-ब-रोज़ तू अपने बच्चों के इन्तिज़ार में उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी आँखें धुन्दला जाएँगी।

<sup>33</sup>एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी मेहनत-ओ-मशक्क़त की

कमाई ले जाएगी। तुझे उम्र भर जुल्म और दबाओ बर्दाशत करना पड़ेगा।

<sup>34</sup>जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उन से तू पागल हो जाएगा। <sup>35</sup>रब तुझे तक्लीफ़दिह और लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से ले कर चाँदी तक पूरे जिस्म पर फैल कर तेरे घुटनों और टाँगों को मुतअस्सिर करेंगे।

<sup>36</sup>रब तुझे और तेरे मुकर्रर किए हुए बादशाह को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिस से न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की खिदमत करेगा। <sup>37</sup>जिस जिस क़ौम में रब तुझे हॉक देगा वहाँ तुझे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे। तू उन के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल होगा।

<sup>38</sup>तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावुजूद कम ही फ़सल काटेगा, क्योंकि टिड्डे उसे खा जाएंगे। <sup>39</sup>तू अंगूर के बाग़ लगा कर उन पर ख़ूब मेहनत करेगा लेकिन न उन के अंगूर तोड़ेगा, न उन की मै पिएगा, क्योंकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे। <sup>40</sup>गो तेरे पूरे मुल्क में ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी तू उन का तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्योंकि ज़ैतून ख़राब हो कर ज़मीन पर गिर जाएँगे।

<sup>41</sup>तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उन से महरूम हो जाएगा। क्योंकि उन्हें गिरिफ़्तार करके किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा। <sup>42</sup>टिड्डियों के गोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों और फ़सलों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। <sup>43</sup>तेरे दरमियान रहने वाला परदेसी तुझ से बढ़ कर तरक्की करता जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा। <sup>44</sup>उस के पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे जबकि तेरे पास उसे उधार देने को कुछ नहीं होगा। आखिर में वह सर और तू दुम होगा।

<sup>45</sup>यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक्कुब

करती रहेंगी, क्योंकि तू ने रब अपने खुदा की न सुनी और उस के अह्काम पर अमल न किया। 46तू यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के लिए एक मोजिज़ाना और इब्रतअंगेज़ इलाही निशान रहेंगी।

47चूँकि तू ने दिली खुशी से उस वक़्त रब अपने खुदा की खिदमत न की जब तेरे पास सब कुछ था 48इस लिए तू उन दुश्मनों की खिदमत करेगा जिन्हें रब तेरे खिलाफ़ भेजेगा। तू भूका, प्यासा, नंगा और हर चीज़ का हाजतमन्द होगा, और रब तेरी गर्दन पर लोहे का जूआ रख कर तुझे मुकम्मल तबाही तक ले जाएगा।

49रब तेरे खिलाफ़ एक क्रौम खड़ी करेगा जो दूर से बल्कि दुनिया की इन्तिहा से आ कर उकाब की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान बोलेंगी जिस से तू वाकिफ़ नहीं होगा। 50वह सख्त क्रौम होगी जो न बुजुर्गों का लिहाज़ करेगी और न बच्चों पर रहम करेगी। 51वह तेरे मवेशी और फ़सलें खा जाएगी और तू भूके मर जाएगा। तू हलाक हो जाएगा, क्योंकि तेरे लिए कुछ नहीं बचेगा, न अनाज, न मै, न तेल, न गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के बच्चे। 52दुश्मन तेरे मुल्क के तमाम शहरों का मुहासरा करेगा। आखिरकार जिन ऊँची और मज़बूत फ़सीलों पर तू एतिमाद करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा खुदा तुझे देने वाला है।

53जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा तो तू उन में इतना शदीद भूका हो जाएगा कि अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे खुदा ने तुझे दिए हैं। 54-55मुहासरे के दौरान तुम में से सब से शरीफ़ और शाइस्ता आदमी भी अपने बच्चे को ज़बह करके खाएगा, क्योंकि उस के पास कोई और खुराक नहीं होगी। उस की हालत इतनी बुरी होगी कि वह उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाक़ी बच्चों के साथ तक्रसीम करने के लिए तय्यार नहीं होगा। 56-57तुम में से

सब से शरीफ़ और शाइस्ता औरत भी ऐसा ही करेगी, अगरचे पहले वह इतनी नाज़ुक थी कि फ़र्श को अपने तल्चे से छूने की जुरअत नहीं करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी शदीद भूक होगी कि जब उस के बच्चा पैदा होगा तो वह छुप छुप कर उसे खाएगी। न सिर्फ़ यह बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ खारिज हुई आलाइश भी खाएगी और उसे अपने शौहर या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने के लिए तय्यार नहीं होगी। इतनी मुसीबत तुझ पर मुहासरे के दौरान आएगी।

58गरज़ एहतियात से शरीअत की उन तमाम बातों की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं, और रब अपने खुदा के पुरजलाल और बारोब नाम का खौफ़ मानना। 59वर्ना वह तुझ और तेरी औलाद में सख्त और लाइलाज अमराज़ और ऐसी दहशतनाक वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं जा सकेंगी। 60जिन तमाम वबाओं से तू मिस्र में दहशत खाता था वह अब तेरे दरमियान फैल कर तेरे साथ चिमटी रहेंगी। 61न सिर्फ़ शरीअत की इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी तुझ पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।

62अगर तू रब अपने खुदा की न सुने तो आखिरकार तुम में से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63जिस तरह पहले रब खुशी से तुम्हें कामयाबी देता और तुम्हारी तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बर्बाद और तबाह करने में खुशी मह्सूस करेगा। तुम्हें ज़बरदस्ती उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस पर तू इस वक़्त दाखिल हो कर क़बज़ा करने वाला है। 64तब रब तुझे दुनिया के एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक तमाम क्रौमों में मुन्तशिर कर देगा। वहाँ तू दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं की जिन से न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे।

<sup>65</sup>उन ममालिक में भी न तू आराम-ओ-सुकून पाएगा, न तेरे पाँओ जम जाएंगे। रब होने देगा कि तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के बाइस धुन्दला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद की हर किरन जाती रहेगी। <sup>66</sup>तेरी जान हर वक्रत खतरे में होगी और तू दिन रात दहशत खाते हुए मरने की तवक्रको करेगा। <sup>67</sup>सुबह उठ कर तू कहेगा, “काश शाम हो!” और शाम के वक्रत, “काश सुबह हो!” क्योंकि जो कुछ तू देखेगा उस से तेरे दिल को दहशत घेर लेगी।

<sup>68</sup>रब तुझे जहाज़ों में बिठा कर मिस्र वापस ले जाएगा अगरचे मैं ने कहा था कि तू उसे दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँच कर तुम अपने दुश्मनों से बात करके अपने आप को गुलाम के तौर पर बेचने की कोशिश करोगे, लेकिन कोई भी तुम्हें खरीदना नहीं चाहेगा।”

### मोआब में रब के साथ नया अहद

**29** जब इस्राईली मोआब में थे तो रब ने मूसा को हुक्म दिया कि इस्राईलियों के साथ एक और अहद बांधे। यह उस अहद के इलावा था जो रब होरिब यानी सीना पर उन के साथ बांध चुका था। <sup>2</sup>इस सिलसिले में मूसा ने तमाम इस्राईलियों को बुला कर कहा, “तुम ने खुद देखा कि रब ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन, उस के मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या कुछ किया। <sup>3</sup>तुम ने अपनी आँखों से वह बड़ी आज़माइशें, इलाही निशान और मोजिज़े देखे जिन के ज़रीए रब ने अपनी कुदरत का इज़हार किया।

<sup>4</sup>मगर अफ़सोस, आज तक रब ने तुम्हें न समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें या कान जो सुन सकें। <sup>5</sup>रेगिस्तान में मैं ने 40 साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस दौरान न तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते घिसे। <sup>6</sup>न तुम्हारे पास रोटी थी, न मै या मै जैसी कोई और चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी

ज़रूरियात पूरी कीं ताकि तुम सीख लो कि वही रब तुम्हारा खुदा है।

<sup>7</sup>फिर हम यहाँ आए तो हस्बोन का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकल कर हम से लड़ने आए। लेकिन हम ने उन्हें शिकस्त दी। <sup>8</sup>उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके हम ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास में दिया। <sup>9</sup>अब एहतियात से इस अहद की तमाम शराइत पूरी करो ताकि तुम हर बात में कामयाब हो।

<sup>10</sup>इस वक्रत तुम सब रब अपने खुदा के हुज़ूर खड़े हो, तुम्हारे क़बीलों के सरदार, तुम्हारे बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, <sup>11</sup>औरतें और बच्चे। तेरे दरमियान रहने वाले परदेसी भी लक्कड़हारों से ले कर पानी भरने वालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर हैं। <sup>12</sup>तू इस लिए यहाँ जमा हुआ है कि रब अपने खुदा का वह अहद तस्लीम करे जो वह आज क़सम खा कर तेरे साथ बांध रहा है। <sup>13</sup>इस से वह आज इस की तस्दीक़ कर रहा है कि तू उस की क़ौम और वह तेरा खुदा है यानी वही बात जिस का वादा उस ने तुझ से और तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था। <sup>14-15</sup>लेकिन मैं यह अहद क़सम खा कर न सिर्फ़ तुम्हारे साथ जो हाज़िर हो बांध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी आने वाली नस्लों के साथ भी।

### बुतपरस्ती की सज़ा

<sup>16</sup>तुम खुद जानते हो कि हम मिस्र में किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि हम किस तरह मुख्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते हुए यहाँ तक पहुँचे। <sup>17</sup>तुम ने उन के नफ़रतअंगेज़ बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे। <sup>18</sup>ध्यान दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुम्बा या क़बीला रब अपने खुदा से हट कर दूसरी क़ौमों के देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे दरमियान कोई जड़ फूट कर ज़हरीला और कड़वा फल लाए।

<sup>19</sup>तुम सब ने वह लानतें सुनी हैं जो रब नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि कोई अपने आप को रब की बरकत का वारिस समझ कर कहे, “बेशक मैं अपनी गलत राहों से हटने के लिए तय्यार नहीं हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं मट्फूज़ रहूँगा।” खबरदार, ऐसी हरकत से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा।<sup>19</sup> <sup>20</sup>रब कभी भी उसे मुआफ़ करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह उसे अपने ग़ज़ब और ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब दुनिया से उस का नाम-ओ-निशान मिटा देगा। <sup>21</sup>वह उसे पूरी जमाअत से अलग करके उस पर अहद की वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत की इस किताब में लिखी हुई हैं।

<sup>22</sup>मुस्तक्रबिल में तुम्हारी औलाद और दूरदराज़ ममालिक से आने वाले मुसाफ़िर उन मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे जिन से रब ने मुल्क को तबाह किया होगा। <sup>23</sup>चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई और गंधक और नमक से ढकी हुई नज़र आएगी। बीज उस में बोया नहीं जाएगा, क्योंकि खुदरौ पौदों तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम की मानिन्द होगा जिन को रब ने अपने ग़ज़ब में तबाह किया। <sup>24</sup>तमाम क़ौमों में पूछेंगी, ‘रब ने इस मुल्क के साथ ऐसा क्यों किया? उस के सख्त ग़ज़ब की क्या वजह थी?’ <sup>25</sup>उन्हें जवाब मिलेगा, ‘वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिन्दों ने रब अपने बापदादा के ख़ुदा का अहद तोड़ दिया जो उस ने उन्हें मिस्र से निकालते वक़्त उन से बांधा था। <sup>26</sup>उन्होंने ने जा कर दीगर माबूदों की खिदमत की और उन्हें सिज्दा किया जिन से वह पहले वाकिफ़ नहीं थे और जो रब ने उन्हें नहीं दिए थे। <sup>27</sup>इसी लिए उस का ग़ज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर

वह तमाम लानतें लाया जिन का ज़िक्र इस किताब में है। <sup>28</sup>वह इतना गुस्से हुआ कि उस ने उन्हें जड़ से उखाड़ कर एक अजनबी मुल्क में फैंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।’

<sup>29</sup>बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब हमारा ख़ुदा उस का इल्म रखता है। लेकिन उस ने हम पर अपनी शरीअत का इन्क़िशाफ़ कर दिया है। लाज़िम है कि हम और हमारी औलाद उस के फ़रमाँबरदार रहें।

### तौबा के मुसबत नतीजे

**30** मैं ने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या कुछ बरकत का और क्या कुछ लानत का बाइस है। जब रब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी ग़लत हरकतों के सबब से मुख्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा तो तू मेरी बातें मान जाएगा। <sup>2</sup>तब तू और तेरी औलाद रब अपने ख़ुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिल-ओ-जान से उस की सुन कर उन तमाम अहकाम पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। <sup>3</sup>फिर रब तेरा ख़ुदा तुझे बहाल करेगा और तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम क़ौमों से निकाल कर जमा करेगा जिन में उस ने तुझे मुन्तशिर कर दिया था। <sup>4</sup>हाँ, रब तेरा ख़ुदा तुझे हर जगह से जमा करके वापस लाएगा, चाहे तू सब से दूर मुल्क में क्यों न पड़ा हो। <sup>5</sup>वह तुझे तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू उस पर क़ब्ज़ा करेगा। फिर वह तुझे तेरे बापदादा से ज़यादा कामयाबी बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़यादा बढ़ाएगा।

<sup>6</sup>ख़तना रब की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन उस वक़्त रब तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी औलाद का बातिनी ख़तना करेगा ताकि तू उसे पूरे दिल-ओ-जान से प्यार करे और जीता रहे। <sup>7</sup>जो लानतें रब तेरा ख़ुदा तुझ पर लाया था उन्हें वह अब तेरे दुश्मनों पर आने देगा, उन पर जो तुझ से नफ़रत रखते और

<sup>19</sup>लफ़ज़ी तर्जुमा : सेराब ज़मीन ख़ुशक ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।



तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं।<sup>8</sup> क्योंकि तू दुबारा रब की सुनेगा और उस के तमाम अहकाम की पैरवी करेगा जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।<sup>9</sup> जो कुछ भी तू करेगा उस में रब तुझे बड़ी कामयाबी बख्शेगा, और तुझे कसत की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी। क्योंकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को कामयाबी देने में खुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे भी कामयाबी देने में खुशी महसूस करेगा।

<sup>10</sup>शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने खुदा की सुने, शरीअत में दर्ज उस के अहकाम पर अमल करे और पूरे दिल-ओ-जान से उस की तरफ़ रुजू लाए।

<sup>11</sup>जो अहकाम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर।<sup>12</sup> वह आसमान पर नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन आसमान पर चढ़ कर हमारे लिए यह अहकाम नीचे ले आए ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?'<sup>13</sup> वह समुन्दर के पार भी नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन समुन्दर को पार करके हमारे लिए यह अहकाम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?'<sup>14</sup> क्योंकि यह कलाम तेरे निहायत क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी रुकावट नहीं है।

### ज़िन्दगी या मौत का चुनाव

<sup>15</sup>देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ। एक ज़िन्दगी और खुशहाली की तरफ़ ले जाता है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ़।<sup>16</sup> आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब अपने खुदा को प्यार कर, उस की राहों पर चल और उस के अहकाम के ताबे रह। फिर तू ज़िन्दा रह कर तरक्की करेगा, और रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिस में तू दाखिल होने वाला है।

<sup>17</sup>लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हट कर नाफ़रमानी करे तो बरकत की तवक्की

न कर। अगर तू आजमाइश में पड़ कर दीगर माबूदों को सिज्दा और उन की खिदमत करे<sup>18</sup> तो तुम ज़रूर तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि इस सूरत में तुम ज़्यादा देर तक उस मुल्क में आबाद नहीं रहोगे जिस में तू दरया-ए-यर्दन को पार करके दाखिल होगा ताकि उस पर क़ब्ज़ा करे।

<sup>19</sup>आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे खिलाफ़ मेरे गवाह हैं कि मैं ने तुम्हें ज़िन्दगी और बरकतों का रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया है। अब ज़िन्दगी का रास्ता इख्तियार कर ताकि तू और तेरी औलाद ज़िन्दा रहे।<sup>20</sup> रब अपने खुदा को प्यार कर, उस की सुन और उस से लिपटा रह। क्योंकि वही तेरी ज़िन्दगी है और वही करेगा कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिस का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था।"

### यशूअ को मूसा की जगह मुक़रर किया जाता है

**31** मूसा ने जा कर तमाम इस्राईलियों से मज़ीद कहा,

<sup>2</sup>"अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा चलना फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी रब ने मुझे बताया है, 'तू दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करेगा।'<sup>3</sup> रब तेरा खुदा खुद तेरे आगे आगे जा कर यर्दन को पार करेगा। वही तेरे आगे आगे इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि तू उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। दरया को पार करते वक़्त यशूअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फ़रमाया है।<sup>4</sup> रब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उन के बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है।<sup>5</sup> रब तुम्हें उन पर ग़ालिब आने देगा। उस वक़्त तुम्हें उन के साथ वैसे सुलूक करना है जैसा मैं ने तुम्हें बताया है।<sup>6</sup> मज़बूत और दिलेर हो। उन से ख़ौफ़ न खाओ, क्योंकि रब तेरा खुदा तेरे

साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।”

<sup>7</sup>इस के बाद मूसा ने तमाम इस्राईलियों के सामने यशूअ को बुलाया और उस से कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इस क्रौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा रब ने क्रसम खा कर उन के बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तक्सीम करके हर क़बीले को उस का मौरूसी इलाक़ा दे। <sup>8</sup>रब खुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न खाना, न घबराना।”

### हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

<sup>9</sup>मूसा ने यह पूरी शरीअत लिख कर इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और लावी के क़बीले के उन इमामों के सपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक उठा कर ले चलते थे। उस ने उन से कहा, <sup>10-11</sup>“हर सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब तमाम क़र्ज़ मन्सूख किए जाते हैं। तिलावत उस वक़्त करना है जब इस्राईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब अपने खुदा के सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक्क़िदिस के लिए चुनेगा। <sup>12</sup>तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुन कर सीखें, रब तुम्हारे खुदा का ख़ौफ़ मानें और एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। <sup>13</sup>लाज़िम है कि उन की औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र भर उस मुल्क में रब तुम्हारे खुदा का ख़ौफ़ माने जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे।”

### रब मूसा को आख़िरी हिदायात देता है

<sup>14</sup>रब ने मूसा से कहा, “अब तेरी मौत करीब है। यशूअ को बुला कर उस के साथ मुलाक़ात

के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की ज़िम्मादारियाँ सौंपूँगा।”

मूसा और यशूअ आ कर ख़ैमे में हाज़िर हुए <sup>15</sup>तो रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में ज़ाहिर हुआ। <sup>16</sup>उस ने मूसा से कहा, “तू जल्द ही मर कर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह क्रौम मुल्क में दाखिल होने पर ज़िना करके उस के अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अह्द तोड़ देगी जो मैं ने उन के साथ बांधा है। <sup>17</sup>फिर मेरा ग़ज़ब उन पर भड़केगा। मैं उन्हें छोड़ कर अपना चेहरा उन से छुपा लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी। उस वक़्त वह कहेंगे, ‘क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं आई कि रब हमारे साथ नहीं है?’ <sup>18</sup>और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चेहरा उन से छुपाए रखूँगा, क्योंकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्होंने ने एक निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

<sup>19</sup>अब ज़ैल का गीत लिख कर इस्राईलियों को यूँ सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उन के खिलाफ़ गवाही दिया करे। <sup>20</sup>क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क्रसम खा कर उन के बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिस में दूध और शहद की कस्रत है। वहाँ इतनी ख़ुराक होगी कि उन की भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग जाएंगे और उन की खिदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अह्द तोड़ेंगे। <sup>21</sup>नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें आएँगी। फिर यह गीत जो उन की औलाद को याद रहेगा उन के खिलाफ़ गवाही देगा। क्योंकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क्रसम खा कर उन से किया था तो भी मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।”

22 मूसा ने उसी दिन यह गीत लिख कर इस्राईलियों को सिखाया।

23 फिर रब ने यशूअ बिन नून से कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इस्राईलियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा मैं ने क्रसम खा कर उन से किया था। मैं खुद तेरे साथ हूँगा।”

24 जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख लिया 25 तो वह उन लावियों से मुखातिब हुआ जो सफ़र करते वक़्त अहद का सन्दूक उठा कर ले जाते थे। 26 “शरीअत की यह किताब ले कर रब अपने खुदा के अहद के सन्दूक के पास रखना। वहाँ वह पड़ी रहे और तेरे खिलाफ़ गवाही देती रहे। 27 क्योंकि मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म है। मेरी मौजूदगी में भी तुम ने कितनी दफ़ा रब से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम क्या कुछ नहीं करोगे! 28 अब मेरे सामने अपने क़बीलों के तमाम बुजुर्गों और निगहबानों को जमा करो ताकि वह खुद मेरी यह बातें सुनें और आसमान और ज़मीन उन के खिलाफ़ गवाह हों। 29 क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की मैं ने तुम्हें ताकीद की है। आखिरकार तुम पर मुसीबत आएगी, क्योंकि तुम वह कुछ करोगे जो रब को बुरा लगता है, तुम अपने हाथों के काम से उसे गुस्सा दिलाओगे।”

30 फिर मूसा ने इस्राईल की तमाम जमाअत के सामने यह गीत शुरू से ले कर आखिर तक पेश किया,

### मूसा का गीत

**32** ऐ आसमान, मेरी बात पर गौर कर! ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!

2 मेरी तालीम बूँदा-बाँदी जैसी हो, मेरी बात शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश की मानिन्द हो जो हरियाली पर बरसती है।

3 मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे खुदा की अज़मत की तम्जीद करो!

4 वह चटान है, और उस का काम कामिल है। उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार खुदा है जिस में फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और दियानतदार है।

5 एक टेढ़ी और कजरौ नस्ल ने उस का गुनाह किया। वह उस के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि दाग़ साबित हुए हैं।

6 ऐ मेरी अहमक़ और बेसमझ क़ौम, क्या तुम्हारा रब से ऐसा रवय्या ठीक है? वह तो तुम्हारा बाप और ख़ालिक़ है, जिस ने तुम्हें बनाया और क़ाइम किया।

7 क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की नस्लों पर तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना तो वह तुझे बता देगा, अपने बुजुर्गों से पता करना तो वह तुझे इत्तिला देंगे।

8 जब अल्लाह तआला ने हर क़ौम को उस का अपना अपना मौरूसी इलाक़ा दे कर तमाम इन्सानों को मुख्तलिफ़ ग़ुरोहों में अलग कर दिया तो उस ने क़ौमों की सरहदें इस्राईलियों की तादाद के मुताबिक़ मुक़रर कीं।

9 क्योंकि रब का हिस्सा उस की क़ौम है, याक़ूब को उस ने मीरास में पाया है।

10 यह क़ौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरान-ओ-सुन्सान बयाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक आवाज़ें गूँजती थीं। उस ने उसे घेर कर उस की देख-भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह बचाए रखा।

11 जब उक़ाब अपने बच्चों को उड़ना सिखाता है तो वह उन्हें घोंसले से निकाल कर उन के साथ उड़ता है। अगर वह गिर भी जाएँ तो वह हाज़िर है और उन के नीचे अपने परों को फैला कर उन्हें ज़मीन से टकरा जाने से बचाता है। रब का इस्राईल के साथ यही सुलूक था।

12रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की। किसी अजनबी माबूद ने शिर्कत न की।

13उस ने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की बुलन्दियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का फल खिला कर उसे चटान से शहद और सख्त पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहय्या किया।<sup>a</sup>

14उस ने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बकरी का दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे, बकरे और बेहतरीन अनाज अता किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की उम्दा मै से लुत्फ़अन्दोज़ हुआ।

15लेकिन जब यसूरून<sup>b</sup> मोटा हो गया तो वह दोलत्तियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़ तक भर कर तनोमन्द और फ़र्बा हुआ तो उस ने अपने खुदा और खालिक़ को हद्द किया, उस ने अपनी नजात की चटान को हक़ीर जाना।

16अपने अजनबी माबूदों से उन्होंने उस की ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने घिनौने बुतों से उसे गुस्सा दिलाया।

17उन्होंने ने बदरूहों को कुर्बानियाँ पेश कीं जो खुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिन से न वह और न उन के बापदादा वाकिफ़ थे, क्योंकि वह थोड़ी देर पहले वुजूद में आए थे।

18तू वह चटान भूल गया जिस ने तुझे पैदा किया, वही खुदा जिस ने तुझे जन्म दिया।

19रब ने यह देख कर उन्हें रद्द किया, क्योंकि वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।

20उस ने कहा, "मैं अपना चेहरा उन से छुपा लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उन का क्या अन्जाम होता है। क्योंकि वह सरासर बिगड़ गए हैं, उन में वफ़ादारी पाई नहीं जाती।

21उन्होंने ने उस की परस्तिश से जो खुदा नहीं है मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बुतों से मुझे गुस्सा दिलाया है। चुनाँच

मैं खुद ही उन्हें ग़ैरत दिलाऊँगा, एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें गुस्सा दिलाऊँगा।

22क्योंकि मेरे गुस्से से आग भड़क उठी है जो पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस की पैदावार हड़प करके पहाड़ों की बुन्यादों को जला देगी।

23मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।

24भूक के मारे उन की ताक़त जाती रहेगी, और वह बुखार और वबाई अमराज़ का लुक़मा बनेंगे। मैं उन के खिलाफ़ फाड़ने वाले जानवर और ज़हरीले साँप भेज दूँगा।

25बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और घर में दृष्टत फैल जाएगी। शीरख्वार बच्चे, नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुजुर्ग सब उस की गिरिफ़्त में आ जाएंगे।

26मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चकनाचूर करके इन्सानों में से उन का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा।

27लेकिन अन्देशा था कि दुश्मन ग़लत मतलब निकाल कर कहे, 'हम खुद उन पर ग़ालिब आए, इस में रब का हाथ नहीं है।'

28क्योंकि यह क़ौम बेसमझ और हिक्मत से ख़ाली है।

29काश वह दानिशमन्द हो कर यह बात समझें! काश वह जान लें कि उन का क्या अन्जाम है।

30क्योंकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह हज़ार इस्राईलियों का ताक़कुब कर सकता है? उस के दो मर्द किस तरह दस हज़ार इस्राईलियों को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उन की चटान ने उन्हें दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब ने खुद उन्हें दुश्मन के क़ब्ज़े में कर दिया।

<sup>a</sup>लफ़ज़ी तर्जुमा : चूसने दिया।

<sup>b</sup>यानी इस्राईल।

<sup>31</sup>हमारे दुश्मन खुद मानते हैं कि इस्राईल की चटान हमारी चटान जैसी नहीं है।

<sup>32</sup>उन की बेल तो सद्म की बेल और अमूरा के बाग से है, उन के अंगूर ज़हरीले और उन के गुच्छे कड़वे हैं।

<sup>33</sup>उन की मै साँपों का मोहलक ज़हर है।

<sup>34</sup>रब फ़रमाता है, “क्या मैं ने इन बातों पर मुहर लगा कर उन्हें अपने ख़जाने में मट्फूज़ नहीं रखा?

<sup>35</sup>इन्तिक्राम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा। एक वक़्त आया कि उन का पाँओ फिसलेगा। क्योंकि उन की तबाही का दिन करीब है, उन का अन्जाम जल्द ही आने वाला है।”

<sup>36</sup>यक्रीनन रब अपनी क्रौम का इन्साफ़ करेगा। वह अपने खादिमों पर तरस खाएगा जब देखेगा कि उन की ताक़त जाती रही है और कोई नहीं बचा।

<sup>37</sup>उस वक़्त वह पूछेगा, “अब उन के देवता कहाँ हैं, वह चटान जिस की पनाह उन्होंने ने ली?

<sup>38</sup>वह देवता कहाँ हैं जिन्होंने उन के बेहतरीन जानवर खाए और उन की मै की नज़रें पी लीं। वह तुम्हारी मदद के लिए उठें और तुम्हें पनाह दें।

<sup>39</sup>अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं खुदा हूँ। मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। मैं ही हलाक करता और मैं ही ज़िन्दा कर देता हूँ। मैं ही ज़ख्मी करता और मैं ही शिफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से नहीं बचा सकता।

<sup>40</sup>मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की क़सम,

<sup>41</sup>जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को तेज़ करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो

अपने मुखालिफ़ों से इन्तिक्राम और अपने नफ़रत करने वालों से बदला लूँगा।

<sup>42</sup>मेरे तीर खून पी पी कर नशे में धुत हो जाएंगे, मेरी तलवार मक्तूलों और क़ैदियों के खून और दुश्मन के सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।”

<sup>43</sup>ए दीगर क्रौमो, उस की उम्मत के साथ खुशी मनाओ! क्योंकि वह अपने खादिमों के खून का इन्तिक्राम लेगा। वह अपने मुखालिफ़ों से बदला ले कर अपने मुल्क और क्रौम का कफ़ारा देगा।

<sup>44</sup>मूसा और यशूअ बिन नून ने आ कर इस्राईलियों को यह पूरा गीत सुनाया।

<sup>45-46</sup>फिर मूसा ने उन से कहा, “आज मैं ने तुम्हें इन तमाम बातों से आगाह किया है। लाज़िम है कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ जाएँ। अपनी औलाद को भी हुक्म दो कि एहतियात से इस शरीअत की तमाम बातों पर अमल करे। <sup>47</sup>यह ख़ाली बातें नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िन्दगी का सरचश्मा हैं। इन के मुताबिक़ चलने के बाइस तुम देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरया-ए-यर्डन को पार करके क़ब्ज़ा करने वाले हो।”

### मूसा का नबू पहाड़ पर इन्तिक्राल

<sup>48</sup>उसी दिन रब ने मूसा से कहा, <sup>49</sup>“पहाड़ी सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा जो यरीहू के सामने लेकिन यर्डन के मशरिफ़ी किनारे पर यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ से कनआन पर नज़र डाल, उस मुल्क पर जो मैं इस्राईलियों को दे रहा हूँ। <sup>50</sup>इस के बाद तू वहाँ मर कर अपने बापदादा से जा मिलेगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा भाई हारून होर पहाड़ पर मर कर अपने बापदादा से जा मिला है। <sup>51</sup>क्योंकि तुम दोनों इस्राईलियों के रू-ब-रू बनेफ़ा हुए। जब तुम दशत-ए-सीन में क़ादिस के करीब थे और

मरीबा के चश्मे पर इस्राईलियों के सामने खड़े थे तो तुम ने मेरी कुट्टूसियत क्राइम न रखी।<sup>52</sup> इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ दूर से देखेगा जो मैं इस्राईलियों को दे रहा हूँ। तू खुद उस में दाखिल नहीं होगा।”

### मूसा क़बीलों को बरकत देता है

**33** मरने से पेशतर मर्द-ए-ख़ुदा मूसा ने इस्राईलियों को बरकत दे कर<sup>2</sup> कहा,

“रब सीना से आया, सर्दर<sup>a</sup> से उस का नूर उन पर तुलू हुआ। वह कोह-ए-फ़ारान से रौशनी फैला कर रिबबोत-क्रादिस से आया, वह अपने जुनूबी इलाक़े से रवाना हो कर उन की ख़ातिर पहाड़ी ढलानों के पास आया।

<sup>3</sup>यक्रीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है, तमाम मुक़द्दसीन तेरे हाथ में हैं। वह तेरे पाँओ के सामने झुक कर तुझ से हिदायत पाते हैं।

<sup>4</sup>मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याक़ूब की जमाअत की मौरूसी मिलकियत है।

<sup>5</sup>इस्राईल के राहनुमा अपने क़बीलों समेत जमा हुए तो रब यसूरून<sup>b</sup> का बादशाह बन गया।

<sup>6</sup>रूबिन की बरकत :

रूबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में बढ़ जाए।

<sup>7</sup>यहूदाह की बरकत :

ऐ रब, यहूदाह की पुकार सुन कर उसे दुबारा उस की क़ौम में शामिल कर। उस के हाथ उस के लिए लड़ें। मुखालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस की मदद कर।

<sup>8</sup>लावी की बरकत :

तेरी मर्ज़ी मालूम करने के कुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम तेरे वफ़ादार ख़ादिम लावी

के पास होते हैं। तू ने उसे मस्सा में आजमाया और मरीबा में उस से लड़ा।<sup>9</sup> उस ने तेरा कलाम सँभाल कर तेरा अहद क्राइम रखा, यहाँ तक कि उस ने न अपने माँ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज़ किया।

<sup>10</sup>वह याक़ूब को तेरी हिदायत और इस्राईल को तेरी शरीअत सिखा कर तेरे सामने बख़ूर और तेरी कुर्बानिगाह पर भस्म होने वाली कुर्बानियाँ चढ़ाता है।

<sup>11</sup>ऐ रब, उस की ताक़त को बढ़ा कर उस के हाथों का काम पसन्द कर। उस के मुखालिफ़ों की कमर तोड़ और उस से नफ़रत रखने वालों को ऐसा मार कि आइन्दा कभी न उठें।

<sup>12</sup>बिनयमीन की बरकत :

बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से उस के पास रहता है, क्योंकि रब दिन रात उसे पनाह देता है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दरमियान महफूज़ रहता है।

<sup>13</sup>यूसुफ़ की बरकत :

रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से क्रीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फ़ूट निकलें।

<sup>14</sup>यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।

<sup>15</sup>उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।

<sup>16</sup>ज़मीन के तमाम ज़खीरे उस के लिए खुल जाएँ। वह उस को पसन्द हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ़ के सर पर ठहरें, उस के सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।

<sup>17</sup>यूसुफ़ साँड के पहलौठे जैसा अज़ीम है, और उस के सींग जंगली बैल के सींग हैं जिन से वह दुनिया की इन्तिहा तक सब क़ौमों को

<sup>a</sup>अदोम।

<sup>b</sup>इस्राईल।

मारेगा। इफ्राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

18 ज़बूलून और इश्कार की बरकत :

ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक्रत खुशी मना। ऐ इश्कार, अपने खैमों में रहते हुए खुश हो।

19 वह दीगर क्रौमों को अपने पहाड़ पर आने की दावत देंगे और वहाँ रास्ती की कुर्बानियाँ पेश करेंगे। वह समुन्दर की कसत और समुन्दर की रेत में छुपे हुए खज़ानों को जज़ब कर लेंगे।

20 जद की बरकत :

मुबारक है वह जो जद का इलाका वसी कर दे। जद शेरबबर की तरह दबक कर किसी का बाजू या सर फाड़ डालने के लिए तय्यार रहता है।

21 उस ने अपने लिए सब से अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए मटफूज़ रखा गया। जब क्रौम के राहनुमा जमा हुए तो उस ने रब की रास्त मर्ज़ी पूरी की और इस्राईल के बारे में उस के फ़ैसले अमल में लाया।

22 दान की बरकत :

दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकल कर छलाँग लगाता है।

23 नफ़्ताली की बरकत :

नफ़्ताली रब की मन्ज़ूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और उस के जुनूब का इलाका मीरास में पाएगा।

24 आशर की बरकत :

आशर बेटों में सब से मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसन्द हो। उस के पास ज़ैतून का

इतना तेल हो कि वह अपने पाँओ उस में डुबो सके।

25 तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र भर क्राइम रहे।

26 यसूरून<sup>a</sup> के खुदा की मानिन्द कोई नहीं है, जो आसमान पर सवार हो कर, हाँ अपने जलाल में बादलों पर बैठ कर तेरी मदद करने के लिए आता है।

27 अज़ली खुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अज़ली बाजू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगा कर उसे हलाक करने को कहता है।

28 चुनाँचे इस्राईल सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारेगा, याक़ूब का चश्मा अलग और मटफूज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कसत पैदा करेगी, और उस के ऊपर आसमान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।

29 ऐ इस्राईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिन्द है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खा कर तेरी खुशामद करेंगे, और तू उन की कमरें पाँओ तले कुचलेगा।”

### मूसा की वफ़ात

**34** यह बरकत दे कर मूसा मोआब का मैदानी इलाका छोड़ कर यरीहू के मुकाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था। वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो वह इस्राईल को देने वाला था यानी जिलिआद के इलाके से ले कर दान के इलाके तक, 2 नफ़्ताली का पूरा इलाका, इफ़्राईम और मनस्सी का इलाका, यहूदाह का इलाका बहीरा-ए-रूम तक, 3 जुनूब में दशत-ए-नजब और खज़ूर के शहर यरीहू की वादी से ले कर जुगार तक। 4 रब ने उस से कहा, “यह वह

<sup>a</sup>इस्राईल।

मुल्क है जिस का वादा मैं ने क्रसम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया। मैं ने उन से कहा था कि उन की औलाद को यह मुल्क मिलेगा। तू उस में दाखिल नहीं होगा, लेकिन मैं तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों से देख सके।”

<sup>5</sup>इस के बाद रब का खादिम मूसा वहीं मोआब के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने कहा था। <sup>6</sup>रब ने उसे बैत-फ़गूर की किसी वादी में दफ़न किया, लेकिन आज तक किसी को भी मालूम नहीं कि उस की कब्र कहाँ है।

<sup>7</sup>अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का था। आखिर तक न उस की आँखें धुन्दलाई, न उस की ताक़त कम हुई। <sup>8</sup>इस्त्राईलियों ने मोआब के मैदानी इलाक़े में 30 दिन तक उस का मातम किया।

<sup>9</sup>फिर यशूअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा हुआ। वह हिक्मत की रूह से मामूर था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए थे। इस्त्राईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ किया जो रब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया था।

<sup>10</sup>इस के बाद इस्त्राईल में मूसा जैसा नबी कभी न उठा जिस से रब रू-ब-रू बात करता था। <sup>11</sup>किसी और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिज़े नहीं किए जैसे मूसा ने फ़िरऔन बादशाह, उस के मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के सामने किए जब रब ने उसे मिस्र भेजा। <sup>12</sup>किसी और नबी ने इस क्रिस्म का बड़ा इख़तियार न दिखाया, न ऐसे अज़ीम और हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने इस्त्राईलियों के सामने किए।